नेताजी

सम्पूर्ण वाङ्मय

खंड-5

सपादकीय सलाहकार मडल

ए सी एन नबियार

पी के सहगल

आबिद हसन सफरानी

सपादक

शिशिर कुमार बोस

अनुवाद

उमेश दीक्षित

प्रकाशन विभाग.

सूचना और प्रसारण मत्रालय

भारत सरकार

कृतज्ञता-ज्ञापन
शरत चन्द्र— विभावती बोस संग्रह
एमिली शेंक्ल बोस
अनीता बी फैफ

प्राक्कथन*

हमें नेताजी सम्पूर्ण वाङ्मय के खंड-5 को नेताजी के पिता जानकी नाथ बोस जिनका जन्म 28 मार्च 1860 को हुआ था की 125 वीं जयंती के अवसर पर प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

यह सूचना देते हुए हमें अत्यंत दुःख हो रहा है कि हमारे प्रिय मित्र, सहयोगी तथा संपादकीय सलाहकार मंडल के सम्माननीय सदस्य आबिद हसन सफरानी का निधन इस खंड पर कार्य करने के दौरान हो गया।

हम स्वीकार करते हैं कि पिछला खंड प्रकाशित हुए काफी समय व्यतीत हो चुका है और पांचवें खंड के प्रकाशन में बहुत विलंब हुआ है। इसके कई कारण हैं। पहला, चौथे खंड के प्रकाशन के बाद अनुसंधान विभाग ने विशेष ऐतिहासिक महत्व की नई तथा विस्तृत सामग्री प्रकाशन के लिए दी। इसमें नेताजी द्वारा जेल में लिखी डायरियां और बर्मा में लिखी डायरियां, ब्रिटिश माल के बहिष्कार पर लिखा लंबा मोनोग्राफ, लगभग तीस वर्ष की आयु में लिखे अंग्रेजी प्रकाशन शामिल हैं। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक प्रश्नों पर ढेरों नई सामग्री भी प्राप्त हुई। इस कारण से पांचवें खंड का नए सिरे से आयोजन और संपादन करना आवश्यक हो गया। बहुत सा अनुवाद भी किया गया जिसमें काफी समय लग गया। दूसरा कारण वित्तीय था सात वर्ष पहले शुरू किए गए इस कार्य को वित्तीय संकट से गुजरना पड़ा जिसके कारण पब्लिशिंग डिपार्टमेंट को अपने कर्मचारियों की संख्या में कटौती करनी पड़ी और अंशकालिक कर्मचारियों से काम लेना पड़ा। तीसरे बिजली संकट के कारण प्रेस के कार्य में हर स्तर पर रुकावट आती रही। परिस्थितिजन्य विवशताओं के बावजूद भी हम अंग्रेजी भाषा में स्वर्गीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के द्वारा 1980 में प्रथम खंड के जारी किए जाने के बाद पांच वर्षों में पांच खंड प्रकाशित करने में सफल हुए हैं। इसी समयावधि में बांग्ला और हिंदी में भी दो दो खंड प्रकाशित किए जा चुके हैं।

नेताजी की जेल डायरी (बर्मा जेल में) को मूल बांग्ला से अनूदित किया गया है। इस डायरी में बहुत गंभीर और व्यापक विचार हैं। बर्मा की जेल में उन्होंने जो पुस्तकें पढ़ीं उन पर टिप्पणियां लिखीं। प्रस्तुत खंड में उन पुस्तक-टिप्पणियों पर लगभग 150 पृष्ठ दिए गए हैं। हमारा प्रयास रहा है कि नेताजी की मौलिक शैली बरकरार रहे। उन्होंने हाशियों पर जो टिप्पणियां दी हैं उन्हें भी प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है। इस सामग्री से पाठकों को यह ज्ञात होगा कि नेताजी किस तरह की पुस्तकें पढ़ते थे तथा उनसे उनके मन में क्या प्रतिक्रियाएं उठती थीं। पुस्तकों के विषयों का फलक बहुत व्यापक है-राष्ट्रों का इतिहास जैसे आयरलैंड का इतिहास, यूरोपियन सभ्यताओं का इतिहास, क्रांतियों और सामाजिक संगठनों का इतिहास, संस्मरण, एशिया और यूरोप का तुलनात्मक इतिहास, मनोविज्ञान और अपराध, पोषक आहार और स्वास्थ्य आदि। इन टिप्पणियों के बीच बीच में कहीं-कहीं वे कविताएं भी हैं जिनसे वे प्रभावित हुए थे। उनकी जेल डायरी में 'मंत्र विचार' शीर्षक से बांग्ला में लेख मिला है जो उन्होंने 'पुरोहित-दर्पण' पढ़ने के बाद लिखा था। इस लेख का अनुवाद संभव नहीं था अतः इसे परिशिष्ट में मूल रूप में

---
* मूल अंग्रेजी पुस्तक से अनूदित

दिया जा रहा है।

जिन तमाम लेखों भाषणों और सार्वजनिक बयानों को इस खंड में सम्मिलित किया गया है उनमें से कुछ एक बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। नेताजी ने लगभग तीस वर्ष की आयु में बांग्ला में कुछ उत्कृष्ट रचनाओं–युवाओं के स्वप्न, मातृभूमि की पुकार, मूलभूत प्रश्न की रचना की थी जिनका अनुवाद भी शामिल है। भाषणों में 1928 में महाराष्ट्र प्रांतीय सभा में दिया गया भाषण सम्मिलित है। इस भाषण में जिन वैचारिक प्रश्नों पर विचार किया गया है, वह आज भी प्रासंगिक है। इसके अतिरिक्त 1928 में अखिल भारतीय युवा सम्मेलन में उनका भाषण दिसंबर 1928 में कलकत्ता में आयोजित राष्ट्रीय भाषा सम्मेलन के दौरान दिया गया भाषण और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दौरान महात्मा गांधी के राजनैतिक प्रस्तावों में सुधार प्रस्ताव पेश करते समय दिया गया भाषण शामिल है।

ब्रिटिश माल के बहिष्कार पर लिखा गया मोनोग्राफ एक शोधपत्र के रूप में तैयार किया गया है। यह शोधपत्र 1927 से 1929 तक के आंकड़ों पर आधारित है। यह शोधपत्र छात्रों, इतिहासकारों, पाठकों, राजनैतिक कार्यकर्ताओं के लिए काफी सूचनाप्रद रहेगा।

मैं इस खंड में प्रकाशित सामग्री को जुटाने, उन्हें व्यवस्थित करने में डॉ. लियोनार्ड ए. गार्डन और डा. सुगाता बोस के सहयोग के लिए आभारी हूं।

इन खंडों का प्रकाशन भारत सरकार के शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय के वित्तीय सहयोग से किया जा रहा है, जिसके हम फिर हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

जैसाकि अब हम छठे तथा आगे के अन्य खंडों पर कार्य कर रहे हैं। अपनी इस योजना के पूर्ण होने के लिए हम अपने देशवासियों का आशीर्वाद और सहयोग पाने की कामना करते हैं।

जय हिन्द
शिशिर कुमार बोस

नेताजी भवन
38/2 लाला लाजपतराय रोड
कलकत्ता 700020 (भारत)
28 मई 1985

विषय-सूची

अमृत बाजार पत्रिका के संपादक को 26 जुलाई, 1923 का लिखा सुभाष चंद्र बोस का पत्र:

महोदय

इन दिनों जिस प्रकार जनसभाओं का आयोजन और संचालन हो रहा है उसके विरोध में आवाज उठाने का यही उचित समय है। 18 जुलाई को मिर्जापुर पार्क में एक सभा हुई थी और आयोजकों से यह अपेक्षा थी कि वे कलकत्ता में उन दिनों उपस्थित प्रमुख नेताओं को उस सभा में समय की सूचना के साथ सादर आमंत्रित करें। जब मैं सभा में पहुंचा तब तक श्रीयुत् दास को आमंत्रित नहीं किया गया था। मैं ने सभा के प्रमुख आयोजकों में से एक से कहा कि उन्हें स्वयं तुरंत जाकर श्रीयुत् दास को निमंत्रित करना चाहिए। दुर्भाग्य की बात है कि इस प्रकार के तथ्य जनसाधारण को ज्ञात नहीं हो पाते और फलत वे अपने निष्कर्ष स्वयं निकालते हैं।

23 जुलाई सोमवार के 'सर्वेंट' में मैंने तुर्की शांति समारोह से संबंधित 25 तथा 26 जुलाई को होने वाली दो बैठकों के बारे में पढ़ा। आयोजकों में मेरा भी नाम छपा था दुर्भाग्यवश मेरे साथी आयोजकों ने ये औपचारिकता तक नहीं बरती कि मुझसे पूछ लेते अथवा इन बैठकों के बारे में मुझे सूचित कर देते और तब अखबारों को छपने के लिए विज्ञप्ति भेजी जाती।

आज सवेर सर्वेंट में 25 तारीख की बैठक रद्द होने का समाचार छपा और य भी बताया गया कि 25 और 26 की दोनों बैठकें अब 26 जुलाई को ही होगी। इस विज्ञप्ति पर हस्ताक्षर कर्ताओं में भी मेरा नाम सम्मिलित था। किंतु इस महत्वपूर्ण परिवर्तन के बारे में भी प्रेस को सूचना भेजने से पहले मुझे कोई जानकारी नहीं दी गई।

एक ही दिन दो स्थानों पर जनसभाएं आयोजित करना मेरे विचार से व्यर्थ की बात है। किसी कार्य दिवस को टाउन हॉल जैसी जगह पर दो बजे बैठक बुलाने सभा आयोजित करने और दूसरी सभा अन्यत्र साढ़े चार बजे आयोजित करना बिलकुल निरर्थक है। अत मैं अपने साथी आयोजकों से प्रार्थना करना चाहूंगा कि दो बजे की टाउन हॉल वाली बैठक रद्द कर दें और शाम को किसी पार्क में एक ही सभा करें और सभी वक्ताओं को उसमें बुलाएं।

आशा है मेरी प्रार्थना व्यर्थ नहीं जाएगी।

38/2 एल्गिन रोड — सुभाष चंद्र बोस

24/7/23

स्फुट विचार (मूल बांग्ला से अनूदित)

(माडले बर्मा 1924-1927 के बीच नेताजी द्वारा कारागार में लिखी गई टिप्पणियां मे सगृहीत सपादक)

भूदेव मुखोपाध्याय ने अपने *'विविध प्रबध'* मे लिखा है कि ईसाई धर्म और गौडीय वैष्णव धर्म एक ही प्रकृति के हैं। इसका एक कारण तो यह है कि मुस्लिम शासनकाल मे बगाल में वैष्णव मत का जन्म हुआ और यूरोप मे रोमन सम्राटों के युग मे ईसाई मत का प्रचार हुआ। ब्रह्म समाजी वैष्णव धर्म को इसलिए भी पसद करते हैं क्योंकि वह ईसाई धर्म के जैसा ही है। यह सर्वविदित सत्य है कि ब्रह्म समाज ईसाई धर्म से बहुत प्रभावित है।

मेरा विचार है कि ईसाई तथा वैष्णव धर्म—दोनों ही में भक्ति तत्व का प्राधान्य है। यही कारण है कि उनमें बहुत समानता है।

भूदेव बाबू के अनुसार रामानुज के विचारों के प्रभाव से दक्षिण में आर्यों के *'स्मार्त आचार'* का पुनर्जीवन हुआ। इसी प्रकार बगाल में वैष्णव धर्म के प्रसार से रघुनदन का अभ्युदय हुआ।

साप्रदायिक मतभेदों के कुछ उदाहरण

1. शैव शाक्ति तथा वैष्णव मतो के अलग अलग पुराण हैं। स्कद पुराण में शिव प्रमुख देवता हैं। पद्म पुराण में विष्णु को परमेश्वर माना गया है और ब्रह्मा और शिव को विष्णु का ही विशिष्ट गुण धर्मी रूप बताया गया है। भगवती ही विष्णु योग माया अथवा विद्या शक्ति हैं। कालिका पुराण में ब्रह्मा विष्णु और महेश्वर को आद्या भगवती की ही सतान बताया गया है।
2. *शिव तथा राम के बीच युद्ध, श्रीकृष्ण तथा राजा बाण के बीच युद्ध।*
3. ईसाई धर्म के विभिन्न सप्रदायों के सघर्ष युग मे इस्लाम धर्म का उद्भव।
4. प्रोटैस्टेंट ईसाई मतावलंबियों के झगडे में जेसुइट ईसाई मत का प्रारभ।
5. *शिया और सुन्नी सप्रदायों के सघर्ष तथा मतभेदों के बीच सूफी मत का उद्भव।*
6. पच उपासकों के मतभेदों के समय में बुद्ध का आविर्भाव। बौद्ध धर्म के उत्थान के समय पच उपासकों के बीच एक प्रकार का समझौता अवश्य हो गया था। इसी युग में भारतीय चितन की छ विशेष दर्शन धाराए मुखर हुई और तांत्रिक साधना का प्रारभ हुआ। इस एकता के फलस्वरूप क्षत्रियों की एक विशेष शाखा उनकी हित साधक बनी और बौद्ध धर्म का पराभव हुआ। इस विजय के उपरात मतभेदो का एक और दौर चला जो कि श्रीमद्भागवत तथा नए उपपुराणों की सरचना तथा हिंदू राजाओ *के आपसी युद्धों से स्पष्ट है। मुसलमानों की विजय के उपरात पुन तांत्रिक साधना* का दौर फिर से चल पड़ा।

वैदिक परपरा में ही हिंदू सभ्यता तथा सस्कृति का मूल निहित है। हिंदू समाज ने कभी भी किसी ऐसे धर्म अथवा ऐसी समाज चेतना को स्वीकार नही किया जिसने वैदिक परपरा को नकारा हो। भारत में बौद्ध धर्म के असफल होने के कारणों मे सभवत कुछ

य भी हैं :

1. वेदों की पूर्ण अवहेलना तथा प्राचीन धर्म और सभ्यता से सामंजस्य बिठाने में असफलता। शायद इसीलिए कट्टर हिंदुओं ने बौद्ध जनों को 'नास्तिक वेद निंदक' की संज्ञा दी।
2. ब्राह्मण मनीषा से किसी भी प्रकार का समझौता न कर पाने में असफलता। बौद्ध धर्म के उत्थान के युग में अनेक निम्न जातियों जैसे नाग, वणिक, हूण तथा जाटो आदि आगे बढ़ीं। इससे उच्च वर्णों, विशेषकर ब्राह्मणों को बहुत क्रोध हुआ। कालान्तर में बौद्धों ने भी पुराण और उपपुराणों के देवी-देवताओं को किंचित परिवर्तन के साथ अपनी देव वीथी में स्थान दिया, किंतु उन्होंने कभी भी वेद अथवा वैदिक संस्कृति से कोई सामंजस्य बनाने की चेष्टा नहीं की। बौद्धों ने पौराणिक देवी-देवताओं को स्वीकार कर लोगों का मन जीतने की चेष्टा की। आर्यों ने अनार्य देवी-देवताओं को भी स्वीकारा और उन्हें अपनी देव वीथी में आर्य देवताओं का ही स्थान दिया। किंतु वैदिक संस्कृति से तालमेल न बना पाने के कारण, बौद्ध जन, उच्च वर्णों द्वारा उपेक्षित हो गए। बौद्ध धर्म के प्रसार से पहले हिन्दू समाज का उच्च वर्ण, वेद और वैदिक संस्कृति का पालक था तथा निम्न वर्ण के साधारण जन अपने-अपने मनचाहे देवी-देवताओं की उपासना करते थे। इन बहुसंख्यक देवी-देवताओं के बारे में पुराण और उपपुराणों में बहुत विशद् वर्णन है। निस्संदेह बौद्ध जन निम्नवर्ण के लोगों को अपनी तरफ मिलाने में सफल हुए। किंतु निम्न वर्णों से आने वाले ये लोग संस्कृति और बौद्धिकता में उच्च वर्णों की समानता नहीं कर पाए। इस प्रकार ब्राह्मणों ने अपनी बौद्धिक श्रेष्ठता से बौद्ध मतावलम्बियों को ऊपर नहीं उठने दिया।

यदि बौद्ध मतानुयायी क्षत्रियों की शक्ति की रक्षा करने में ध्यान लगाते, विहार निर्माण में उतनी उत्सुकता न दिखाते व श्रमण भिक्षुओं की संख्या बढ़ाने में अंधाधुंध न जुटते तो निश्चय ही उनका समाज पर वर्चस्व बना रहता और ब्राह्मण धर्म की पुनर्स्थापना इतनी सहज न होती। इस प्रकार बौद्धों तथा हिंदुओं के झगड़ों ने भारतीय राष्ट्र की शक्ति क्षीण की। ब्राह्मण धर्म के अभ्युदय के साथ ही जाति प्रथा उभरी। जाति प्रथा के कारण समाज चेतना तथा राष्ट्रवाद, बाढ़ में तिनके की तरह बह गए। बाद में हूण और जाटों जैसी वीर जातियां, जिन्होंने बौद्ध धर्म को शक्ति प्रदान की थी, वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत बहुत नीचे चली गईं। अतः समाज अथवा देश रक्षा के प्रति उनकी कोई रुचि नहीं रही। सम्भवतः यह भी एक कारण था कि मुसलमानों की जीत इतनी आसानी से सम्भव हो सकी।

महात्मा बुद्ध के पूर्व की भारतीय सभ्यता मुख्यतः ब्राह्मण सभ्यता थी।

बौद्ध मतानुयायियों ने ब्राह्मण सभ्यता के प्रभाव, उसकी गहराई तथा उसके विस्तार को ठीक से नहीं समझा। जिन देशों में भी बौद्ध धर्म स्थायी हो सका वहां कहीं भी ब्राह्मण सभ्यता के प्रभाव, उसकी गहराई तथा उसके विस्तार को ठीक से नहीं समझा गया। जिन देशों में भी बौद्ध धर्म स्थायी हो सका, वहां कहीं भी ब्राह्मणों जैसे प्रबुद्ध और प्रभुत्वशाली वर्ग के लोग नहीं थे। यदि ऐसा होता तो निश्चय ही बौद्ध धर्म को उस प्रबुद्ध तथा प्रभावशाली विचारधारा से समझौता करना पड़ता। महाभारत, रामायण, पुराण तथा व्रज साहित्य से स्पष्ट होता है कि ब्राह्मण वर्ग अपनी चतुराई से समाज में अपना

प्रफुल्ल स्थापित किए हुए था।

अंग्रेजों के आगमन से पहले के बांग्ला साहित्य को देखने से स्पष्ट होता है कि उस समय यह साहित्य केवल उच्च वर्णों तक ही सीमित नहीं था। दिनेश बाबू की बंग भाषा और साहित्य (दिनेश चंद्र सेन-संपादक) कृति इस तथ्य को और अधिक स्पष्ट करती है। अनेक लोगों ने जो तथाकथित निम्न जातियों के थे उन्होंने भी बांग्ला साहित्य को समृद्ध बनाया। इससे प्रमाणित होता है कि उस समय साहित्य और समाज के बीच एक जीवंत संपर्क सूत्र था। ब्रिटिश काल में साहित्य प्रेमी अधिकतर उच्च वर्ण के लोग ही थे और अधिकांशत वे अंग्रेजी में ही शिक्षित थे। आज की बांग्ला भाषा और साहित्य फिरंगी बंगाली साहित्य है। यही कारण है कि यह साहित्य मुट्ठी भर अंग्रेजीपरस्त बंगालियों के हाथ में है। इस साहित्य को लोकमानस•ने स्वीकार नहीं किया और न ही इसमें जन सामान्य की आकांक्षाओं का चित्रण प्राप्त होता है। यही कारण है कि वर्तमान बंगाली फिरंगी साहित्य बहुत सतही और एक प्रकार से सत्य से कटा हुआ सा लगता है। इसका जीवन से कोई सीधा और सच्चा संबंध नहीं है। या यों कहिए कि यह समाज से पूरी तरह से कटा हुआ है। समाज तथा साहित्य के बीच का जीवंत सूत्र टूटा हुआ है। अंग्रेजी के प्रभाव से टूटे इस सूत्र को पुन जोड़ने की आवश्यकता है। साहित्य को पुन आह्लाद दुख आकांक्षाओं और विचारों को अपने में स्थान देना होगा। उसमें समकालीन समाज के गुण और अवगुण दोनों को स्थान मिलना चाहिए। यह होने पर ही हमारा साहित्य जीवंत बनेगा और बिना किसी जाति वर्ण विभेद के सभी लोग उस साहित्य के सौंदर्य की उनकी गरिमा की प्रशंसा कर सकेंगे।

मानुषेर भाषण तथा मंगलचंडी आदि कथा प्रसंगों ने जब साहित्य में स्थान पाया तो जनता ने उसे सराहा। इसी प्रकार आधुनिक विषयों पर भी लिखा जाना चाहिए तथा उन्हें जनसमूह में प्रचलित करना चाहिए। इस दृष्टिकोण से मालदा जिले में प्रचलित गंभीर संगीत एक अच्छा मार्गदर्शक अथवा दिशा निर्देशक बिंदु हो सकता है।

अफ्रीका महाद्वीप में आजकल केवल ईसाई धर्म तथा इस्लाम धर्म का प्रचलन है। हिंदू धर्म का प्रचलन वहां क्यों नहीं किया जा सकता? भगिनी निवेदिता ने कहा है कि हिंदू धर्म को आक्रामक होने की आवश्यकता है। स्वामी विवेकानंद का भी यही विचार था और इसी कारण उन्होंने यूरोप और अमरीका में धर्मोपदेश किया। यदि हिंदू धर्म का संदेश यूरोप तथा अमरीका में किया जाए तो वहां के लोगों में हिंदुओं तथा भारतीय दर्शन की समझ पैदा हो सकती है और साथ ही वे भारतीय प्रज्ञा की गरिमा से अवगत हो सकते हैं। यह भी संभव है कि पाश्चात्य दर्शन की विचारधारा भी इससे प्रभावित हुए बिना न रहे। किंतु वहां के लोग हिंदू धर्म कभी नहीं स्वीकारेंगे। लेकिन यदि हिंदू धर्म का प्रचार अफ्रीका में हो तो वहां इसकी पूरी संभावना है कि अफ्रीका के लोग हजारों की संख्या में इसे स्वीकार कर सकते हैं।

प्रश्न उठ सकता है कि इससे हमें क्या मिलेगा? पहली बात तो यह है कि सत्य के प्रचार से जो प्राप्त होता है वह तो मिलेगा ही दूसरे अफ्रीका के लोग जो अभी सभ्य नहीं हुए हैं अथवा केवल अर्धसभ्य हैं वे हिंदू धर्म तथा सभ्यता के प्रभाव से पूर्ण सभ्य बन सकेंगे। तीसरे हिंदू धर्म आक्रामक होने पर नव स्फूर्ति प्राप्त करेगा और

एक अन्य देश में प्रचलित हो सके इसके लिए निश्चय ही अपनी बहुत कुछ बुराइयों, मिथ्याचार आदि को छोड़ने के लिए विवश होगा। दुनिया के अन्य देशों में भी भारत का मान बढ़ेगा। यदि 2 लाख अफ्रीकावासी हिंदू धर्म अपनाते हैं तो निश्चयरूपेण भारतीय हिंदुओं की ताकत अफ्रीका में बढ़ेगी। यदि भारत विश्व में एक शक्ति के रूप में उभरना चाहता है तो हिंदू धर्म का प्रचार उस कार्य में भी सहायक होगा। एशिया के जिन देशों में इस्लाम धर्म प्रमुख है, उन्हें छोड़कर भारत ने ही अन्य स्थानों में धर्म तथा सभ्यता का प्रचार तथा प्रसार करने की चेष्टा की है तो फिर अफ्रीका के संबंध में ही हमें क्यों दुविधा होनी चाहिए?

जातीय संघर्षों के कारण अफ्रीका निवासी भविष्य में ईसाई धर्म सहज ही स्वीकार नहीं करेंगे। क्योंकि ईसाई धर्म स्वीकार करने के बाद लोग अधिकतर राष्ट्रद्रोही से हो जाते हैं और वे विदेशी विचारों का अनुकरण करने लगते हैं। इसलिए यदि अफ्रीका निवासी किसी अन्य धर्म को नहीं स्वीकारेंगे तो अंततः उन्हें इस्लाम धर्म स्वीकार करना पड़ेगा। इस्लाम धारण करने से भी उन्हें लाभ होगा। वे विदेशी विचारों के आक्रमण से बचेंगे और साथ ही स्वयं अधिक शक्तिशाली और संगठित रूप से उभर सकेंगे।

दूसरे देशों के लोग हिंदू धर्म को किस प्रकार स्वीकार करते हैं और उससे उनके जीवन में क्या सुधार आता है, यह देखना वस्तुतः एक अद्भुत प्रयोग के रूप में बहुत सुखकर होगा।

5.5.26

प्राचीन काल से ही प्रयाग से पूर्व की ओर स्थित प्रदेशों की संस्कृति अपने आप में अलग रही है। यद्यपि यह संस्कृति आर्य वैदिक संस्कृति से प्रभावित हुई है तथापि उसकी अपनी विशिष्टता है। प्रयाग से पश्चिम की ओर अवस्थित प्रदेश ब्राह्मण धर्म का गढ़ रहा है। किंतु प्रयाग से पूर्व की ओर के स्थानों में उदारवादी विचारों की प्रधानता रही है। इस प्रदेश को पूर्ण रूप से ब्राह्मण धर्म के अंतर्गत लाने के विचार से अनेक प्रयास हुए। इस हेतु वेदों के ज्ञाता मांगिक ब्राह्मण को पश्चिम से पूर्व के प्रदेशों में भेजा गया, किंतु इस पूर्वांचल ने वैदिक धर्म को पूर्णरूपेण कभी नहीं स्वीकारा और यहां पर जाति व्यवस्था भी उतनी कठोर नहीं रही।

इसी प्रदेश में ब्राह्मण धर्म के प्रतिद्वंद्वी बौद्ध, जैन तथा बंगाल में वैष्णव धर्मों का उदय हुआ। इन धार्मिक आंदोलनों के प्रभाव से कालांतर में इस प्रदेश में ब्राह्मण धर्म का प्रभाव काफी हद तक घटा।

इस संस्कृति का केंद्र प्रारंभ में मगध अथवा मिथिला अंचल बना, जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी। संपूर्ण बौद्ध काल में मगध सत्ता सर्वोपरि रही। जब मगध की सत्ता घटी तो संस्कृति का केंद्र भी मगध से हट कर गौड़ प्रदेश चला गया। किंतु अपनी सत्ता में ह्रास होने के बाद भी मगध बहुत समय तक संस्कृति का केंद्र बना रहा। कुछ समय पहले तक यदि किसी को संस्कृत भाषा तथा शास्त्रों का अध्ययन करना होता था तो उसे मिथिला जाना आवश्यक होता था। कालांतर में नव्यन्याय दर्शन से नवद्वीप को प्रमुखता मिली। यह ऐतिहासिक शोध का विषय हो सकता है कि मगध की संस्कृति का पराभव क्यों और कैसे हुआ। जो भी कारण रहे हों किंतु एक बात तो साधारण रूप से समझ में आती है कि जो लोग संस्कृति के प्रचारक थे, पोषक थे, वही समाप्त हो रहे थे।

उनकी समाप्ति के साथ ही मगध की प्रमुखता भी समाप्त हुई और उसकी सप्रभुता का अत हुआ। उत्तर के लोगों के लिए मगध वस्तुत: पूर्वांचल के लिए प्रवेश द्वार था। अत: जो भी पूर्वांचल पर अपनी पताका फहराना चाहता थ उसे मगध से लोहा लेना पडता था। मगध तथा उत्तरी क्षेत्रों के लोगों के बीच अनेक युद्ध हुए क्योंकि उत्तर के लोग ब्राह्मण धर्म का प्रचार और प्रसार पूर्वांचल में करना चाहते थे। उत्तर बौद्ध काल में जब आदि शकराचार्य ने ब्राह्मण धर्म का पुनर्प्रतिष्ठा की तो बौद्ध भिक्षुओं तथा श्रवणों को बहुत कष्ट झेलने पडे। इस युग में मगध के अनेक बुद्धिमान तथा कुशल जनों की समाप्ति हो गई। बाद में इस्लाम के प्रभुत्व काल में मगध में बहुत राजनीतिक उथल पुथल हुई। इससे मगध की जनसख्या पर विपरीत प्रभाव पड़ा। कारण उत्तर-पश्चिम से अनक आर्य जातिया तथा दक्षिण से अनेक आदिवासी जन आकर मगध में बस गए। इन्हीं कारणों से आज के बिहार में प्राचीन मागधी सस्कृति को ढूढ पाना दुष्कर है।

गौड बहुत दिनों तक सस्कृति का केंद्र रहा। बाद में अनेक अन्य उपकेंद्र सस्कृति के क्षेत्र में विकसित हुए जैसे कि विक्रमपुर, चद्रद्वीप, नवद्वीप, कुलीनग्राम, सप्तग्राम तथा ताम्रलिप्त इत्यादि। इस बीच प्राग्ज्योतिषपुर भी सस्कृति का एक केंद्र बन गया और इसी प्रकार कलिग भी। नवद्वीप की तरह ही पुरुषोत्तवाम तीर्थ ने भी सस्कृति के क्षेत्र में बडी प्रसिद्धि पाई। जब गौड पर मुसलमानों का आधिपत्य हुआ, उस समय कलिग एक स्वतत्र राज्य था। कलिग के राजा ने गौड पर हमला किया और वहा के मुसलमान शासक को पराजित किया।

पव गौड की सस्कृति मूलत: एक ही थी। वह क्या थी? वस्तुत: यह गौडीय सस्कृति, तत्र, वैष्णव मत, नव्यन्याय तथा वैदिक सस्कृति का ही एक समन्वित रूप थी। वर्तमान में इस सस्कृति का केंद्र बगाल है। किंतु भविष्य में पता नहीं, हो सकता है इसका केंद्र जगन्नाथ पुरी अथवा गुवाहाटी हो?

जो लोग सस्कृति की श्रेष्ठता में विश्वास करते हैं, उन्हें इस सबध में ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अनुसधान करना उचित होगा। उनके लिए पाटलिपुत्र गौड नवद्वीप, पुरुषोत्तवाम, कामाख्या इत्यादि तीर्थ धामों से अधिक पवित्र हैं। इसीलिए सभी को इन पाचों स्थानों की तीर्थयात्रा करनी चाहिए। 9 5 26

साम्राज्य कैसे स्थापित होता है? वे कौन से गुण हैं जिनसे एक राष्ट्र अपनी सकीर्ण सीमाओं से बाहर आकर विश्व में अपने साहस, अपने वीरत्व और अपने ज्ञान से अपने लिए एक स्थान बनाता है। चरित्र में सबसे बडी विशेषता होती है--साहसिक कार्यों के प्रति अनुराग। साहस से काम लेने वाले व्यक्ति सुदूर देशों की यात्रा कर सकते हैं और अपने आप को स्थापित कर सकते हैं। इस विशेषता में अनेक दूसरे गुण सहज ही सम्मिलित हो जाते हैं। पश्चिमी देश धन के पीछे दीवाने हैं। उनका बस एक ही उद्देश्य है कि सुदूर स्थानों की यात्रा करें, अपने साम्राज्य स्थापित करें तथा इस प्रकार अपने व्यापार को समृद्ध बनाए। अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए मुस्लिम देशों को तथा बौद्ध मतावलबियों को भी सुदूर स्थानों की यात्रा करने की प्रेरणा मिली थी। बौद्धों ने अपने धर्म का प्रचार अहिसक ढग से तथा अपने चरित्र और ज्ञान के बल पर किया। इस कार्य में वे सफल भी हुए। उन्हें न तो अपना साम्राज्य स्थापित करने की इच्छा

थी और न ही उन्होंने इस प्रकार के साम्राज्य बनाए।

उनका उद्देश्य था--सांस्कृतिक विजय। बाद में ईसाई प्रचारक भी अपने धर्म के प्रचार के लिए दूर दराज के देशों में गए। निश्चित रूप से इन ईसाई प्रचारकों का राजनीति से सीधा अथवा प्रत्यक्ष संबंध रहा। मुस्लिम देशों ने अपने धर्म ग्रंथ कुरान के अनुसार हज़रत मुहम्मद साहब के उपदेशों का प्रचार तथा इस्लाम धर्म का प्रचार अपनी शक्ति के बल पर किया। इसलिए उन्हें अपने धर्म प्रसार के लिए साम्राज्य की स्थापना करनी पड़ी। इस्लाम धर्म जनता के लौकिक जीवन तथा उसके सुखों की, बौद्ध की भाँति, उपेक्षा नहीं करता है। इसलिए धन लिप्सा से ओत-प्रोत, आनंद चाहने वाले लोगों तथा शक्तिशाली, साहसी और जोखिम उठाने वाले देशों ने इस्लाम धर्म सहज ही स्वीकार किया और इस प्रकार इन साम्राज्यों के सहयोग से इस्लाम धर्म खूब बढ़ा और पनपा।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए भी यह तथ्य सर्वविदित है कि साहस के प्रति अनुराग अपने आप में वह विशिष्ट गुण है जो साम्राज्य की स्थापना में सहायक होता है। केवल साम्राज्य स्थापना में ही नहीं वस्तुतः आत्मरक्षा के लिए भी राष्ट्र को आक्रामक होना चाहिए। यदि किसी राष्ट्र में साहसिक कार्मों के प्रति लगन तथा जोखिम उठाने की क्षमता नहीं है, तो वह आक्रामक नहीं हो सकता है।

तो इस प्रकार हम यह देखते हैं कि बंगालियों में अपितु सभी भारतीयों के हृदय में साहसिक कार्यों के प्रति अनुराग उत्पन्न होना चाहिए। इस भावना को आत्मसात करने के लिए एक-एक पैसा बचाने और रोकड़े के हिसाब-किताब रखने की आवश्यकता नहीं है। व्यक्ति को लाभ अथवा हानि को चिंता किए बिना साहसी होना चाहिए। जो लोग कलकत्ता से पेशावर अथवा कलकत्ता से रंगून जंगल, पर्वत, नदियां पार करते हुए पैदल यात्रा करते हैं या करना चाहते हैं, हमें उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। जो लोग एक बार में 20-30 मील की तैराकी प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं अथवा जो स्वयं पतवार चलाकर नाव द्वारा लंबी यात्रा करना चाहते हैं, हमें उनकी सहायता करनी चाहिए। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति कलकत्ता से कश्मीर, मोटरकार द्वारा जाना चाहता है तो उसका भी उत्साहवर्धन होना चाहिए। हमें बंगालियों को कठिन शारीरिक परिश्रम करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। कठिन शारीरिक परिश्रम से ही वीरों की रचना होती है। जब साहसी वीर देश में होते हैं तो एक नया राष्ट्र अस्तित्व में आता है। श्री पराग रंजन डे ने कलकत्ता से रंगून तक की पैदल यात्रा की। न जाने कितने जंगल और पर्वत-श्रेणियों के बीच से गुजरते हुए अपने जीवन को संकट में डालते हुए उन्होंने यह काम पूरा किया। इस कार्य के लिए प्रत्येक बंगाली को उन्हें आदर देना चाहिए। क्या ऐसा कोई बंगाली है, जो उनके बारे में यह सब पढ़कर गर्व का अनुभव नहीं करता?

इसके अतिरिक्त पूरे राष्ट्र में लोगों को खेल-कूद और शारीरिक व्यायामों में उत्तरोत्तर उन्नति करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। कुश्ती, लाठी चलाना, तलवार का खेल और हा-डु-डु जैसे भारतीय खेलों को भी महत्व मिलना चाहिए। हमें सभी प्रकार के खेल-कूद और शारीरिक कुशलता के करतबों में उन्नति क्यों नहीं करनी चाहिए? अंग्रेज़ों को उन्हीं के खेलों में हराना सचमुच बहुत बड़ी गरिमा की बात होगी। इसलिए हमें टेनिस, फुटबाल, क्रिकेट, हॉकी तथा बॉक्सिंग इत्यादि में भी अपना स्तर उत्तरोत्तर बढ़ाना चाहिए। हमें यह

भी ध्यान में रखना चाहिए कि ये सभी खेल अब अंतर्राष्ट्रीय बन गए हैं। इसलिए इनको खेलने से हमारी राष्ट्रीय एकात्मकता को कोई खतरा नहीं है।

यही कुछ कर सकने की भावना ज्ञान के क्षेत्र में भी आवश्यक है। मध्य एशिया में प्राचीन बौद्ध सभ्यता के अनेक अवशेष प्रकाश में आ रहे हैं। इस प्रकार के पुरातत्व उत्खनन के काम में जर्मनी, इंग्लैंड, रूस, फ्रांस, बेल्जियम और यहां तक कि जापान तक ने बहुत नाम कमाया है (मॉडर्न रिव्यू, जून 1926)। लेकिन इस क्षेत्र में भारत कहां है? जहां बौद्ध धर्म का उदय हुआ था। हमारी तो यह धारणा है--'इन सब प्रकार की बेकार की चीजों में पड़कर अपने आराम की जिंदगी क्यों खराब करें? मध्य एशिया के रेगिस्तानों में घूमने से क्या लाभ?' तथ्य की बात यह है कि हमें ज्ञान के प्रति आसक्ति है ही नहीं। यदि ज्ञान के प्रति आदमी में लगाव हो तो आदमी उसके लिए पागल हो उठता है। हानि-लाभ की चिंता किए बिना, अपने दुख और सुख की चिंता किए बिना वह ज्ञान प्राप्ति के लिए धरती का कोना-कोना नापता फिरता है। यदि आवश्यक हुआ तो हर प्रकार का श्रम करने के लिए तैयार रहता है। खतरों का सामना करता है, भयंकर जीव-जंतुओं से भरे हुए सघन वनों और सूखे मरुस्थलों को पार करता है, जहां जीवन का निर्वाह भी असंभव होता है। जिसमें ज्ञान की प्यास जाग उठे वह बुढ़ापे में भी घर के सुख सामान छोड़कर शांति और सुख के वातावरण से दूर टेनिसन के यूलिसिस की तरह अज्ञात स्थानों की खोज में भयानक उत्ताल सागर तरंगों का भी आह्वान करता है। टेनिसन या यूलिसिस कहता है--

'मैं यात्रा में विराम नहीं कर सकता।
मैं रसास्वादन करूंगा जीवन के अंतिम छोर तक।
बुढ़ापे में भी यह गरिमा होती है, अपनी श्रम साध्यता होती है।
मृत्यु सब कुछ समाप्त कर देती है, किंतु कुछ और भी मूल्य हैं।
कुछ और भी काम हैं, जो अभी भी करणीय हैं।
आओ मेरे दोस्तो। एक नई दुनिया की खोज करने के लिए
अभी भी देर नहीं हुई है।
आओ आगे बढ़ो और मुस्कुराओ।
नाव को आगे बढ़ाओ। सूर्यास्त के उस पार, चमकते पश्चिमी नक्षत्रों के पार
तब तक, जब तक कि मैं जीवित हूं'

इस विश्व में महान बनने के लिए ऐसे लोगों की आवश्यकता है जैसे कि ज्ञान की प्राप्ति के लिए जिज्ञासु की, जो लाभ और हानि का ही लेखा-जोखा नहीं करते हैं। जिनमें साहस के प्रति लगाव हो, जिनमें विश्व के प्रति प्रेम करने की भावना हो ऐसे लोग उस परम सत्ता को सौंदर्य, सुगंध, ध्वनि और स्पर्श के माध्यम से प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं। वे लोग जो कि अपनी आत्मा के भीतर अथवा बाहर दुनिया में बराबर ज्ञान की खोज में लगे रहते हैं और जो जानते हैं कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं है, वे लोग इस विश्व में वस्तुतः बुद्धिमान होते हैं, प्रसन्न होते हैं और आत्मविश्वासी होते हैं।

समाप्त

10 5 1926

विद्यार्थीजन आजकल दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक बीमारी के शिकार होते नजर आते हैं। कभी पेट ठीक नही रहता, नींद नही आती, कद में भी छोटे हो रहे हैं और उनमें जीवनता का अभाव दिखता है। क्या यह बात सही है? सभवत: हा। क्या हमारे छात्र समुदाय में राष्ट्रीयता की वह भावना जो आज से 10 वर्ष पहले विद्यमान थी, आज भी है? इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है। लेकिन यह स्पष्ट हो चला है कि आजकल विद्यार्थी क्रमश: 'अच्छे लडके' बन रहे हैं। 'अच्छे लडके' कोई उपलब्धि नहीं प्राप्त करते। हा, जो पढने में अच्छे होते हैं, वे अतत: समृद्धि पाते हैं। किंतु ध्येय के रूप में यह बिल्कुल गलत है। दूसरी बात छात्रानाम् अध्ययनम् तप: (विद्यार्थियों के लिए स्वाध्याय ही तप है)। यह अपने आप में पूरा सच नहीं है, आधा सच है। विद्यार्थी का परम कर्तव्य आदर्श व्यक्ति होना है। अधिक से अधिक शिक्षा प्राप्त करना अच्छा है और इस सदर्भ में स्वाध्याय को, शिक्षा को तपस्या भी माना जा सकता है। किंतु यदि स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, चरित्र गठन नहीं हुआ है, समाज सेवा की अथवा राष्ट्रीय काम में कोई रुचि नहीं है तो विद्यार्थी जीवन कोई अर्थ नहीं रखता। इस विद्यार्थी व्यक्तित्व को सपूर्ण मानवीय गुणों से समन्वित नहीं माना जा सकता।

जिन लोगों ने परीक्षा में सर्वोच्च स्थान पाने के लिए अपने शरीर को स्वाहा कर दिया, अपनी सारी शक्ति उसी में नष्ट कर दी, ऐसे लोगों से क्या आप कुछ अपेक्षा कर सकते हैं? युवजनों को पूर्ण स्वास्थ्य, सुगठित शरीर, पवित्र चरित्र तथा शक्ति और ओज से भरपूर होते हुए जीवन में प्रवेश करना चाहिए। उनकी शिक्षा विश्वविद्यालय में समाप्त नहीं हो जाती। वस्तुत: वहा तो यह शुरू होती है। आत्मशिक्षण रुकना नहीं चाहिए। यह तो पूरे जीवन भर समस्त क्रियाकलापों के साथ चलते रहना चाहिए। इस प्रकार जो लोग विश्वविद्यालय की डिग्री को ही शिक्षा का सबसे बडा ध्येय मानते हैं, परीक्षाओं में उच्च स्थान पाना ही उनकी महत्वाकाक्षा होती है अथवा छात्रवृत्ति, मडल आदि पाने पर जिनकी निगाह लगी रहती है, वह शिक्षा अतत: अपने ध्येय में पूर्ण नहीं होती। उनका मूल्य भी कोई विशेष नहीं होता। और ऐसे व्यक्ति स्वय अपने आप को निरर्थक पाते हैं। शिक्षा से तो मनुष्य का पूर्ण व्यक्तित्व पुष्पित, पल्लवित होना चाहिए।

शरीर क्षीण होता है तो ऐसे लगता है कि जैसे जीवन से ओज ही समाप्त हो गया। निर्धनता के कारण लोगों में बेचारगी बढ रही है। उच्च वर्ग के लोगों तथा उच्च पदस्थ व्यक्तियों के आचरण से यह स्थिति और भी दयनीय होती जाती है। मैंने स्वय यूरोप में विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय परिसर में इधर से उधर प्रसन्न बदन, आह्लाद भरी मुद्रा में विचरण करते देखा है। उनमें उछाह होता है और उत्साह फूटता रहता है। यह बात वहा की महिलाओं के प्रति भी लागू होती है। उनके मुख पर प्रसन्नता का भाव होता है और ऐसे लगता है कि जैसे वे शक्ति की स्रोत हों। उन्हें किसी की कोई परवाह नहीं होती और जीवन सघर्ष से उन्हें कोई भय नहीं होता। लेकिन हमारा क्या हाल है? हम आज भूखे हैं, हमारा स्वास्थ्य खराब है, शरीर में न शक्ति है न उत्साह, प्रसन्न भाव का तो पता ही नहीं लगता। हमारे चेहरों पर दुख की कालिमा हर समय उभरी रहती है। हमारे विद्यार्थी धीरे-धीरे 'भद्रलोक' बनते जा रहे हैं। आज के 'भद्रलोक' विद्यार्थी धीरे-धीरे वह सभी चीजें छोड रहे हैं, जो उन्हें करनी चाहिए। न वे नदी में तैरते हैं, न पेड पर चढकर फल तोडकर खाते हैं, न इधर-उधर पिकनिक पर जाते हैं या 20-40

मील की दौड़ लगाते हैं। लाठी चलाना और कुश्ती से तो उनका कोई नाता ही नहीं रहा। मैं कहता हूं यदि तुममें आनंद भाव नहीं रहा तो शेष क्या रहा? आनंद सृष्टि का प्रारंभ बिंदु है। इसी की प्रेरणा से अच्छे क्रियाकलाप जन्म लेते हैं। इसी कारण मैं महाकवि रविंद्रनाथ की पंक्तियां उद्धरित करता हूं

'समस्त तिमिर भेद करिया देखिते हैबे
इक पूर्ण ज्योतिर्मय अनंत भुवने

'अंधकार को चीरती हुई पूर्ण प्रकाशित हमारी एक दृष्टि होनी चाहिए, जो परम सत्ता के प्रति समर्पित हो।' समाज जिन्हें 'अच्छे लड़के' मानता है—वस्तुतः वे किसी काम के नहीं होते।'

वे न इस लोकजीवन में कुछ कर पाते हैं और न ही अगले जन्म में। वे भेड़ की तरह अपना जीवन पुरानी परिपाटी में चलते हुए बिता देते हैं। इस दुरूह जीवन में नयेपन का कोई स्वाद नहीं होता। न कोई मुखर हास्य बिखरता है और न कोई भावावेग में आत्मत्याग की प्रेरणा जन्म लेती है। इनके लिए समस्त जीवन एक भार है और वे इतने नपुंसक हो गए हैं कि वे इस भार को अपने कंधों से उतार कर फेंकने में भी सक्षम नहीं हैं। जब तक ये तथाकथित 'अच्छे लड़के' समाप्त नहीं होते तब तक बंगाली वस्तुतः व्यक्ति नहीं बन सकते—भारत में कोई नया राष्ट्र जन्म नहीं ले सकता। प्रत्येक व्यक्ति को नए को आदर देना चाहिए। स्नेह देना चाहिए। अनजाने के प्रति चाहत होनी चाहिए। हर व्यक्ति को स्वतंत्रता से अपनी बात कहने की इच्छा होनी चाहिए तथा खुले आसमान की तरह विस्तृत दृष्टि सीमा की आकांक्षा होनी चाहिए। जीवन पथ की सदियों पुरानी चट्टानों को उसे बाधाओं की तरह दूर हटाना ही होगा। बंगाली युवकों को और विद्यार्थियों को एक बार पुनः मनमौजी होना सीखना पड़ेगा। क्या हमने कभी उन बालकों की आत्मिक विशेषताओं का विश्लेषण किया है, जो कि अपने माता पिता द्वारा निकाल दिए जाते हैं अथवा परित्यक्त होते हैं। इस प्रकार के बालकों की अवहेलना का ही यह फल है कि आज हमारा समाज निर्जीव और हतप्रभ है। वे युयुत्सु युवक जिन्हें अवसर नहीं मिलते, वे विवश होकर शरारती तत्व बन जाते हैं। क्या हम नहीं जानते कि ऐसे लड़कों ने इतिहास में दूसरे-देशों में अनेक राज्य तक स्थापित किए हैं। इंग्लैंड का लॉर्ड क्लाइव क्या था? क्या वह कोई 'अच्छा लड़का' था? या इसी प्रकार का कोई सनकी? अपने ही देश में शिवाजी क्या थे? अपने बंगाल के अनेक जमींदारों और महाराजाओं के पूर्वजों का इतिहास उठाकर देखिए—क्या थे वे लोग? फ्रांसिस ड्रेक, जिसे इंग्लैंड ने नाइट की पदवी दी और अपने यहां के परम आदरणीय व्यक्तियों की श्रेणी में रखा, वह एक साधारण लुटेरा था। हां, उसने ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना में अवश्य सहयोग दिया था। आज यदि अपने देश में मरघट की शांति नहीं है तो शायद इसलिए की अपने यहां अभी भी लॉर्ड क्लाइव, फ्रांसिस ड्रेक और शिवाजी जैसे मनमौजी व्यक्ति विद्यमान हैं।

सन् 1926 में कैंब्रिज में ब्रिटिश विद्यार्थियों की एक सभा हुई थी। विचार के लिए मुख्य विषय था कि विद्यार्थियों का क्या काम है अथवा विद्यार्थियों के क्या कर्तव्य हैं? विचार विमर्श के दौरान ऑक्सफोर्ड के बैलियोल कॉलेज के प्रोफेसर श्री कैनेथ बेल ने

कहा–मेरे विचार से विद्यार्थियों के सामने अनेक अवसर हैं जिन्हें पूरे साहस के साथ उन्हें स्वीकारना चाहिए। मेरा यह निश्चित विश्वास है कि हमें अपने जीवन को निरंतर और अत्यंत साहसपूर्ण लंबी यात्रा के रूप में लेना चाहिए। ये शब्द अक्षरशः सत्य हैं। लेकिन क्या कोई हमारे यहां ऐसा शिक्षक है जो इस प्रकार की बात कहे। साहस के प्रति लगाव अंग्रेजों के चरित्र का सबसे अच्छा पहलू है। इसी के अभाव के कारण हम एक राष्ट्र के रूप में अशक्त, बाधित, निर्जीव तथा कभी कभी अमानवीय भी हो जाते हैं। अज्ञात को प्यार करने की बात तो क्या कहें, हम तो उससे मृत्यु की तरह घबराते हैं। फलतः अज्ञात जो प्रसन्नता हमें प्रदान कर सकता है उससे हम वंचित रह जाते हैं। हममें कभी तीव्रता से अनजान के प्रति चाहत नहीं उमड़ता और जिसे हम जानते हैं, चाहे वह व्यक्ति हो, कोई चीज हो, या रास्ता हो हम उसे छोड़ नहीं पाते। यही कारण है कि नए के प्रति हममें प्रेरणा नहीं जगती और हम असमय ही वृद्ध हो जाते हैं। युवकोचित आकांक्षाएं जैसे कि अनजान देश घूमना, नए लोगों से मिलना, नई किताब पढ़ना, ये सब ऐसी चीजें हैं जिन्हें हमें अपने मृतप्राय राष्ट्र के लोगों में नवीन जीवन जगाने के लिए सजाना चाहिए।

अंग्रेजों ने हमें बताया कि उनके आगमन से पहले हमारे देश में न शांति थी, न सुरक्षा। और आज देश में जो अमन चैन है वह उनके कारण ही है। कहा जाता है कि अंग्रेजों की सबसे बड़ी देन शांति की स्थापना है 'पैक्स ब्रिटानिका'। इस बात को अनेक बार सुनकर हम इसमें विश्वास भी करने लगते हैं। पर क्या यह सच है कि भारत में उन्होंने शांति स्थापित की है अथवा मूर्च्छा। (ऊपर से देखने में दोनों एक से ही लगते हैं) वस्तुतः हम चारों तरफ से कानूनों से बंधे हैं और इस बंधन में जो कि मृत्यु को हर क्षण निकट खींच रहा है, हम अंतिम सांसें ले रहे हैं। वह आनन्द कहां है, वह आनंद कहां है जो अंग्रेजों के आगमन से पहले हमारे देश में था। किसी दूर देहात गांव में जाइए, पहाड़ के शिखर पर खड़े होइए, हिंद महासागर की उत्ताल तरंगों से अठखेलियां कीजिए, सघन वनों का भ्रमण कीजिए, चाहे जहां आप जाइए आपको ब्रिटिश शासन के प्रतिनिधि दैत्य के रूप में विद्यमान मिलेंगे। आप जानते हैं क्यों? इसलिए कि वह कानून की रक्षा कर रहे हैं। शायद इसीलिए पूरे भारत में एक हाथ जगह भी नहीं है जहां ब्रिटिश शासन के इन चौकीदारों की पैठ न हो। अंग्रेजों के आने के पहले यह बात न थी। सरकार ने हमारे हथियार हमारी भलाई के कारण ही हमसे छीन लिए। क्योंकि यदि हथियार हमारे पास होते तो हम आपस में ही लड़ते झगड़ते रहते। इसका यह फल हुआ कि आज हम गोली की आवाज सुनकर दहल जाते हैं और जब कोई चोर नंगा चाकू लेकर घुसता है तो हम अपने बीवी बच्चों को भगवान आसरे छोड़कर भाग खड़े होते हैं। डाकुओं के आक्रमण के सामने भी हमारी यही दशा होती है। हमने कुश्ती लड़ना, लाठी भांजना सभी कुछ छोड़ दिया है। कुछ तो पुलिस के भय से और कुछ अपने आप को भला आदमी कहलाने के लिए। समाज में जिनके पास आज शक्ति है, साहस है, जो भय रहित हैं। आज उनके पास गुंडा बनने के सिवा और कोई रास्ता नहीं है। आज जब कभी हम अपने देश भाइयों में उन गुणों को देखते हैं जिनके द्वारा युद्ध में विजय प्राप्त होती है, या वे आदर्श जो राष्ट्र को नई प्रेरणा देते हैं और हमें अपने राष्ट्र को, साम्राज्य को सुदृढ़ करने में सहायता करते हैं, हम तब भी इन अच्छे गुणों को

उपयोग नहीं कर पाते। नतीजतन, सारे देश में कब्रिस्तान की शांति है। हम सब भारतीय कोई जोखिम उठाना ही नहीं चाहते। एकदम शक्तिहीन हो गए हैं। आज अगर भारतीयों में चाहत हो और शक्ति भी हो तो भी वे अपनी शक्ति अथवा बुद्धि से एक राज्य तो क्या उसका एक हिस्सा मात्र भी स्थापित नहीं कर पाएंगे। यदि वे ऐसा करने की कोशिश भी करेंगे तो उन्हें जेल की हवा खानी पड़ेगी। आज उन्नति केवल वे लोग करते हैं जो नपुंसक हैं, गुलामवृत्ति के हैं और कायर हैं। यही कारण है कि हम आज जीवन का आनंद नहीं ले पाते। न हमारे पास प्रेरणा है और न रुचि। जीवन में रोमांस रहा ही नहीं। अब हमारे जीवन में कुछ अभूतपूर्व नहीं हो सकता। अब तो बस एक लंबी परंतु नीरस दिनचर्या है।

11 5 1926

भोगने मेरे पास न आना पड़े। किंतु तब कौन जानता था कि बंगाल के ऊपर ऐसा वज्र प्रहार होगा। बंगाल के ऊपर ही क्यों? वस्तुतः यह आघात तो समस्त देश के ऊपर भारी पड़ा था।

मैं अंतिम बार अलीपुर सेंट्रल जेल में उनसे मिला था। देशबंधु की हालत अच्छी नहीं थी। विश्राम के लिए वे कुछ दिनों के लिए शिमला गए थे। लेकिन जैसे ही उन्हें हम लोगों की गिरफ्तारी की खबर मिली, वे तत्काल कलकत्ता लौट आए। वे मुझे देखने दो बार अलीपुर सेंट्रल जेल आए। आखिरी बार उनसे भेंट तब हुई थी जब मेरी बदली बरहामपुर जेल में कर दी गई थी। भेंट के बाद मैंने उनके पैर छुए और कहा "शायद अब काफी दिन बाद भेंट हो!" "अरे नहीं" उन्होंने चिर-परिचित प्रसन्न शैली में उत्तर दिया था–"मैं तुम्हें बहुत जल्दी इस जेल से छुटकारा दिला रहा हूं।" कौन जानता था कि इस दिन के बाद इस धरती पर मैं उनसे पुनः न मिल सकूंगा। उस दिन के एक-एक शब्द का वजन मुझे याद है। उनकी बातों ने जो प्रभाव उस दिन छोड़ा वह मेरे मन पर सारी उम्र ताजा रहेगा। उस अंतिम भेंट की स्मृति मेरे जीवन की सबसे बड़ी निधि है।

अनेक लोगों ने देशबंधु के जनता पर अटूट प्रभाव के रहस्य को जानने का यत्न किया है। उनके एक अनुयायी के रूप में, एक बात की ओर मैं इंगित करना चाहूंगा–जो मेरी समझ में उनके इस प्रभाव का मुख्य कारण थी। मैंने स्वयं देखा है कि व्यक्तियों की स्वकीय कमियों तथा त्रुटियों के बावजूद वे उन्हें कितना प्यार करते थे। उनके हृदय में प्रेम का अथाह सागर था। इसी कारण वे लोगों की कमियों की ओर ध्यान नहीं देते थे। उन्हें प्रगाढ़ प्रेम से ओत-प्रोत रखते थे। वे अनायास उन लोगों को भी अपनी ओर आकृष्ट कर लेते थे जिन्हें हम साधारणतः अपने से दूर रखते हैं अथवा जिनसे हम घृणा करते हैं। वे हर वर्ग के लोगों को हृदय से चाहते थे। उनमें एसा आकर्षण था जैसा कि सागर के भवर में होता है। वे सभी को अपनी ओर खींचते थे। मैं अनेक ऐसे व्यक्तियों को जानता हू जो अक्षरशः उनके प्रेम के दास थे। जो उनकी विद्वता, वाक्‌पटुता अथवा उनकी त्यागवृत्ति से प्रभावित भी नहीं होते थे; वे भी उनके नेह-बंधन से अछूते नहीं रह पाते थे। उनके अनुयायी तथा सहकर्मी उनके परिजन बन जाते थे। देशबंधु उन सभी के लिए कुछ भी करने तथा त्यागने को सदा तत्पर रहते थे। अपना जीवन दूसरों के लिए अर्पण करो तो लोग तुम्हारे लिए सर्वस्व छोड़ने को सदा तैयार रहेंगे। यह बात देशबंधु के जीवन में साकार चरितार्थ होती थी। ऐसा कुछ भी नहीं था जो उनके अनुयायी उनके लिए करने को तैयार न रहते हों, वे उनके लिए सब कुछ अर्पण करने को तत्पर रहते थे।* कोई भी कष्ट उठाने को उनका मन रहता था और इस भाव में वे अपने जीवन की सार्थकता का अनुभव करते थे। यद्यपि इस हेतु जीवन होम करने का कोई अवसर नहीं होता था। देशबंधु अच्छी तरह जानते थे कि वे अपने अहिंसक अनुयायियों पर सदा भरोसा कर सकते हैं। मैं इस बात को अभिमान से कह सकता हू कि उनके जीवन में अंतिम दिन तक उनके अहिंसक अनुयायी, मन-कर्म-वचन से उनके आदेशों का पालन करते रहे और हर प्रकार के खतरों तथा मुसीबतों को बेहिचक

---

* तारकेश्वर सत्याग्रह में कांग्रेस के लिए काम करते हुए कुछ कार्यकर्ता अवश्य मरे थे।

प्रति निष्ठा अपने देश में कोई बात नही है। ये बात भारतवासियों ने पहली बार ढाई हजार वर्ष पहले भगवान बुद्ध से सीखी थी। आज भी निम्नाकित बौद्ध प्रार्थना सारे विश्व में गुजरित है .-

बुद्ध शरणम् गच्छामि
धम्म शरणम् गच्छामि
सघ शरणम् गच्छामि

वस्तुत, कोई भी काम हो, चाहे धार्मिक अथवा राजनैतिक बिना सगठन और दलीय अनुशासन के सभव नही हो सकता।

उनके विरुद्ध यह आरोप भी था कि वे राजनीति में ऐसे लोगो को भी साथ लेकर चलते थे जो न शिक्षित थे और न सुसस्कृत। सन् 1921 से अपने निधन तक देशबधु असख्य कार्यकर्ताओं के सपर्क में रहे। मुझे नहीं पता कि उन्होने कभी यह विचार भी कि वे आशिक्षित और असस्कृत हैं, जो भी हो उन्होंने कभी भी अपने व्यवहार में इस बात को झलकने नहीं दिया। वे अहम भाव से बहुत दूर थे और स्वभाव से बहुत नम्र। हो सकता है कि उन्होंने अपनी वास्तविक भावनाओं को छिपा कर रखा हो। मुझे एक घटना की अभी तक याद है। जेल से छूटने के बाद कलकत्ता के छात्रो ने एक बडी सभा में उनका अभिनदन किया। उस समय जो अभिनदन-पत्र पढा गया उसमें उनके हृदय और बुद्धि की बडी प्रशसा की गई। देश के लिए उनके अद्भुत त्याग की सराहना की गई। देश के युवजनों द्वारा इस अभिनदन से देशबधु अभिभूत हो गए। वे अपने चित्त से चिरस्फूर्त और चिरयुवा थे। यही कारण था कि युवाजनों की बात उनका हृदय सहज ही समझ लेता था। यही कारण था कि जब वे अभिनदन का उत्तर देने के लिए खडे हुए तो वे परम भाव विमुग्ध थे। अपने त्याग और दुखों की उन्होंने कोई चर्चा नही की और वे देश के युवाओं के त्याग की भूरि-भूरि प्रशसा करते रहे। भावावेग से उनका गला भर आया। बहुत देर वे चुपचाप खडे रहे उनकी आखों से निरतर अश्रुधारा बहती रही। युवाओ का नेता रोता रहा और उनके साथ युव जन भी रोते रहे।

मैं कल्पना नही कर सकता कि देशबधु अपने इन कार्यकर्ताओं और अनुयायियो को कैसे अयोग्य समझ सकते थे जिनके प्रति उनके मन में इतना स्नेह और सहानुभूति थी।

यह सत्य है कि जो लोग देशबधु के साथ काम कर रहे थे और जो आज भी उनके ध्येय और उनके बताए मार्ग पर चल रहे हैं, उन्हें अपनी विद्वत्ता और सस्कृति और समाज मे अपने स्थान के प्रति किसी प्रकार से अह भाव नही है। मेरी आशा है कि वे इस प्रकार विनम्र भाव से अपना काम करते रहेंगे।

देशबधुजी का लिखा हुआ अंतिम पत्र मुझे पटना से मिला था। यह पत्र मेरी अनुपम निधि है। उसमें उनका मानसिक त्रास स्पष्ट झलकता है जो वे अपने विश्वसनीय कार्यकर्ताओं के बडी सख्या में बदी होने पर झेल रहे थे। उनके दुख को वे ही लोग समझ सकते हैं जो उस उदारमना व्यक्तित्व के सपर्क में कभी आए हों। 1921 22 मे मुझे 8 महीने तक उनके साथ जेल में रहने का सुअवसर मिला। कुछ महीने तक हम लोग प्रेसीडेंसी जेल में थे, जहा हम अगल बगल की कोठरियों मे थे। शेष 6 महीने हम लोग अलीपुर सेंट्रल जेल में रहे जहाँ एक बडे हॉल मे हम तमाम और दूसरे मित्रों

बिना किसी ना नुकुर के कागजों पर हस्ताक्षर कर दिए। ऐसा कई बार हुआ कि उन्होंने अपनी पत्नी तथा बच्चों को बिना बताए, दूसरों के लिए कर्ज लिया और चुकाया।

मैंने अनेक ऐसे लोगों को देखा है जो उनकी बुराई करने में कभी चूकते न थे किंतु जरूरत पडने पर उन्हीं के पास पहुचते थे। एक बार मेरे सामने एक सज्जन उनके पास दो सौ रुपये मागने पहुचे। देशबधु ने कहा-"मेरे पास कुल छ सौ रुपये हैं–मैं दो सौ रुपये तुम्हें कैसे दे सकता हू?" किंतु वे सज्जन माने नही और देशबधु ने उन्हे दो सौ रुपये निकाल कर दे दिए। देशबधु उन्हीं दिनों जेल से छूटे थे।

जेल में साथ बिताए 8 महीनों में मुझे उन्हें निकट से जानने का अवसर मिला। लेकिन मैंने कभी उनके व्यवहार अथवा बोलने में किसी प्रकार की क्षुद्रता नहीं पाई। राजनीति के क्षेत्र में उनके अनेक प्रतिद्वद्वी थे किंतु उन्हें कभी किसी से कोई शिकायत नहीं रहती थी। बदले में हर समय जो भी उनके वश में होता, औरों के लिए करने को वे तत्पर रहते थे।

जेल में उनका अधिकाश समय अध्ययन में ही बीतता था। भारत की राष्ट्रीय समस्याओं पर उनका मन एक पुस्तक लिखने का था, इसी कारण उन्होंने राजनीति तथा अर्थशास्त्र पर ढेर सारी पुस्तकें खरीद रखी थीं। नोट्स आदि भी बना लिए थे किंतु जेल में रहते किताब पूरी नहीं कर सके थे। जेल से मुक्ति पाने पर वे फिर अविराम काम में लगे रहे और इस प्रकार पुस्तक लेखन का काम पूरा नही हो सका। उन दिनों मैं उनके साथ राजनीतिक तथा राष्ट्रीय समस्याओं पर बराबर चर्चा किया करता था। रूढ़िवादिता के वे कट्टर विरोधी थे, चाहे वह राजनीति हो, आर्थिक समस्या हो अथवा धर्म का क्षेत्र हो। उनका विश्वास था कि हमारा समाज, राजनीति तथा हमारा दर्शन स्वाभाविक गति से हमारी सास्कृतिक परंपरा तथा राष्ट्रीय समस्याओं के दबाव से विकसित होगा। यही कारण था कि देश के विभिन्न वर्गों तथा समुदायों के बीच वे किसी प्रकार के सघर्ष की कल्पना भी नही कर सकते थे। इसीलिए वे कार्ल मार्क्स के सिद्धात के भी विरुद्ध थे। जीवन के अंतिम दिन तक, उन्हें यह आशा थी कि परस्पर समझौते से समस्त धार्मिक विवादों का समाधान हो सकता है। इसी प्रकार सपूर्ण भारतीय समाज अपने जाति-धर्म को भूल कर एकजुट होकर स्वराज की लडाई में योगदान दे सकता है। इस प्रकार की समझौतावादी नीति के वे हिमायती थे और अनेक जन इसी बात पर उनकी खिल्ली भी उडाया करते थे। उनका मत था कि एकता तभी संभव है जबकि परस्पर सहानुभूति हो इस प्रकार एकता मोल-तोल अथवा लेन-देन पर निर्भर नहीं करती। देशबधु कहा करते थे कि सपूर्ण मानव समाज ही आपसी समझौतों पर टिका हुआ है। आदमी एक दिन भी, बिना इस प्रकार की समझ के, जीवित नही रह सकता। फिर चाहे परिवार की बात हो, मित्र-समुदाय, सप्रदाय अथवा राजनीति के क्षेत्र की बात हो। विभिन्न विचारों-आचारों के लोग जब तक, एक दूसरे की बात समझकर समाज हित में एक-दूसरे से समझौता नहीं करते तब तक सामाजिक जीवन असभव रहेगा। सारी दुनिया में व्यापार और वाणिज्य, समझौतों पर ही चलता है। इसमें स्नेह और अनुराग की बात कहा होती है।

मैं नहीं समझता कि भारत के हिंदू नेताओं में इस्लाम का मित्र देशबधु से अधिक

कोई और था। तथापि यही देशबंधु तारकेश्वर सत्याग्रह में प्रथम आगे थे। हिंदू धर्म से उन्हें अपार स्नेह था। वे इस धर्म के लिए अपना जीवन भी न्यौछावर कर सकते थे। लेकिन इसके साथ ही उन्हें हर प्रकार की रूढ़िवादिता और धर्मांधता से घृणा थी। इसी से यह बात समझ में आती है कि वे इस्लाम धर्म को भी क्यों प्यार करते थे। मैं यह पूछना चाहूंगा कि हमारे हिंदू नेताओं में ऐसे कितने हैं जो शपथ लेकर घोषित कर सकें कि वे मुसलमानों से घृणा नहीं करते। इसी प्रकार कितने ऐसे मुसलमान नेता हैं जो इसी प्रकार कह सकें कि वे हिंदुओं से घृणा नहीं करते? धार्मिक विश्वासों के चलते देशबंधु शुद्ध वैष्णव थे लेकिन हर प्रकार के धर्म मानने वालों के लिए उनके उदार हृदय में स्थान था। हम हर प्रकार के अपने झगड़े, समझौतों के द्वारा सुलझा सकते हैं। परंतु हिंदू और मुसलमानों के बीच अच्छे रिश्तों के लिए वे समझौतों को ही एकमात्र रास्ता नहीं मानते थे। उनकी इच्छा थी कि सांस्कृतिक साझेदारी के द्वारा हिंदू-मुसलमानों के बीच स्थायी एकता और अच्छी समझ पैदा हो सके। यही कारण था कि जेल में हिंदू तथा मुसलमान संस्कृतियों की समानता के बिंदुओं पर वे मौलाना अकरम खान से चर्चा करते रहते थे। जहां तक मुझे याद है उनकी इन चर्चाओं के कारण ही मौलाना साहब ने निश्चय किया था कि वे इन दोनों समाजों और संस्कृतियों की एकता के संबंध में एक ग्रंथ लिखेंगे।

देशबंधु का दृढ़ विचार था कि भारत में स्वराज के अर्थ हैं जन-साधारण की उन्नति। इसमें उच्च वर्गों के संरक्षण की बात नहीं होती। मैं नहीं समझता कि उस समय का कोई भी प्रमुख नेता इस सिद्धांत को इतने दृढ़ निश्चय से कह सका हो जैसा देशबंधु ने किया। समाज के लिए स्वराज इस विश्व में कोई नई बात नहीं। यूरोप में यह सिद्धांत बहुत पहले ही आ चुका था किंतु भारतीय राजनीति में यह अपेक्षाकृत एक नई धारणा है। यह सत्य है कि लगभग 30 वर्ष पहले स्वामी विवेकानंद ने यह बात अपनी पुस्तक 'वर्तमान भारत' में उठाई थी किंतु स्वामी जी का ये संदेश विभिन्न राजनीतिक मंचों से कभी नहीं गुंजरित हुआ।

जेल से छूटने के बाद देशबंधु निरंतर जीवन के अंतिम दिन तक लोगों को समझाते-बुझाते रहे। उनकी यही समझ उनके कारावास के दिनों के सुविचारित सोच, अध्ययन और मनन का परिणाम थी। वहीं पर उन्होंने कौंसिल में लोगों के हिस्सा लेने की बात सोची थी जिस पर बाद में बहुत विचार-विमर्श हुआ और तब हम लोग उनकी इस बात से सहमत हुए। इस विवादित मसले पर हमारे दल में काफी रस्साकशी हुई थी। तभी ये भी सोचा गया था कि अंग्रेजी में एक दैनिक समाचार पत्र प्रकाशित किया जाए। दुर्भाग्य की बात है कि उनकी कुछ अत्यंत प्रिय इच्छाएं आज भी पूरी नहीं हो सकी हैं।

उनके कारावास के संबंध में मैं एक बात और कहना चाहूंगा, वह ये कि अपराधियों के प्रति उनमें बड़ी करुणा थी। जब हम अलीपुर जेल में थे तो माधुर नाम का एक व्यक्ति हमारे वार्ड में काम करता था। माधुर को कारावास में एक पुराना चोर कह कर पुकारा जाता था। सच पूछिए तो उसे चोर कहना गलत होगा, वह एक डाकू था। इससे पहले भी वह 8-9 बार सजा पा चुका था। लेकिन अपने अधिकांश अन्य साथियों की तरह वह दिल का बहुत साफ और सरल व्यक्ति था। कुछ दिन काम करने के बाद

वह देशबधु से बहुत हिल-मिल गया और उन्हें 'पिता' कह कर बुलाने लगा। देशबधु भी उसे बहुत चाहते थे। धीरे-धीरे वह हम सबका स्नेहभाजन बन गया। जब वह बैठकर देशबधु के पैर दबाया करता तो अपनी जीवन कथा बताया करता। जेल से छूटते समय देशबधु ने उसे सजा पूरी होने पर अपने घर आने का निमत्रण दिया और कहा था कि अब कभी डकैती मत करना। माथुर ने उनकी इस बात को बहुत आदर और श्रद्धा से अगीकार किया था।

जिस दिन माथुर जेल से छूटा, देशबधु ने उसे लाने के लिए एक व्यक्ति को जेल तक भेजा। माथुर उनके साथ तीन वर्ष तक रहा। वह उनके साथ सपूर्ण देश में घूमा-फिरा। पुराना अपराधी होने के नाते कई बार पुलिस उसका पीछा भी करती रही लेकिन जब उन्हे पता चला कि वह देशबधु की शरण में है तो उन्होंने उसका पीछा छोड दिया। पुलिस वाले अक्सर कहा करते 'देशबधु ने इस नीच को सचमुच आदमी बना दिया।' मैंने सोचा था कि अब माथुर कभी गलत रास्ते पर नही जाएगा। लेकिन देशबधु के निधन के बाद मैंने अपने पत्राचार से जब उसके बारे में पता लगाया तो ज्ञात हुआ कि देशबधु के निधन के बाद मैंने अपने पत्राचार से जब उसके बारे में पता लगाया तो ज्ञात हुआ कि देशबधु के दार्जिलिंग प्रवास के दौरान माथुर उनके रसा रोड निवास से चादी के तमाम बर्तन लेकर चपत हो गया था। ये विचित्र कथा मोड 'लेस मिजरेबल्स' की याद दिलाता है। मेरा भी विश्वास है कि यदि माथुर देशबधु के साथ रहता तो कभी इस प्रकार की लालच मे नहीं आता। जरूर उसने किसी कमजोरी के क्षण में तथा क्षणिक आवेश में लालचवश यह काम किया होगा। परतु मुझे विश्वास है कि यदि वह महात्मा आज जीवित होता तो माथुर अश्रुपूरित नेत्रों से उनके पास प्रायश्चित करने जाता और उनके पैरो पर गिर कर अपने किए के लिए क्षमा मागता, किंतु अब माथुर का क्या होगा, ये तो विधाता ही जानता है।

यह सबके लिए आश्चर्य की बात है कि एक व्यक्ति एक ही समय में एक बडा वकील, लोगों का परम स्नेही शुद्ध वैष्णव, प्रखर राजनीतिज्ञ तथा एक विजेता नायक कैसे हो सकता है। मैंने इस समस्या के समाधान के लिए मानव शास्त्र का अध्ययन किया है। मुझे नहीं लगता कि मैं अपने प्रयास में सफल हुआ। वर्तमान बग जाति आर्य, द्रविड तथा मगोल रक्त के मिश्रण से बनी है। हर नस्ल की अपनी कुछ खास विशेषताए होती हैं। इसी से जब खून का मिश्रण होता है तो स्वभावत, वह नस्ल की विशेषताओ का भी मिश्रण होता है। यही कारण है कि बगालियों की मेधा इतनी विविध है और बगाल का जीवन इतना सुदर है। आर्यो का धर्माचरण और आदर्शवाद, द्रविडो का कला प्रेम और भक्ति भाव एव मगोलों की मेधा तथा वास्तविकता को पहचानने की बान सभी बगाली चरित्र में समन्वित हैं। यही कारण है कि बगाली विद्वान, भाव प्रवण, आदर्शवादी अनुकरणवादी, रचनाधर्मी तथा वास्तविकता को पहचानने वाले होते हैं। ये सब रक्त मिश्रण के कारण है। यदि आपकी नसों में किसी विशिष्ट जाति का रक्त मिश्रित है तो निश्चित रूपेण जन्म से ही आप में उस जाति की सस्कृति की विशेषताए आ जाएगी।

जो लोग बगाल के इतिहास तथा उसके साहित्य से परिचित हैं वे ये अवश्य मानगे कि मूल रूप से आर्य वश से सबधित होते हुए भी बग सस्कृति की कुछ अपनी विशेषताए हैं। स्वामी दयानद के आर्यसमाज आदोलन ने पूरे उत्तर भारत को समाहित कर लिया

जीवन में अधूरापन आ जाएगा।

यह दर्शन जिसने उनके धार्मिक द्वंद्वों का समाधान किया, उन्होंने व्यावहारिक जीवन में भी सबसे सत्य प्रेम और बंधुत्व का रिश्ता बनाने में सफलता प्राप्त की। जैसे जैसे उन्होंने जीवन में समन्वय प्राप्त किया उसी प्रकार वे व्यावहारिक जीवन में विभिन्न मत मतांतरों के व्यक्तियों में एकता स्थापित कर सके। चूंकि उनके अपने जीवन में कहीं कोई कृत्रिमता और छलावा नहीं था, वे दूसरों में भी ऐसा कुछ सहन नहीं कर सकते थे।

यदि कहीं जेल में अपनी बातचीत के दौरान हमने उनकी अगाध स्पष्टता की चर्चा भी कर दी तो वे तुरंत पलट कर कहेंगे "तुम क्या समझते हो मैं बिल्कुल मूर्ख हूं और लोग मुझे धोखा देते हैं। मैं सब कुछ जानता हूं। देना मेरा कर्तव्य है और मैं वही करता हूं। न्याय करना ईश्वर का काम है मेरा नहीं।"

यह तंत्र का ही प्रभाव है जिसने बंगालियों को शक्ति या मां की पूजा करना सिखाया है और इसी ने देशबंधु को एक अदम्य साहसी नेता के रूप में प्रतिष्ठित किया होगा। यद्यपि उन्होंने किसी तांत्रिक विचारों की साधना नहीं की कम से कम मैं तो यही जानता हूं। लेकिन मैं यह नहीं स्वीकार करता कि कोई व्यक्ति दृढ़ इच्छा वाला नेता बन सकता जब तक कि वह कुलाचार वीराचार चक्रानुष्ठान आदि जैसी साधना न करे। तंत्र का मूल शक्ति की पूजा है। तांत्रिकों के अनुसार अंतिम सत्य आद्याशक्ति है (मौलिक सत्ता) जो उत्पन्न करती है पोषण करती है और विनाश करती है अर्थात जिसे हम ब्रह्मा विष्णु और महेश्वर कहते हैं। भक्त उसी मौलिक सत्ता या शक्ति की पूजा मां के रूप में करता है। तंत्रों के इसी गहरे प्रभाव का परिणाम है कि बंगालियों की पूरी प्रजाति मां के प्रति श्रद्धावनत है और यही कारण है कि वे मां के रूप में सार्वभौमिक सत्ता की पूजा करते हैं। अन्य धर्मों और प्रजातियों के व्यक्ति (जैसे कि यहूदी अथवा ईसाई) ईश्वर की पूजा पिता के रूप में करते हैं। सिस्टर निवेदिता का विचार है कि उन जातियों में जिनमें पुरुष स्त्री की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण स्थिति में है ईश्वर को वे सहज रूप में पिता के रूप में मानते हैं। दूसरी ओर उन समाजों में जहां स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा प्राथमिकता का स्थान रखती हैं ईश्वर की पूजा लोग मां के रूप में करते हैं। फिर भी यह सर्वविदित है कि बंगाली लोग ईश्वर के बारे में भी मां के रूप में सोचते हैं। हम अपने देश को मातृभूमि कहते हैं लेकिन अंग्रेजी में ठीक अभिव्यक्ति पितृभूमि है और अंग्रेजी भाषा की दृष्टि से हमारा मातृभूमि कहना एक प्रकार से त्रुटिपूर्ण भी है।

हमारे अधिकांश विद्वानों ने अपने लेखों में मातृ रूप की ही संरचना की है। बंकिमचंद्र ने लिखा

वंदे मातरम्

सुजलाम सुफलाम मलयज शीतलाम

शस्य श्यामला वंदे मातरम्।

द्विजेंद्रलाल ने गीत गाया

'जब भारत माता का उदय समुद्र के आसमानी जल से हुआ।'

और रवींद्रनाथ ने निनाद किया

मेरी मातृ भूमि मुझे अपना सिर तुम अपने चरणों में रखने दो।

उपर्युक्त उदाहरण मां के तांत्रिक अवधारणा के प्रभाव का दर्पण हैं। देशबंधु मातृरूप के पक्षधर थे। अपने घरेलू जीवन में अपनी माता के प्रति उनका श्रद्धाभाव सर्वविदित था। अलीपुर जेल में, वे हमें प्रायः बंकिम चंद्र की रचनाएं सुनाया करते थे। वे बंकिम द्वारा चित्रित मां के तीन विभिन्न रूपों में अत्यधिक रुचि लेते थे। वे इन वर्णनों को पढ़ते-पढ़ते परमानंद में डूब जाते थे। उस परमानंद की स्थिति में उनको देखकर कोई भी उनकी भावनाओं की गहराई को समझ सकता था। उनकी पत्रिका 'नारायण' में वैष्णववाद तथा शाक्तवाद दोनों विषयों पर चर्चा होती थी। दुर्गा पूजा के अवसर पर इस पत्रिका में छपे कुछ लेख सारगर्भित विचारों से परिपूर्ण हैं।

तंत्रों का प्रभाव उनके दैनिक जीवन में स्पष्ट दिखाई देता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी माता के प्रति उनके श्रद्धाभाव तथा महिला शिक्षा और महिला जागृति के उनके विचारों को जानता है। वे शंकरमतावलंबियों के इस विचार को बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करते कि स्त्रियां नरक का द्वार हैं। उनके अपने जीवन और विचारों में हम तंत्रों के गहरे प्रभावों को देख सकते हैं। देशबंधु में बंगाल की संस्कृति और परंपरा के श्रेष्ठतम गुण विद्यमान थे।

उनके गुण और दोष, दोनों ही उनकी अपनी प्रकृति के लिए अनूठे थे। उनके जीवन का सबसे बड़ा गौरव यही था कि वे बंगाली थे। यही कारण था कि उन्हें बंगाली सबसे अधिक प्रेम और आदर देते थे।

वे प्रायः कहा करते थे कि एक बंगाली अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के गुणों के मिश्रण से बनता है। उन्हें इस बात से चोट पहुंचती थी यदि कोई व्यक्ति बंगालियों के भावुक होने को हंसी या व्यंग्य रूप में लेता था। वे सोचते थे कि यह गौरव की बात है, शर्म की नहीं कि हम बंगाली भावनात्मक रूप से संवेदनशील हैं।

बंगाल की अपनी कुछ श्रेष्ठता है जो उसके प्राकृतिक दृश्यों, उसके साहित्य, उसके लोकगीतों, और उसके चरित्र में परिलक्षित होती है। मैं नहीं समझता कि किसी ने देशबंधु से पूर्व इस बात को इतना जोर देकर कहा हो। यह सत्य है कि ये उनके अपने विचार नहीं थे। बंकिम, भूदेव तथा अन्य विचारकों ने उन्हें संस्कृत और साहित्य के क्षेत्र में दिखाया था और देशबंधु ने उनके अनुसरण किया था। इसके साथ ही मैं यह भी मानने को बाध्य हूं कि यह उनके इन विचारों और प्रवृत्तियों का आंतरिक रूप में मानने, 'नारायण' पत्रिका के पृष्ठों में किए गए उनके प्रयासों के कारण, इन विचारों को अन्य माध्यमों से प्रचारित करने के कारण तथा साथ ही, इन विषयों पर किए गए शोध में लगाए गए परिश्रम और खर्च के कारण बंगालियों को हमेशा उनका ऋणी होना चाहिए। मैं अपने स्वयं के लिए कह सकता हूं कि मैंने उनसे और उनके लेखों से ही बंगाल के इस अनुभव के बारे में जाना है।

सवाल उठाया जाता है कि संस्कृति एक है अथवा भिन्न-भिन्न है। कुछ ऐसे लोग

है जो इसे एक मानते हैं उन्हें अद्वैतवादी कह सकते हैं। दूसरे ऐसे हैं जो सोचते हैं कि संस्कृति में प्रजातीय विशेषताएं है अतः संस्कृति में विभिन्नताएं हैं उन्हें द्वैतवादी कह सकते हैं। लेकिन देशबंधु द्वैतवादी और अद्वैतवादी दोनो थे। संस्कृति एक भी है और अनेक भी। यह मूलतः एक है तो इसकी अभिव्यक्ति अत्यधिक विभिन्नताओं और बहुमुखी रूप में होती है जैसे एक बाग में अनेक पेड होते हैं और भिन्न भिन्न पेडो पर विभिन्न प्रकार के फूल खिलते हैं। उसी प्रकार मानव समाज में विभिन्न संस्कृतियां फलती फूलती हैं। और जिस प्रकार बगीचा विभिन्न प्रकार के पेडों और फूलो से एक बनता है उसी प्रकार अनेक प्रकार की संस्कृतियां मानव संस्कृति को बनाती हैं। प्रत्येक प्रजाति इस प्रकार अपनी संस्कृति का विकास करते करते मानव संस्कृति का विकास करती है। अपनी स्वयं की राष्ट्रीय संस्कृति की उपेक्षा कर अथवा एक तरफ छोडकर विशाल मानव समाज की सेवा करना किसी प्रकार भी संभव नहीं हो सकता। देशबंधु के राष्ट्रवाद की पूर्णता अंतर्राष्ट्रीय साहचर्य में थी। लेकिन उन्होंने विश्व प्रेम का विकास अपनी मातृभूमि के प्रेम को त्याग कर नहीं किया। साथ ही उनके राष्ट्रवाद ने उनको एकदम आत्मकेंद्रित नहीं बनाया।

देशबंधु अपने राष्ट्रीय प्रेम में अपने बंगाल प्रेम को नहीं भूलें न ही बंगाल प्रेम के कारण राष्ट्रप्रेम को भूल जाएंगे। उन्होंने बंगाल को जीवन भर प्यार किया लेकिन उनका प्यार अपने सूबे की सीमाओं तक ही सीमित नहीं था। मैंने उनके गैर बंगाली साथियो से सुना है कि वे उनके संपर्क में आने के कुछ ही समय में उनकी विशाल हृदयता के प्रति आकृष्ट हो जाते थे। महाराष्ट्रवादी उनको उसी मात्रा में प्रेम और आदर करते थे जितना कि वे तिलक महाराज के लिए करते थे क्योंकि महाराष्ट्र के लोगो को भी उनसे उतना ही स्नेह और सहानुभूति मिलती थी।

देशबंधु कहा करते थे कि बंगाल स्वराज आंदोलन का अग्रणी होना चाहिए। 1920 में बंगाल के हाथ से आंदोलन का नेतृत्व छूट गया था। लेकिन देशबंधु के अथक प्रयासो और मेहनत के कारण 1923 में उसे यह नेतृत्व फिर मिला। देशबंधु की मृत्यु से बंगाल से यह नेतृत्व की बागडोर फिर चली गई। केवल ईश्वर ही जानता है कि इसे अपना स्थान कब प्राप्त होगा।

एक बात वह अक्सर कहा करते थे कि यदि कोई आंदोलन बंगाल में शुरू करना है तो इसे पहले बंगाल के लिए उपयोगी बनाना होगा। जिन्हें प्रचलित वास्तविक कठिनाइयों का अच्छी तरह अनुभव है वे इस मत का समर्थन किए बिना नहीं रहेंगे।

जनसाधारण और यहां तक कि तथाकथित धनी वर्ग पर भी उनके गहरे प्रभाव से हर व्यक्ति चकित रहता था। कुछ लोगों ने इस रहस्य को जानने के लिए प्रयास भी किए। जब कभी भी उन्होंने कोई मार्ग चुना तो उसे वास्तविक रूप दिया। या तो मैं अपने उद्देश्य में सफल होऊंगा या फिर समाप्त हो जाऊंगा यह मंत्र उनके हृदय में अंकित था। जो भी रास्ता उन्होंने निश्चित किया उस पर वे पूरे जोश उत्साह और लगन से चले और उन्हें कोई विचलित नहीं कर सका। बढती हुई समुद्री लहरों की तरह वे अपने आदर्शों को प्राप्त करने में पूरी शक्ति से सभी कठिनाइयों और बाधाओं को पार करते हुए जुट जाते थे। प्रियजनो का रुदन अथवा अपने अनुयायियों की चेतावनी उन्हें

उनके लक्ष्य से नहीं हटा सकती थी। कहां से उन्हें ये दिव्य शक्ति मिली? क्या यह शक्ति है जो सच्चे प्रयासों अथवा साधना से मिलती है?

मैंने पहले ही कहा है कि शक्ति के भक्त होने के बावजूद देशबंधु ने कभी भी शक्ति की पूजा तांत्रिकों के तरीके से नहीं की थी। वे एक विशाल हृदयी व्यक्ति थे और उनकी आकांक्षाएं अत्यधिक थीं। 'उच्चता ही केवल दिव्य है, जो क्षुद्र है, वह कभी प्रसन्नता नहीं दे सकती' यही उनकी आत्मा का संदेश था। जो कुछ भी उन्होंने इच्छा की, वही उनके तन, मन और वाणी से मुखरित हुई। वे उस पार के लिए किसी भी सीमा तक जा सकते थे। कोई भी कठिनाई उन्हें उनके लक्ष्य से विचलित नहीं कर सकती थी। नेपोलियन बोनापार्ट की भांति, जिसने अपने सामने आल्पस पर्वत को खड़े देख कर कहा था, अब कोई आल्पस नहीं होगा; देशबंधु ने भी कभी किसी कठिनाई और बाधा की चिंता नहीं की। वे लोग जो उन्हें जानते हैं कि उन्होंने कितनी कम पूंजी से 'फारवर्ड' अखबार का प्रकाशन प्रारंभ किया और किस तरह कार्पोरेशन की सदस्यता प्राप्त करने की कोशिश की। यदि हम कभी कठिनाइयों की बात करते तो वे हमें 'न सुधरने वाले निराशावादी' कह कर डांटते थे। यह भी मेरा ही काम हो गया कि उनके सामने आने वाले खतरों और जोखिमों की चर्चा करूं, इसलिए वे हमें प्रायः 'बूढ़ा ठूंठ आदमी' कहकर पुकारते थे। जो यह सोचते थे कि देशबंधु अपने विश्वास में उदारवादी थे लेकिन युवकों के दबाव तथा उनके साथ रहने से अतिवादी जैसा कार्य करते थे, ये उनके स्वभाव और चरित्र के नहीं थे। वास्तव में वे सदा ही चुस्त और उत्साही रहते थे। उन्हें युवकों की आशाओं और आकांक्षाओं की आंतरिक समझ थी। वे उनके सुख-दुख में समान रूप से सहानुभूतिपूर्ण भाव रखते थे। वे युवकों का साथ पसंद करते थे और युवक भी उनका साथ छोड़ना नहीं चाहते थे। यही सब कारण है कि मैंने अन्य स्थानों पर उन्हें युवकों का बादशाह कहा है। उनके देशप्रेम, उनके बलिदानों, उनकी विशाल विद्वता, उनकी चपलता तथा अन्य गुणों को जानते थे। अब इस संबंध में और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है।

मैं इस पत्र को, उनके असामान्य प्रभाव के एक और कारण की चर्चा करने के बाद समाप्त करूंगा। मैंने इसका संकेत पहले भी किया है। यह देशबंधु का निरंतर अनुभव था कि वे अपने कार्यों से वैष्णववाद को स्थापित करने में सफल थे क्योंकि वैष्णववाद उनके धार्मिक जीवन का अंतरंग भाग था। उनके अपने आदर्शों और व्यावहारिक जीवन के उत्कृष्ट समन्वय के कारण, उनका पूरा जीवन ही उत्तरोत्तर इस समन्वय से प्रभावित था। इसी कारण वे स्वयं को ईश्वर के खेल का एक उपकरण मात्र मानते थे। आंतरिक शुद्धता के परिणामस्वरूप, जिसके कारण व्यक्ति फल की इच्छा किए बिना अपने कार्य में व्यस्त रहता है, व्यक्ति अपने अहं की चेतना को भी समाप्त कर देता है। जब अहं तिरोहित हो जाता है, व्यक्ति दिव्य इच्छा की अभिव्यक्ति का एक उपकरण मात्र बन जाता है। इस स्थिति में साधारण मनुष्य इस प्रकार के व्यक्ति की ऊर्जा और चुंबकत्व के सामने टिक नहीं सकता। यही है जो देशबंधु के साथ उनके जीवन के अंतिम दिनों में हुआ, जो उनके कट्टर विरोधी थे, उनके सामने आने पर एकदम धराशायी होते दिखाई देते थे। उनके देशवासियों में भी एक विश्वास बैठता जा रहा था कि जहां भी चि० दास होंगे, विजय वहीं सहज रूप में आती जाएगी।

संभवत: लोग नहीं जानते थे कि वे विभिन्न प्रकार के लोगों से किस प्रकार अपना काम कराते थे। यह केवल तभी जाना जा सकता था जब उनके प्रयत्नों का परिणाम सामने आता था। वे हमेशा आदर्शों से प्रेरणा देते थे और जो भी उनके संपर्क में आते थे वे सभी समान रूप से शक्ति प्राप्त करते थे। कोई भी समय हो, कोई भी अवसर हो, जीते हों या मरते, सोते हों या जागते, देशबंधु का एक ही विचार था, एक ही स्वप्न था, राष्ट्र की सेवा और यह सेवा उनके धार्मिक कृत्यों में से एक थी।

देशबंधु के जीवन की बात करते समय यदि हम एक और व्यक्ति की चर्चा करना भूल जाएं अर्थात उनकी पत्नी की बात न करें तो सब व्यर्थ है। वह देवी, जो सेवा और शांति की प्रतिमूर्ति थी। लोगों की निगाहों से अलग, अकेली, उनके जीवन में छाया की तरह उनके साथ रही। यदि हम उनकी चर्चा न करें तो देशबंधु के जीवन का एक बड़ा भाग भी अचर्चित रह जाता है। वह देवी, जो अपने ऐश्वर्य की पराकाष्ठा पर भी हिंदू समाज की स्त्रियोचित मृदुलता, विनम्रता तथा सेवा भाव को भूली नहीं थी जो खतरों के गहरे अंधकार के दौरान भी एक निष्ठावान पत्नी वाला समर्थन और सहारा देने में असफल नहीं रही, जो धैर्य और विश्वास के आदर्शों को अपनाए रही, उस देवी के बारे में कहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। देशबंधु युवाओं के दिलों के महाराजा थे। उनकी सहचारिणी युवाओं की माता के समान थी। देशबंधु की मृत्यु के बाद वह केवल चिररंजन की माता ही नहीं है अथवा केवल युवाओं की ही माता नहीं हैं वरन् आज वह पूरे बंगाल की माता है। बंगाली हृदय की सर्वोत्कृष्ट भेंट उनके पवित्र चरणों पर समर्पित है।

श्री अरविंद की अलीपुर केस में पैरवी करते समय देशबंधु ने सशक्त और भरपूर शब्दों में कहा था-

"इनका मान सम्मान देशभक्ति के कवि, राष्ट्रीयता के पैगंबर और मानवता के प्रेमी के रूप में किया जाएगा। इनके शब्द बार-बार गुंजायमान होते रहेंगे। " क्या ये शब्द आज देशबंधु के स्वयं के लिए लागू नहीं होते।

के साथ काम किया लेकिन वह अलगाव के विरोधी थे।

सरकारी शोषण ने लोगों के विचारों को सिनफिन की तरफ मोड़ दिया। इसी से राष्ट्रीय आकांक्षाओं को भी प्रेरणा मिली। 'आजादी का जेहरा विदेशों में आजादी की विचारधारा के प्रचार-प्रसार के बिना नहीं छेड़ा जा सकता।'

'इस युद्ध ने सिनफिन को निश्चित रूप से गणतांत्रिक बना दिया। आंदोलन के साधारण कार्यकर्ता वास्तव में गणतांत्रिक थे। अब तो नेता लोग भी गणतांत्रिक हैं।'

ओ हेजारटी* के अनुसार, सिनफिन मात्र या मुख्यत: एक राजनैतिक आंदोलन नहीं था। इसकी नीति अलगाववादी न होकर रचनात्मक अधिक थी। इसकी उत्पत्ति फेनियनवाद से न होकर गैलिक लीग के कारण अधिक थी। 'आयरिश संस्कृति का विनाश सिनफिन को आयरिश स्वतंत्रता की समाप्ति की अपेक्षा अधिक भयानक त्रासदी लगी।

गैलिक लीग की स्थापना 1893 में की गई

सिनफिन का सर्वश्रेष्ठ विचार इस कहावत में निहित है 'स्वर्ग का राज्य तुम्हारे अंदर ही है। यह इस विश्वास पर आधारित है कि प्रत्येक राष्ट्र के अंदर एक प्रकार की आंतरिक सच्चाई होती है और केवल वही इसकी रक्षा कर सकती है।'

सिनफिन का विचार–'आयरलैंड एक ऐसा ऐतिहासिक राष्ट्र है जिसके पास इंग्लैंड अथवा फ्रांस की तरह ही स्वतंत्रता और आत्म अभिव्यक्ति का अधिकार है।'

रूढ़िवादी सिनफिन संरक्षणवादी है और वह एक शासित आयरलैंड में रह सकते है लेकिन लेबर सरकार इस मामले में स्वयं को विरोधी खेमे में खड़ी कर लेगी। सिनफिन में इस समय प्रतिक्रियावादी और प्रगतिवादी दोनों के तत्व हैं और इसका विकास दोनों में से किसी भी तरफ हो सकता है। इस समय यह न तो कंजर्वेटिव है और न ही प्रजातांत्रिक है, न ही नौकरशाह और न ही गैर नौकरशाह, न ही सर्वहारा वर्ग से है और न ही पूंजीवादी वर्ग से।

1916 का विद्रोह

मैथ्यू आर्नोल्ड का विचार था कि 'केल्ट एक ऐसा व्यक्ति है जो वास्तविक तानाशाही के विरुद्ध खड़ा होने के लिए हमेशा तैयार है।' (प्रो० हैडन का विचार है कि इंग्लैंड में आयरलैंड की अपेक्षा अधिक केल्टिक खून है)। जब होम रूल बिल विचारार्थ लाया गया सर एडवर्ड कारसन ने मांग रखी कि आयरलैंड में तुरंत होम रूल नहीं होना चाहिए

'आयरलैंड का विद्रोह तब तक सफल नहीं माना गया जब तक कि इसके लिए 15 व्यक्तियों को गोली से भून नहीं दिया गया और एक को फांसी पर नहीं लटका दिया। ब्रिटिश सेना के एक कार्पोरल ने इन मृत नेताओं की प्रशंसा में कविताएं लिखी।

विद्रोह के इतिहासकार हैं डब्ल्यू बी वेल्स और एन मार्लो

इतिहासकार विद्रोह के निम्न कारण बताते हैं (1) बाह्य प्रेरणा और समर्थन (2) युद्ध की भावना (3) गुस्सा और निराशा का वातावरण जिससे कि हड़ताल को दबाने तथा कार्सन के आचरण के कारण असंतोष की लहर उठ गई (4) आयरलैंड में अत्यधिक टैक्स।

इतिहासकार अन्य विचारकों के साथ यही सोचते हैं कि साधारण व्यक्ति को कुछ भी मालूम नहीं हो। संसद में लेबर सदस्य तुरंत कार्यवाही करने के लिए कुछ बहुमत बनाकर आवाज उठाते हैं।

आयरलैंड ने शाही प्रशासन के रूप में 5,000,000 पौंड आयरिश वार्षिक व्यय परियोजना के लिए दिए।

इतिहासकार इस बात पर विश्वास करने से मना करते हैं कि केसमंट आयरलैंड में किसी सुधार को रोकने के लिए आया। लेखक का भी यही विश्वास है कि केसमंट ने इस बात को मुकदमे की पैरवी के दौरान भी नहीं कहा क्योंकि वह खुले रूप में अपने आप को उन लोगों से अलग नहीं करना चाहता था जिन्होंने अपने आदर्शों के लिए स्वयं का बलिदान कर दिया।

इतिहासकार कहता है

'सैनिक संगठन के वालंटियरों में एक स्पष्ट दोष सक्षम कर्मचारियों की कमी थी लेकिन इस विभाग में जर्मनी के संसाधनों से सहायता ली गई------

अध्याय - 1

लार्ड कार्सन के वालंटियर एक जर्मन द्वारा प्रशिक्षित किए गए। उसके शस्त्र जर्मनी से आए। विश्व युद्ध से पहले बैरन वान कुहमान अलस्टर में समाप्त हो चुका था। कार्सन युद्ध शुरू होने से कुछ पहले ही जर्मनी गया और उसने कैसर के साथ भोजन भी किया।

अध्याय - 2

आयरलैंड में गेल 1700 ई० में पूर्व विजेता के रूप में आए। कई शताब्दियों के गेलिक शासन के दौरान आयरलैंड एक राज्य था जिसका एक राजा, एक भाषा तथा कानूनों की एक पद्धति थी। 405 ईस्वी में इंग्लैंड पर आक्रमण करते समय आयरलैंड का राजा नियाल मारा गया

किंवदती गल गार्डेलियस के उत्तराधिकारी थे जिसने स्कॉटा से विवाह किया था जो फराओ की बेटी था। हिब्रूओं का पक्ष लेने के कारण उसे मिस्र से भागने पर विवश होना पड़ा।

428 इस्वी में उसका भतीजा राजा दाथी आल्पस के नजदीक गाल में मृत्यु को प्राप्त हुआ। (प्रा० वर्नी कहते हैं कि वह फ्रांसिसियों के विरुद्ध गमन के पक्ष में लड़ता रहा)

सेंट पैट्रिक (बचपन में एक गुलाम) 432 इस्वी में आयरलैंड में धर्म प्रचारक (मिशनरी) के रूप में आया। छठी शताब्दी में जब आयरलैंड अनेक विचारधाराओं की स्थली बन गया तब महाद्वीप से अनेक विदेशी यहा शिक्षा प्राप्त करने आए। आयरिश लोगों ने पूरे यूरोप और कार्थेज में विद्यालय और मठ खोले। विद्वान स्कोट्स एरीजन आयरिश था और वह चार्ल्स दी वाल्ड के दरबार में शिक्षक रहा। एक उत्कृष्ट कल्पनाशील साहित्यिक वातावरण के अतिरिक्त आयरलैंड में सोने की और तामचीनी की दस्तकारी भी सर्वश्रेष्ठ थी।

उदाहरण के लिए डागोबर्ट II, फ्रांक का राजा

8वीं और 11 वीं शताब्दी के दौरान नार्स और डेन वासियों ने आयरलैंड पर आक्रमण किया और वहा स्वय रहना शुरू कर दिया। मसटर के राजा बरियन बोर्न ने 23 अप्रैल, 1014 को क्लोंटोर्फ पर विजय हासिल कर आयरलैंड को डेन के कब्जे से मुक्त किया जहा स्वय उसकी मृत्यु हो गई। उसका शासनकाल आयरिश इतिहास का एक स्वर्णयुग कहा जाता है। दुर्भाग्यवश, उसके बाद कोई भी वैसा बुद्धिमान राजा नहीं हुआ फिर भी उसकी मृत्यु के बाद डेढ़ शताब्दी तक राष्ट्रीय पुनर्निमाण का कार्य चला। काफी अधिक साहित्यिक गतिविधिया चलीं तथा अरमाघ का विद्यालय, राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ। आयरलैंड की कमजोरिया एक राज्य के रूप में इस प्रकार थी (1) बहुत अधिक व्यक्तिवाद (2) आकांक्षी सूबाई राजा, साथ में निर्वाचन पद्धति का राजतत्र। इसी कमजोरी के कारण इग्लैंड के हेनरी द्वितीय ने पोप एडरियन चतुर्थ की पूरी सहायता से आयरलैंड पर हमला कर दिया। एडरियन चतुर्थ के समय से पोप इगलैंड के राजतत्र के पक्ष में रहे हैं तथा आयरिश और स्कॉटवासियों की स्वतत्रता के प्रति उदासीन रहे हैं। सभवत: यह इसलिए था क्योंकि वे जर्मन शासकों के साथ अपने सघर्षों, अपने जेहाद और अन्य कठिनाइयों के समय इग्लैंड का समर्थन चाहते थे।*

पुरानी पुस्तकें -

बुक ऑफ कैलस, अरदाघ चैलिस, क्रास ऑफ काग, तारा ब्रूश प्राज रोमास ऑफ फिन एड चुचुलैन

*फादर एम०एच० मसिनेर की पुस्तक 'ए हिस्ट्री ऑफ द आयरिश डोमिनिकन्स' देखें।

इंग्लैंड पर नार्मन की विजय और आयरलैंड पर एंग्लो-नार्मन विजय की तुलना

नार्मन इंग्लैंडवासी बनते ही राष्ट्रीय धारा में आ गए और उन्होंने नार्मन सरकार भी बनाई। आयरिश नार्मन राजा की प्रजा नहीं बने जिनको ये राष्ट्रीय धारा में जोड़ते लेकिन वे नार्मन राजा के शत्रु माने जाते रहे। इसलिए एंग्लो नार्मन सरकार हमेशा एक राष्ट्रविरोधी संस्था मानी जाती रही। ऐसा कभी नहीं होता यदि हेनरी द्वितीय ने स्ट्रांगबो को आयरलैंड को विजय करने की अनुमति दे दी होती और स्वयं पहला नार्मन राजा बन गया होता।

एंग्लो नार्मन ने लिनस्टर के पराजित राजा मैक मेरो की सहायता की प्रार्थना पर आयरलैंड पर 1168 1169 1171 ईस्वी में आक्रमण किए।

ऑफ इंडिया

अध्याय–3

(1) हेनरी द्वितीय की नीति राजतंत्र द्वारा प्रदर्शित राष्ट्रीय एकता को नष्ट करना तथा आयरिश राजघराने में फूट के बीज बोना थी। जब इंग्लैंड के एडवर्ड प्रथम ने वाटरफोर्ड के पादरी से पूछा कि आयरिश सामंतों के झगड़ों को समाप्त क्यों नहीं किया जा रहा है उसका उत्तर था 'नीतिगत रूप से हम यह ठीक समझते हैं कि एक को खुश रखो और दूसरे का गला काटो इससे शांति भी बनी रहेगी और राजकोष भी बचा रहेगा।'

एडवर्ड ।

(2) न केवल आयरिश वरन इंग्लैंड के निस्थापित भी परस्पर लड़ते थे। इंग्लैंडवासियों पर आयरलैंड वासियों के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाने पर कानूनी प्रतिबंध था

इंग्लैंड से यहां आए लोग धीरे-धीरे आयरिश पोशाक और नाम अपना रहे हैं।

(3) ट्यूडर्स के समय तक इंग्लैंड ने आयरलैंड के कानूनों भाषा परंपराओं प्रथाओं शिक्षा और व्यापार के विरोध में अनेक परिपत्र जारी किए। इंग्लैंड प्रशासित क्षेत्रों के निवासी भी आयरलैंड वासियों से संबंध नहीं कर सकते थे। हेनरी चतुर्थ ने आयरलैंड वासियों के आक्सफोर्ड कैंब्रिज या शिक्षा के अन्य किसी भी संस्थान में जाने पर कानूनी रूप में रोक लगा दी। फिर भी आयरिश व्यापार सामान्य रूप से चलता रहा तथा आयरिश विद्वानों ने यूरोप के सभी विश्वविद्यालयों का भ्रमण किया।

इसी वजह से सिलकिन थॉमस विद्रोह हुआ

(4) हेनरी सप्तम ने सर एडवर्ड पोयनिंगस को 1494 में एंग्लो आयरिश संसद की स्वतंत्रता को समाप्त करने के लिए भेजा। पोयनिंगस कानून के अनुसार आयरिश संसद

पर सौंप दिया कि आयरिशवासियों को धार्मिक स्वतन्त्रता दे दी जाए। लेकिन अतिवादी प्राटेस्टेंटों के आग्रह पर लिमरिक का यह धार्मिक स्वतत्रता सबधी समझौता सिर्फ एक कागज का टुकडा माना गया। इसलिए सभी आयरिशवासियों के लिए लिमरिक शहर एक 'टूटे समझौते' का शहर माना जाता है। 'लिमिरिक को याद रखो। आयरिशवासियों के लिए अब यही युद्ध का नारा बन गया था।

आयरिश विद्रोह

1316 में

(1) एडवर्ड ब्रूस (रॉबर्ट ब्रूस का भाई) जिसका राज्याभिषेक आयरलैंड के एडवर्ड प्रथम के रूप में हुआ। ब्रूस अतत पराजित हुआ और उसका कत्ल हुआ।

(2) रिचर्ड द्वितीय के शासन काल के दौरान

(3) आयरिश और अंग्रेज विस्थापितों के बढ़ते मेल-मिलाप के कारण अंग्रेजों ने 1408 में तय किया कि 'इग्लैंड में बनाए गए कानून इस राज्य में तब तक लागू नहीं होंगे जब तक कि वे इस राज्य की ससद द्वारा पारित नहीं कर दिए जाते।"

(4) आयरलैंड में विस्थापित अंग्रेजों ने रैडरोज के विरोध में व्हाइट रोज का साथ दिया और पहले लार्ड सिमनल और बाद में पर्किन वारबेक को अपना शासक स्वीकार किया।

(5) सिल्कन टामस का विद्रोह (एक अंग्रेज विस्थापित) 1534 में।

(6) शेन ओ नील के समय में जो इग्लैंड से 16 वर्षों तक, 1567 मे, अपने कत्ल होने तक लड़ता रहा।

(7) ह्यू ओ नील ने 1598 में येलो फोर्ड के युद्ध में अंग्रेजों को हराया लेकिन 1602 में किनसेल में हार गया।

(8) ओवेन रॉक ओ नील 1641 में विद्रोह में उठ खडा हुआ, 1646 में बेनबर्ब में जीत गया। लेकिन 1649 में मृत्यु हो गई।

(9) जेकोबाइट युद्ध 1688 में डेरी में शुरू हुआ तथा 1691 में लिमरिक में विलियमाइटर को समर्पण के साथ ही समाप्त हो गया।

अध्ययन - 4 द न्यू आयरिश नेशन

आयरिश प्रीवि कौंसिल ने 1710 में वास्तव में प्रस्ताव किया कि कोई भी अपंजीकृत पादरी या भिक्षु यदि आयरलैंड में पाया गया तो उसका वधियाकरण कर दिया जाएगा।

एक पेंशन प्रणाली के अंतर्गत इंग्लैंड के शाही परिवार की जरूरतमंद रिकॉर्डशुदा रखैलों का वेतन आयरिश कोष से दिया जाता था।

दंडनीय कानूनों का उद्देश्य था आयरलैंड के राष्ट्रीय जीवन को नष्ट करना तथा *ब्रिटिश संसद का उद्देश्य था आयरिश* उत्पादक बाजार को समाप्त करना। दंडनीय कानूनों तथा पादरियों के शिकारियों के बावजूद आयरिश लोग धर्म-शास्त्र पढ़ने, पेरिस और लोवेंग गए तथा पढ़कर एकांत में और *छिप-छिप कर जनसाधारण की सेवा करने की दृष्टि से* वापिस आए। लेकिन उत्पादकों को बिल्कुल समाप्त कर *दिया गया और जब औद्योगिक क्रांति आई, आयरलैंड नई स्थिति का मुकाबला करने के योग्य नहीं था।*

1. ट्रेफोर्ड के समय में, आयरिश ऊनी कपड़े के व्यापार को समाप्त करने के प्रयत्न किए गए।

2. बाद में आयरिश ऊनी सामान का उपनिवेशों को निर्यात रोक दिया गया और इंग्लैंड में प्रतिबंधात्मक कर लगा दिए गए।

3. 1699 में, वेस्टमिनिस्टर संसद ने आयरलैंड में उत्पादित ऊन का किसी भी देश में निर्यात कानूनी तौर पर रोक दिया।

इस विनाश की वजह से आयरलैंड के पश्चिमी तट के जहाजी ठिकाने आयात-निर्यात व्यापार के बंदरगाहों के रूप में विकसित नहीं हो सके।

4. *चार्ल्स द्वितीय के शासन काल में पशुधन कानूनों ने* आयरिश पशुधन के व्यापार को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

5. उपनिवेशों से होने वाले आयात पर रोक लगा कर आयरिश जहाजरानी तथा विदेशी व्यापार को गहरा आघात दिया गया।

6. जैसे ही यह मालूम हुआ कि आयरलैंड का कांच उद्योग फल-फूल रहा है, उसके निर्यात पर रोक लगा दी गई।

7. इंग्लैंड के बाजार से आयरलैंड निर्मित सिल्क और दस्ताने हटा दिए गए।

कैथोलिक और प्रोटेस्टेंटों पर प्रभाव

उद्योग से हटाए गए कैथोलिक अपनी जमीन पर वापस

जाना चाहते थे परतु उनकी जमीन छीन ली गई थी। आयरिश प्रोटेस्टेट दूसरे देशों में चले गए। आयरिश अमेरिकनो ने अमेरिका के स्वतत्रता युद्ध में भाग लिया था और सेना में आयरिशों को भी भर्ती कर लिया गया। यह सेना महाद्वीप से अमेरिका के लिए युद्ध करने गई।

18वीं सदी मे राष्ट्रीय पुनर्निर्माण

1 कवि और सगीतकार केरोलेन ओवेन रॉक ओ सल्लीवान के समर्थन में जुट गए।

2 आयरिश स्कूल खुलते चले गए।

आयरिश प्रोटेस्टेंट नेशनलिज्म का लेखक विलियम मोलिनिक्स था। उसने आयरिश सवैधानिक स्वतत्रता पर पुस्तक लिखी, जिसमें आयरिश ससद की स्वतत्रता का प्रतिपादन किया गया था को जला दिया गया। स्वीफ्ट ने भी विदेशी सरकार का विरोध किया और कहा "हम उन मरीजों की तरह हैं, जिनके लिए डाक्टरी दवाएं भेजी गई हैं लेकिन हम अपने शरीर और अपनी बीमारी की प्रकृति से अपरिचित हैं।"

अमेरिकी युद्ध के दौरान फ्रासीसी आक्रमण के कारण आयरिश प्रोटेस्टेट वालंटियरो को शस्त्र दिए गए। इन सशस्त्र नागरिकों की सहायता से सरकार को मजबूर किया गया कि 1780 में निर्मित व्यापारिक संहिता को खत्म किया जाए। प्रोटेस्टेंट और कैथोलिकों का सयुक्त समर्थन पाकर ग्रैटन ने आयरलैंड के लिए विधायी स्वतत्रता मागी। इन्होंने प्राचीन आयरिश ससद की माग की–अर्थात सम्राट लार्ड और कामस-सम्राट जार्ज को आयरलैंड का सम्राट नियुक्त करने की माग की गई। अग्रेज मत्रिमडल घुटने टेक गया और 1782 में एक रिननमियेशन कानून वेस्टमिनिस्टर द्वारा पारित किया गया जिसमें कहा गया कि 'आयरलैंड के नागरिकों द्वारा मागे गए अधिकार उन्ही कानूनों द्वारा बधे होंगे जो सम्राट और ससद द्वारा इस राज्य (आयरलैंड) के सभी-मामलो के लिए पारित किए गए होंगे वे अधिकार अब पूरी तरह से सदा के लिए प्रतिष्ठित और सुनिश्चित कर दिए गए हैं और किसी भी समय अब के बाद जिन पर कोई विरोध नहीं कर सकेगा।'

आयरिश हाउस ऑफ कामस में 300 सदस्य थे जिनमें से 250 सदस्यों चुनाव क्षेत्रों में 200 से भी कम मतदाता थे।

ग्रैटन की ससद 1782 से 1800 तक चली। सम्राट द्वारा नियुक्त आयरिश मत्री वास्तव में अग्रेजी मंत्रिमडल के एजेट

थे जो आयरिश संसद के प्रति उत्तरदायी नहीं थे।

ग्रेटन की संसद के कार्य

1 न्यायपालिका को कार्यपालिका से स्वतंत्र कर दिया गया।

2 कैथलिकों को अपनी संपत्ति खरीदने का अधिकार दिया गया।

3 1792-1793 में कैथलिक अयोग्यता के कानून खत्म किए गए। उन्हें मताधिकार दिया गया। विश्वविद्यालयों में, सेना में तथा न्यायपालिका में भर्ती के दरवाजे काफी सीमा तक खोल दिए गए।

इंग्लैंड में 1829 तक यह लागू नहीं हो सका था।

1783 में वालंटियरों के नेताओं ने हाउस ऑफ कामन्स में आमूल सुधारों की मांग की लेकिन शासक वर्गों के प्रतिनिधि (इस आंदोलन में अल्स्टर प्रोटेस्टेंटिज्म भी दिल से शामिल हो गए) इच्छुक नहीं थे। इस अस्वीकृति ने 179x में यूनाइटेड आइरिशमैन की क्रांति को जन्म दिया जिस पर फ्रांसीसी क्रांति का काफी सीमा तक प्रभाव पड़ा।

समझदार आलोचक मानते हैं कि अंग्रेज सरकार ने जानबूझ कर इस क्रांति को होने दिया जिससे कि गठबंधन का बहाना बन जाए।

क्रांति को क्रूरता से दबा दिया गया। सेना के कमांडर-इन-चीफ जनरल अबरक्रोंबी ने उनके बारे में कहा 'हर तरह का अपराध, हर तरह की निर्दयता, जो भी कोसैक्स अथवा कॅलमक्स द्वारा की जा सकती है, यहां हुई है।' इतिहासकार लेकी कहता है, 'फांसी द्वारा मृत्युदंड उतने भयानक नहीं थे जितना कि सेना द्वारा बिना सोचे-समझे घरों को जलाना, निःशस्त्र लोगों, यहां तक कि स्त्रियों का कत्लेआम।'

पेन की पुस्तक 'राइट्स ऑफ मैन' बेलफास्ट के लिए कुरान जैसी बन गई।

आयरिश संसद के पास क्रांति को दबाने के लिए काफी फौज और पैसा आया। फिर भी पिट और अंग्रेज मंत्रिमंडल रिनन्सियेशन एक्ट की धज्जियां उड़ाना चाहता था। आयरिश संसद को संघवादी प्रस्ताव पास करने के लिए लालच दिया गया। प्रस्ताव केवल एक के बहुमत से पास हुआ। कहा जाता है कि केवल सात सदस्यों ने संघ के पक्ष में अलग-अलग स्वार्थों से मत दिया। आर्कबिशप ट्राय तथा कैथलिक पादरियों ने इस विचार से संघ का समर्थन किया कि कैथलिकों में एकदम उत्थान आ जाएगा। लेकिन पिट ने यह वायदा पूरा नहीं किया (कासलरे और कॉर्नवालिस ने लगभग करोड़ों पौंड छोटे-छोटे नगरों के मालिकों को खरीदने में खर्च किए। 84 निर्वाचन क्षेत्रों में से प्रत्येक को

मताधिकार से वंचित करने के लिए 7500/- रुपये का कायदा) ग्राटन संघ के विरोध में अपने अंतिम भाषण में उन्होंने आयरलैंड के संदर्भ में रोमियों द्वारा जूलियट को कहे गए निम्न शब्द दोहराए-

'तुम विजयी हो सुंदरता की प्रतिमूर्ति
तुम्हारे होंठ और गाल गुलाबी हैं
और मृत्यु का आसार भी कहीं
आस पास नहीं है।

अध्याय - 5

बायरन ने संघ के बारे में कहा, '*शिकारियों का समूह अपने शिकार के साथ।*'

डा० जानसन ने एक आयरिश व्यक्ति से कहा,

'हमारे साथ मत मिलो हम तुम्हारे साथ यदि मिलेंगे तो केवल तुम्हें लूटने के लिए।'

19वीं शताब्दी का विनाश

(क) ग्रेट ब्रिटेन की 1800 में जनसंख्या-10,500 956
आयरलैंड की 1800 में जनसंख्या-5,395 456
ग्रेट ब्रिटेन की 1900 में जनसंख्या 36 999 940
आयरलैंड की 1900 में जनसंख्या 4 458 775

यह संघ पिट केसलेरघ और अन्य लोगों की उम्मीदों के अनुरूप इंग्लैंड और आयरलैंड के बीच आर्थिक समानता कायम नहीं कर सका

(ख) आयरलैंड ने अपने विकास के लिए पूंजी आयात करने की अपेक्षा पूंजी निर्यात करनी शुरू कर दी। जमींदार लोग डबलिन की अपेक्षा लंदन भाग निकले। 1817 के बाद जब दो कोषों को मिला दिया गया तो खजाना खाली हो गया।

(ग) 1819-20 में आयरलैंड ने 5,256,564 पौंड धन दिया जबकि उसे वापिस केवल 1,564,880 पौंड मिला। 1911 में लार्ड मैकडोनेल ने हिसाब लगाया कि 99 वर्षों में इस प्रकार इंग्लैंड ने आयरलैंड से *3,25,000,000* पौंड का शुद्ध लाभ कमाया *जिसमें आयरिश शासन का खर्च सम्मिलित* नहीं है।

(घ) *1800 में डबलिन में 91 ऊन उत्पादक तथा 4938* मजदूर 1840 में डबलिन में 12 ऊन उत्पादक तथा 682 मजदूर।

सेना में इनके सदस्य थे। 1867 में इनका पतन हो गया किन्तु निम्न दो के संबध में इन्होंने अवश्य प्रभावित किया-

1 आयरिश प्रोटेस्टेंट चर्च को राजकीय सरक्षण से वंचित कर दिया।
2 पहला भूमि कानून पास हुआ।

फेनियनवाद के असफल हो जाने के पश्चात् होमरूल आंदोलन प्रभाव में आया

असफलता का सिलसिला-

1 1803 में इम्मेट की असफलता (यूनाइटेड आयरिश मैन?)
2. 1848 में यंग आयरलैंड की असफलता (नैला ओ कोनैल?)
3 1867 में फेनियनवाद की असफलता।
4 ईसाक बट और पारनैल के नेतृत्व में चल रहे होमरूल आंदोलन का असफल होना (बट संघवाद का समर्थक था साथ ही कंजरवेटिव भी था। पारनैला ग्रेटन *पार्लियामेंट को पुनर्जीवित करना चाहता था किन्तु* ग्लैडस्टोन के होमरूल बिल से संतुष्ट हो गया था)

'आयरलैण्ड को स्वयं विधी निर्माण की स्वीकृति प्रदान करने के स्थान पर अव्यवस्थित तौर तरीकों के द्वारा उपयुक्त कानूनों की प्राप्ति के लिए विवश कर दिया। जिसे संसद की अनुपस्थिति की सत्ता दी गयी। अंग्रेजों के समर्थक इतिहासकारों के अनुसार आयरलैंड राष्ट्र है और इसके सम्मुख प्रश्नचिन्ह् छोड़ देते हैं।'

उपसंहार पृष्ठ 235

पृष्ठ 236

"आयरलैण्ड में इंग्लैण्ड वास्तव में एक सेंधमार की तरह है। *इसका कोई औचित्य नहीं हो सकता सिवाय इसके कि* यह इंगलैण्ड की आदत बन गई है। पुराने समय में सामरिक महत्व जैसा बहाना हो सकता *था जबकि मनुष्य इस दुनिया* को प्रशियानिज्म छुटकारा दिलाना चाहता था। दुनिया की नैतिक भावना अब कभी भी *अंग्रेजों के अपराध के* लिए सामरिक महत्व जैसा कोई कारण सहन नहीं कर सकती।"

लायड जार्ज ने घोषणा की कि इग्लैंड कभी भी आयरिश गणतंत्र को मान्यता नहीं देगा। उन्होंने सर होरेस प्लनकेट

उस समय आयरलैंड का पूरा क्षेत्र था

के तत्त्वावधान में हुए कन्वेंशन में कहा कि उन्हें कभी डोमिनियन होम रूल की माँग नहीं करनी चाहिए। लॉयड जॉर्ज ने यह भी कहा कि आयरिश जनमत संग्रह असम्भव है क्योंकि जनमत का वास्तविक क्षेत्र निश्चित नहीं किया जा सकता। लेकिन उस कन्वेंशन* के लिए उन्हें पहले क्षेत्र निश्चित करने में कोई कठिनाई नहीं थी। इंग्लैंड ने आयरलैंड का प्रश्न शांति सम्मेलन या विशेष राज्य के प्रधानमंत्रियों तथा राजनीतिज्ञों के सम्मेलन में लाने की अनुमति नहीं दी। जहाँ तक शांति सम्मेलन के समक्ष अपील करने का प्रश्न था इंग्लैंड ने न केवल सिन फिन कार्यकर्ताओं की माँग को अनसुना कर दिया वरन् आयरिश सिपाहियों की अपील को भी नहीं सुना जिन्होंने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में ब्रिटिश सेना का साथ दिया।

एक बहुहस्ताक्षरित ज्ञापन भूतपूर्व सिपाहियों और अधिकारियों की ओर से शांति सम्मेलन में दिया गया।

‘आयरिशवासी इस समय इंग्लैंड द्वारा एक जीते हुए देश के नागरिक के रूप में रहने में शर्म महसूस कर रहे हैं और इसके विरोध में विद्रोह कर रहे हैं। जनतंत्रवाद इंग्लैंड द्वारा आयरलैंड की जीत को मान्य करने का केवल एक बहाना है।

पृष्ठ 240

द अलस्टर क्वश्चन

‘अलस्टर का प्रश्न ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों का एक खेल है ----- यदि अलस्टर हाल के वर्षों में राष्ट्र विरोधी रहा है तो यह ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों की मिलीभगत से हुआ है। न्यू स्टेट्समैन में एक लेखक ने घोषणा की कि यहाँ तक कि युद्धोपरांत इंग्लैंड पर फिर से युद्ध थोपने की धमकी का संकेत कार्सन को मंत्रिमंडल की तरफ से मिला था। ‘कार्सनवाद की कठिनाई न केवल पूरी तरह से लंदन द्वारा योजनाबद्ध की गई थी वरन् लंदन द्वारा पूरी तरह पोषित भी थी। अलस्टर को लंदन में राजनीतिक रंग दिखाया गया और यह कहना कि यह मुख्यतः आयरिश समस्या है पूरी तरह से ढोंग है।’

अलस्टर में राष्ट्रवादी अल्पसंख्यक अनुपातिक रूप से आयरलैंड के अलस्टर अल्पसंख्यकों से संख्या में अधिक हैं। बेलफास्ट को छोड़कर अलस्टर में राष्ट्रवादियों की संख्या अधिक है। बेलफास्ट से बाहर जनसंख्या का 50.016% कैथोलिक है और 49.084% प्रोटेस्टेंट हैं। सभी कैथोलिक राष्ट्रवादी हैं परन्तु प्रोटेस्टेंटों की अधिक संख्या संघवादी नहीं है। अलस्टर के 4 मुख्य संघवादी केन्द्रों में 30% राष्ट्रवादी लोग हैं दूसरी तरफ पूरी अलस्टर संघवादी

जनसंख्या आयरलैंड की जनसंख्या का 20% है।

ब्रिटिश मंत्रिमंडल की पारंपरिक नीति आयरिश देशभक्तों के विरुद्ध युद्ध करने की है तथा जीन क्षेत्रीयवाद को पुरस्कृत करने की रही है। अधिकांश प्रतिष्ठित संघवादी हमेशा ब्रिटिश सरकार से पुरस्कृत होते रहे हैं और लायड जार्ज ने भी आयरिश विरोधियों को अलंकरणों से विभूषित किया है।

लार्ड हेनरी केवेंडिश बेंटिक तथा मेजर हिल्स जैसे संघवादियों का रुख हाल ही में तरफदारी का रहा है। नार्थक्लीफ ने आयरलैंड के लिए डोमिनियम प्रकार की सरकार का समर्थन किया है। कुछ रूपों में यह एसक्वीशियन योजना का बेहतर ढंग है।

वायसेस ऑफ द न्यू आयरलैंड

(1) पी०एच०पीयर्स की कृतियां जिन पर फादर ब्राउन की भूमिका है।

पृष्ठ 182

त्याग

मैंने देखा तुझे निर्वस्त्र
ओ अप्रतिम सुंदरता
और मैंने मूंद ली
अपनी आंखें इस डर से
कि कहीं मैं गिर न जाऊं

मैंने मूंद ली अपनी आंखें
मैंने बंद कर लिए अपने कान
मैंने कड़ा किया अपने हृदय को
मैंने दमन किया अपनी इच्छा का

मैंने पीठ फेर ली
अपने ही बनाए दृश्य की ओर से
अब मेरे सामने एक सड़क थी
लंबी--ठीक मेरे सामने

मैंने अपना चेहरा मोड़ लिया
इस सूनी लंबी सड़क की ओर
अंतिम सिरा जो मैं देखता हूं
वही मेरी मृत्यु है।

विद्रोही

मेरा जन्म उन लोगों में हुआ
वे लोग जो दुखों में पीड़ित
जिनके पास कोई काम नहीं
केवल आराम है
कोई धन नहीं केवल स्मृतियां शेष हैं
स्मृतियां उस प्राचीन शान शौकत की
मैं अपने इन लोगों से कहता हूं।
श्रद्धेय हो पवित्र हो तुम बावजूद इन बेड़ियों के

मैं कहता हूं इन सब से
तुम सब महान हो उनकी तुलना में
जिन्होंने तुम्हें बांधा है बेड़ियों से हैं
तुम दृढ़ निश्चयी हो शुद्ध हो
तुम्हें चाहिए—हिम्मत
ईश्वर पर भरोसा
ईश्वर जो सर्वज्ञ है परमप्रिय है

जो सभी के हृदय में विराजमान है।
मैं कहता हूं जिसके लिए वह शान और भीड़ा में मर गया।
मैं कहता हूं, अपने लोगों से तुम मेरी जवानी के दिन हो।
तुम सब मूर्ख कहलाओगे जो मेरी ही तरह
तुम सब बिखर जाओगे—बच नहीं सकोगे
तुम अपनी सब दांव पर लगा दोगे
कहीं तुम अपनी बहुमूल्य वस्तु न खो दो

तुम्हें एक आश्चर्य की प्रतीक्षा है
चूंकि तुम्हें ईश्वर पर भरोसा है।
इसके लिए मैं उत्तर दूंगा
मेरे साथियों मेरा उत्तर अभी और इसी समय
साथियों मैंने तुम्हें अपना प्यार दिया है।
क्या हम फिर से एक नहीं हो सकते।

बटोही

सांसारिक सौन्दर्य ने मुझे पीड़ित किया है
यह सौंदर्य जो नश्वर है
कभी कभी मेरा हृदय प्रसन्नता में नाच उठता है।
जब मैं देखता हूं पेड़ पर लपकती गिलहरी को
जब मैं देखता हूं सोन चिरैया को बैठे टहनी पर
जब मैं देखता हूं शाम के समय खेत में श्रमिकों को

आड़े-तिरछे सूरज की कांति में
तिकोने समुद्री किनारे
रेत पर नंगे पैर चलते नन्हे-नन्हे बालकों का
अथवा कनार के नगरों की छोटी गलियों में खेलते
प्रसन्नचित्त नन्हे-मुन्नों का
तब कहीं से मेरा दिल कहता है
यह सब क्षणभंगुर है।
सब बदलेगा नष्ट होगा और समाप्त होगा
ये सब सुंदर चमकदार, कांतिमान और प्रसन्न बदन
और मैं चल देता हूं,
अपने रास्ते पर एक भारी मन से।

आलोचना

पियर्स ने गलिक लीग पत्र 'द सार्ड ऑफ द लाइट' का संपादन किया। वह मुख्य रूप से शिक्षाविद् थे।

'लेखक ने अपने जीवन और अपने सिद्धांतों में तालमेल बना कर रखा और जीवन भर अपने सिद्धांतों की रक्षा की। फादर ब्राउने का कथन है कि *'पियर्स भविष्य में काफी समय तक लोगों के मस्तिष्क को झकझोरता रहेगा और वह गत एक सौ तीस वर्ष के इतिहास में हुए किसी भी विद्रोही से उच्च स्थान पर रहेगा।*

उसके विद्यालय के कमरों में एक कमरा आयरलैंड के भूतकाल के महान लोगों के नाम से सजा था जिनमें से लगभग सभी विद्रोह की प्रतिमूर्ति थीं। विद्यालय का अंदरूनी भाग एक प्रकार से आयरलैंड की बहादुरी का मंदिर था।

अपने लेखन संग्रह में उसकी गंभीरता एक आध्यात्मिक के रूप में उभर कर सामने आई है। इसके विश्वास को अब रहस्यवाद का पद प्राप्त हो गया है। उनकी कविताओं और नाटकों में उत्पीड़न का स्वर झलकता है। वह अब रक्त रंजित क्रांति की आवश्यकता में विश्वास करने लगा है। उसी प्रकार जिस तरह आयरिश भाषा की आवश्यकता में वह एक आयरिश गणतंत्र के पारंपरिक आदर्शों को स्वीकार भी करता है। वे आदर्श जो वोल्फी टोन ने फ्रांसीसी क्रांति की सहानुभूति में सोचे थे और अपनी याद में फेनियनवादियों द्वारा समर्पित थे। उसके लिए जीवन का अर्थ अपने आदर्शों के प्रति बलिदान और समर्थन की भावना है। वह एक प्रकार का सुसमाचार लेखक बन जाता है जो इस बात का

अरण्यरोदन करता है कि आयरलैंड के लिए बिना रक्तपात किए पापों से मुक्ति नहीं मिल सकती। वह धर्मयुद्ध के प्रचारक बन जाते हैं और अपने समय के नवयुवकों का आह्वान क्रिश्चियन युरोडों की भावना अपनाने के लिए करता है। वह एक दूरद्रष्टा बन जाता है और युद्ध क्षेत्रों की भविष्यवाणी करता है। वह भाग्यवादी बन कर आज के युग को भग्य के अंतिम दिन तलवार भाजन नहीं देख सकता। उसके दो सर्वाधिक चर्चित नाटक 'सिंगर एंड दी किंग' में युद्धक्षेत्र में आत्मबलिदान के दृश्य हैं। पहले में परदा नायक के ऊपर गिरता है जब वह गाल (विदेशी) के विरुद्ध चिल्लाता हुआ बाहर जाता है 'जिस प्रकार एक व्यक्ति पूरे विश्व को मुक्त कर सकता है, एक आदमी एक जाति को आज़ाद कर सकता है। मैं कोई शस्त्र नहीं उठाने वाला। मैं युद्ध मैदान में खाली हाथ जाऊंगा। मैं गाल के सामने उसी प्रकार खड़ा हो जाऊंगा। जिस प्रकार ईसा मसीह दुनिया के सामने पेड़ पर निर्वस्त्र लटक गए।'

'वंकेदरर' में वह दुखी मन से उन सब बातों पर ध्यानावस्थित होता है जिनको वह भावावेश में त्यागना चाहता है। यह केवल अपने ही त्याग की बात नहीं वरन् सभी सुंदर वस्तुओं की नश्वरता के बारे में' जिनके बारे में विश्व के कवियों ने इतना कुछ लिखा है। वह अंत में सोचता है–वह हमेशा विशेष रूप से द्रवित हुआ है, बच्चों के व्यवहार से।

स्वतंत्रता संबंधी कविताओं को भावुक नहीं कहा जा सकता। वे आह्लादित करने वाली हैं, सस्वर हैं, भावपूर्ण हैं, जैसे कि किसी चारण की तुकबंदी को विकसित किया गया हो। 'दी रिबेल' की आरंभिक पंक्तियों को पढ़ते ही लगता है कि जैसे किसी ने तारों को झंकृत कर दिया हो 'मैं हूं ------शान-शौकत' श्रोता समूह को भावातिरेक से परिपूर्ण हल्की सरसराहट को महसूस किया जा सकता है,–जैसे-जैसे लेखक विश्वास को आह्लादित कर देने वाली स्वीकृति की ओर बढ़ता है....पियर्स का विश्वास था कि पूरी तरह से आयरिश स्वतंत्रता उसी समय प्राप्त की जा सकती है यदि वह और उसके समकालीन देश के लिए आत्मोत्सर्ग करने को तैयार हों।

पुराने ज़माने का चारण आधा चारण होता था और आधा कवि और यही, मेरी समझ से, सबसे अच्छा वर्णन पियर्स के बारे में एक लेखक के तौर पर हो सकता है। उसकी

कहानियां मुश्किल से गिनी जा सकती हैं उनमें जीवन के वर्णन का अभाव है लेकिन कविताओं और नाटकों में प्राय उस व्यक्ति का स्वर मुखरित होता है जो परिस्थितियों द्वारा सताया गया हो, जिसका चेहरा एक भविष्य सूचक विश्वास से कांतिमान हो। मैं स्वीकार करता हू कि रक्तपात द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के विश्वास में सत्य की अपेक्षा गलती अधिक है। लेकिन ये नाटक और कविताएं एक शुद्ध विश्वास के कारण अधिक सुदर हैं यह विश्वास है निर्धन दीन-हीन के भाग्य में और ससार को पीड़ा से मुक्ति दिलाने के लिए आत्मबलिदान में।

वायसेस ऑफ न्यू आयरलैंड

(2) श्रीमती जे०आर० ग्रीन	पृष्ठ 190
(3) ए० ई०	पृष्ठ 197
(4) टी० एम० केटल	पृष्ठ 213
(5) डोरा सिगरसन (श्रीमती शोर्टर)	पृष्ठ 222

श्रीमती जे आर. ग्रीन

पुस्तकें

(1) आयरिश नेशनलिटी

(2) दी वे ऑफ हिस्ट्री इन आयरलैंड (एक निबंध)

(3) मेकिंग ऑफ आयरलैंड एड इट्स अनुडूइंग

(4) दी ओल्ड आयरिश वर्ल्ड

(5) दी ट्रेड रूट्स ऑफ आयरलैंड (दी ओल्ड आयरिश वर्ल्ड में एक निबंध)

कैंब्रेनसिस एवरसेस के लेखक लिंच से डा० जोयसे तक लेखकों ने आयरिश इतिहास को आयरिश दृष्टि से लिखा है लेकिन इसे विश्वविद्यालयों ने नहीं माना है। श्रीमती ग्रीन ने अपनी पुस्तकों—आयरलैंड ऑफ आर्ट मैकमरोह मार्ग्रेट ओ कोनोर तथा ओ नील में पूरे आयरलैंड को समेटा है जबकि लेकी ने स्विफ्ट् तथा ग्राटन के प्रतिबंधित आयरलैंड का वर्णन किया है। 'इन द मेकिंग आफ आयरलैंड एड इट्स अनडूइंग' में उसने दिखाया है कि किस प्रकार आयरलैंड के व्यापार और सस्कृति को बडलिन के महलों की कथित सभ्य बनाने वाली एजेंसियों ने नष्ट किया।

'ट्रेड रूट्स आफ आयरलैंड' में उसने यह यह दिखाया है कि यूरोप के लिए मूलत आयरिश मार्ग स्पष्टत इग्लैंड से होकर नहीं है वरन् समुद्री रास्ते से सीधे स्पेन सदर्न फ्रांस और स्कैनडिनेविया से है। आयरलैंड की सबसे बड़ी

चार्ल्स द बाल्ड के समय महाद्वीप पर जो भी ग्रीक में बोलता था वह या तो आयरिश था या

वैकल्पिक सभ्यता विकसित नहीं हुई। आयरलैंड का ग्रामीण क्षेत्र एक तरह से भाग फूस और नीरसता का रेगिस्तान बन गया है। ए.ई. कहता है कि आयरलैंड की मुक्ति की प्रार्थना सरकार से न होकर राष्ट्र की आत्मा और इच्छा शक्ति से होनी चाहिए। वह कहता है कि हमारे सामने अब लोगों में मानवीय इच्छा शक्ति में गिरावट की त्रासदी है। पूजनीय वस्तु या मूर्ति अर्थात् राज्य के साथ कोई साझेदारी किए बगैर काम कर सके। हमारे आज के राज नेताओं की नीति का परिणाम आयरिशवासियों को एक ऐसी नस्ल बना देना है जिसे सदा अपनी आर्थिक आवश्यकताओं के लिए राज्य के आश्रित होना पड़े। (कोआपरेशन एंड नेशनलिटी)

ए.ई. की इच्छा पहले लोगों के दिलों में सहकारी राष्ट्रकुल बनाना है और बाद में आयरलैंड के उपनगरों में इस भावना का विस्तार करना है। वह इस विश्व के मानचित्र पर एक नया एथेंस खड़ा करना चाहता है जो मात्र एक शहर नहीं होगा वरन् एक प्रभावशाली देश होगा।

किसी भी [illegible] के व्यक्ति संगठित होकर अपने नगर शहर-देश [illegible] सुन्दर बना सकें जिससे दमिश्क की घाटी [illegible] काल्पनिक नखलिस्तान। वे पैगनारों की झाड़ियों के साथ [illegible] के सुंदर लगा सकते हैं और नगरीय सड़कों को [illegible] से सुंदर बना सकते थे। यह महाद्वीप के अनेक ग्रामीण अंचलों में हुआ है और कोई कारण नहीं कि यह यहां नहीं हो सकता। केवल हम आदमियों को एकत्र करना चाहिए उन्हें संगठित करना चाहिए इससे हमारा विकास उत्तरोत्तर होता जाएगा। सभी नस्लों द्वारा किए गए महान कार्य सभी सभ्यताएं सभी व्यक्तियों द्वारा मिल जुल कर किए गए ऐच्छिक प्रयासों से संभव हो सकी हैं। कभी कभी ऐसा लगता है कि इस मानव समुद्र में कोई अदृश्य उच्च मस्तिष्क है जो व्यक्तियों के माध्यम से काम न कर मानव समूहों में बंधुत्व की भावना भर कर काम करता है। फिर भी वह सभ्यता जो व्यक्तिवाद पर आधारित है तुच्छ होती है और जो बड़े समूहों सभी समुदायों बंधु समाजों पर आधारित होती है वह उच्च एवं अनुकरणीय होती है यदि हमें आयरलैंड में एक ग्रामीण सभ्यता को विकसित करना है वह सामूहिक सहकारिता के रूप में होनी चाहिए। (कोआपरेशन एंड नेशनलिटी)

ए.ई. के साहित्य के सिद्धांत में अधम प्रकार की अवैधता का

कोई स्थान ही नहीं है। उसका विश्वजनीनता का सिद्धांत उतना ही अनैतिक है जितना हिटलर का। उसका साहित्यिक धर्म टालस्टाय जैसा है।

अपने निबंध 'नेशनलिटी एंड कॉस्मोपॉलिटनिज्म' में, वह एक आयरिश साहित्य का जन्म होना देखता है जो ऐसे उच्च चरित्रों, को जन्म देगा जिनका सामान्य लोग अनुसरण कर सकें। 'जनता का साहित्य सदा ही जनता में एक नई प्रेरणा पैदा करने के लिए है।' वह नष्टप्राय यूटोपियन आदर्शों से आयरलैंड के लिए किसी अच्छे और सुखद भविष्य की कामना नहीं करता क्योंकि यूटोपियन आदर्श केवल ऊपरी तौर पर आकर्षक सुनहरे कागज में लिपटी एक छलावी लालची भावना की तरह है। यह येट्स के विरुद्ध एक विरोध भी है जिसने 'दी ऑटोमन आफ दी बॉडी' आयरिश लोगों को ऊँचे उदाहरण देने के लिए लिखा। जहां तक अंग्रेजी साहित्य की बात है, ए. ई. कहता है:

"अंग्रेजी साहित्य सदा ही यथार्थ चरित्रों के साथ अधिक सहानुभूतिपूर्ण रहा है बजाय किसी आदर्श चरित्र के और यह हमारे लिए इतना उपयोगी नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए एक आदमी जो डिकेंस को पढ़ता है, विचित्र पात्रों के प्रति अधिक सहनशील हो सकता है क्योंकि वे पात्र इंग्लैंड की सामाजिक व्यवस्था की उपज हैं। लेकिन वह व्यक्ति एक उच्चस्तरीय मानवीय समाज की परिकल्पना में सहायक नहीं हो सकता और यह अधिकांश अंग्रेज साहित्यकारों के बारे में सच है, जिनके पास एक मौलिक दर्शन का अभाव है और जो मनुष्य को उसके आज के बाहरी आवरण में देखकर ही संतुष्ट हैं; बजाय इसके कि उसे एक शाश्वत यात्री के रूप में मानें जो आज हाड़-मांस का पुतला है लेकिन बाद में दैवीय शक्ति वाला सिद्ध हो सकता है, जो सुबह के तारे के रूप में चमक सकता है।"

उपरोक्त वाक्यों में आयरलैंड के स्वर्ण युग के निर्माता और पथ प्रदर्शक का स्वर है, न कि किसी साहित्यिक आलोचक का। ए.ई. ऐसा देशभक्त है जो पूर्ण हताश व क्षोभ के बावजूद आयरलैंड के प्रति ऐसे स्वप्न देखता है जो कवि ब्लेक ने इंग्लैंड के लिए देखे थे। मैजिनी और रस्किन के बाद से सामाजिक भविष्यवक्ताओं के क्षेत्र में ऐसा कोई जोशीला स्वर उभर कर सामने नहीं आया। वह आगे लिखता है :-

"आयरलैंड का ग्रामीण क्षेत्र इतने ही सुंदर रूप में खिला कर विकसित किया जा सकता है जैसा कि कभी मध्यकालीन इटली का पहाड़ी क्षेत्र किया गया था। यदि हम अपने आत्मविश्वास को जगा सकें तो हमारे पास वह सभी कुछ है जो किसी भी दूसरी प्रजाति के पास प्रेरणा के रूप में है जैसे कि ऊपर सुंदर स्वर्ग, नीचे आकर्षक धरती, तथा हमारे अपने पास चलती जीवन की श्वास। मैं उस व्यक्ति को अपने से अलग करना चाहूंगा जो हमारे सबके लिए कोई सीमा रेखा बनाएगा, जो अपने लिए कोई राजमुकुट और सत्ता की धारणा बनाएगा, और छोटी-छोटी बातों तक अपना लक्ष्य रखेगा कि हम यहां तक जा सकते हैं और इससे आगे जाना संभव नहीं हो सकेगा। वह अपने साथियों से 'प्रॉमिस्ड लैंड' तक जाने के लिए इन शब्दों में आह्वान करता है :

"हमें आयरलैंड में जंगली जानवरों की तरह एक-एक दिन का जीवन नहीं जीना चाहिए बल्कि इस तरफ सोचना चाहिए कि गेल का यह जुलूस कहां जा रहा है और अपनी पीढ़ी का अंतिम पड़ाव कहां और किस प्रकार रखेगा। इस ज़मीन पर राष्ट्रीय उद्देश्य ही सर्वाधिक अविजित और विजयी माना जाना चाहिए। यह राष्ट्रीय उद्देश्य मरुस्थल की रेत से बेबीलोन जैसा शहर खड़ा कर सकता है। यह छोटी-छोटी झोंपड़ियों से एक शाही संस्कृति विकसित कर सकता है जब यह विकसित होकर बिखरने लगे तो यह संस्कृति एक ऐसे स्थायी स्मारक के रूप में बनी रह सकती है जैसे प्रकृति द्वारा निर्मित चट्टानें। मिस्र की रेतीली भूमि पर पिरामिड और स्फींक्स शताब्दियों से मानव जाति का इसी प्रकार प्रकृति का एक अंग लगता रहा है जैसे कि आयरलैंड में एग्रीगल अथवा बेनबुलबेन अथवा गलियन लगते रहे हैं।

कैंडिल आफ विज़न

"ऐ प्रतिभाशाली! ट्रेज़र हाउस के रक्षक द्वारा इसका कोई कार्य नहीं। यह दिया नहीं जाता वरन् लिया जाता है। तुम, दृढ़ आत्मा की शक्ति के प्रतीक, यदि तुम चाहो तो अपोलो की वीणा बजा सकते हो, लेकिन तुम्हें ईश्वर के प्रेम में मदमस्त होना पड़ेगा।"

उसका विश्वास है कि कल्पना हमारी खोई नागरिकता को तथा दिव्य संसार की चेतना को प्राप्त करने का माध्यम है। "मैं इस बारे में आश्वस्त हूं जैसा कि एमर्सन ने कहा कि सभी काव्य

लिखा कि मेरे पास एक विचार है जाथुस्ट के साथ ही मैंने जर्मन भाषा को एक पूर्णता दी है' यह दावा सभवत सच भी है। शैतान हमेशा ही बहुरूपिया रहा है और यह अनुचित भी नहीं है कि जब वह सबसे खराब बात कहता है, उसकी भाषा सदा सबसे अच्छी होती है (नीत्शे के बारे में केटल के विचार)

केटल ने लिखा "युद्ध कोई अनिवार्य वस्तु नही है और यदि युद्ध अनिवार्य है तो वह आक्रमण के विरुद्ध होना चाहिए और आक्रमण भी कभी अनिवार्य नहीं होता।" (दी वेज आफ वार)

(5) डोरा सिगरसन (श्रीमती शोर्टर)

पृष्ठ 222

स्विनबर्न और फ्रांसिस थाम्पसन ने डोरा सिगरसन की प्रशसा की और मेरेडिथ ने 'इस प्राणी मे शाश्वत तेज' की बात की। वह एक जन्मजात कवियत्री थी कोई जबर्दस्ती नही बनी थी। उसने कला की प्राप्ति म स्वय का समाप्त कर दिया था। "वह कलात्मक प्रवृतियो मे बहुत अधिक परिपूर्ण थी और उसके पास अनेक प्रकार की उपलब्धिया थी। उसने यह सब कुछ बिना किसी शिक्षा या प्रशिक्षण के प्राप्त किया था कि प्रतिभाशाली जैसा शब्द उसके साथ अनुचित लगता था। सभी उपहार उसके पास स्वयमेव आते थे सभी वास्तविक उपहार बिना मागे।' उसकी कविताओं में एक नयापन है। ऐसा महसूस होता है कि जैसे उसने उन्हे उसी सहजता से लिखा जिस सहजता से वह बात करती थी बिना किसी रुकावट और पुनर्विचार के। कैथेरीन टायनान ने *लिखा है 'उसका चेहरा ग्रीक हरकुलिस जैसा* अनूठा था। वह सुदरता अद्वितीय थी उसके युवा सौंदर्य म भी अजीब सा तूफान था। सुदरता मे त्रासदी का निशान होते हुए *भी उसके पास आनद का भडार था।*

पुस्तकें

1. द सेड इयर्स परिचय कैथेरीन टायनान द्वारा
2. प्राग्रेस
3. रोड आफ दी रिफ्यूजीज
4. एन आल्ड प्रोवर्ब
5. दा डेड साल्जर
6. दी कमफर्टर्स
7. दी ब्लैक हार्स मैन

(2,3 4 सभवत पुस्तकें न होकर कविताए हैं)

जब यूरोपियन युद्ध शुरू हो गया। उसने इस कठोर धरती और इसके पीडितों के बारे मे लिखा

'देखो मैं प्यासी हू'।

सूखी धरती ने नि श्वास भरकर कहा

'मुझे लाल रक्त दो'

ऊची ऊची पहाडियों ने कहा

'जैसा कि वह प्रारभ में था

वह किशारावस्था से ही कुत्तों के प्रति सुहृद थी

और जैसा कि अंत में भी होगा।'

डबलिन में हुई 1916 की घटना के बाद, उसने 'डेड सोल्जर' लिखी। वह एक तरह से पैगंबर बन गई क्योंकि वह पूरे देश में पढ़ी जा रही थी। आयरलैंड पर सदा अपने शहीदों पर रोने का दोष दिया जाता रहा है। कितने मूर्ख थे वे राजनीतिज्ञ जिन्होंने उसे रोने के लिए और मृतक दे दिए। उसने अन्य किसी की भी अपेक्षा कहीं अधिक बार शहीदों के बारे में शोक गीत गाए

'देखो, वे आते हैं एक विजयी सेना की भांति,
पहाड़ों के ऊपर से देखो, उनके अस्त्र शस्त्र लटकने।
फिर भी मैं चुप हूं, लेकिन मेरा चक्र चल रहा है
मैं आंखें बंद करता हूं, क्योंकि, मेरा दिल रोता है।
मेरा दिल रोता है, एक मृत सिपाही के लिए।
वह कौन है जो हमारी तरफ देख रहा है॥
यह कोई आदमी नहीं वरन् एक झंडा फहराता हुआ।
मुख उसका लाल है, उसकी सफेद पलकों में अश्रुपात है।
उसकी नीली-नीली आंखें, मेरी आत्मा तड़प रही है।
मेरी आत्मा तड़प रही है, एक मृत सिपाही के लिए
तुम थोड़ा नीचे झुको, कहीं तुम्हारी आंखें नम न हो जाएं।
तुम थोड़ा नीचे झुको, तुम्हारे मुंह से स्वर निकले।
हे ईश्वर उनके ऊपर कहीं तुम्हारा क्रोध न झलके।
यही प्रार्थना है जो मेरे अधरों से उठ रही है।
मेरा हृदय, मृत सिपाही के लिए प्रार्थनारत् है।
विजय श्री हो, मनुष्यों का मार्ग प्रशस्त हो।
क्योंकि वह मृत है और उसकी तलवार टूटी पड़ी है।
उसका लक्ष्य बहुत दूर है जहां कोई मदद नहीं आ सकती।
उसने अपने लोगों के लिए कोई चिह्न नहीं छोड़ा,
उसने कोई चिह्न नहीं छोड़ा, ऐ मृत सिपाही,
तलवार का रास्ता व्यक्ति अपना सकता है।
उन सुनहरे चमकते बालों वाले बच्चों को देखो।
जब आक गिरता है, उसके फूल नष्ट होते ही हैं।
वह तलवार उठाता है, उसकी आंखों में एक सपना है।
वह सपना देखता है, मृत सिपाही के सपनों का।

यूरोप में हर टूटा हुआ और पराजित व्यक्ति इसी प्रकार की भावनाओं की कविताएं करता है।

आयरलैंड का पहला ध्वज–हरा। आज का झंडा–

अध्याय-15

गुलाबी सफेद हरा तिरंगा।

राष्ट्रगीत 'दी सोल्जर्स साग'

पार्नेल ने हमेशा हरे रंग को दुर्भाग्यपूर्ण रंग माना।

दी विटनेस आफ दी पोयट्स

लेडविज कैटिल - इंग्लैंड के लिए लड़ते हुए प्राण त्याग दिए।

अध्याय-16

लेडविज-'लास्ट सान्स' के रचयिता हैं। इस पुस्तक में महत्वपूर्ण कविताएं हैं जैसे 'कारयिपु और 'दी डेड किग्स'।

मकडोना पीयर्स - लड़ते लड़ते प्राण त्यागे।

उदाहरण
अज्ञात लेखक

जेम्स स्टीफन्स 'रीइनकारनेशन्स' के लेखक ने पुराने गैलिक कवियों की कृतियों से रूपांतर किया। ओ राहिली की कविता 'इनिस फाल' का अनुवाद इस प्रकार है-

अब हम एक तरफ मुड़ जाएं और अपने अश्रु पोंछें।
हमें तसल्ली दो हमारे डर को समाप्त करो।
अब क्योंकि सब समाप्त हैं सभी मधुर गुण।
सभी शराफत और आतिथ्य पूर्ण
सभी शिष्टाचार और आनंद समाप्तप्राय हैं।
हमारा संगीत नीरस हमारा कंठ स्वरविहीन
अब क्या हम शांत रह सकते हैं और दुखों को भूल सकते हैं
कुछ भी संपूर्ण नहीं है जिसे मिटाया न जा सके।
हमारे पास ऐसा कुछ नहीं जिसे अपना कह सकें।

पियर्स 'सान्स आफ द आयरिश रिबेल्स' पुराने गलिक गीतों का अनुवाद है।

"संसार विजयी हो गया है।
हवा धूल की भाँति चरणों तक फैल गई है।
सिकंदर सीजर अन्य सभी।
जो अपनी-अपनी कहते थे
अब सब घास फूस हैं, और देखो
ट्राय ने कैसा वार किया है।
कहाँ ये अंग्रेज होते।
उनका भी समय आएगा
देखो राजाओं की जगह राज है ठगों का

*लिट्रेचर इन आयरलैंड

टामस मेकडोना* आयरलैंड के साहित्यिक आंदोलन को एक विद्रोह के रूप में मानता था। उसका कथन था कि आयरलैंड में नए साहित्य की बातें आत्म निर्भरता के गौरव और एक प्रकार से अहंकार और अक्खड़पन की बात थी। गैलिक पुनरुत्थान ने हममें से कुछ को एक नया अक्खड़पन दिया है। मैं स्वयं एक गेल हूं और मैं बंधन का कोई कारण नहीं समझता। मेरी प्रजाति ने विदेशियों के छल-कपट को सहन किया है। उसने हर एक के आगे झुकना स्वीकार नहीं किया और आज यह आशा और प्रेम से भरपूर, अपने हाथों से अपना नया भाग्य निर्माण करने की नई इच्छा शक्ति और संकल्प लेकर तथा अपने होंठों पर नए संगीत और नई भाषा के नए स्वर लेकर सामने आई है। इस प्रकार *का अक्खड़पन नई घटनाओं और नई शक्ति का प्रतीक है इसीलिए यह स्वागत योग्य है।'*

'ए नोट आन आयरिश लिट्रेचर' का यह अध्याय आयरिश साहित्य के इतिहास का निचोड़ है।

द हिस्ट्री ऑफ सिविलाइजेशन इन यूरोप

लेखक-फ्रांकोस गिजोट
सिसलेज लि. लंदन

'हिस्ट्री आफ यूरोपियन सिविलाइजेशन'- फ्रांस द्वारा यूरोप की सभ्यता मे हिस्सेदारी। इसमें दो मुख्य तथ्य सभ्यता का निर्माण करते हैं-

प्रथम भाषण

(1) समाज का विकास (2) व्यक्ति का विकास। सभ्यता के इतिहास को दो दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है।

दूसरा भाषण

------प्राचीन सभ्यता की एकता------आधुनिक सभ्यता की विभिन्नता। इसकी श्रेष्ठता------रोमन साम्राज्य के पतन पर यूरोप की स्थिति------नगरों की प्रधानता------ईसाई चर्च-------नगर के कार्यों में लगा पादरी------असभ्य लोग------ये सब आधुनिक जीवन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा मनुष्य का मनुष्य से सौहार्द उत्पन्न करते हैं। पांचवीं शताब्दी में सभ्यता के विभिन्न तत्वों का सारांश।

तीसरा भाषण

------भाषण का उद्देश्य------सभी विभिन्न पद्धतियां वैध प्रतीत होती हैं। राजनैतिक वैधता क्या है?------पांचवीं शताब्दी में सरकार के सभी प्रकारों का सह अस्तित्व------मनुष्यों, उनकी संपत्ति और संस्थाओं की स्थिति में अस्थिरता------इसके दो कारण थे------एक भौतिक----

--आक्रमण का निरन्तरता तथा दूसरा नैतिक व्यक्तित्व में स्वार्थपूर्ण भावना जो असभ्यों के समान है------सुव्यवस्था की आवश्यकता सभ्यता है------रोमन साम्राज्य की स्मृतियां, क्रिश्चियन चर्च तथा बर्बरियन असभ्यों का नगरों तथा स्पेन के चर्च द्वारा, शार्लमैगन तथा अल्फ्रेड द्वारा संगठनों पर आक्रमण------जर्मन तथा अरबों के आक्रमण की रोकथाम------सामन्तवादी व्यवस्था की शुरुआत।

चौथा भाषण

भाषण का उद्देश्य------तथ्यों और सिद्धांतों में आवश्यक तालमेल------नगरों पर देश का आधिपत्य------छोटे सामंती समाज का संघ सामंतवाद का सामन्तशाह के चरित्र पर तथा उसके परिवार पर प्रभाव------सामन्तवाद के प्रति लोगों की घृणा------पादरियों द्वारा कुछ न किया जाना------नियमित रूप से सामंतवाद संगठन चलने में कठिनाइयां।

(1) कोई शक्तिशाली सत्ता नहीं। (2) कोई जनशक्ति नहीं (3) संघीय पद्धति की कठिनाइयां------सामन्तवाद में निहित विरोधात्मक प्रवृत्ति का विचार------व्यक्ति के विकास को सामाजिक व्यवस्था के विरोध में खड़ा करने के लिए सामन्तवाद का प्रभाव।

पांचवा भाषण

भाषण का उद्देश्य : धर्म साहचर्य का सिद्धांत है------दबाव सरकार का सारांश है------एक सरकार की वैधता की स्थितियां------(1) सत्ता सुपात्र व्यक्ति के हाथों में होनी चाहिए। (2) शासन की आजादी की कद्र होनी चाहिए------चर्च ने एक निगम होने के कारण इन शर्तों में से एक को पूरा किया------नामित करने तथा चुनाव करने के विभिन्न तरीके जो अब तक प्रचलित थे------सत्ता के अवैध रूप से विस्तारीकरण के कारण तथा सेना के दुरुपयोग के कारण------चर्च के होते हुए आत्मा की मुक्ति एवं स्वतंत्रता------चर्च का राजकुमारों के साथ संबंध------दैविक शक्ति की सिद्धांत रूप में स्वतंत्र------चर्च द्वारा अस्थायी रूप से सत्ता के हड़पने के प्रयत्न।

छठा भाषण

भाषण का उद्देश्य------चर्च में शासक तथा शासित दल का अलगाव जन साधारण का पादरी पर अप्रत्यक्ष प्रभाव------समाज के सभी वर्गों से पादरी की नियुक्ति------सार्वजनिक व्यवस्था तथा विधायिका पर चर्च का प्रभाव------पश्चातापी प्रणाली------मानवीय मस्तिष्क का विकास पूर्णतया धार्मिक है------चर्च सामान्यतः सत्ता की तरफ रहता है------इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। धर्मों का उद्देश्य

मानवीय स्वतत्रता को नियमित करना है------पाचवी शताब्दी से 12वी शताब्दी तक चर्च की विभिन्न स्थितिया (1) इपीरियल चर्च (2) बार्बरिक चर्च इन दो सत्ताओ के अलहदगी के सिद्धातों का विकास------मठ व्यवस्था (3) सामती चर्च सर्घो पर आक्रमण सुधारो का अभाव, ग्रेगरी सप्तम्------थियोक्रिटिकल चर्च------खोज की भावना का पुनर्निर्माण------छोटे नगरों का नया आदोलन------इन दो तथ्यों में कोई सबध नही।

सातवा भाषण

भाषण का उद्देश्य------12वी शताब्दी तथा 18वी शताब्दी के नगरों की स्थिति का तुलनात्मक दृश्य------दोहरे प्रश्न------(1)नगरों को मताधिकार देना पाचवी शताब्दी से दसवीं शताब्दी के नगरों की स्थिति उनके उतार-चढाव------साप्रदायिक विद्रोह------चरित्र और नैतिक प्रभाव नगरों के मताधिकार से वंचित करने के सामाजिक तथा नैतिक प्रभाव------(2) नगरो की आतरिक सरकार------लोगो मजिस्ट्रेटों------उच्च तथा निचले वर्ग के नागरिको का इकट्ठा होना------यूरोप के विभिन्न देशो के नगरो की स्थिति में विभिन्नता।

आठवा भाषण

भाषण का उद्देश्य------यूरोपीय सभ्यता के सामान्य इतिहास पर दृष्टिपात------इसका मौलिक तथा अनूठा चरित्र ------वह समय जब यह चरित्र प्रकट होने लगा------12वी शताब्दी से 16वी शताब्दी तक यूरोप की स्थिति------धर्म युद्धो का स्वभाव------उनके नैतिक तथा सामाजिक कारण------13वी शताब्दी के अत तक इनमे से कोई कारण नहीं बचा था------धर्मयुद्धो का सभ्यता पर प्रभाव।

नवा भाषण

भाषण का उद्देश्य------यूरोप के इतिहास मे तथा ससार के इतिहास में राजशाही द्वारा महत्वपूर्ण तरीके से भाग लेना------इस महत्ता के वास्तविक कारण दो दृष्टिकोण जिनके अतर्गत राजशाही की सस्था पर विचार होना चाहिए------(1) इसका वास्तविक तथा स्थायी स्वभाव------यह अधिकार कि सार्वभौमिकता का वैयक्तिकीकरण है। इसकी सीमाएं क्या------क्या हैं------(2) इसकी अनेकता तथा लोचपन------यूरोप की राजशाही------विभिन्न प्रकार की राजशाहियो का सम्मिलित परिणाम प्रतीत होती है------इसमें असभ्यों की राजशाही------इपीरियल राजशाही------धर्मिक राजशाही------सामती राजशाही------उचित रूप से तथाकथित आधुनिक राजशाही और इसका स्वभाव।

तेरहवां भाषण ------भाषण का उद्देश्य------अंग्रेज क्रांति का सामान्य रूप------इसके मुख्य कारण------यह धार्मिक की अपेक्षा राजनैतिक अधिक थी------इसमें लगे तीन मुख्य दल (1) वैधानिक सुधारों का दल (2) राजनैतिक क्रांति का दल (3) सामाजिक क्रांति का दल------ये सभी असफल हो गए------क्रामवेल------स्टुअर्ट का पुनरुद्धार------विधि मंत्रालय------भ्रष्ट मंत्रालय------इंग्लैंड और यूरोप में 1688 की क्रांति।

चौदहवां भाषण भाषण का उद्देश्य------इंग्लैंड तथा पूरे महाद्वीप में सभ्यता की प्रगति------सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में यूरोप में फ्रांस की प्रधानता------सत्रहवीं शताब्दी में फ्रेंच सरकार के कारण------18वीं शताब्दी में राज्य के अपने कारण से------लुई चौदहवें की सरकार------उसके त्वरित विनाश के कारण------18वीं शताब्दी में फ्रांस------दार्शनिक क्रांति के मुख्य तत्व------पूरे पाठ्यक्रम का उपसंहार।

पहला भाषण
पृष्ठ 3

"मेरा विचार है कि हम कह सकते हैं फ्रांस केन्द्र रहा–एक बिंदु रहा है यूरोपियन सभ्यता का। मैं यह नहीं कहता कि उसने हमेशा और हर दिशा में अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा उन्नति ही की है। अलग-अलग समय पर इटली ने कला के क्षेत्र में तथा इंग्लैंड ने राजनैतिक संस्थाओं के क्षेत्र में उसका नेतृत्व किया है। और दूसरे भी ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें कुछ विशिष्ट समयों पर अन्य यूरोपीय देशों ने उसके ऊपर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है, लेकिन इस बात से इंकार करना कठिन है कि जब-जब फ्रांस ने सभ्यता की दौड़ में अन्य देशों से स्वयं को पिछड़ा पाया है उसने नई ऊर्जा प्राप्त की है, नए ढंग से दौड़ का मुकाबला किया है और शीघ्र ही या तो आगे बढ़ गया है अन्यथा समानता तो हासिल की ही है। यह केवल फ्रांस की ही अनूठी तकदीर नहीं रही है। लेकिन यह देखा गया है कि जब भी सभ्यता के विचारों और संस्थाओं ने अन्य राष्ट्रों में विकास की ओर कदम बढ़ाए हैं, इन्होंने और अधिक विकसित और उपयोगी बनने के उद्देश्य से अपना व्यापक रूप से विस्तार किया है। जिससे कि ये यूरोपीय सभ्यता के सामान्य लाभ के लिए कार्य कर सकें। इन्हें फ्रांस में काफी सीमा तक एक नई तैयारी करनी पड़ी है और ये फ्रांस-जैसे कि यह उनका अपना दूसरा देश हो–से निकल कर पूरे यूरोप तक विस्तृत होते गए हैं।

शायद ही कोई ऐसा महान विचार अथवा सभ्यता का महान सिद्धात हो, जो अपने विस्तार मे पूर्व इस प्रकार फ्रास से होकर न निकला हो।

"और इसी कारण से यह फ्रेंच स्वभाव में है कि एक अपनी सामाजिकता, एक सहानुभूतिपूर्ण रवैया, कुछ ऐसा जो अपना रास्ता स्वय सुविधापूर्वक और प्रभावशाली ढग से खोज ले जो अन्य राष्ट्रों के साथ नही है, चाहे वे किसी एक भाषा के हों, या फिर अपने दिमाग या तौर-तरीकों से एक हों, यह निश्चित है कि किसी एक व्यक्ति के विचार और अधिक लोकप्रिय हैं, उन व्यक्तियों की अपेक्षा जो अपने को जनता के सामने और अधिक स्पष्टता और बुद्धि चातुर्य से प्रस्तुत करते हैं और जो जनता के दिल में जल्दी ही अपना स्थान बना लेते हैं। संक्षेप में कहा जाए तो, *सुस्पष्टता, सामाजिकता, सहानुभूति आदि फ्रास के और इसकी सभ्यता के विशेष गुण हैं और यही गुण हैं* जो इसे यूरोपीय सभ्यता में अग्रणी बनने के लिए पूरी तरह से योग्य बनाते हैं।

प्रष्ठ 11– मुझे प्रगति या विकास का विचार ही, सभ्यता शब्द के साथ मौलिक विचार प्रतीत होता है (इसमें सामाजिक क्रियाकलापों तथा वैयक्तिक क्रियाकलापो का विकास भी निहित है।)

पृष्ठ 14– न केवल अपने पहले आविर्भाव के समय वरन् अपने अस्तित्व के प्रथम चरणों के दौरान भी ईसाई धर्म ने अपना सामाजिक स्थिति से कोई सबंध नहीं रखा। ऊचे स्वर से इसने घोषणा की कि इस सामाजिक स्थिति में कोई दखल नहीं देगा। इसने गुलाम को अपने स्वामी की आज्ञा मानने का आदेश दिया। इसने किसी बडी बुराई पर कोई आघात नहीं किया यहां तक कि जो उस समय के समाज की सबसे बड़ी बुराई भी हो सकती थी। फिर भी क्या कोई इस बात से इंकार कर सकता है कि ईसाई धर्म सभ्यता के लिए सबसे बडा संकट था ? ऐसा था ही क्यों ? क्योंकि, इसने मनुष्य को नैतिकता और बौद्धकता को पुनर्जीवित कर दिया।

स्वामी विवेकानद मिशन से

पृष्ठ 20– क्या समाज की रचना व्यक्ति की सेवा के लिए है अथवा व्यक्ति का निर्माण समाज की सेवा के लिए है? गिजोट व एम रोयर कोलार्ड का विचार है कि "जब मनुष्य स्वय को समाज के साथ जोड़ लेता है, तब वह मनुष्यता की

सबसे अच्छी व सुदर तस्वीर बन जाता है।"

पृष्ठ 24-

सभ्यता का इतिहास, आतरिक मनुष्य अथवा समाज के दृष्टिकोण से लिखा जाता है। गिजोट दूसरे दृष्टिकोण से भाषण देता है। यूरोपीय सभ्यता के सिद्धात—न्याय वैध प्रचार, स्वतत्रता।

दूसरा भाषण
पृष्ठ 26 27

1 प्राचीन मिस्र का विस्तार धार्मिक सिद्धातों पर हुआ था।

2 भारत भी इसी तरह था।

3 एशिया माइनर, आयोनिया, सीरिया तथा फोनेसिया के वाणिज्यिक गणतत्र, गणतात्रिक सिद्धातों पर आधारित थे। निष्कर्ष यह है कि

प्राचीन सभ्यताए अपनी सस्थाओं, विचारों, और तौर-तरीकों में (और साहित्य में भी) एक प्रकार की एकता का चरित्र बनाए हुए हैं। यह एकता ही एक मजबूत प्रमुख शक्ति है जो नियत्रण रखती है और सबका निर्धारण करती है। इन लोगों के इतिहास से विभिन्न सिद्धातों का सहअस्तित्व तथा सघर्ष एक अल्पकालिक सघर्ष से अधिक कुछ नहीं रहे हैं। परिणाम यह हुआ कि अधिकाश प्राचीन सभ्यताओं में उल्लेखनीय सादगी है।

ग्रीक में, सामाजिक सिद्धातों की सादगी का परिणाम तेजी से विकास तथा शीघ्र विनाश के रूप में हुआ है। मिस्र और भारत में सादगी ने एक स्थायी स्थिति बनाई है। आधुनिक यूरोप मे सामाजिक सगठन के सभी सिद्धात, सभी सामाजिक व्यवस्थाए साथ-साथ बनी हुई हैं, और एक-दूसरे के विरुद्ध सघर्ष भी करती रहती हैं। जैसा कि सभी तरह की सत्ताओं पारलौकिक और लौकिक, धार्मिक, राजतत्रात्मक तानाशाही अथवा गणतत्रात्मक में होता है। ये विभिन्न शक्तिया लगातार आपस में सघर्षमय स्थिति में रहती हैं। फिर भी कोई एक दूसरे को मिटाने में सफल नहीं होती है। आधुनिक यूरोप में हमें विभिन्न राजनैतिक पद्धतियों तथा सामाजिक सगठनों के साथ-साथ विकसित होने के उदाहरण मिल जाते हैं। यूरोप के विचारो और भावनाओ मे भी उसी तरह की विभिन्नता है, उसी तरह का सघर्ष है। उसी तरह का चरित्र हमें आधुनिक साहित्य में मिलता है जो यद्यपि प्राचीन साहित्य की तुलना में कलात्मक रूप तथा सौंदर्य की दृष्टि से उतना स्तरीय नहीं है लेकिन यह समृद्ध ओजस्वी तथा बहुआयामी है। यद्यपि कला तथा साहित्य के विकास की दृष्टि से यह प्राचीन सभ्यता से काफी घटिया है तथापि यूरोपीय

चौथी और पांचवी शताब्दी में रोमन साम्राज्य के पतन के समय अपनी संस्थाओं और मजिस्ट्रेटो के साथ एक सुसंगठित क्रिश्चियन चर्च था। यदि यह चर्च न होता तो रोम में साम्राज्य के पतन के साथ ही ईसाईयत भी समाप्त हो गई होती, जैसा कि मुस्लिमों के आक्रमण के समय एशिया और उत्तरी अफ्रीका में हुआ। क्रिश्चियन चर्च ने असभ्यों पर विजय प्राप्त की तथा वह रोमन और असभ्य दुनिया के बीच एक संपर्क सूत्र बन गया।

रोमन तथा मध्ययुगीन नगरपालिका प्रणालियों के बीच एक म्युनिसिपल-इक्लीजिऐस्टिक-प्रणाली लाद दी गई। शहर के कार्यों में पादरी की प्रधानता को प्राचीन नगरपालिका मजिस्ट्रेटो की तुलना मे सफलता मिली तथा यह आधुनिक नगरपालिका कार्पोरेशनों के संगठनों का पूर्वगामी सिद्ध हुआ।

पृष्ठ 46 क्रिश्चियन चर्च को तीन लाभ (1) नैतिक प्रभाव (2) दैविक कानून (3) चर्च तथा राज्य की अलहदगी अथवा एक-दूसरे पर आश्रयता।

यदि क्रिश्चियन चर्च अस्तित्व मे नही होता पूरा विश्व विशुद्ध रूप से भौतिक शक्ति बन गया होता। सिर्फ चर्च की ही नैतिक शक्ति थी। इसी ने विदेशों में एक ऐसी सत्ता, एक ऐसे कानून को बढ़ावा दिया जो मानवीय कानूनों से अधिक उच्च और श्रेष्ठ था। इसने ऐहिक और आत्मिक शक्ति को अलग-अलग रूपों मे दिखाया।

अलहदीकरण ही आत्मिक स्वतंत्रता का स्रोत है। क्रिश्चियन चर्च पर असभ्यता के विरुद्ध सुरक्षा करने की लगाई गई आवश्यकता के कारण ही इसका जन्म हुआ।

बर्बर लोग

पृष्ठ 47 48

उनका चरित्र और उनकी सफलता का रहस्य

एम थयरी ने अपनी पुस्तक 'दि हिस्टरी ऑफ कांक्वेस्ट ऑफ इग्लैंड बाई द नार्मन्स' में बर्बर जातियों का यह चित्रण किया है।

सभी बर्बर लोग जर्मन थे सिवाय कुछ स्लावोनिक कबीलो को छोड़कर। गोलिक लोग थोड़ा अधिक विकसित थे तथा उनके तौर तरीके फ्रैंचों की अपेक्षा बेहतर थे लेकिन वे सब सभ्यता के उसी सोपान पर थे। साहसपूर्ण अनिश्चितताए असमानताओं और कष्टों में भरपूर जिंदगी का स्वाद सांसारिक जीवन के अवसरों मे जोश और स्वच्छंद जीवन जीने का आनंद-यही सब उनके जीवन का सार था। स्वयं को एक मनुष्य महसूस करने का आनंद व्यक्तित्व की भावनाए इसके स्वतंत्र विकास मे मानवीय स्वाभाविकता साथ में जंगलीपन भौतिकवाद और स्वार्थ का मिश्रण, ये सब अच्छे और नैतिक गुण हैं जिसकी शक्ति का स्रोत मनुष्य के नैतिक स्वभाव में है। यूरोपीय सभ्यता मे इस भावना की शुरुआत असभ्यों द्वारा ही हुई थी। प्राचीन

ग्रीक के बारे में क्या हुआ?

सभ्यता में स्वतंत्रता का अर्थ राजनैतिक स्वतंत्रता था अर्थात नागरिक की स्वतंत्रता न कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता।

बर्बरों की व्यक्तिगत स्वच्छन्दता तथा सैनिक आश्रयता

बर्बर सभ्यता में दूसरा तत्व था सैनिक आश्रयता या व्यक्ति से व्यक्ति की निष्ठा पर अथवा अनुयायी की अपने नेता पर विश्वास पर आधारित था। इसने दास द्वारा अपने स्वामी के प्रति समर्पण की भावना को जन्म दिया और यही आधार था सामंतवाद का। प्राचीन गणतंत्रों में व्यक्तियों में परस्पर कोई संबंध नहीं था, वरन् व्यक्तियों और राष्ट्र के बीच संबंध था।

रोमन साम्राज्य के पतन के बाद तीन समूहों में संघर्ष हुआ—1. नागरिक समाज, 2. क्रिश्चियन चर्च, 3. बर्बर समाज। यह संघर्ष ही यूरोप के भावी विकास के लिए इसके साथ बहुमुखी विकास के लिए भी उत्तरदायी था।

क्रिश्चियन चर्च का विकास—तीन चरण—पृष्ठ 42,

पहला चरण—क्रिश्चियन समाज, समान भावनाओं और समान मतावलम्बियों का सीधा-सादा समूह। सिद्धान्तों का कोई प्रणाली नहीं, कोई कानून, नियम, अनुशासन अथवा दण्ड पालिका नहीं।

दूसरा चरण—सिद्धान्तों, नियमों, विधियों तथा दण्ड पालिका का विकास—कुछ विश्वासपात्रों के माध्यम से कुछ पदाधिकारियों के चयन में, नियमों के बनाने में, अनुशासन लागू करने में, अपनी बात रखी। चर्च, सरकार तथा इसका समाज अभी तक अलग नहीं थे। एक तरह के पदाधिकारी 'प्राचीन' कहलाते थे जो बाद में पादरी बन गए। दूसरी तरह के इन्स्पेक्टर अथवा अधीक्षक, बिशप बन गए। तीसरी तरह के उपासक थे जिन्होंने गरीबों तथा अन्न वितरण का काम सम्भाला।

तीसरा चरण—एक ऐसा पादरी समाज का विकास हुआ जो अन्य लोगों से अलग था। जिसका अपना कार्य, स्वाद, भाव तथा संविधान था। जिन्होंने अपने अस्तित्व के सभी साधनों को एकत्र कर पूर्ण समाज का गठन किया। इन पादरियों ने अपने अनुयायियों पर बिना किसी नियंत्रण के शासन किया। बिशप और पादरी भी मुख्य नागर दण्ड अधिकारी बन गए। थियोडोसियस अथवा जस्टिनियन की नियमावली में अनेक नियम हैं जिनमें पादरियों और बिशपों का नागरिक अधिकार निहित हैं।

विधिवेत्ताओं की चार विचारधाराए

(1) राजतन्त्रवादी (अबे ड्यूर्गा) जर्मन राजाओं को रोम सम्राटों के सभी अधिकार विरासत में मिले। अभिजात वर्ग की सभी उपलब्धियां राजतंत्र पर एक प्रकार से अतिक्रमण के कारण थीं।

(2) *अभिजात तंत्रवादी (एम डे बुलेनविलियर्स)–* रोमन साम्राज्य के पतन के बाद कुलीनतंत्र के सभी विजेताओं के पास वे सभी अधिकार और शक्तियां आ गईं जो राजाओं और शासकों ने उनसे छीन लिए थे। अभिजातीय संगठन न कि राजतंत्रीय संगठन यूरोप का वास्तविक और आदिम रूप था।

(3) गणतंत्रवादी (अबे डी मेबली)–इसमें समाज स्वतंत्र *व्यक्तियों के संघों तथा स्वतंत्र संस्थाओं के समूहों का था।* राजाओं और कुलीनों ने आदिम समाज को बुराइयों को *अपना लिया था।*

प्रतीत होता है कि सत्ता पर इन चारों में से किसी का एकाधिकार नहीं था।

(4) धर्मावलंबी– अपने धार्मिक नाम के कारण ही समाज पर चर्च का अधिपत्य था। चर्च ही यूरोपीय सभ्यता की साम्राज्ञी माना जाता था। इसको सभ्यता और वास्तविकताओं पर इसी की प्रमुखता थी।

यूरोपीय सभ्यता के उपरोक्त चार तत्वों के बारे में कहा जाता है कि यूरोप पर इनका अधिकार था। लेकिन उनमें से किसी को भी प्रधानता नहीं थी। जब किसी सामाजिक तंत्र को प्रधानता होती है इसको पहचानना कठिन नहीं होता उदाहरणार्थ दसवीं शताब्दी में सामंत प्रथा का प्रचलन असभ्यों का युग एक प्रकार की अराजकता का युग था। इस अराजकता के कारण थे।

शार्लमेन इसी वंश में हुआ।

(1) भौतिक आक्रमणों का जारी रहना। थुरिंगियन सेक्सन तथा डेनस ने फ्रेंकस पर राइन की तरफ से हमला किया और वे परिणामस्वरूप स्वीट्ज़रलैंड के रास्ते इटली में घुसने को विवश हुए। गाल में मेरोविंग्रान वंश के बाद कोर्लो विंग्रान वंश हुआ। दक्षिण में मुस्लिम अरबों ने मेडिटेरेनियन के तटों पर अपना विजय अभियान छेड दिया।

(2) नैतिक व्यक्तिगत स्वार्थपरायणता। पांचवी और आठवीं शताब्दी के मध्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता की भावनाएं निर्दयी स्वार्थपरायणता के रूप में उभरी।

राजगद्दी अधिक रूप से चुनावी और अधिक रूप से अनुवांशिक थीं।

फूट और अराजकता का दौर

(1) विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों के संबंधों में, उदाहरणार्थ स्वतंत्र व्यक्ति, दास, दासत्व से मुक्त व्यक्ति, गुलाम, आदि।

(2) परिस्थितियों की अस्थिरता में। (3) स्वनिर्मित, कुलीनवादी तथा गणतन्त्रात्मक संस्थाओं में जो साथ-साथ अस्तित्व में थीं।

बर्बर युग की समाप्ति के कारण

(1) मनुष्य का अतार्किक स्वभाव तथा शान्ति का नियम

(2) रोमन साम्राज्य की चकाचौंध

(3) क्रिश्चियन चर्च

(4) महान व्यक्तियों का उदय

असभ्यता को समाप्त करने के प्रयत्न

(1) असभ्य युग के नियमों का एकत्रीकरण जो अभी तक अलिखित थे।

(2) इटली और दक्षिणी गाल प्रान्त में नगरपालिका पद्धति का पुनर्स्थापन।

(3) ईसाइयत धर्म के माध्यम से, कानून की दृष्टि में मनुष्यों के समान मूल्यों के सिद्धान्त का प्रतिपादन हुआ जो स्पेन में विसिगोथों के कानून के अन्तर्गत था। इस में सभी व्यक्ति चाहे वह रोमन हों अथवा विसिगोथ हों, एक समान कानून से शासित थे।"

"यह असभ्यों के कानून के विपरीत था जिनका कोई कानून न तो वास्तविक था और न ही क्षेत्रीय था वरन् व्यक्तिगत था। उदाहरणार्थ अपनी प्रकृति के लोगों तक ही सीमित था।

(4) महान व्यक्तियों के प्रयत्न—सबसे अधिक शार्लमेन का।

इनमें कोई भी प्रयत्न सफल नहीं हुआ फिर भी दसवीं शताब्दी तक निम्न उपलब्धियाँ हो गई थीं।

1. उत्तर तथा दक्षिण में आक्रमणों पर रोक लगी (इसका परिणाम था कि मानवीय गतिविधियाँ अब समुद्री खोज की तरफ लग गई जैसा कि नॉर्मन्स के साथ हुआ)।

2. निश्चित स्थितियों की उत्तरोत्तर स्थापना। सामन्तवाद का उदय असभ्यता के गर्भ से हुआ। यूरोप को अपना नागरिक सुधार और शासन (सामन्तवादी) का पाठ स्वयं कर्णधारों से सीखना पड़ा।

पृष्ठ 56, 57, 58

राजनैतिक वैधता

राजनैतिक वैधता स्पष्ट रूप से एक अधिकार है। पुरातनता पर आधारित-समयावधि पर आधारित। समय में प्राथमिकता

का सिद्धांत एक प्रकार से अधिकार पर आधारित समझा जाता है। एक शक्ति की वैधता के प्रमाण के रूप में।

सभी शक्तियों के मूल में हमें शारीरिक ताकत का सामना करना पडता है, यह गिजोट ने सभी शक्तियों के बारे में बिना किसी भेदभाव के कहा है। फिर भी कोई भी शक्ति स्वय को दूसरे प्रकार की वैधता यथा कारण, न्याय अथवा अधिकार से जोडना नहीं चाहती।

अरब आक्रमण

पृष्ठ 64

अरबों के आक्रमण का एक विचित्र स्वभाव था। विजय और धर्म प्रचार की भावनाए एक साथ जुडी थीं। आक्रमण का उद्देश्य एक क्षेत्र को विजयी बनाना तथा एक नए मत का प्रचार करना था। तलवार की शक्ति तथा शब्द की शक्ति एक ही हाथ में थी। बाद के समय मे इसी स्वभाव के कारण मुस्लिम सभ्यता ने एक दुर्भाग्यपूर्ण मोड ले लिया। यह दैहिक और दैविक शक्तियों के मिलन में था। यह नैतिक और भौतिक सत्ता के उलझनों मे था कि आतंकवाद जो इस सभ्यता में निहित लगता था वास्तव मे मूलभूत था। मेरे विचार से उन स्थिर परिस्थितियों का कारण था जिसमें सब जगह सभ्यता गर्त होती चली गई। लेकिन यह वास्तविकता शुरू में नजर नहीं आई। इसके विपरीत इसने अरब आक्रमण को असाधारण बल प्रदान किया। नैतिक भावनाओं और विचारों से प्रभावित होकर इसने तुरत एक प्रकार की महत्ता और श्रेष्ठता प्राप्त की जो जर्मन आक्रमण में कहीं नहीं थी। इसने अधिक स्फूर्ति और उत्साह का प्रदर्शन किया और दूसरे तरीके से लोगों के मन पर असर डाला।

चौथा भाषण–

सभ्यता के तत्व :

(1) व्यक्ति का विकास, (2) समाज का विकास

फ्रांस की महानता

हमारे देश की सभ्यता का एक विचित्र चरित्र है कि इसने कभी बौद्धिक बडप्पन की इच्छा नहीं की। विचारों की दृष्टि से यह सदा समृद्ध रहा है। दिमागी शक्ति फ्रैंच समाज में हमेशा उच्च रही है, हमें उस अधीनस्थ तथा भौतिक स्थिति में नहीं पहुचना है जो अन्य समाजों का गुण है। आज के फ्रांस में कम से कम बुद्धि और सिद्धातों का वह स्थान होना चाहिए जो अभी तक होता आया है।

अध्याय - VII (सभ्यता की शर्तें)

संघर्ष के बगैर कोई प्रगति नहीं

पृष्ठ 125

मनुष्य को मनुष्य से अथवा प्रकृति से संघर्ष करना ही होगा यदि उसे पतन की ओर नहीं जाना है। कोई राष्ट्र जितना कठिन संघर्ष करता है, उतना ही वह दृढ़ और सुयोग्य बनता है उत्तरी क्षेत्र के राष्ट्र जो सदा प्राकृतिक जलवायु के साथ अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते रहते हैं, सरल सुविधा भोगी देशों की तुलना में अधिक तरक्की करते हैं। इसीलिए जितना भी स्थान परिवर्तन है, वह ठंडो से गर्म जलवायु की तरफ होता है। उसी देश में जैसा कि आजकल इंग्लैंड में है, दक्षिण की तरफ निरंतर प्रयाण है।

भारत की क्या स्थिति है?

सभ्यता का विकास विचारों, आदर्शों के परिणाम स्वरूप होता है। किसी-किसी विषय में जैसा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त हो गई; इस बारे में कठिनाइयों और विनाश जैसा कोई सूचना नहीं। किसी भी रूप में पूंजी का एकत्रीकरण प्रयत्नों की आवश्यकता को कम कर देता है। जीवन जितना अधिक सरल होता जाता है उतना ही आसान विनाश और फिर भी होता जाता है। धन की बहुलता अनिवार्य रूप से पतन की ओर ले जाती है।'

पृष्ठ 126

समयकाल के कारण

महान वर्ष (ग्रेट ईयर) के मानसून, ग्रीष्म और पतझड़ का निर्धारण कौन करता है?

(1) जलवायु में समय-समय पर होने वाले परिवर्तन

तुर्किस्तान के अमेरिकी अभियान ने वहां नियमित आर्द्र और शुष्क जलवायु क्रम पर प्रकाश डाला है। इस प्रकार के परिवर्तन उन चरागाही प्रजातियों को जो कृषि के लिए अनुपयोगी जमीन पर रहते आए हैं, समृद्ध और उपजाऊ जमीन पर आने के लिए प्रेरित करते हैं। बढ़ती हुई शुष्कता, प्रवास युग के साथ आती है। कभी-कभी अकाल की स्थिति इस प्रकार के आवागमन के पूर्व और बाद में आती है। उदाहरण के लिए-(क) अरब के मैदानों से हाइकासों का आवागमन और मिस्र में सात साल बाद अकाल आया जिसके बाद सीरिया में अकाल पड़ा। (ख) अरबों का आवागमन सन् 600 ईस्वी में एक बड़े अकाल के तुरंत बाद शुरू हुआ जिसके बाद सन् 866 873, 929, 966, 970, 1025, 1055, 1065, 1201, 1264 और 1295 में

पश्चिमी एशिया और ग्रीक पर इन परिवर्तनों के प्रभाव के लिए आर. जियाग. सॉक 26 मई, 1910-श्री हैंटिंग्टन का वक्तव्य पढ़ें।

अकाल पड़े।

यद्यपि इनसे प्रभावित नहीं होता है

(1) पहले में वर्णित नियमित प्रकार की स्थितियां।

(2) एक प्रजाति द्वारा स्वयं ही बनाई गई स्थिति जब यह दूसरे देश में बसकर दूसरी स्थिति बन जाती है जैसा कि देखा गया है।

समय निर्धारण के कारक

1 मानव मस्तिष्क की प्रक्रिया द्वारा उत्पन्न परिवर्तन की एक सामान्य गति होती है।

2 प्राचीन समय में जो विभिन्न गतिविधियां को एकत्र कर दिया गया। अब विभिन्न पद्धतियों द्वारा अलग अलग कर दी गई हैं। (शायद कारण कि अब हर विषय विस्तार पूर्वक विकसित किया जाता है तथा सभी सम्बन्धित विचारों को एक लंबे समय के लिए समन्वित कर लेता है।

3 नई सभ्यता का उदय विभिन्न व्यक्तियों के सामूहिक रूप से स्थान परिवर्तन की एक स्थिति है। दो विभिन्न समूहों में समय लगता है। दो प्रजातियों का पूर्ण आत्म प्रजनन योग्यता का आधिक्य उत्पन्न करता है। सर्वाधिक योग्यता का समय 8 शताब्दियों के बाद मिश्रण शुरू होकर विभिन्न प्रकार के लोगों में 4 से 5 शताब्दी तक रहता है। यह समयावधि के बड़े होने का आधारभूत कारण है। अकाल और भूख की स्थिति स्थानान्तरण की प्रक्रिया को तेज कर सकती है जो सभ्यता को कम कर देती है जैसा कि चीन छह में हुआ।

एक पीढ़ी 30 वर्ष। शताब्दी से पहले तक एक व्यक्ति के 10 वंशज होते हैं। वैवाहिक संबंधों के अलावा और अन्य कारणों से इसी प्रकार छठी शताब्दी में एक लाख सातवीं में दस लाख और आठवीं में एक करोड़। सामान्य आकार वाले देश में सातवीं अथवा आठवीं शताब्दी में अधिकतम संख्या में विभिन्न वंशज सम्मिश्रित हो जाते हैं और एक प्रजाति दूसरी में पूरी तरह घुल मिल जाती है।

भविष्य

विभिन्न चरणों का एक दूसरे से दूर होने का अर्थ है कि विकास की उपलब्धियां बाद में प्रत्येक चरण में एकत्र की जा सकती हैं। यूरोप में सर्वाधिक धन का होना हमारी अपनी स्थिति में इस बात का भरोसा देता है कि हम एक समयावधि की समाप्ति के समीप पहुंच गए हैं अर्थात् जब एक प्रजाति का दूसरे में मिश्रण आवश्यक होगा। हम क्रमिक समयों के विकास के चरणों में कोई कमी होती दिखाई नहीं देता। इस तरह नई यूरोपीय केन्द्र की रचना को कई शताब्दियों तक आगे नहीं की जा सकता।

पूरे विश्व के राष्ट्रों की पूरी तरह विलय हो जाने की कोई संभावना नहीं क्योंकि (1) जलवायु की स्थिति असमता की अखंड या शक्त बनी रहेगी (2) देश की स्थिति हमारी चरागाही कृषि संबंधी तथा वस्तु उत्पादन वाली बनी रहेगी।

गति की वर्तमान दर जो समानांतर है और जो जातजातों के विकास के साथ-साथ हुई होगी, एक अचानक मिली सुविधा का प्रभाव है। यह समाप्त होती जाएगी जैसे-जैसे इसे अनुकूल स्थितियां मिलती जाएंगी और ये स्थापित होती जाएंगी।

पृष्ठ 131

फिर भी यदि यह दृष्टिकोण वास्तव में समझ में आता है कि हर सभ्यता का स्रोत, प्रजाति मिश्रण में निहित है तो यह संभव है कि किसी भावी सभ्यता में प्रजनन शास्त्र *सावधानीपूर्वक श्रेष्ठ प्रजातियों को अलग कर देगा तथा आगे होने वाले मिश्रण पर प्रतिबंध लगा देगा, जब तक कि वे* पूरी तरह अलग न हो जाए और पुनर्स्थापना के बाद नई सभ्यता की शुरुआत न करें। मनुष्य का भावी विकास जितना अधिक एक विशिष्ट प्रकार की स्थापना के अलगाव पर निर्भर करेगा उतना ही अधिक स्थापित होने पर उन सब विशिष्ट प्रकारों के मेल-मिलाप पर।

अध्याय VI

सभ्यता का राष्ट्रीय दृष्टिकोण

उच्चतम और निम्नतम स्थितियां

पृष्ठ 106

श्रेष्ठतम लक्षण	यूरोप में पतन
4 रचना की शक्ति (चौथा वंश)	विजित की समाप्ति (?)
5 विदेशी संबंध (बारहवां वंश)	केवल पुरुषों का विनाश (?)
6 प्राकृतिक उत्पादों की उपयोगिता (अठारहवां वंश)	गुलामी (डोरियन्स)
7 प्रकृति का सूचीकरण (रोमन वंश)	*संपत्ति का अंश लेना (उत्तरी प्रजाति)*
8 प्राकृतिक बलों की उपयोगिता (आधुनिक)	

(27) अन्य महाद्वीपों का काल खंड

50 फीट नीचे से पाए जाने वाले पुरावशेष यदि इसी स्तर से ईसा पूर्व बढ़ते हैं तो समय 1200 बी सी माना जाएगा।

टिगरीस और यूफ्रेटस् प्रणालियों में सभ्यता बहुत पुरानी थी। संभवतः इसका समय ईसा पूर्व 12000से लेकर कम-से-कम 6000 ईसा पूर्व तक जाता है। इनमें सर्वाधिक शासक उल्लेखनीय कला की दृष्टि से इस प्रकार है-

मेसोपोटामिया

इनिटम	4450(?)	700(?)
नरमासिन	3750	1650

ख़मैनती	2100	1460
राजा का नाम	*ईसा पूर्व*	*वर्ष*
अशुरबनीपाल	640	
एल मामून	सन् 820	1460

पहली समयावधि अनिश्चित है।

1520 वर्षों में तीन निश्चित समयावधियों का औसत मेडिटेरेनियन में 1320 वर्षों के औसत से बहुत अधिक अलग नहीं है। वह समय जिससे पूर्वी समयावधि परिचमी समय अवधि का अनुमान करती है–

पूर्व	पश्चिम	अंतर
3750 ई पू	3450	300
2100 ई पू	1550	550
640 ई पू	450	190
820 सन्	1240	420
	औसत	365

पूरे तौर पर पूर्वी फेस मेडिटरेनियन से 3½ शताब्दी आगे रहता है जो दो से 5½ शताब्दी तक भिन्नता लिए रहता है।

पृष्ठ 108

"ये परिणाम ऐतिहासिक स्थितियों के सामान्य अर्थों की अतः झाकी प्रस्तुत करते हैं। यह धारणा कि सभ्यता सदा ही पूर्व की तरफ से विकसित होती है इस कारण से है कि पूर्व सदा ही अपने कार्यों में पश्चिम से कुछ शताब्दी आगे ही रहता आया है। अतः एक लहर के उठने पर, पूर्व अधिक सभ्य दिखाई देता है जबकि लहर की समाप्ति पर–जो कि नजर नहीं आती–वह कम सभ्य होता है।

पृष्ठ 109

पूर्व और पश्चिम के लगातार संघर्ष का कारण समय चरणों के अंतर के कारण दिखाई देता है। यदि मेसोपोटामिया और यूरोप उसी चरण में था जब सत्ता संतुलन बना रहेगा जैसा मेडिटरेनियन में देखने को मिलता है जहा एक राजनैतिक प्रभुत्व में जनसंख्या का परिवर्तन नहीं होता। लेकिन मेसोपोटामिया के हमेशा नेतृत्व करने के कारण पश्चिम का, इससे पहले कि पश्चिम प्रत्येक समय काल में उभरे कुछ शताब्दियों पीछे छूटना राजनैतिक रूप से अवश्यम्भावी है। अलमामून के समय मेडिटेरेनियन लगभग एक अरबी झील के समान था; परशिया ने ईसा पूर्व छठी शताब्दी में पूरे सभ्य मेडिटेरेनियन पर प्रमुखता जमाई। फिर भी, पूरे तौर

पर पश्चिम सामान्यतः पूर्व पर नियंत्रण रखता है क्योंकि अपने उत्कर्ष के समय से हर समय काल में उत्तरोत्तर पतन के दौरान, यह हमेशा पूर्व से उच्च स्थान पर ही रहा है। कुछ अन्य मामलों में भी, एक समय काल में उठी महत्ता की लहर को दूसरे समय काल तक पहचाना जा सकता है। भारत में अशोक के पास प्राचीनकाल में कश्मीर, अफगानिस्तान और बलूचिस्तान सहित (दक्षिण के कुछ भागों को छोड़कर) सर्वाधिक सत्ता थी। यह साम्राज्य ई पूर्व 250 में अपने उत्कर्ष पर था। साम्राज्य का दूसरा महान समय मुगल साम्राज्य के समय (सन् 1550) में था। अंतराल 1800 वर्षों का था।

भारत

मैक्सिको में, अत्यधिक सभ्य माया राज्य पारंपरिक रूप से ईसा पूर्व दसवीं शताब्दी में स्थापित किया गया था। इसके पतन पर, इस पर टोलटैक्स का आधिपत्य हुआ जो ईसा पश्चात छठी शताब्दी में अत्यधिक सभ्य थी। अंतराल 1500 वर्षों का था।

मैक्सिको

पृष्ठ 110

इस प्रकार सभ्यता का समय इस प्रकार है–

सभ्यता का काल क्रम

सभ्यता	*समय*
1 मेडिटेरेनियन औसत	1330 वर्ष
(अथवा पहले को छोड़ दे)	1500 वर्ष
2 *मेसोपोटामिया*	*1520 वर्ष*
3 भारत-एक समयावधि	1800 वर्ष
4 मैक्सिको–लगभग एक समयावधि	1500 वर्ष

समय की अवधि विश्व के विभिन्न भागों में व्यावहारिक रूप से समान होती है। इसका अर्थ यह है कि यह बाह्य कारणों से न होकर मानवीय स्वभाव से है। समय चरण में फिर भी भिन्नता होती है।

(28) व्यक्तियों से जुड़े समयचक्र, न कि स्थान विशेष से

"अतः स्पष्ट रूप से एट्रस्केन के मामले में इटली में तथा पूर्व में ग्रीक के और निश्चित रूप से स्पेन में अरब लोगों में, यह देखा जाता है कि अतिक्रमणकारी लोगों का समयचक्र उनके साधनों का है न कि उनके नए क्षेत्र का।

पृष्ठ 13

पृष्ठ 113

जब सभ्यता के प्रत्येक समूह के चरणों की परिभाषा कर दी गई है, सभ्यता के चरणो को आक्रमणकारी लोगो के साधनों की कसौटी के रूप में प्रयोग करना सभव हो सकता है। सभवतः चरण एक प्रजाति के साथ युगो-युगो तक जुड़ जाता है।

इस सबध में, यह ध्यातव्य है कि यूरोप के प्रत्येक देश पर रोम द्वारा विजय प्राप्ति और उसकी स्थापना इसके बाद के इतिहास में प्रदर्शित होती है। रोमन प्रभाव का क्रम इटली स्पेन, फ्रास, इग्लैड, जर्मनी तथा और गत कुछ शताब्दियों में इन देशों की राजनैतिक सत्ता का क्रम रहा है।

(29) कालखंड के मध्य अंतराल

पृष्ठ 114

प्रत्येक सभ्यता अपने शिखर पर पहुच कर पतन की ओर अग्रसर होती है। यह पतन तब तक चलता रहता है जब तक कि वह बिल्कुल अशक्त नहीं हो जाती जब तक कि एक नई प्रजाति का आगमन नही हो जाता जो पुराने भडारों का उपयोग–रक्त और सस्कृति दोनो ही के उपचार के लिए नही करती। जैसे ही सस्कृति फिर से शुरू होती है। यह तेजी से पुरानी मिट्टी पर विकसित होने लगती है और सभ्यता की एक नई लहर उत्पन्न करती है। कभी कही कोई नई पीढ़ी रक्त के मिश्रण के बिना नहीं हो सकती, किसी राष्ट्र के जन्म में अनिषेक जनन (पार्थेनोजेनेसिस) अनजानी सी बात है।

उदाहरण–

1 प्राचीन और मध्यकालीन समयचक्रों–सातवे और आठवे-के मध्य विच्छेदन सर्वाधिक जाना-पहचाना है। सन् 300 और सन् 600 के बीच, 15 विभिन्न प्रजातियों ने सीमाओं का उल्लघन किया, जो विभिन्न छह स्थानो से भी (माइग्रेशस हक्सले, लेक्चर 1906) प्राचीन समयचक्र सातवे के प्रारभ और माइकेनाइन (छठे) के बारे मे जानकारी हाल ही की खोजों से मिली है। 'होरा क्लेडाई की वापसी' की पुरानी परपरा लगभग 1200 ईसा पूर्व कही जाती है। क्रेटन सभ्यता मिस्र पर ईसा पूर्व 1194 मे सधि युद्ध के दौरान हुई समझी जाती है। ग्रीक के साथ मिस्र के सभी सबध इसी तारीख पर समाप्त हो गए थे। अत, ईसा पूर्व 1200 को मुख्य परिवर्तन का समय माना जा सकता है''

हम यहा मिश्रण के लिए सन् 450 को आधार वर्ष मानते हैं।

5400 ईसा पूर्व से संबंधित है। इससे पूर्व पहले इस वंश के प्रारंभ तक 150 वर्ष का समय था और इससे पूर्व राजाओं के 350 वर्ष इस प्रकार सर्वोच्च शिल्पकला के युग से पूर्व 500 वर्ष का समय था "जब भी सभ्यता का नया समय प्रारंभ होता है आक्रमण की तारीखों की शिल्पकला के समयचक्र से इस प्रकार तुलना की जा सकती है –

समयचक्र	आक्रमण	विकास	शिल्पकला
तीसरा	6000?	600?	5400 ई पूर्व
चौथा	4960	150	4750 ई पूर्व
पांचवा	4000	550	3450 ई पूर्व
छठा	2600	1050	1550 ई पूर्व
सातवा	1200	750	450 ई पूर्व
आठवा	450	800	1240 सन्

यह स्पष्ट है कि पिरामिड निर्माता पहले राजवंशीय लोगों से भी पहले आए और उन्हें अपने शीर्ष पर पहुंचने के लिए केवल 150 वर्ष का समय लिया। हम एतिहासिक स्थितियों के बारे में इतना कम जानते हैं कि हम इसका अर्थ भी नहीं जानते। शायद इसे एक युग की दोहरी उत्कृष्टता मानी जानी चाहिए। जो उसी प्रकार विभाजित हो जिस प्रकार प्राचीन युग ग्रीक तथा रोमन में विभाजित था।

(30) समयचक्रो का ग्राफ

(पुस्तक के अंत का पूरा ग्राफ अर्थात चित्र न 57 उपलब्ध नहीं है) पाठ -

पृष्ठ 119

"पहला असाधारण पहलू यह है कि जैसे जैसे समयचक्र नीचे आता है, कालचक्रों में भी विस्तार आता जाता है। इसका अर्थ है कि सभ्यता के मध्य असभ्यता के कम अंतराल हैं और प्रत्येक समयचक्र में सभ्यता का चरण प्रत्येक घटना के समय से लंबा है। यह साधारण विचार के अनुसार है कि अब संसार समय बीतने के साथ साथ अधिक सभ्य होता जा रहा है। इस कठोर सत्य के बावजूद कि सभ्यता के अनेक प्रकारों मे आने वाली पुनरावृत्तियो

इस प्रकार चार लगातार समय खंडों में हम देखते हैं कि दक्षिणी यूरोप जब अपने उत्कर्ष पर था अचानक एक उत्तरी तूफान से घेर लिया जाता है जिससे कोई स्थायी परिवर्तन नहीं होता है।

"हर कालखंड का मुख्य विजेता उसी समयचरण मे उभरा है।"

सरकार की अवस्थाएं

(1) नये राष्ट्रों द्वारा प्रत्येक आक्रमण के समय मजबूत व्यक्तिगत नियम होना चाहिए। आक्रमणकारियों का एक साथ जुड़ना आक्रमित लोगों का झुकना इसके लिए एक प्रकार की तानाशाही चाहिए। यह समयखंड चार से छह शताब्दियों तक होता है।

(2) दूसरी अवस्था कुलीनतंत्र की होती है जब नेतृत्व की भी आवश्यकता होती है परंतु देश की एकता की सुरक्षा तानाशाही के अपेक्षा कानून द्वारा की जा सकती है।

(3) प्रजातंत्र–इसका समय चार शताब्दियों तक रहा। इसके दौरान धन की वृद्धि होती गई। जब प्रजातंत्र अपनी चरम सत्ता पर होता है, पूंजीविहीन बहुसंख्यक अल्पसंख्यकों की पूंजी पर हाथ मारते हैं और धीरे-धीरे सभ्यता पतन की ओर जाने लगती है। दूसरी शताब्दी से रोमन साम्राज्य के ससाधनों का उपयोग जब प्रजातंत्र की प्रधानता से लेकर गोथिक राज्य के उदय होने तक जो प्रजातंत्र की समाप्ति पर उभरा, इसका सबसे अच्छा उदाहरण है।

अध्याय - 2

सभ्यता के काल खण्ड

पृष्ठ 11	मिस्र की सभ्यता-8 लगातार कालखंड, प्रत्येक खंड एक बर्बर युग या पतन से अलग किया गया–हर कालखंड से पहले और बाद में।
प्रथम कालखंड प्रागैतिहासिक	रंगीन मिट्टी के बर्तन (प्याले व तश्तरियां) 'इस आदिम प्राचीन युग में प्राकृतिक अनुकरण से जेवर बनाने इनको शुद्ध जेवर के रूप में विकसित करने तथा खराब अनुकरण के विनाश होने के प्रमाण मिलते हैं।"
दूसरा कालखंड प्रागैतिहासिक	एक नई व्यवस्था विकसित होती है पुरानी बर्तन कला नया विकास नहीं कर पाती। इस युग की विशेष कला पत्थर कला है। अन्य कलाएं स्लेट पत्थर कला हाथी दांत कला आदि है।
तीसरा कालखंड शून्य से दूसरे राजवंश तक	मिस्र की अनूठी कला का विकास इस युग में होता है। हीरोग्लीफिक लेखन कला का विकास तेजी से आइडियोग्राफिक अवस्था से हो रहा था। मेना के समय

तक जिसने पहले राजवंश की स्थापना की थी पुरातन अवस्था से नक्काशी कला का विकास हो रहा था। यद्यपि अभी भी पुरातन अवस्था चल रही थी। "प्रथम राजवंश का प्रारम्भ पुरातन है मध्य काल सर्वोत्कृष्ट है और इसके बाद विनाश की गति में कोई बदलाव नहीं है।"

चौथा कालखंड, तीसरा-छठा राजवंश तीसरे राजवंश की समाप्ति पर पिरामिड निर्माताओं का महान युग-सूची में सबसे खराब निर्माता राजा (नटरखट) तथा स्नफरू की सर्वश्रेष्ठ कला के दौरान केवल 130 वर्षों का अंतराल है।

पूरे विवरण को अलग-अलग ध्यानपूर्वक देखना इस पूरे समग्र का एक हिस्सा समझ बिना जिसे बाद में एक साथ जोड़ना है–यही पुरातनवादियों का प्रतीक है। शिल्पकला में परिवर्तन स्थापत्य कला की स्थिति से मेल खाते हैं जो अपनी उत्कृष्टता के शिखर पर पहुंची तथा आने वाली पीढ़ियों का अधिकांश जनता को अच्छे ढंग से व्यवस्थित किया। इसी दौरान नफर्ट की मूर्ति बनी।

पांचवा कालखंड, सातवां-चौदहवां राजवंश यह समयकाल विवरण की प्रत्येक बारीकी के साथ शुरू होता है। जैसा कि ग्रीक के एशिया पूर्व के पुरातनवादी के साथ था–तेज़ी से विकास 12वें राजवंश में अपने चरमोत्कर्ष पर। यह स्थिति डेढ़ शताब्दी से अधिक नहीं चली। 12वें वंश के बाद के हिस्से में स्पष्ट रूप से पतन शुरू हुआ।

छठा कालखंड, पंद्रहवां बीसवां राजवंश यह समयकाल अवरोधों के मिलन विशेषकर थीबस पर-मिलन के कारण प्रसिद्ध है। 18वीं वंशावली में विभिन्न प्रकारों की भिन्न भिन्न अवस्थाएं थीं। विदेशी विजय जिससे सीरियाई प्रभाव आया, 'टाइप' ही बदल दिया। (सबसे अच्छा उदाहरण ताहुतमस III) अखनटन के प्रकृतवाद की शुरुआत तथा इससे वापसी ने राजवंश को समाप्त कर दिया।

सातवां कालखंड, 21वें 33वां राजवंश 26वां राजवंश चित्रकला में प्रवीण था। किस वर्ग में यह कला गिरती चली गई इसका अनुमान एक रोमन मूर्ति के सिर को देखकर लगाया जा सकता है। क्योंकि यह मूर्ति कला का निकृष्टतम नमूना है। ग्रीक और रोमन कला इतनी असंगत थी कि यह मिस्र के नक्शों और डिजाइन के लिए कोई अवलंबन नहीं हो सकती थी इस प्रकार मिस्र कला सदा के लिए समाप्त हो गई।

आठवां कालखंड अरब शैली में कितना पतन हुआ यह काप्टिक शिल्पकला में दुखद रूप से देखा जा सकता है (चित्र 26)। इस पर प्रभाव

पतनशील शास्त्रीय कला तथा पर्शियन कला का था और यह बड़ी दिलचस्प बात है कि अरबी कला की ज्यामितीय शैली का पूर्वाभास कोप्टिक शैली की सीधी रेखाओं तथा चक्रों में हो गया था। स्थापत्य कला में एक मात्र कार्य जैसा कि कैरो के किलों और दुर्गों में है, नार्मन के समकालीन था। बाब-अल-फतह का दरवाजा 1087 में बना था-जिस समय लंदन का टावर और मालिग एबे बने थे।

अध्याय - 3
यूरोप में सभ्यता के कालखंड

चौथा कालखंड, मिस्र युग : यह समयखंड, मिस्र के चौथे कालखंड का समकालीन है। इसके अवशेष, जो मिस्र से पहले तीन कालखंडों के समानांतर हैं, कुसोस में 21 फुट गहराई के नवपाषाणकालीन अवशेष भी पड़े हैं।

क्रेटन पुरातत्व पर डा ईवान्स एक विशेषज्ञ हैं : पूर्व क्रेटन युग के अधिकांश महत्वपूर्ण अवशेष मोचलोस में पाए गए थे। (अभी तक अप्रकाशित)। थेलोस हागिया ट्रियाडा की वस्तुए, मूर्तियों पर नक्काशी का सबसे पहले होना बताती हैं। ये सब मूर्तियां मिस्र के प्रागैतिहासिक युग की मूर्तियों जैसी हैं (कालखंड द्वितीय) जिसमें मूर्ति पर हाथ नहीं थे और टांगें भी संकेत रूप में दिखाई गई थीं।

पांचवा कालखंड, मध्य क्रेटन युग : मुख्य लक्षण-पोलिक्रोम की चित्रकारी के फूलदान, तथा चमकीले रंग के मर्तबान के रूप में विकास। समयखंड की शुरुआत मनुष्यों और मछलियों की ऊटपटांग तस्वीरों तथा कुयूसोस के पहले महल के निर्माण से होती है। प्रकृतिवाद का एक सीधा उत्तरोत्तर विकास है और इस कालखंड की समाप्ति पर कुयूसोस की एक समाधि भी बनाई गई। विध्वंस द्वारा इस युग की समाप्ति हुई।

छठां कालखंड उत्तर क्रेटन युग : इस युग की कला प्राचीन युग की कला से टक्कर लेती है। उदाहरण के लिए-सेलखड़ी के फूलदान, भित्तिचित्र तथा उभारदार तस्वीरें, सुनहरे प्याले तथा शिल्पकला आदि। इस सभ्यता को डोरियन आक्रमण जैसी महान विपत्ति का सामना करना पड़ा। जिन केंद्रों पर डोरियन का अधिकार नहीं था, जैसा कि सायप्रस तथा मुख्य स्थानों के कुछ शहरों जैसे एथेंस, उन्होंने अपनी पुरानी कला के नष्टप्राय चित्रों को संभाल कर रखा।

नई कला का उदय दाफलका फूलदाना म दिखाइ दिया। पुराना कला का समृद्ध ऊचाइयो ने आडा तिरछा रखाओ वाले नमूनों का रास्ता प्रशस्त किया तथा ज्यामितीय सजावट न चित्रा के मुक्त डिजाइना का स्थान लिया। इसा दौरान शिल्पकला क नय नय स्टाइल उभरे हैं तथा एशियाई प्रभाव से नई नई प्रेरणा मिली है। ईसा पूर्व लगभग आठवीं शताब्दी में शिल्पकला अपनी सर्वाधिक अभिव्यक्ति का अवस्था तथा अपनी सर्वोच्च पूर्णता की स्थिति तक पहुचा। (उदाहरण क लिए एथेंस में एक एक्रोपालिस पर महिलाआ का मूर्तिया)। इसके बाद काम की पूर्ण स्वतत्रता आइ जा लुडाविसियन की समाप्ति पर पाइप बजाती महिला क चित्र म दिखाइ दती है। अनक शताब्दियो क दौरान ग्राक शिल्पकला का अधिकाश भाग इस स्तर स नाचा रहा। इसक बाद ग्राक की निम्नस्तरीय कलाकतियो का रामन नकल दखन म आइ।

आठवा कालखड

उत्तर से आने वाले प्रवासी मडिटरनियन समुद्र म अपन साथ नये आदर्श लकर आए। इसस पूर्णतया नया और भिन्न प्रकार का स्टाइल बना जो अपनी साधी रखाओ और लब चित्रा में इटली के प्राचान स भा पूर्व युग क चित्रा का तथा केल्टाक जानवरों क एथस शैली का याद दिलाता है। लगभग 1245 ई. में श्रेष्ठता अपनी पराकाष्ठा पर थी। इसक बाद कला (पत्थर कास तथा राजाओं क महलों म) का पतन शुरू हुआ। "इस प्रकार शिल्पकारी और नक्काशा क प्रारंभिक स्वरूप में हम दखने हैं कि किस प्रकार तरहवीं शताब्दी क बाद का समय एक निर्णायक माड का समय था जब पूरी दक्षता हासिल कर ली गई था और इसक बाद शनै शनै पतन हाता गया।

पुनरुद्धार का समय कुछ नहीं था। पहल मनयखड की नकल मात्र था जो आठवें तथा कला क मध्यकालान युग का वास्तविक शैली के विनाश क कारण था। नकल करन क इतिहास–अच्छा तथा खराब से यहा हमारा कोई सबध नहीं है।

अध्याय - 4

उतार–चढाव

आठवा कालखड

मिस्र और यूरोप के समकालीन

	पूर्व (मिस्र)	विशालकाय दुर्ग	इग्लैंड
कैरो के दरवाजे	1087 91	लदन का टावर	1078

न्यू कैसल 1080

छोटे दुर्गो की निर्माण शैली का प्रारभ

कैरो का महल 1183	कैंटरबरी कॉयर 1180
डोम आफ दी राक - 1189	लिकन कॉयर 1186

अच्छे समृद्ध भवनो की समाप्ति

कैरो के मुलतान हसन की मस्जिद 1362	टिनिट्री कैंब्रिज कॉलेज-1350
	ग्लोसेस्टर कोयर 1350

बहुत अधिक साज-सजावट वाले

कैट बे का मकबरा - 1474	क्रासबाई-1470
पराबेक का महल - 1476	सेट जार्ज विडसर 1476

सातवा कालखड — इस युग म मिस्र का दौर ग्रीक के दौर से आधी शताब्दी या एक शताब्दी पहले था। नि सदह यह मिस्रवादियो मे प्रसिद्ध पुराने नमूनों के विशाल भडार क कारण था। ग्रीक म स्थापत्य कला 600 ईसा पूर्व (क्रारिथ सलिनस) तक अधिक उन्नत थी। जो 500 ईसा पूर्व तक (एकत्रित रूप में) पूरी तरह से विकसित हो गयी। शिल्पकला 500 ईसा पूर्व तक अच्छी तरह विकसित नही थी तथा 450 ईसा पूर्व तक इसने अपनी पुरातन शैली नही छाडी थी। मिस्र म शिल्पकला का नया स्टाइल ग्रीक प्रभाव क कारण 550 ईसा पूर्व तक काफी मजबूत था तथा परशियन आक्रमण के समय 525 ईसा पूर्व तक पूरी तरह विकसित था।

छठा कालखड
पूर्व
पश्चिम

मिस्र मे पुरातनवाद 1550 ईसा पूर्व के लगभग समाप्त हो गया। 1500 तक मुक्त स्टाइल आ गया था और 1300 तक पतन स्पष्ट हो गया था। कुयूसाम म 1500 ईसा पूर्व तक इस समयखड की सर्वश्रेष्ठता पहुच गई थी। 1370 ईसापूर्व तक टेल-एल अमारौया का बर्तनकला का सबध क्रट मे आए कला के पतन से था।

पाचवा कालखड — इस युग म स्थिति वही थी जो क्रेट और मिस्र म दूसरी और तीसरी शताब्दी तक रही थी। क्रेट की मध्यकालिक स्थिति बारहवे राजवश के मध्य से जुडी है।

चौथा समयकाल-
प्रथम समयकाल

इस युग के बाद का समय मिस्र के छठ से लेकर बारहवे राजवश से जुडा है।

मिस्र मे तीसरा समयखड वह था जो क्रट से आयातित हुआ लगता है। जहा यह 'उप-नवप्रस्तर' म पाया जाता है अथवा

तुरत नवपाषण पर और किसी प्रासाद भवन स पूर्व मे पाया जाता है।

मिस्र के प्रथम तथा दूसरे समयखडों की खोज कुपूरोस में नवपाषण युग के पच्चीसवें खडहरो अथवा फैसटोस में 15 फुट में की जा सकती है।

कालखडो की अवधि

कला के विकास में सर्वाधिक निश्चित अवस्था शिल्पकला में पुरातन युग की समाप्ति है जब विभिन्न भागो में सम्पूर्ण सामजस्य सबसे पहले हो जाता है। पुरातन समयो की समाप्ति को हम निम्न तारीखों में देख सकते है–

अतराल

1 आठवा समयखड – 1240 ईस्वी

1690

2 सातवा समयखड – 450 ईसा पूर्व

– 1100

3 छठा समयखड – 1550 ईसा पूर्व

1900

4 पाचवा समयखड – 3450 ईसा पूर्व

650

5 चौथा समयखड – 4750 ईसा पूर्व

650

6 तीसरा समयखड – 5400 ईसा पूर्व

इस प्रकार औसत समयावधि 1330 वर्ष

मिस्र और यूरोपियन कला मे मोड़

मिस्र सबधी

तीसरा समयखड गुणवत्ता में चौथे और पाचवें समयखडों में मध्य में हैं। इसकी कला उतनी ही अच्छी है जितनी चौथे समयखड की और पाचवीं से कही अधिक अच्छी। लेकिन इसकी शिल्पकला दोनों से घटिया है। छठा समयखड पाचवें से हर दशा में स्तरहीन है। सातवें समयखड की पूरी श्रेष्ठता नकल से आई है। आठवें समयखड मे मिस्र मे कोई शिल्पकला नहीं थी लेकिन मात्र स्थापत्य और धातुकार्य था। इसको सातवें समयखड के समान माना जाता है।

पृष्ठ 87

शुरुआत में जिस यूरोपिन कला की गुणवत्ता काफी नीचे चली गई थी वह अत मे ऊचाइयों को छू लेती है। जैसा कि सभी शिल्पकला और स्थापत्य कला 1500 से लेकर मात्र नकल ही रही है। अंतिम चार शताब्दिया छोड दी गई

हैं। मुझे आठवें समयखंड को अन्यों की भांति, गत पचास वर्षों के संपूर्ण कृत्रिम पुरातन पुनरुद्धार कार्य को इसमें जोड़े बगैर ही नष्टप्राय मानना चाहिए। क्योंकि अधिकांश की भावनाओं में इसका कोई मूल नहीं है और यह एक फैशन की भांति समाप्त हो जाएगी। *नि संदेह हेडरियन के समय में उन्होंने पुराकालिक मिनर्वा की* आराधना की थी जैसे सौंदर्य का पुनरुत्थान हुआ हो। यह सब एक व्यक्तिगत राय है जिसके बचाव की मैं चिंता नहीं करता।

मध्यकालीन लहर को महत्ता में माइकेनियन (छठा) और *प्राचीन (सातवें) के बीच में दर्जा दिया जाता है। माइकेनियन* लहर को एन्टोनाइन के स्तर पर रखा जाता है।

प्राचीन कला का पतन समान रूप से 400 ईसा पूर्व से 200 ईस्वी सन् तक लगातार होता रहा है। कोमाडस अथवा सर्ववर्स के बाद यह पतन तेजी से हुआ जैसा कि सिक्कों से मालूम होता है। सिक्कों से यह भी मालूम होता है कि सन् 600 से 800 सन् तक का समय कला के लिए निम्नतम रहा है। मध्यकाल प्राचीन काल के स्तर से थोड़ा नीचे था।

यूरोप में पहले समयखंडों में (तीसरे चौथे पांचवे में) कोई *चित्र शिल्पकारी नहीं है वरन् मात्र फूलदान की सजावट* संबंधी कला थी।

अध्याय - 5

विभिन्न क्रियाकलापों का संबंध

आठवें समयखंड में विषय

पृष्ठ 94
1240 वैभवर्ग शिल्प

(1) सभ्यता के अन्य साक्ष्य शिल्पकला के बाद के समय में दिखाई देते हैं। शिल्पकला और स्थापत्य कला सभी समयों में साथ साथ चले हैं। शिल्पकला में 1240 में खुलेपन का मोड़ आया। स्थापत्य कला में खुलापन सेलिसबरी कैथेड्रल के साथ 1220 में आया और 1258 में शिखर पर पहुंचा।

1400

(2) इसके बाद चित्रकारी आई। पुरातन काल से मुक्ति अल्टीचियर्स और जेकोपा डी अवाजो द्वारा 1379 में मिली और अन्यों की लगभग 1450 में मिली (शिल्पकला के 150 से 200 वर्षों के बाद)

1600 (3) साहित्य में बेकन और बेन जान्सन परिवर्तन के मोड़ पर हैं (लगभग सन् 1600 में)।

1700 (4) संगीत में हेडन सबसे पहले 1790 में अपनी सिम्फनी लेकर अवतरित हुआ। बीथोवन ने 1795 के बाद कोई प्राचीनता नहीं दिखाई।

1890 (5) यांत्रिकी में बेकर के फोर्थ ब्रिज ने अनावश्यक प्रतिबंधों से मुक्ति प्राप्त की। (ब्रुनल का ... पुल इससे पूर्व यद्यपि नया था) किसी भी प्रकार से पूरी तरह से अपनाया नहीं गया था। इस प्रकार 1890 पुरातनकला की समाप्ति का वर्ष था।

1910 के बाद (6) विज्ञान और व्यापार में पुरातन कला का समापन 1910 के बाद माना जा सकता है।

सातवां समयखंड

सातवें समयखंड में सम्पदा में बदलाव इस प्रकार हो सकता है-

शिल्पकला	–	450 ईसा पूर्व
चित्रकला	–	350 " "
साहित्य	–	200 " "
यांत्रिकी	–	0 " "
विज्ञान	–	150 ईसवी सन्
व्यापार	–	200 " "

	छठा समयखंड	पांचवां समयखंड	चौथा समयखंड
शिल्पकला	1550 ईसा पूर्व	3450 ईसा पूर्व	4750 ईसा पूर्व
चित्रकला	1470 (?) " "	3400 " "	4700 " " (?)
साहित्य	1350 (?) " "	3320 " "	–
यांत्रिकी	1280 " "	3270 " "	4650 (?)
विज्ञान	–	–	–
व्यापार	1180 " "	3250 " "	

अब हम सम्पदा की सभी अवस्थाओं की समीक्षा एक साथ कर सकते हैं। चुनते चारों-यानी शिल्पकला, प्रत्येक समय अवधि को शून्य मानकर।

	आठवें	सातवें	छठे	पांचवें	चौथे
	1240	450	1550	3450	4750
	सन्	ईसापूर्व	ई पू	ई पू	ई पू
शिल्पकला	0	0	0		0
चित्रकला	160	100	[illegible]	50	50 (?)
साहित्य	*360*	*200*	*200*	*130*	
यांत्रिकी	550	450	[illegible]	[illegible]	100 (?)
विज्ञान	650+	600	–		–
व्यापार	650+	650	370	200	–

इस प्रकार प्रत्येक समयखड के लगातार चरणों का विकास क्रम सामान्यत एक जैसा है यद्यपि अतराल का समय बाद के चर्षों में कहीं-कहीं लबा है।

इस शृखला में अन्य पुस्तकें

	पुस्तक	लेखक
I	–इट्रोडक्शन एड प्री हिस्ट्री	ई पेरियर
	दी अर्थ बिफोर हिस्ट्री	
	–प्रहिस्टोरिक मैन	जे डी मोरगन
	–लैंग्वज, ए लिगविस्टिक इट्रोडक्शन टू हिस्ट्री	आई वेडरीज
	ए ज्योग्राफीकल इट्रोडक्शन टू हिस्ट्री	एल फेबोर
	–रेस एड हिस्ट्री	– ई. पिटार्ड
	–फ्राम ट्राइब टू एम्पायर	ए. मोरेट
	–युमेंस प्लेस इन सिपल सोसायटीज	– जे एल मायर्स
	–दी डिफ्यूजन आफ कल्चर	– जी इलियट स्मिथ
	–दी माइग्रेशन आफ सिबल्स	– डी ए. मैकेंजी
II	–दी अर्ली एपायर्स	– ए.मोरेट
	-दी नील एड इजिप्शियन सिविलाइजेशन	
	-कलर सिबालिज्म आफ एनसिएट इजिप्ट	डी ए. मैकेंजी
	- चालदेव-एसीरीयन सिविलाइजेशन	एल डेलापोर्ट
	दी एजियन सिविलाइजेशन	जी ग्लोट्ज

अध्याय एक

सामाजिक ढांचे का अध्ययन दो दृष्टिकोणों से किया जा सकता है।

(1) स्थायी विश्लेषणात्मक (वर्तमान समाज से सबंधित)

(2) गतिशील, ऐतिहासिक (समाज किस प्रकार आज की स्थिति में आया–इससे सबंधित)

दो तरफा अध्ययन

(1) समूहों का ढाचा

(2) समूहों के कार्य ((क) व्यक्तियों के बीच तथा (ख) समूहा के बीच सबधों सहित)

सामाजिक समूहीकरण

(1) घरेलू (2) राजनैतिक (सरकारो, परिषद् नगरपालिका आदि)

(3) व्यावसायिक (4) धार्मिक (5) शैक्षिक

(6) सामाजिक अथवा क्लब (आदिम अथवा अव्यवस्थित समाज। उस समय गुप्त समाज थे। जिनमें कुछ विशेष कलाओं का ज्ञान खोला नहीं जाता था।)

गिल्डों, ट्रेड यूनियनों, नियोक्ताओं के सघो की स्थिति उपरोक्त में न 3 और 6 के बीच में थे। सामाजिक समूहों को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।

क) ऐच्छिक सामाजिक-क्लब आदि

ख) अनिवार्य–जैसे परिवार आदि (मैं एक परिवार का सदस्य अपनी इच्छा से नही हू वरन् अपने जन्म के कारण हू)

रिवर्स ने दो तरफा समूह के सदस्य के लिए स्रोत शब्द को लिया है।

परिवार–छोटा सामाजिक समूह जिसमें माता-पिता और बच्चे है। व्यापक रूप से इसमें माता-पिता के सबधी भी सम्मिलित किए जाते हैं। दो तरफा समूह में माता और पिता दोना के ही सबधी सम्मिलित किए जाते हैं। एक तरफा समूह मे–केवल एक के ही होते हैं। एक तरफा दो प्रकार के ही हो सकते हैं -

(1) पितृसत्तात्मक-उदाहणार्थ भारतीय सयुक्त परिवार नार्वे के परिवार आदि।

(2) मातृसत्तात्मक–जैसे–मालाबार के नायरों म "तारावाड"*। घोलू सदस्यों का समूह अन्य समूहों से भिन्न होता है। कभी कभी *इसमें गोत्र और सजातियो को भी शामिल किया जाता है लेकिन घर के उन सदस्यो (पुत्रों और पुत्रियों) को नही, जिन्होने अलग* होकर अपना घर बसा लिया है।

---

*देखिए ए ट्रीटाइज आफ हिंदू लॉ एंड कस्टम ज डी-मैन (मद्रास-1914)

सभी भूभागीय गोत्रों में, वास्तविक बंधन का कारण समान कारण समान आनुवांशिकी में विश्वास है बजाय समान भूभाग में रहने के, क्योंकि कुछ मामलों में हमने देखा है कि गोत्र की सदस्यता साथ रहने पर निर्भर नहीं करती वरन् उस स्थान से संबंध रखती है जिससे व्यक्ति या उसके पूर्वज मूल रूप से संबंधित होते हैं।

ब्रिटिश गुयाना में एक गोत्र में एक से अधिक टोटेम होते हैं- इसे ही टोटेमवाद कहा जाता है।

आनुवांशिकी के तरीकों और एक गोत्र के सदस्यों को एक बंधन में जोड़ने के ढंग में क्या कोई समीकरण है? रिवर्स का विचार है कि (यद्यपि यह बात अभी भी दोषपूर्ण है) स्थानिक समूहीकरण पितृसत्तात्मक वंश से जुड़ा होता है। (जैसाकि टोरस स्ट्रेट में माबूएग टापू पर और मातृसत्तात्मक वंश के साथ स्थानीकरण का न होना जैसा कि मेलनेसिया में)। पितृसत्तात्मक वंश में पत्नियां अपने पतियों के घर रहने जाती हैं जबकि मातृसत्तात्मक समाज में बच्चों का लालन पालन उनकी माताओं के घर होता है। अतः पहले प्रकार के समाज स्थानीय समूह होते हैं जबकि दूसरे प्रकार के समाज में फैला हुआ वितरण होते है।

टोटेमवाद

गोत्र का सर्वाधिक प्रचलित व रूप है जिसमे सभी सदस्य वस्तुओं के तीन वर्गों में से एक के साथ अपने संबंधो में विश्वास करते हैं। इन तीनों में जानवर टोटेम सर्वाधिक प्रचलित हैं। गोत्र सदस्य के टोटेम के साथ संबधों का स्वभाव अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग होता है। यह इस प्रकार हो सकता है -

(1) टोटेम के समान वंशानुगत जैसे कि मेलेनेसिया में है

(2) गोत्र के सदस्य एक पुरुष या महिला की आनुवांशिकी में होते है जो किसी रूप में टोटेम से जुड़े होते हैं। (इस तरह के टोटेमिक बंधन धीरे-धीरे ऐसे विश्वास में बदल जाते है कि मिलने का बंधन एक समान पूर्वज के वंश के कारण है।)

आस्ट्रेलिया में कुछ जानवर पुरुषों से तथा कुछ स्त्रियों से जुड़े कहे जाते हैं। सगे-संबधी के रिश्ते और गोत्र संबंधों के रिश्तों में अंतर एक समान पूर्वज के विश्वास पर आधारित है क्योंकि पहले मामले के संबंध आनुवांशिकी तौर पर ढूंढे जा सकते हैं जबकि दूसरे प्रकार के नहीं।

टोटेमवाद सामाजिक समूहीकरण का एक प्रकार है जो अपने सामान्य रूप में घरेलू तथा धार्मिक दोनों कार्य करता है। (पृ 26)

गोत्र के कार्य

1) राजनीतिक पृष्ठ 27

गोत्र मोटे तौर पर किसी समुदाय के राजनीतिक गठन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गोत्र की अपनी सभा होती है जिसमें बुजुर्ग पीढी के पुरुष होते है। गोत्र अपने मुखियों का चुनाव स्वयं करते हैं और वृहत् इकाई की सभा को बिना कोई सूचना दिए इन्हें हटा भी सकते हैं।

स्वभाव भिन्न भिन्न होते हैं—कुछ मामलों में एक और दो अर्धांशों को सामाजिक व्यवस्था में एक दूसरे से उच्च माना जाता है।

सामाजिक सगठन का एक रूप द्वैत प्रणाली से मिलता जुलता भी है। जहा समाज में दो वर्ग मुख्य और साधारण होते हैं।

सामाजिक संगठन के दो प्रकारों के बीच में भी कुछ उदाहरण हैं जैसे—फिजी में वानुआ लावा टापू।

टोडा में दो मुख्य समूह होते हैं जो अतर्जातीय हैं और जिनमें भारतीय जातियों से मिलते जुलते सबध हैं।

एक द्वैत विजातीय प्रणाली दो विजातीय गोत्रों को छोडकर शेष सभी के समाप्त होने पर अस्तित्व में आ सकती है। यह उन समाजों की बात है जिनके पास अधिक मात्रा में समूह होते थे। केंद्रीय भारत के गोंड समूह का उदय इसी प्रकार हुआ होगा।

(1) मेलेनसिया मातृसत्तात्मक वश* - एक व्यक्ति अपनी मा के *अर्धांश से सबधी होता है।*

*कुछ अपवाद छोडकर जैसे न्यू *केलेडोनिया में पितृसत्तात्मक परपरा* है।

द्वैत सगठन जनजातियों और द्वीप समुदायों की सीमाओ स बाहर है। अर्धांशों के नाम उन द्वीपों से मिलते हैं जिनमें सामाजिक सगठन के अन्य पक्षों में कोई समानता नहीं होती। यह मेलेनसिया और आस्ट्रेलिया के बारे में भी सत्य है।

पठित पुस्तको का विश्लेषण

1 एक्स कैसरेस मेमोआरस् (1878 1918)

2. एशिया एड यूरोप (मेरेडिथ टाउन सेंड)

3 साइकोलोजी एंड क्राइम (*मस्टरबर्ग*)

4 दी क्रिमिनल माइड (डॉ मोरिस डी क्लूरी)

5 नेशनल वेलफेयर एड डिके (मेकडूगल)

6 फिजिकल एफीशिएसी (जेम्स कैंटली)

एक्स कैसर के सस्मरण 1878-1918

अध्याय एक बिस्मार्क

बिस्मार्क तथा एक्स केसर विलियम के बीच मतभेद के मुद्दे

1 *विलियम ने 1878 की संधि के लिए सहमति नही दी जिसके* लिए बिस्मार्क मुख्यत उत्तरदायी था।

एशिया एंड यूरोप

(लेखक-मेरेडिथ टाउनसेंड)

प्रकाशक आर्कीबाल्ड कांस्टेबिल एंड कपनी
2 व्हाइट हाल गार्डेन्स 1901

भूमिका

"यूरोप और एशिया के बीच संघर्ष इतिहास का बंधन सूत्र है दोनों के बीच व्यापार, वाणिज्य की नींव है, एशिया का विचार ही सभी यूरोपियों का आधार है, लेकिन इन दोनों महाद्वीपों में कभी मेल-मिलाप नहीं हुआ। लेखक के अपने निर्णय के अनुसार यह कभी होगा भी नहीं।"

> पूर्व तूफान के सामने झुक गया
> गहरी घृणा के सब्र से
> उसने अपने पास से
> गरजती लरजती सैनिकों की भीड़
> को गुजरने दिया
> फिर विचारों में, चिंतन में डूब गया

मैथ्यू आर्नोल्ड

"अरबवासियों अथवा हिंदुओं के साथ मिलकर नीग्रो का एक भविष्य हो सकता है लेकिन बिना मिले-जुले उसमें एक प्रकार की असफलता का भाव रहेगा। संभवत विचारों को एक सूत्र में बांधने की शक्ति का अभाव जिससे वह सफलता की दौड़ में काफी पीछे रह जाएगा।

"चतुर और एक हसोड़ अमेरिकी संभवत एशियावासियों के साथ सर्वाधिक लोकप्रिय श्वेत हो सकता है फिर भी अमेरिकी, एशिया पर राज्य नहीं कर सकता। दोनों प्रजातियों में अंतर काफी चौड़ा है और यह कभी न भरने वाला सिद्ध हुआ है। अमेरिकी किसी अन्य को पसंद नहीं करता अपने रंग वाले को भी नहीं, वह किसी से समानता के भाव से मिले भी नहीं, अतत: अमेरिका को एशिया पर विजय प्राप्त करने में कोई रुचि नहीं। वह किसी प्रकार की सार्वभौमिकता में विश्वास नहीं करता जो व्यापार के लिए अत्यंत आवश्यक है।

"अमेरिका के लिए एशिया की सुरक्षा कर उस पर प्रभाव जमाना अधिक सरल होगा बजाय उसे जीतने के (जैसे कि चीन में)।"

परिचय

यूरोप द्वारा एशिया पर विजय के प्रयत्न

फ्रांस और पुर्तगाल भी

(1) मकदून का सिकन्दर (2) रोमन (3) धर्मयुद्ध

(4) सत्रहवीं शती में रूस (एशिया में रूस)

(5) अठारहवीं शती में इंग्लैंड (भारत)

"श्वेत प्रजातियां अब आश्चर्यजनक तेजी से बढ़ती जा रही हैं और यूरोप में जो बहुत अधिक उपजाऊ महाद्वीप नहीं है काफी धनधान्य भी नहीं है कि वहीं सीमित रहा जाए।

"इन व्यापारों को बाजार के सार्वभौमिक अधिकारों द्वारा सुरक्षा की जानी आवश्यक है"।

यदि यूरोप आंतरिक युद्ध अथवा बहुत अधिक प्रगतिशील अमरिका के साथ युद्ध से बच सकता है तो 2000 सन् तक एशिया में उसका प्रभुत्व हो सकता है और तब से उसे हर तरह की स्वतंत्रता होगी ऐसा उनके नागरिकों का विचार है। मैं इससे सहमत नहीं हूं। क्योंकि मैं इतिहास के आधार पर कह सकता हूं कि इस प्रकार के प्रयत्न यद्यपि इतिहास में चौथी बार होंगे, कभी स्थायी रूप में सफल नहीं होंगे क्योंकि विभिन्न महाद्वीपों की श्रेष्ठता के मानक अलग-अलग होते हैं।

एशिया द्वारा यूरोप पर विजय के प्रयत्न

1 मंगोलों के एक भाग ने यूरोप पर फ्रांस तक आक्रमण किया और चालोन के मैदानों में रोमनों को लगभग उखाड़ फेंका।

2. अरबवासियों ने पूर्व रोम और पर्शिया को हराया, उत्तरी अफ्रीका के वन्डलों को विध्वंस कर दिया, स्पेन पर विजय प्राप्त की। बाद में उन्होंने यूरोपियन सेना को फिलिस्तीन से भगाया।

3 मंगोलों ने चीन, भारत और रूस पर विजय प्राप्त की और आस्ट्रिया को हराने वाले थे।

4 तुर्कों ने पूर्वी रोमन साम्राज्य को हराया और समूचे सेंट्रल यूरोप को संकट में डाल दिया।

ग्रीक पर पर्शिया आक्रमण की चर्चा नहीं की गई है।

(जिसने भी उन्हें काम करते देखा है तुर्की सिपाही उन सबके मत में विश्व का सबसे अच्छा सिपाही है।)

एशिया को जीतने मे कठिनाइया

एशिया की कुल जनसंख्या लगभग 90 करोड

1 एशिया का बडा आकार प्रकार और महाद्वीप में रक्षक सेना के घुसने में कठिनाइया

2 एशिया मे लगभग 8 करोड ताकतवर सिपाही हैं जिनमें से उनका पाचवा हिस्सा शस्त्रों का प्रयोग कर सकता है।

3 एशिया कोई असभ्य महाद्वीप नही है।

यूरोप के प्रयत्न

"मुझे सदेह है कि उनके प्रयत्न सफल होंगे और निश्चित रूप से सफल नहीं होंगे जब तक कि जनता पर दुखो और तकलीफों का पहाड न टूट जाए, जिसके लिए यूरोप द्वारा स्थापित सरकार क्षतिपूर्ति कर भी सकती है और नही भी।

भारतीय बैंकिंग व्यवस्था

"मैंने स्वय दस वर्षों तक हर वर्ष हजारा स्थानीय हुडिया और चैक प्राप्त किए हैं और इनमें से कोई भी झूठा सिद्ध नहीं हुआ। एक बार मैंने सबसे बडे यूरोपीय बैंक के मैनेजर से पूछा, कि क्या कभी उसे इनके जाली होने का डर नही लगा क्योंकि मैं जानता था कि यह मैनेजर मुम्बई के लिए सर्वाधिक स्थायी चैकों का भुगतान करता था। उसका कहना था कि उसे इग्लैंड के बैंक के नोटों से अधिक डर लगता है।" यहा मैं इतना कहना चाहूगा कि एशिया के बैंकरो ने जालसाजी से पीछा छुडाया है और इन्होने देश मे बीमा व्यवस्था को अपनाया है जो बहुत अच्छा काम कर रही है।

एशिया की असफलता

"निस्सदेह ये प्रकृति पर प्रभुत्व जमाने की अपनी कोशिश में हर जगह रुके हैं। रुकने की कुछ अजीब सी अदरूनी आज्ञा ने, सभवत जो मानसिक थकान के कारण हो सकती है, भूरे और पीले लोगों को, पुराने विचारों को बार-बार दोहराने के लिए कडी निंदा की है। वास्तव में ये सभ्य लोग हैं यद्यपि इनकी सभ्यता में रुकावट आई है शायद एक विश्वास के कारण जो यूरोप में अनजान नही है कि वे पूर्णता की स्थिति तक पहुच गए हैं और उनका ज्ञान पथ ही अब सभी के लिए, चाहे वह विचारक हो या कलाकार या शिल्पकार, लगातार दोहराव का रास्ता है।"

"एशियाई लग अधविश्वासों के गुलाम हात हैं" मुख का भार जिसक कारण ईश्वर ने मानवाय जाति का एक शक्ति दा है लडन की एशिया में सतापपूर्वक सहा जाता है और यह किसी प्रकार का शिकायत का अपरा एक अथक उद्याग का जन्म दता है जा वास्तव में नारस हाता है लकिन जिसके बार में काई शिकायत नहीं करता।

"इन्हान विज्ञान में कोई तरक्का नहीं का मिवाय खगालशास्त्र के क्योंकि इनमें जिज्ञासा का अभाव है और इन्होंने इतिहास को लापरवाही स नकारा है। इतिहास का इनका दृष्टि स स्पष्टीकरण कठिन है यह क्योंकि भूतकाल क प्रति आदरभाव रखते हैं। य नियमित रूप स यात्रा नहीं करत और यात्रियों क कारनामों और नियमों में इनका काई दिलचस्पी नहीं हाती—जिनका य वास्तव में विश्वास नहीं करत।

क्या ये हिंदू मुसलमानों क बाच भद को स्पष्ट करता है?

"एशियाई व्यक्ति में सहानुभूति का अभाव सभा बुराइयों का जड है जा सभा प्रकार क अनक दुख कत्लआम का अंतिम कारण है जिसन शुरू से एशियाई जावन का अपमानित किया हुआ है" एशियाई व्यक्ति अपन परिवार अपना जाति अपन कुलगात्र और कभा कभा अपन व्यवसाय क प्रति अधिक चिंताग्रस्त हाता है लकिन अपन पडासा का उसस थाडा सा ज्यादा ध्यान करगा।

"एशिया में व्यक्ति अपन पडासा का मार्गि दा चाहता है(अन्य महाद्वीपों क व्यक्तियों का हा भांति) लकिन दूसर क पास है मर पास नहीं इस बात को पडा स उस कई लना दना नहीं है।"

टर्की अभी जिंदा क्यों है ?

यूराप के सभा एशियाई विजताओं में टर्की का यूराप में सर्वाधिक लबा ठहराव रहा। इसक निम्न तान कारण हैं—

1 ओटमन के वशजों—खुरासन से तातार के मुखिया—द्वारा काफी लबे समय तक बगाड शक्ति का प्रदर्शन

2 टर्की में नस्ल के अलावा याग्यता ही उच्च पदों के लिए अकला गुण था। किसी व्यक्ति का उन्नति में उसका जन्म व्यवसाय कृषि या पद बाधा नहीं था। यहा तक कि गुलामी भी कोई बधन नहीं था। अपन विश्वास में समानता जा इस्लाम का मूल सिद्धात है टर्की में सदा हा एक वास्तविकता रहा है और अपन शासकों का उनको

आवश्यकतानुसार योग्य व्यक्ति देती रही है। ऐसा इस पृथ्वी में अन्य किसी साम्राज्य में नही हुआ। सुल्तानों ने कभी अपने घर के सदस्यों का नाजायज पक्षपात नहीं किया। अपने साम्राज्य के कुछ अयोग्य लोगों से नफरत की और समाप्त भी किया। यही नीति पर्शियन राजवंश की भी रही है।

3 टर्की राजाओं ने सुधार करने और बिगड़ती व्यवस्था को ठीक करने के लिए डंडे का इस्तेमाल करने में कोई हिचक नहीं दिखाई। जो व्यक्ति इनका विरोध करता था, या उसे मरना पड़ता था या फिर गुलामी का जीवन जीना पड़ता था।

एक अनूठा एशियाई

(महाराजा दिलीपसिंह, पुत्र रणजीतसिंह)

सिख सेना

यूरोप और एशिया' पृ 209 "तेजसिंह ने जनरल कनिंघम के अनुसार 22 हजार पौंड में विजय बेच दी थी।

"अपने इस स्वामी के नेतृत्व में सिख सेना ने ब्रिटिश सेना को हरा दिया लेकिन यदि इसके सेनापति को भारी भरकम रिश्वत न दी होती, (कनिंघम का सिखों का इतिहास) तो इस सेना ने अंग्रेजों को भारत से मार भगाया होता और प्रायद्वीप की गद्दी पर बालक दिलीप सिंह बैठता जिसे सिखों, राजपूतों, मराठों और बिहारियों का समर्थन मिला होता।

"एक एशियाई व्यक्ति की इच्छाशक्ति को जब अच्छी तरह से उभार दिया जाए और उसके दिमाग मे अपना उद्देश्य स्पष्ट हो तो फिर यूरोपिन उसकी तुलना में कहीं नही ठहरता।" व्यक्ति ऐसा हो जाता है जैसे उस पर कोई सवार हो और वह चाहकर भी अपने द्वारा निर्धारित मार्ग बदल नहीं सकता।"

मरुस्थल के अरबवासी

मरुस्थल के अरबवासी प्रगतिशील नही है जबकि विदेश जाने वाले अरबवासी जीवन के अनेक क्षेत्रो मे प्रगति के पथ पर हैं। इसका कारण क्या है? इसमें बुद्धिमत्ता की कमी या चारित्रिक शक्ति का अभाव नहीं है। यह भी नही है कि उनमे साहस की कमी है। 'बक्ले' कह सकते हैं कि यह उसकी भौगोलिक स्थिति थी लेकिन इससे उसको आधा रोम विजय करने मे कठिनाई नहीं आई। क्या यह उनका सिद्धात था? किस मामले में उनका सिद्धात यहूदियों के सिद्धात से अलग है सिवाय इसके कि कुछ निर्देश जिन्होंने

अरबवासियों को विजय प्राप्त करन क लिए प्रेरित किया और जिनके कारण व अपने मरुस्थल तक ही सामित होकर नहीं रह। क्या इसक लिए अरबवासियों की गरीबी उत्तरदायी है? अन्य सभी व्यक्तियों के लिए हम कहत हैं कि गरीबी प्रगति करने की प्रेरणा दती है और बहादुर लागों का समाज जो हर मुसीबत का मुकाबला करन को तत्पर रहत हैं कभी गरीब नहीं रह सकते। क्या यह उसका व्यक्तिवाद है? लेकिन इससे प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता।"

"हमारी मान्यता है कि यह रहस्य उसक जीवन की सुदरता में होना चाहिए जो वह जीता है उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति में और उन परिवर्तनों और अनिश्चितताओं में जो उसके जीवन में है।"

एशिया की देशभक्ति

"हम यह नहीं मानते कि सैद्धांतिक रूप में देशभक्ति की भावना एशिया में उतनी ही अधिक है जितनी यूरोप में। इसका प्रभाव अन्य विचारों ने तथा धर्म क दावों ने आंशिक रूप से समाप्त कर दिया। इसक कारण एशियावासी अपना कार्य स्थगित करते रह। एशियावासियों का मस्तिष्क विभिन्न विचारों से अपने सिद्धांतों और इतिहास की भावना से अपनी घृणा और अपने व्यक्तिगत हितों स समृद्ध है। जो यदि देशभक्ति की भावना स टकरात हैं तो उससे और अधिक दृढ हो जाते हैं। लकिन यह कहना कि व नैतिक रूप से कमजोर हैं अथवा बौद्धिक रूप स अनिश्चयी हैं इसका अर्थ उनकी देशभक्ति पर सदेह करना नहीं है। देशभक्ति उसके लिए एक अलग स विचार नहीं है। उसक अपने भाग्य के बारे में अनेक धारणाए हैं। इसी प्रकार ईश्वर प्रदत्त अपनी शक्ति क बारे में तथा वाशिंगटन अथवा वाशिंगटन जैसी किसी शक्ति की आज्ञाकारिता की आवश्यकता के बारे में उसके विचार हैं।

पूर्व मे धर्मांधता

"इग्लैंड का मध्यवर्ग आज धर्मांधता से पूरी तरह मुक्त है।"xxxx

"जब कैलिफार्नियावासी किसी चीनी पर अथवा अंग्रेज श्रमिक किसी आयरलैंडवासी पर अथवा मर्सिलाई कलाकार इटलीवासियों पर चोट करता है अंग्रज इन सबका स्पष्टीकरण रग भेद अथवा व्यापारिक ईर्ष्या अथवा राजनैतिक भावावश

के रूप में देते हैं लेकिन जब अलैक्जेंड्रिया में अरबवासी किसी यूरोपीय को मार देते हैं, वे इसे उनकी धर्मांधता का नाम देते हैं।"xxxx

गौहत्या की रोकथाम के लिए हिंदू उत्साह के बारे में।

हर एक पूर्वी सिद्धांत, ईसाई धर्म सहित, (अकेले कन्फ्यूसियसवाद के सिवाय) इस दैहिक संसार की बजाय दैविक संसार की बात करता है और अपने अनुयायियों को दैविक शक्ति के कानून का पालन करने को कहता है। यहा तक कि चाहे ऐसे कानून या नियम साधारण बुद्धि से परे या तर्क के विपरीत भी हों।"xxxx इन तीनों मतों के गुण, (हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म तथा ईसाई धर्म) त्याग की बात करते हैं और इसलिए बहुत ही अधिक असामान्य परिस्थितियों को छोड़कर xxxx ये किसी प्रकार की शत्रुता पैदा नहीं करते। "*मुस्लिम धर्म के गुण अन्य किस्म के हैं। मुस्लिम देशों में धार्मिक* जोश है, जो कभी-कभी उन्माद तक पहुच जाता है अर्थात *न्याय या तर्क के नियंत्रण से बाहर निकल जाता है*"xxxx उनका यह उन्माद किसी आवेग के हावी हो जाने से नहीं होता वरन् एक विश्वास है और यह उन्माद खतरे के समय कोई मददगार सिद्ध नहीं होता।xxxx

ब्लैकी का क्या हुआ ?

पूर्व में कत्लेआम धर्मांधता से उत्पन्न नहीं होता वरन् उस कारण से जिसने हाल ही में फ्रेंच दस्तकारों को इटालवी दस्तकारों पर आक्रमण करने को उकसाया—वह कारण था उन अजनबियों के प्रति नापसदगी जो कहते कुछ हैं करते कुछ हैं और एक तरह से भयकर हैं। फिर भी एशियावासियों की यूरोपियों के प्रति घृणा यूरोप की किसी भी अन्य चीज की तुलना में अधिक भयकर है। यद्यपि रूसवासियों की *यहूदियों के प्रति घृणा भी इसी प्रकार की है क्योंकि* एशिया में यूरोपीय, विश्व के अन्य किसी भी विदेशी की *तुलना में शीर्ष स्थान शीघ्र ले लेता है और जनता को अपने* अनुसार चलाता है।

एशिया में रंगभेद

"यदि हम तथ्यों को ध्यानपूर्वक देखें तो यह कहा जा सकता है और ठीक भी है कि गोरे और काले लोग जितना कम एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं, उतना ही कम रंगभेद बढ़ता है। यह तब खतरनाक होता जाता है जब दोनों एक-दूसरे में घुलमिल जाते हैं और एक-दूसरे की ताकत और कमजोरी को समझने लगते हैं।"

xxxx"सघ समुदाय की *अपेक्षा* यह कारण है कि रंगभेद

चाहिए कि ये सब निष्क्रिय लोग हैं। व इस पूरे खेल में खिलाडी न होकर मात्र मोहरे हैं। उन पर कर भार बढाने के कारण ही भारत में सभी क्रांतिया युद्ध आदि हुए हैं।" xxxx यह समाज का क्रियाशील वर्ग है जिसको सुना जाना चाहिए। और उनके लिए कोई एक नियम हो भी नही सकता जिसमें कमिया न हों। इनमें से एक यह है कि *और जिसको वे जानते भी हैं कि जो उनका कभी गौरव* था, उसका धीरे-धीरे पतन हो रहा है। यह गौरव था भारतीय कला, भारतीय सस्कृति, भारतीय सैनिक क्षमता पर भारतीय शिल्पकला, अभियांत्रिकी, साहित्यिक क्षमता—ये सब समाप्त हो रहे हैं—इस प्रकार समाप्त हो रहे हैं कि *एग्लो-इंडियन को सदेह होने लगता है कि भारतीयों के पास* स्थापत्य कला के विशेषज्ञ होने की योग्यता भी है कि नही, यद्यपि इन्होंने बनारस बनाया अथवा इनके पास अभियांत्रिकी का दिमाग है। यद्यपि इन्होंने तजौर की कृत्रिम झील बनाई थी और अंतिम तथा सबसे बडी बात xxxx है कि इन्हें *जीवन के प्रति कोई रुचि या मोह नहीं है। यह एक औसत* अग्रेज को समझाना मुश्किल है कि भारतीय जीवन हमारे आने से पूर्व कितना मनमोहक रहा होगा। xxxx पूरा महाद्वीप एक शक्तिशाली सेना के लिए पुरस्कार के रूप में था xxxx शिवाजी के कुछ न होते हुए भी वे एक शक्तिशाली ताकत थे। एक चरवाहे ने बडौदा में एक राजतत्र खडा किया। एक स्वामिभक्त नौकर ने सिंधिया राजवश की नींव रखी। एक सिपाही ने मैसूर के स्वतत्र राज्य तक अपना रास्ता बनाया। पहला निजाम सम्राट के यहा एक अधिकारी मात्र था। रणजीत सिह के पिता एक साधारण व्यक्ति थे जिन्हें यूरोपीय लोग छोटा सा प्रधान कहते हैं। xxxx जीवन नाटकीय परिवर्तनों से समृद्ध होता है। xxxx उन सबके लिए *जो हम प्राप्त कर चुके हैं बदले में हम कुछ नही देते,* न हम दे सकते हैं। हम स्थान दे सकते हैं लेकिन स्थान हमारी व्यवस्था में सत्ता नही है। xxxx

*"जीवन के प्रति यह मोहकता हमें अनेक खतरों और दुखों के बाद मिली। इस देश में हिंसा थी, चारों तरफ घरेलू युद्ध थे, *मेरा प्रश्न है कि परिस्थितियों को क्या कभी* कमियां या कठिनाइया माना गया। उच्च वर्ग द्वारा तथा मध्य वर्ग में यूरोप द्वारा इन्हें इतना भी नही माना गया। मैंने नहीं देखा कि टैक्सास के रहने वाले ने टैक्सास के वन्य जीवन से घृणा की हो, या फिर स्पेनिश अमेरिकी ने कभी

*टैनिसन कृत पासिंग ऑफ आर्थर - "अब मैं देखता हूँ कि वास्तव में वह पुराना समय बीत चला है जब हर दिन नए अवसर आते थे और हर नया अवसर एक सभ्य को सामने ला देता था।"

हां हम चारों ओर बहुत से लोगों को इस तरह के वातावरण में अपना स्थान बनाते हुए देखते हैं किन्तु जो इधर उधर के प्रतिकूल माहौल में पड़ जाते हैं अपराधी बन जाते हैं।

व्यक्तिगत सुरक्षा की बात सच्ची हो जिसका अंग्रेजी भाषी अमरिकावासियों के आधिपत्य ने उन्हें आश्वासन दिया हो। और यह सुरक्षा उनकी स्वतंत्रता के खोने की क्षतिपूर्ति करती हो। मैं इसमें दृढ़ता से विश्वास करता हूँ कि भारत के काम करने वाले वर्ग के अधिसंख्यकों के लिए पुराना समय सुखद समय था वे हमारे इस शासन को उतना ही नापसंद करते हैं जितना कि किसी विदेशी शासन को क्योंकि यह भी एक प्रकार की व्यवस्था उत्पन्न करता है। वे पुरानी अव्यवस्था की वापसी का स्वागत करेंगे यदि वह अपने साथ जीवन की विविधता या सम्मोहकता वापस ला सकें।"

"बड़ा गदर (1857 का) गदर नहीं था वरन् एक विद्रोह था, जिसमें सैनिक वर्ग ने स्वाभाविक रूप से नेतृत्व किया। दिल्ली पर एक क्षीण राजवंश की घोषणा ऐसी घोषणा जिसे हिंदुओं और मुस्लिमों दोनों ने माना--ने सच्चा रास्ता दिखाया कि भारत का वही बनना है जो यूरोपियों के आने से पहले था xxxx गदर के इतिहास का यदि ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाए तो मुझे यह भारतीयों का गोराशाही के खिलाफ नापसंदगी का जबरदस्त प्रमाण लगता है।"

इसका अंत किस तरह होगा

"यदि हम एशिया का इतिहास अपने मार्गदर्शन के लिए देखें, भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का तख्ता एशियाई लोगों द्वारा की गई बाह्य हिंसा से पलटा जाना चाहिए, जिस प्रकार अलेक्जेंड्रिया के साम्राज्य का उखाड़ फेंका गया था।"

प्रकाशक टी फिशर अनविन

साइकोलोजी एंड क्राइम (ह्यूगो मस्टरबर्ग)

परिचय

मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला सबसे पहले लिपजिग में वुंडट द्वारा शुरू की गई थी। दूसरी प्रयोगशाला फ्राइबर्ग में उनके शिष्य मस्टरबर्ग द्वारा शुरू की गई। स्टनली हाल तथा कटेल इसे अमरिका लाए।

प्रायोगिक मनोविज्ञान का सीधा संबंध व्यवहारिक जीवन के हर क्षेत्रों पर है–शिक्षा, चिकित्सा, कला अर्थशास्त्र तथा विधिशास्त्र।

निम्नांकित मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान का कानून में प्रयोग

करने के प्रयत्न किए हैं—बिने स्टर्न लिपमेन जुग, सर्दीमेन ग्रोस सोमर अशफिनबर्ग।

अपराध की रोकथाम

"कोई भी व्यक्ति जन्म से अपराधी नही होता।" एक कठिन परिश्रमी व्यक्ति का उदाहरण जो दुर्घटना के बाद इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया। वहा नींद के लिए उसे 1/8 ग्रेन मार्फिन के इजेक्शन दिए जाते हैं। उसमे इस तरह की आदत डाली जाती है कि वह इस ज्हर के सोलह ग्रेन रोज लेता है। मस्टरबर्ग ने उसका इलाज सुझावात्मक तरीके से कर दिया। "सगठित समाज ने उसके शरीर को इसका आदि बना दिया—एक छोटी मात्रा देकर लेकिन उसमें मार्फिन की जबर्दस्त इच्छा पैदा कर दी और जब यह आदत विनाश के कगार पर पहुच गई तो समाज उसे दुत्कारने और घृणा करने पर उतारू था। और जब समाज ने इस पूर्ण स्वस्थ आदमी को समाप्त कर दिया तब समाज बहादुरी दिखाते हुए पुलिस कोर्ट कचहरी और दड की बात करता है।"

(अमरीका)

"दावा किया जाता है कि यह देश जन कल्याण शिक्षा और धार्मिक कार्यों पर किए जाने वाले कुछ खर्च की तुलना में 500 करोड डालर वार्षिक अपराधो से निपटने में लगाता है।

इटालियन

(लेम्ब्रोसों का सिद्धात कि अपराधी जन्म से ही ऐसे होते हैं अब समाप्त है)

"मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से किसी के लिए अपराधी स्वभाव का कहना बिल्कुल व्यर्थ की बात है।

सभव है कि किसी सीधी आवाज की सवेदना अथवा सीधे रग की सवेदना मस्तिष्क के किसी प्रभाग मे महसूस होती हो परतु किसी वस्तु का पूरा प्रत्यक्षीकरण या ज्ञान ऐसा नहीं हो सकता न ही किसी जटिल स्थिति जो सवेगो इच्छाओ और विचारो से बनी हो के बारे मे यह सभव है।

इसके विपरीत सुझाव एक सामाजिक चरित्र का हो सकता है (उदाहरणार्थ राजा का निजाम, अथवा धर्म या नैतिक नियमों का)

"*गैर अपराधी अच्छा जीवन हमेशा विचारों और प्रतिविचारो* के बीच हुए जटिल अत क्रियाओ का परिणाम है। परिणामस्वरूप किसी अरुचिकर अत का विचार इच्छाओ को रोक देता है।' xxxx मजबूत आवेगो के साथ स्वभाव शात रह सकता है यदि प्रतिबधात्मक विचार असामान्य रूप से सुदृढ हों और कमजोर हो।" (यदि आवेग बहुत तेज

है अथवा विरोधी विचार बहुत मामूली हैं इसका परिणाम अपराध में हो सकता है।)

"ऐसा नहीं है कि अपराधी जन्म लेते हैं वरन् कमजोर दिमाग के आदमी जन्म लेते हैं।" xx इस तरह के मस्तिष्क हो सकते हैं जो जन्म से मंद हों या मूर्ख हों या क्रूर हों या जंगली हों या सुस्त हों या अनूठे हों, या लापरवाह हों, या ठस हों और इस तरह के प्रत्येक मस्तिष्क में अपराध करने की एक प्रवृत्ति होती है।" यह संसार असंतुलित लोगों से भरा है। हम इससे इंकार नहीं कर सकते कि प्रकृति ने उन्हें अपने मानसिक अस्तित्व के लिए संघर्ष करने के लिए उपयुक्त तरीके से तैयार नहीं किया।"

अपराधी बच्चों के एक स्कूल में 200 बच्चों में से, 127 बच्चे या तो हिस्टीरिया अथवा मिर्गी की वजह से दिमागी तौर पर अपने सामान्य स्तर से कमजोर थे।

85 बच्चे—इनके पिता या माता या दोनों शराबी थे।
24 बच्चे—माता-पिता में पागलपन था।
26 बच्चे—माता-पिता अपस्मारग्रस्त (मिर्गी) थे।
26 बच्चे—अन्य स्नायु संबंधी बीमारियों से ग्रस्त थे।

छात्राओं और अपराधी बालिकाओं की तुलना। स्मृति परीक्षा में औसत छात्रा ने सात अक्षरों की शृंखला अथवा आठ अंकों की शृंखला को याद रखा जबकि औसत अपराधी बालिका ने पाँच अक्षरों अथवा छह अंकों को याद रखा।

छात्रों ने कम्पास के दो बिंदुओं में 16 मील की दूरी पर दाहिनी भुजा पर दाब के रूप में अंतर किया—अपराधी छात्र के 24 से कम नहीं था। यदि छात्रों ने दबाव-मापक हुक को खींचा तो उनकी शक्ति आधा मिनट में 16 पौंड और अपराधियों के मामले में 24 पौंड कम हुई। अपराधियों की भर्ती विशेष रूप से मानसिक रूप से कमजोर में से होती है लेकिन समाज में तो सबसे मूर्ख व्यक्ति भी रहते हैं। "अपने मस्तिष्क के कारण कोई भी पूर्व निश्चित रूप से दंड का अधिकारी नहीं बनाया जा सकता।" जहाँ भी दूषित निषेध है, वह अपराध न रहकर पागलपन बन जाता है। अपराध केवल बीमार मस्तिष्क के रोगात्मक अथवा अचानक प्रकट होना होता है। "जबर्दस्त और रोके न रोक सकने वाले

आवेगों को ही अपने व्यक्तित्व के विरुद्ध मोड़ा जा सकता है–जिसकी परिणति होती है आत्म-विकृति या आत्महत्या।"

बीमार मस्तिष्क का विस्फोट अपराध नहीं बन जाता। वास्तविक अपराध में हमें यह मानना होता है कि आवेग पर रोक लगाई जा सकती थी यदि उपलब्ध शक्ति का उपयोग किया गया होता। अपराध इसलिए एक बीमारी नहीं है।"

मस्टरबर्ग ने अपनी प्रयोगशाला में प्रयोग करके खोज की थी कि एक कार्य का प्रभावशाली प्रदर्शन अनुकरण करने वाले दिमाग को अत्यधिक प्रभावित करती है। नकल आवेग को सीमा से परे जाने के लिए बल देती है। (अतः अपराधिक कहानियां कमजोर दिमागों पर खराब असर डालती हैं।)

प्रेरकों का प्रभाव

प्रयोगशाला के प्रयोगों के परिणाम

शराब के प्रभाव में परीक्षण के परिणाम के ठीक आकड़े नहीं मिलते। एक समय में शरीर से वे प्रतिक्रियाएं होती है जो सामान्य स्थिति में नहीं होती। शराब शरीर की मोटर शक्ति को गति देती है लेकिन आधा घंटा बाद मांसपेशियों की शक्ति घटने लगती है। शराब के प्रभाव में संयोजन में देरी होने लगती हैं और साहचरी प्रक्रियाएं भी यंत्रवत् नहीं जाती हैं। शराब के साथ बाहरी साहचर्य तेजी से बढ़ता है और अंदरूनी शक्ति समाप्त हो जाती है। संभवतः स्मृति प्रक्रिया पहले जल्दी अनुकूल हो जाती है जबकि स्मरण शक्ति पहले से ही कम होने लगती है। पढ़ने की प्रक्रिया में सुधार नजर आता है जबकि बौद्धिक संयोजन में कठिनाई होती है।

सारांश

मोटर प्रतिक्रिया ---- आसान हो जाती है।

कागजी काम ---- बिगड़ जाते हैं।

प्रतिबंध ---- कम होते हैं।

यांत्रिक बाह्य संबंध ---- प्रमुख हो जाते हैं।

बौद्धिक प्रक्रिया ---- धीमी पड़ जाती है।

आदर्शात्मक कार्यों का ---- नुकसान होता है।

प्रतिक्रियात्मक विचार

निष्कर्ष

दार्किक विचार धीरे-धीरे जागते हैं। पहले अपराध को रोका जा सके इससे पहले ही प्रतिक्रिया हो जाती है। न करने वाले कार्यों के प्रति बंधन बेअसर हो जाते हैं और अविवेकी गतिविधियाँ बहुत अधिक हो जाती हैं।

"प्रेरकों से केवल दूर रहना या उनका त्याग वास्तविक में अपनी समस्या का कोई हल नहीं है।" xxxx इनको पूरी तरह से दबाने से मानसिक विस्फोट होता है जो मनुष्य को फिर से विनाशकारी आवेगों और अपराधों की ओर ले जाता है।" xxxx एक प्रकार की सुस्ती और आशान्वित सावधानी की अवस्था उत्पन्न हो जाती है जिसमें विषमता की चाहत, इच्छाओं को इस सीमा तक बढ़ा देती है कि *उनकी प्रतिक्रिया किसी भी प्रेरक के प्रभाव की अपेक्षा* अधिक तेज और प्रबल होती है।"

न्यायिक दंड का डर अपराधिक आवेग को रोकने का पर्याप्त कारण नहीं है। अधिक महत्वपूर्ण वे प्रभाव हैं जो प्रतिबंधित इच्छाओं की सवेगात्मक और मजबूत शक्तियों को कम करती हैं, सामाजिक प्रतिकारात्मक विचारों को दृढ़ता से जगाती हैं, उनके प्रतिरोधात्मक प्रभावों को शक्ति प्रदान करती हैं। और इस प्रकार प्राथमिक आवेग को कमजोर करती हैं। "उनका गिरता स्वास्थ्य किसी कानून की अपेक्षा अपराध को अधिक रोक सकता है।" "यह आवेग नहीं वरन् आवेग को रोकने की अक्षमता है जो वास्तविक अपराधिक तत्त्व है।"

इस तरह का सार्वजनिक जीवन बनाना जो साधारण से साधारण व्यक्ति के लिए एक उदाहरण और प्रेरणा हो, जो दंड प्रक्रिया को समाप्त कर नागरिक जीवन को गौरव प्रदान कर सके, एक महान कार्य है। सार्वजनिक कल्याण का अर्थ है सभी नागरिकों को काम, राजनीति, शिक्षा, कला, धर्म के जरिए एक ऐसा जीवन मिल सके जिसमें संतोष हो, स्नेह हो और जिसमें धन महत्वहीन हो। इसी माहौल में प्रतिकारात्मक विचारों का पुनः प्रतिपादन होना चाहिए जिससे कि अनैतिक कार्यों के आवेग को स्वतः रोका जा सके। प्रत्येक जो पारिवारिक जीवन और पारिवारिक कार्यों को इसके विनाश के विरुद्ध मजबूत करती है, प्रत्येक कार्य जो बेसहारा को सहानुभूति प्रदान करती है, वह अपराध को रोकने में मदद करता है। उनको यह अनुभव कराना कि

उनको समान स्तर पर मान्यता है, उन्हें शिष्टाचार की ओर ले जाना है।" इस प्रकार की मान्यता के लिए किसी संक्षिप्तीकरण की आवश्यकता नही है। ये जिन्हें सजा नहीं मिली उनके बराबर हैं।

"जो व्यक्ति अपना अपराध स्वीकार कर लेता है वह स्वय को फिर से ईमानदार लोगों की श्रेणी में रख लेता है। वह उन्हीं के साथ सबध रखते हैं, जो न्याय और स्वास्थ्य के हामी हैं। वह अपराधियों वाली पहचान से मुक्त हो जाता है और अपने से अपराध को इस प्रकार दूर कर देता है जिस प्रकार जीवन से बाहरी तत्व को हटा दिया गया हो।"

स्वीकारोक्ति

"जो वर्तमान और भविष्य की चिंता करते हैं, वे सच्चे मायनों में स्वीकृति की इच्छा नहीं कर सकते। लेकिन उनके साथ यह अलग बात है जिनकी याददाश्त तेज हो और जिनका मस्तिष्क हमेशा भूतकाल की ओर भागता है। आत्मस्वीकृति वर्तमान को भूत से जोडती है और शर्म-सकोच के आवरण को हटा फेंकती है।" "यदि मनोवैज्ञानिक के प्रयोग तेज याददाशत को होना दिखाते हैं तो इसके अवसर अधिक हैं कि आत्मस्वीकृति पर विश्वास किया जा सकता है।" पेशावर अपराधी को मामूली दड देना हर दृष्टि से व्यर्थ और हानिकारक है।"

जीवन

अपराध की जाच-पड़ताल

घाव

उत्पीडित व्यक्तियों द्वारा निर्दोष व्यक्तियो पर हमेशा दोषारोपण किया जाता रहा है जो अपराध कभी हुए ही नही उनकी आत्मस्वीकृति होती रही है। घृणित किस्म के झूठ उत्पीडितो की माग को सतुष्ट करने के लिए खोजे जाते रहे है।"

दिमाग में सबसे कम प्रतिरोध के रास्ते खोजने के लिए "साहचर्य प्रयोग" (यदि बाहरी साहचर्य सफल होता है तब आतरिक साहचर्य की प्रमुखता से हटकर एक अलग किस्म का दिमागी मामला हमारे सामने आता है अथवा विचारों के सबध के समय को लाया जा सकता है।

साहचर्य प्रयोगो के परिणाम

(क) खतरनाक शब्द के साहचर्य में अधिक समय लगता है।*

(ख) खतरनाक शब्द ऐसी प्रतिक्रिया देते हैं जो सीधे तौर पर उलझाती है या आगे की कुछ प्रतिक्रियाओ मे उलझाती है।

*भावनात्मक प्रभावों की वजह से अनैच्छिक गिरावट आ रही है। गिरावट हमेशा खतरनाक समर्थों से ही नहीं होती बल्कि उन समर्थों से भी आती है जो प्रकट रूप में पूरी तरह से खतरनाक नहीं दिखते।

(ग) यदि प्रयोग का पूरा शृंखला का त्याग तो निरर्थक शब्द वैसे ही उत्तर पैदा करेगा। सार्थक शब्द अलग अलग उत्तर पैदा करेगा क्योंकि

(1) चेतना में नया सहचर्य लाने में मनोवैज्ञानिक अर्न्ति बन दी गई है (2) इसमें अपराध को छिपाने के और नये प्रयास होंगे।

जांच पड़ताल का उदाहरण

एक 18 वर्षीय शिक्षित नौजवान अपने चाचा के साथ उसके घर में रहता था। एक बार चाचा इस नौजवान को मनोवैज्ञानिक गड़बड़ी के बारे में एक मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञ का सलाह लेने गया। उस अवसर पर उसने अपने नए सन्देह को धीमे दबे स्वर में डॉक्टर से कहा कि यह नौजवान चोर हो सकता है। उसके दराज और बक्स में अनेक बार पैसे चुराए जा चुके हैं और वह अभी तक नौकरों पर ही सन्देह करता करता आया था। उसने पुलिस में खबर दी था और उन्होंने उस पर नज़र रखा था। चाचा जानना चाहता था कि क्या उसका सन्देह ठीक है या गलत क्योंकि उस स्थिति में वह परिवार के हित में मामले को कोर्ट कचहरी से दूर रखना चाहता था। चिकित्सक डॉ. युंग ने युक्ति से ऐसी व्यवस्था की कि नौजवान अपने स्वाभाविक निरीक्षण के लिए उनके पास आए। सहचारिक प्रयोग के आधार पर डॉ. युंग ने देखा कि लड़के ने वास्तव में चोरी की थी। अतः लड़के ने स्वीकार किया और वह उचित समय पर की गई पड़ताल से जेल जाने से बचा लिया गया।

एक नवयुवती को मिठाई और चॉकलेट खाने की इतनी आदत पड़ गई कि वह कभी कभी इसके लिए खाना भी छोड़ देती थी। वह अल्परक्तता और मनस्नायविक बनावटि से पीड़ित हो गई और अपनी परीक्षा के लिए पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकी। उसने इससे इंकार किया कि उसने मिठाई खाई और खाना छोड़ा है। लेकिन इसकी खोज मास्टरबर्ग ने सहचारिक प्रयोगों के द्वारा कर ली और अन्त उसने यह स्वीकार किया।

हिस्टीरिया

हिस्टीरिया बराबर इच्छाओं के दबने से उत्पन्न एक अवरुद्ध सदा है और जब दमित विचारों या भावनाओं को पूर्ति

होने लगती है तब यह सवेग समाप्त हो जाता है। इस बीमारी से ग्रस्त एक स्त्री दिन छिपने के बाद गूगी हो जाती थी। इसी तरह एक दूसरी स्त्री केवल तरल पदार्थ लेती थी–खाना नहीं खाती थी। एक और महिला तबाकू की गध के भ्रम से लगातार ग्रस्त रहती थी। जो महिला खाना नहीं खाती थी, वह वर्षों पहले, एक खतरनाक बीमारी से ग्रस्त व्यक्ति के साथ एक ही मेज पर खाना खाती थी। उस समय उसे जो घृणा होती थी वह उससे दबानी पडती थी। जब इस बात की खोज कर ली गई तब वह सामान्य व्यक्ति की तरह भोजन करने लगी। जो स्त्री रात में बोल नहीं पाती थी वह एक बार, वर्षों पहले, सायं के समय अपने बीमार पिता के साथ उसके बिस्तर पर बैठी थी। उसने उस समय शांति रखने के लिए सभी तरह की आवाजों को दबा दिया था। जैसे ही यह दृश्य उसके समाने लाया गया, उसकी आवाज भी लौट आई। जो महिला हर समय तबाकू की गध से परेशान थी, उसने तबाकू की गध से भरे कमरे में सुना था कि जिस व्यक्ति से वह प्रेम करती थी, वह किसी दूसरी स्त्री से प्रेम करता था और उस स्त्री को अपने भावों को अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति में दबाना पडा था। जैसे ही उसने इस गध को चेतना से जोडा, उसका भ्रम भी समाप्त हो गया।

असत्य स्वीकारोक्तियां

पाठ

असत्य स्वीकारोक्तिया इन कारणों से हो सकती हैं-

(1) समाज अथवा समुदाय के अन्य सदस्यो द्वारा सभावित वायदे या धमकिया

(2) दूसरों को निर्दोष सिद्ध करने के लिए आत्मबलिदान की भावना।

(3) ऐसे व्यक्ति जिन पर किसी अपराध का गलत सदेह किया गया हो, वे नुकसानदायी परिस्थितियो के दुर्भाग्यपूर्ण गठजोड के कारण दया की सिफारिश की आशा में झूठी स्वीकृति करना अधिक पसद करते हैं। वर्मोन्ट के प्रसिद्ध बूरन केस मे भाइयों ने स्वीकार किया कि उन्होंने अपने बहनोई की हत्या की है। उन्होंने पूरे कृत्य का विवरण वर्णित किया तथा यहा तक बताया कि किस प्रकार लाश को ठिकाने लगाया। जबकि इससे काफी समय बाद कत्ल किया गया व्यक्ति सकुशल गाव लौट आया।

आ गया। उसने बताया कि अनुनय करने पर उसकी तरफ रिवाल्वर ताना गया था। "मैंने अपने सामने स्टील का काश देखा। उसके बाद दो आदमी मेरे सामने आए। "इसके बाद चेतना में विच्छेदन हो गया और उसने स्वीकार करना शुरू दिया। जब वह फिर अपनी चेतना में आया तो उसे यह भी याद नहीं था कि उसने कोई स्वीकारोक्ति की है।"

समान मामले

यह मामला हिपनॉसिस के बाद रोशनी में आया

मस्टारर्गा--एक युवती नर्वस और बहुत अधिक थकी हुई स्थिति में थी। डॉक्टर उस पर झुका हुआ था और सूर्य की तेज रोशनी डॉक्टर के चश्मे से प्रतिबिंबित होकर उस युवती की आंखों में पड रही थी। युवती को अपघात लगा और उसकी चेतना इसके बाद फिर विच्छेदित हो गई।

डॉ प्रिंस –

एक धर्मांतरण का मामला। युवती अचानक खुशी से उत्साहित हो गई और वह दुखी और बैचेन स्थिति से प्रसन्न और चरम आनंद की स्थिति में पहुंच गई। (वह एक निराशापूर्ण मानसिक स्थिति में चर्च गई थी। उसकी आँखें चर्च में अचानक एक चमकते पीतल के लैंप पर टिक गई और उसमें अचानक परिवर्तन आया)।

अपराधिक मस्तिष्क

परिचय

द्वारा
डॉ मोरिस डी फेल्ती जो लेखक हैं 'मेडिसन एंड द माइंड' डाउनी एंड कम्पनी लिमिटेड 12 यार्क स्ट्रीट कार्न्वेंट गार्डन लंदन

अपराधी मस्तिष्क से संबंधित अत्याधुनिक वैज्ञानिक विचार को अधिकांश मेजिस्ट्रेटों और न्यायवेत्ताओं तथा उनके द्वारा नकारा जा रहा है जिन्होंने इन प्रवृत्तियों का गहराई से अध्ययन नहीं किया। इन सब लोगों का पालन पोषण स्वच्छंद वातावरण में हुआ है और बचपन से यह मानते हैं कि किसी भी सभ्य समाज को ठीक ढंग से चलाने के लिए विश्वास मूलभूत और अनिवार्य है।xxxx यह माना जा सकता है कि ये सिद्धांत न्यायविदों और मेजिस्ट्रेटों की भूमिका को प्रतिबंधित करना चाहते हैं। उनको अब न्यायविद न मानते हुए इनके काम पद और कार्यालय की महत्ता को कम करना चाहते हैं। इनके काम में निहित स्वार्थ टूटते हैं। इनको सामान्य शांति और सुरक्षा का रक्षक मानते हैं।

"उनकी-घृणा स्वाभाविक है और मान्य है। यह एक लोकप्रिय विश्वास और बहुमत से समर्थित है।"

को उभारने की शक्ति रखती हैं। जब तक कि ये अन्य कोशिकाओं की स्पर्शिकाओं के सपर्क में आती हैं अथवा इसके विपरीत उनका स्पर्श क्षणिक होता है। कोशिकीय दीर्घकरण की इन गतिविधियों का सीधे कोई अध्ययन नहीं किया गया। इसलिए ये सकल्पनाओं पर आधारित होती हैं। (ब्रेनली की सकल्पना)। यदि सहवर्ती ततुओं मे वास्तविक रूप में कोई आकुचन नहीं होता है, तो ऐसी स्थिति में उनका गलत चालन कम से कम हो जाता है।

मस्तिष्कीय विज्ञान में मुख्य इकाई सफद धरातल के पिरामिडीय कोशिका के गुणत्व हैं। जिससे वे नींद की *अवस्था में भी सक्रिय रहते हैं और बाह्य उत्प्रेरक के प्रभाव* में अथवा अधिक तेज सचालन में अथवा एक कोशिका समूह से सहवर्ती समूह के प्रभाव में जगाकर रख सकते हैं।

हमारी याददाश्त हमारे खानपान की अस्थिरता से प्रभावित *होती है अर्थात् जैसे एक क्षण विशेष में उसकी क्षमता हमे* बनाती है।

पशुता और मस्तिष्क का शरीर विज्ञान सबधी स्पष्टीकरण

*एक शब्द स्मरण शक्ति मे-तुलना निर्णय अनुभव सभी शामिल है।

हिंसात्मक आवेग हमारे मस्तिष्क में उठने वाली एक ऐसी लहर है जो तर्क और विवेक को नष्ट कर देती है। पशुओं में सहज क्रिया का कोई फर्क नहीं होता। इनका मस्तिष्क *निर्द्वद्व और स्वच्छद होता है।** हमारे पास हमारी पिछली सभी सवेदनाओं और अनुभूतियों का कुल जोड होता है जो एक नई अनुभूति को जन्म देता है।

स्मरण शक्ति

स्मरण शक्ति सुव्यवस्थित तत्त्व का एक बहुत ही सामान्य *गुण है और यह केवल मनुष्य की ही बपौती है।* उदाहरण के लिए, एफीओसस लेंसियोलेटस जिसके पास मस्तिष्क जैसी कोई चीज नहीं होती उसके पास भी स्मरण शक्ति होती है। और उसका भी मानसिक जीवन होता है। इसके *अलावा कुछ स्टील की प्लेटों पर उगलियों के निशान लेकर* और उनके अदृश्य होने पर उन्हें तेज प्रकाश में फिर से देखा या बनाया जा सकता है।

व्यक्तित्व

हमारा व्यक्तित्व कुछ नहीं है सिवाय हमारी पूर्वकालिक सवेदनाओं और *अनुभूतियों का कुल जोड जिसे नई*

अनुभूतियों द्वारा जाग्रत अवस्था में रखा जाता है। इसमें थाडा मात्रा में स्नायुतत्र की विपन्नता भी मिली हाता है जिसस हम कमजोर या मजबूत दिमाग के आदमी बनत हैं। ''''गग एक स्वस्थ दिमाग व्यक्ति क व्यक्तित्व में एकरूपता हा नहीं देखता वरन् उसके विभिन्न भागों में उचित सामन्जस्य भी बनाए रखता है। xxxx मरे विचार स पागल आदमियों में राजसी मस्तिष्क हा सकता है क्योंकि उनका पूरा व्यक्तित्व उनके शासक हान के विचार पर केंद्रित हाता है। गग

"एम.आजम ने फोलिडा के इतिहास और उसके व्यक्तित्व के दोहरेपन की कहानी सुनाई। xxxx पियरा जने न स्थिर विचारों तथा चतना जगत के सकुचित क्षेत्र द्वारा व्यक्तित्व में होने वाले परिवर्तनों के बार में बताया।"xx

"हमारे मस्तिष्क में एक तटस्थता का क्षत्र है इसक नाच थकान का फैलाव है इसके ऊपर मस्तिष्काय उत्साह और जोश का राज्य है। जैसे ही इनमें स किसी एक ने अपना काम बद किया हम पूरी तरह स अपनी पूर्व अवस्था क विपरीत हा जात हैं।"xx

"हम जो अच्छ आदमी कहलात है वह क्या है जा हमें बुरा काम करने से रोकता है? यह क्या है मैं कहता हू कि यदि यह शिक्षा का प्रभाव नहीं है ता यह कि दुनिया क्या सोचेगी इसका? सामाजिक प्रतिष्ठा का जनमत के खाने का डर है। तब क्या हम स्वय स नहीं पूछेंग कि क्यों कत्ल चोरी वश्यावृत्ति नीच क वर्ग में जा बिना किसी नैतिक सुरक्षा के जीते हैं अभी भी काफी अधिक है।"

बुराई की रोकथाम

1 आनुवांशिकी के विरुद्ध सघर्ष

2 निर्देशों का विकास

3 नैतिक शिक्षा

4 मस्तिष्कीय चिकित्सा विज्ञान और स्वच्छता

5 मोइवाईस लागों की कॉलोनियल सना का सगठन

अपराध का दमन

1 अपराधिक मजिस्ट्रेटों का विशषीकरण और एसीअम के समुदायों का पुन सगठन।

2 अभियुक्तों का चिकित्सा कानून विशेषज्ञों द्वारा समय-समय का अनेक बार निर्देशात्मक मनोवैज्ञानिक जांच।

3 मानसिक अपराधियों या बडे-बडे स्नायुरोगियों के लिए अस्पताल व जेलों का निर्माण।

4 बेरेंगर कानून तथा आधुनिक जेलों प्रेनेसलेफ रगो जैसी व्यवस्था को व्यापक तौर पर लागू करना तथा सयोग से बने अपराधियों द्वारा बने अभियुक्तों और अपराधिक प्रवृत्ति के अपराधियों से सख्त व्यवहार करना।

5 फासी की सजा की सख्या बढाने मे और इसके तरीकों में तब्दीली लाना।

आनुवांशिकी के विरुद्ध सघर्ष

अपराधी, मस्तिष्कीय कोशिका की एक बीमारी और उसके दीर्घीकरण से पीडित होते हैं, जिससे सयोजन क्षमता अधिक दिनों तक नहीं रहती, स्मरण शक्ति इसमें हस्तक्षेप नही करती और केवल *सामान्य प्रतिक्रियाए रह जाती हैं।* खोपडी के सूक्ष्म निरीक्षण से मालूम होता है कि बच्चे का जन्म घनी तानिकाओं (मिनिनजीज) के साथ होता है जिससे मस्तिष्कीय धरातल में उत्तेजना होती है या फिर इसमें जरा सी भी क्षति होने पर कोशिकाओं के एक समूह से दूसरे तक सचार में रुकावट आती है या फिर विच्छेदन हो जाता है। विकेंटू के चिकित्सक एम सी फिरी के प्रयोगों से मालूम होता है *कि उत्तेजना से सूक्ष्म चोट लग जाती है।* बडे घावों से चेहरे और कपाल की बनावट में भी फर्क आ जाता है जिसे विकृति के क्षतचिह्न कहा जाता है।

आनुवांशिकी विकृति के कारण -- सिफलिस रोग मद्यपान, *एबसिंथवाद, क्षयरोग, अचानक बुखार का होना, माता को* गर्भवती होने के दौरान निमोनिया।

प्रेरक कारण

"अपने कानों को कर्णप्रिय सगीत सुनाएं, अपनी आखों को सुदर दृश्य देखने दें, त्वचा को सवदेनशील बनाए, फेफडो

को शुद्ध हवा में साँस लेने दो। अपने रक्त प्रवाह को मारम दें, अपने पेट को अच्छा आहार दें जिससे आपको ग्यार की शक्ति मिले और अनुवांशिक रूप में आप अपने अस्तन विषाद को कम करें। इस प्रकार रतन की सौम्य और नैतिक मद्यपान की सपना साकार होना चाहिए।"

अपराध

"हम यह बिना किसी सन्देह के जानते हैं कि इंग्लैंड, फ्रांस और बेल्जियम जैसे देशों में उन्माद अवस्था में किए गए अपराधों की संख्या मद्यपान के साथ साथ ऊपर बढ़ गई है। नार्वे में जहाँ मद्यपान के विरुद्ध काफी ज़ोर शोर से अभियान छेड़ा गया है संगठित रूप से होने वाले अपराधों में कमी आई है।"

प्लेटो ने कहा था "यदि किसी बच्चे के दादा और परदादा को अपराध का दोषी मानकर फाँसी दी गई हो तो राज्य को चाहिए कि बच्चे को देश निकाला दे दे क्योंकि वह बड़ा अपराधी बन सकता है।"

निर्देश

"एक स्कूल खोलने का अर्थ है एक जेल को बंद करना।"–विक्टर ह्यूगो

"जितने अधिक स्कूल होंगे उतनी ही कम जेलें होंगी– जितनी विज्ञान की प्रगति होगी उतना ही यह माना जायेगा कि अपराधी अधिकांशतः एक पागल या असामान्य व्यक्ति होता है" अल्फ्रेड फ्रूनिला।

शिक्षा के प्रचार प्रसार से हिंसा घटती है बेईमानी बढ़ती है।

"लकसने बरिलन गिल्बर्ट बर्ग्रे फेंकर और लॉम्ब्रोसो यह मानने में एकमत हैं कि शिक्षा मनुष्य को अधिक बदमाश बना सकती है। उसे गलत काम करने में अधिक चालाकी सिखा सकती है।"

उद्देश्य

"और ब्रिटेन और अमरिका के लोगों पर इसके भविष्य (अर्थात् पश्चिमी सभ्यता) की जिम्मेदारी अन्यों की अपेक्षा बहुत अधिक है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 प्रा फ्लाइडस पैट्रिक–'रिवाल्यूशन ऑफ सिविलाइजेशन'।

2 बकल–हिस्ट्री ऑफ दी सिविलाइजेशन ऑफ यूरोप

3 काउट गोबिनकेन (1854 - इनइक्वालिटी आफ दी रेसज आफ मैन।

4 एच एच गोडार्ड–ह्यूमन इफेसियेंशी एड लेवल्स ऑफ इंटेलीजेंस।

5 वही – साइकोलोजी ऑफ दी नार्मल एड अबनार्मल

6 एल एम टर्मन –दी इंटेलीजैंस ऑफ स्कूल चिल्ड्रेन।

7 योकुम एण्ड यार्क्स–आर्मी मेंटल टैस्ट्स।

8 एन एस शेलर–नेबर

9 आर एस वुडवर्थ–कपैरिटिव साइकोलॉजी ऑफ रेसेस।

10 गेहरिंग – रेसियल कंट्रास्ट

11 जेड रिपले - रेसेस ऑफ यूरोप

12 पापुलेशन एड बर्थ कंट्रोल–सी एंड ई पाल, न्यूयार्क, 1917 (इसमें एक लेख है-"डीसजेनिक टेंडेंसिज"-एच एच हार्फोर्ड और रेस सुसाइड इन दी यू एस ए -एल क्यूसल)

13 दी डायरेक्शन आफ ह्यूमन इवोल्यूशन–ई जी कोकलीन (जो प्रिंसटॅन विश्वविद्यालय में जीवविज्ञान के प्रोफेसर हैं, न्यूयार्क 1921 चार्ल्स स्क्रीबर सम)

14 'द ओल्ड वर्ल्ड इन दी न्यू'-ई ए रॉस (विसकॉसिन विश्वविद्यालय में सोशियोलॉजी के प्रवक्ता)। न्यूयार्क सेंचुरी कंपनी 1941।

15 'एप्लायइड यूजेनिक्स'–पॉल पोपैनॉक एड जान्सन–मैकमिलन 1918। 'दी रेसियल प्रोस्पेक्ट' एड 'मेनकाइंड'–एस के हाफ्री न्यूयार्क चार्ल्स स्क्रिबर्स सस, 1920

मैथ्यूज एंड कपनी लि 36 एसेक्स सेंट डब्ल्यू सी लंदन

अन्य कृतियां

1 बॉडी एड माइंड
2 इन इंट्रोडक्शन टू सोशल साइकोलॉजी
3 साइकलॉजी दी स्टडी ऑफ

नैचुरल वेलफेयर एड नेशनल डिके - विलियम मैकडगल, प्रोफैसर आफ साइकोलॉजी-हार्वर्ड युनि 1921।

परिचय–गेटो ने सबसे पहले यूरोप और अमेरिका की चेतना को मानवीय गुणों की प्रस्तुति पर झकझोरा। इस पुस्तक में प्रजननशास्त्र के बारे में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से चर्चा की गई है। चर्चा काफी विस्तृत ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में है।

सकती हैं।

(ख) किस कारण दक्षिणी अफ्रीका जैसे उपजाऊ क्षेत्र भी अविकसित रहे जब तक कि बाहर से आए लागो न उन पर विजय प्राप्त नहीं की।

(ग) असभ्यों द्वारा रोम पर विजय प्राप्त करने का आपके पास क्या तर्क है।

पतन के कारण

(1) जैविकीय (फ्लिडर्स पैट्रिक) - 1800 वर्षों के बाद मिश्रण का असर समाप्त हो जाता है और अवनति शुरू हो जाती है (आलोचना–नये किए गए प्रयोग बताते हैं कि पुरानी सभ्यता की सबंधित और लगातार शक्ति के साथ नई प्रजाति का घुलन-मिलन होता था।

(2) नृतत्व शास्त्रीय– "राष्ट्र भी व्यक्तियो की भांति पुराना होता जाता है।"

मैक्डूगल नृतत्वशास्त्र के सिद्धात पर सहमत है-"किसी सभ्यता के पतन के लिए उत्तरदायी स्थिति उन लागो मे आवश्यक गुणवत्ता का अभाव है जो उसके प्रतिपादक होते है।"

अपर्याप्तता के प्रकार

(1) गुणवत्ता में गिरावट शायद न आए लेकिन पर्यावरण अधिक जटिल हो जाता है और हमारी सापेक्षत अपर्याप्त रह जाती है। ऐश्वर्य और आनद म डूबन के अवसर बढ जाते हैं।

(2) व्यक्तिगत सबध अधिक जटिल होते जात ह-(यथा श्रम और नियोक्ता के बीच) तथा स्थिति स निपटन क लिए बौद्धिक चातुर्य आवश्यक है।

(3) ससार के लोगों के साथ अधिक बैठना हम नए धर्मों आचार-सहिताओं, रीति रिवाजों, परपराओं आदि क सपर्क में लाता है जो वर्तमान सामाजिक ताने-बाने का कम महत्त्व देता है।

वर्तमान समस्याए

(1) क्या नई पीढियों की गुणवत्ता एसी है कि व बहु प्रचारित एव विकसित शिक्षा क प्रभाव से हमार पर्यावरण की बढती जटिलाओ क आवश्यक स्तर तक पहुच सक?

(2) क्या प्रगतिशील सभ्यता प्रभावित लागो की गुणवत्ता

के लिए सब अतीत के दौरान हानिकारक नहीं होगी?

(समस्या नं. (2) के लिए इतिहास और पुरातत्त्व में उत्तर हो है)

“आदि प्रकृति” एक कल्पना है–“एक ऐसा पद्धति जो मानवों के अध्ययन और स्वभाव के प्राकृतिक अंगों की मान्यताओं के विरुद्ध प्रचलित मानवीय भावनाओं के अनुरूप था।”

(19 शताब्दी के मध्य में)

जिस तरह सहज मनोविज्ञान के विचारकों का मत मस्तिष्क और स्वभाव के प्राकृतिक अंगों की मान्यताओं के विरुद्ध प्रचलित मानवीय भावनाओं के अनुरूप था।

परिचय

मनुष्य सबसे बड़ी समस्या है। वह सबकुछ स्वयं बना सकता है।

सत्य यह है कि संगठन के प्रकार का कोई महत्व नहीं है। सबसे महत्वपूर्ण बात है मानव की उन बनाने वाली वस्तु की गुणवत्ता, उन मनुष्यों की गुणवत्ता है जो हमारे विचारों और सपनों को बनाते हैं। “सम्प्रदाय पतन की ओर जाते हैं क्योंकि वे उत्कर्ष पर पहुँचकर समाप्त होते हैं।” जब तक एक राष्ट्र प्रत्येक पीढ़ी में काफी संख्या में श्रेष्ठ योग्य व्यक्तियों को उत्पन्न करता रहता तब तक वह बिना किसी घातक पतन के चलता रहता।

अध्याय दो

जे.एस.मिल–किसी भी विशिष्ट प्रकृति के जन्म किसी भी उत्तराधिकार दायदा में विश्वास नहीं किया।

यूरोपीय सभ्यता के इतिहासकार

जे.एच.बकल–मनुष्य अपने भौतिक पर्यावरण से बदलता है।

“इनइक्वालिटी ऑफ दी रेसेस ऑफ मैन” के लेखक 1854

काउंट गोबिनियन–कट्टर प्रकृति समर्थक–ट्यूटनिक प्रजाति की प्रमुखता पर जोर दिया।

रिचर्ड वागनर भी–इस मत के विचारक ‘नस्लीन’ की अवधारणा में विश्वास रखते थे।

कैसर के पसंदीदा पुरातत्त्ववेत्ता

एच.एस.चैम्बरलेन–‘अपनी पुस्तक फाउंडेशन ऑफ दी नाइनटींथ सेंचुरी’ में गोबिनियन के सिद्धांत का समर्थन किया।

प्राकृतिक प्रधानता के उपयुक्त सिद्धांत ने यहूदियों के अपने प्रधानता के सिद्धांत के विरुद्ध झंडा उठाया।

‘मॉडर्न रेस थ्योरी’ ‘द रेस फॅक्टर’, 1909 के लेखक

फ्रेडरिक हर्ट्ज, इग्नाज जॉलमन दोनों यहूदियों ने जनन प्रकृति के कट्टरवादियों की भ्रान्तियों का उद्घाटन किया।

इन सबने ट्यूटस अथवा जर्मन प्रजाति की बजाय नॉर्डिक प्रजाति श्रेष्ठता में विश्वास किया।

1 डॉ सी वुडरफ (अमेरिकी)

2. मेडिसन ग्राट (अमेरिकी)

3 दे लापोगे (फ्रेंच)

---

1 डी एक्सपेंशन ऑफ रेसस

2. दी पासिग ऑफ दी ग्रेट रेस

3 ले सेलेक्शन सोशयल्स

टिप्पणी · नॉर्डिक तत्व जर्मनी में इतना प्रबल रूप से प्रमुख नहीं है जितना कि अन्य देशों में।

प्रजाति-कट्टरवादियों के आलोचक

1 एम जे फिनों-दी प्रिजुडिसेज ऑफ रेस

2. जे एम राबर्टसन-विन्डीकेटर ऑफ बकल

3 जे.ओकस्मिथ-रेस एड नेशनलिटी

(राष्ट्रीय चरित्र औसत मनुष्य के स्वाभाविक गुणों का केवल जोडमात्र नही है-देखें इसी लेखक की पुस्तक 'ग्रुप माइड')

शारीरिक कद और शारीरिक विकास तथा बौद्धिक कद एव बौद्धिक विकास मुख्य तौर पर मनुष्य के शरीर तथा आनुवांशिकी पर निर्भर करता है। अमेरिकी सेना में काले और गोरे रगरूटों की भर्ती के लिए उन सभी स्थानों पर मानसिक परीक्षणों के परिणाम जहा शैक्षिक सुविधाए तुलनात्मक रूप से कम थीं। (एन डी हिर्श)

बुद्धि (घटती क्रमसख्या मे)

सारिणी I

	गोरे शिक्षित	गोरे अशिक्षित	काले शिक्षित	काले अशिक्षित
क	2 6	2	1 0	5
ख	6	1 4	1 4	3
ग (+)	12	3 3	3 1	5
ग	26	14	9	3 2
ग ( )	23	19	19	8
घ	29	37	39	33
घ ( )	0	22	26	46
च	0	2	0	7

गोरे अशिक्षित तथा काले शिक्षितों में काफी समानता है।

मैक्डूगल के अनुसार गोरे शिक्षितों की गोरे अशिक्षितों पर श्रेष्ठता पूरी या मुख्य रूप से उनकी शिक्षा के कारण नहीं है वरन् बौद्धिक विकास की एक जन्मजात क्षमता के कारण ऐसा है। इसके अतिरिक्त शिक्षा शिक्षित और अशिक्षित के बीच, एक वर्ग के रूप में बौद्धिक विकास के अंतर को स्पष्ट नहीं कर सकती। (यदि आप जन्मजात क्षमता में अंतर के सिद्धांत को नहीं मानते, तब आप गोरे शिक्षित और काले शिक्षित के बीच, अथवा गोरे अशिक्षित और काले अशिक्षित के बीच के अंतर को कैसे स्पष्ट कर सकते हैं।)

मानसिक आयु (अधिक बुद्धिमान व्यक्ति की स्थिति चित्र 20 में स्पष्ट की गई है)

सारिणी II

	मानसिक आयु	अंतर
गोरे शिक्षित	14 5	2.3
गोरे अशिक्षित	12 2	
काले शिक्षित	12 1	1 5
काले अशिक्षित	10 8	

निष्कर्ष—जन्मजात क्षमता का स्तर जितना अधिक होगा। उतना ही वह शिक्षा से विकसित होगा।

जिन्होंने प्रवेश के समय (क) अथवा (ख) ग्रेड लिए उन्होंने ऑफीसर ट्रेनिंग स्कूल में सफलतापूर्वक आठवें नवें को पास किया, जिन्होंने (ग) अथवा (घ) ग्रेड लिए, सातवें-आठवें फेल थे। जिन्होंने (ग) ग्रेड लिया 50 प्रतिशत फेल थे। जिन्होंने (ग) ग्रेड भी लिया, वे सामान्यतः गैर कमीशन अधिकारी कार्य के लिए भी उपयुक्त सिद्ध नहीं हुए।

"मुख्य परीक्षा में सिपाही की जन्मजात बुद्धि न कि अचानक मिली पढ़ाई, उसके मानसिक स्तर का निर्धारण करती है" (आर्मी मैंटल टेस्ट)

अध्याय III

सामान्य बुद्धि अथवा बौद्धिक शक्ति अथवा जी फैक्टर यद्यपि पर्यावरण से प्रभावित और आनुवंशिकी से निर्धारित होता है लेकिन यह जन्मजात गुण है।

सारिणी III

	गोरे	काले	अधिकारी
क	2 0	8	55 0
ख	4 8	1 0	29 0
ग+	9 7	1 9	12 0
ग	20	6	4
ग-	22	15	0
घ	30	37	0
घ-	8	30	0
ई	2	7	0

(यहां शिक्षित और अशिक्षित एक साथ जुड़े हैं)

निष्कर्ष— गोरे और काले के बीच का अंतर भी जन्मजात है। स्टेलर ने लिखा है—"गोरे और कालों का एक मत है कि गोरे खून का मिश्रण नीग्रों को बुद्धिमान बना देता है लेकिन साथ-साथ उसके नैतिक गुणों को कम करता है।"

फार्गुसन का मत है कि मिश्रित रक्त के भारतीय शुद्ध रक्त के भारतीयों की तुलना में एक वर्ष की मानसिक आयु के बराबर बौद्धिक क्षमता में श्रेष्ठ हैं।

प्रेसे और टीटर रिपोर्ट—"एक विशेष आयु के काले बच्चों का औसत गोरे बच्चों के औसत से दो वर्ष कम है।"

(एक ही आयु और एक ही क्षेत्र के विभिन्न स्कूलों के 187 काले और 2800 गोरे बच्चों पर प्रयोग करने के बाद)

क्या बौद्धिक क्षमता में अंतर आनुवांशिक है?

मानसिक दोष है—गाल्टन* कहता है अत्यधिक श्रेष्ठ बुद्धि आनुवांशिक है।

*हेरीडेटरी जीनियस

*बायोमीट्रिकी (वाल्यूम तृतीय)

कार्ल पियर्सन*—"मानसिक गुण उसी मात्रा में हस्तांतरित होते हैं जितनी मात्रा में शारीरिक गुण। "एच बी इंग्लिश ("स्कूली बच्चों की मानसिक क्षमता का संबंध सामाजिक स्थिति के साथ")—"व्यावसायिक कक्षा के बच्चे 12 से 14 वर्ष की आयु के दौरान बुद्धि में ऊंची श्रेष्ठता का प्रदर्शन करते हैं।" (कुशल शिल्पकारों के बच्चों इत्यादि पर)

क्या समाज का सामाजिक सस्तरीकरण बौद्धिक क्षमता के सस्तरीकरण के अनुसार होता है?

मैक्डूगल के अनुसार—हां। ब्राइन मावर कालिज की मिस

ए.एच.आर्लिट के, अमेरिका में जन्मे गोरे मां-बाप के 191 बच्चों, इटली प्रवासियों के 80 बच्चों तथा 71 काले बच्चों पर प्रयोग के निष्कर्ष ये हैं। अमेरिकी बच्चे विभिन्न सामाजिक वर्गों से थे।

सारिणी IV

सामाजिक वर्गों के अमेरिकी

(1) व्यावसायिक	(1) बुद्धिलब्धि–	125
(2) अर्ध व्यवसायिक	(2) " " –	118
तथा उच्च व्यवसाय	(3) " " –	107
	(4) " " –	92
(3) कुशल श्रमिक	इटलीवासी " "	84
	काले " "	83
(4) अर्धकुशल श्रमिक– और कुशल श्रमिक–	" "	106

(सभी अमेरिकी एक साथ)

बुद्धिलब्धि–अर्थात् बौद्धिक क्षमता जो मानसिक परीक्षा से प्राप्त हुई।

प्रो. टर्मन ने इटली, स्पेनिश और पुर्तगाली प्रवासियों के साथ प्रयोग किया और बुद्धिलब्धि के ये आंकड़े मिले–

स्पेनिश	– बुद्धिलब्धि –	78
पुर्तगाली	– बुद्धिलब्धि –	84
इटली	– बुद्धिलब्धि –	84
उत्तरी यूरोपीय	– बुद्धिलब्धि –	105
अमेरिकी	– बुद्धिलब्धि –	106

*दी मेजरमेंट ऑफ इंटेलीजेन्स

*ब्रेसे एंड रालस्टन –एक ही शहर के 548 बच्चों के प्रयोग से निम्न निष्कर्ष निकले–85% व्यावसायिक समूह, 68% अधिकारी समूह के बच्चे, 41% कारीगर वर्ग के बच्चे और 39% श्रमिक समूह के बच्चों ने 548 बच्चों में औसत से अधिक अंक प्राप्त किए।

**"स्कूली बच्चों की सामान्य बुद्धि का पिता के व्यवसाय से संबंध"

---

*प्रो. टर्मन के निष्कर्ष–अमेरिक स्कूली बच्च के 60% की बुद्धिलब्धि 90 से 110 तक थी। 110 से 120 तक की बुद्धिलब्धि में भी श्रेष्ठ पाच गुनी उतनी ही सामान्य है जितनी की उच्च श्रेष्ठ सामाजिक स्थिति वाले बच्चों तथा घटिया सामाजिक स्थिति के बच्चों में होती हैं। इस उच्च वर्ग में मुख्यत: सफल व्यापारिक अथवा प्रोफेशनल वर्गों के बच्चे हैं। अधिक उच्च बुद्धि के 100 में से तीन से अधिक की बुद्धिलब्धि 125 तक जाती है और 130 तक भी जाती है। औसतन जनसंख्या के एक शहर के स्कूलो में 250 अथवा 300 में से एक बच्चा बुद्धिलब्धि में 140 तक जाता है।

470 अवपतित बच्चों में स एक भी 120 की बुद्धिलब्धि तक नहीं पहुचा। ये बच्चे औसत से नीचे के सामाजिक वर्ग के थे। उच्च सामाजिक वर्ग के बच्चो में से लगभग 10%, 120 या इससे अधिक तक पहुचते है। अमेरिका मे जन्मे कैलिफोर्निया के छोटे शहरों में 120 से 140 का समूह पूरी तरह प्रोफेशनल अथवा सफल व्यापारी वर्ग के मा-बाप से है।

भारत, चीन तथा अमेरिकी कॉलिजो मे केटी बाघ के प्रयोग :-

		अक		
	परीक्षा	अमेरिकन	चीनी	भारतीय
1 ध्यान का केंद्रीयकरण	1	75	75	62
2 सीखने की गति	2	66	62	45
3 साहचारिक समय	3	46	58	58
4 तुरत स्मरणशक्ति	4	58	–	54
5 स्थगित स्मरण शक्ति	5	80	–	88
6 सूचना का प्रसार	6	23	15	24

अध्याय 4

भारतीय छात्र ध्यान के केंद्रीकरण परीक्षण मे पूरे नहीं उतर सके। मैक्डूगल का निष्कर्ष था कि भारतीय इच्छाशक्ति दोषपूर्ण है।

यूरोप में तीन प्रजातिया–(1) नोर्डिक–उत्तर में लबे स्वस्थ और सुदर (2) मेडिटेरेनियन–दक्षिण मे छोटे गहरे रग के लबे सिर वाले (3) आल्पाइन–मध्य मे गहरे रग के, गोल सिर वाले।

कला में अंतर प्रजातीय भिन्नता के कारण (गहरिंग के बाद-रेमिंग्टन कन्ट्रास्ट्स 1908)।

सभी कलाओं में, शास्त्रीय कलागुण का प्रभुत्व दक्षिण में होता है जबकि उत्तर में रोमांटिक का।

रोमांटिक का सार जिज्ञासा या आश्चर्य है।

शास्त्रीय गुण-स्पष्टता, औपचारिकता, भावनाओं को सीधा प्रभावित करने वाला, समरूपता, समय और स्थान का ध्यान रखना, "शारीरिक अंतर"।

रोमांटिक गुण - संबंधों की जटिलता, कथानक, डिजाइन, संवेग तथा रहस्यमयी अनुभूति किसी सौंदर्यमूलक आनंद की सृष्टि के लिए नहीं, वरन मानव और प्रकृति के बारे में नैतिक मूल्यों और अबूझ सत्ता के प्रति दार्शनिक मनःस्थिति पैदा करने के लिए।

उदाहरण

प्राचीन मंदिर बनाम गौथिक चर्च

इटली की चित्रकला बनाम रूबेन, ड्यूरर, टर्नर, रिम्ब्रांट

इटली का संगीत बनाम वेगनर और बीथोवन

शास्त्रीय रंगमंच बनाम शेक्सपियर

उत्तरी और दक्षिणी कला में अंतर का स्पष्टीकरण

(1) बाउटिंग : जलवायु के कारण। उत्तरी कला धुंधली जब कि दक्षिणी चमकीली।

(2) गहरिंग : मानसिक विभिन्नताओं के कारण उत्तरी लोग अपने स्वभाव को बनाकर रखते हैं यहां तक कि जब वे तेज धूप की जलवायु में जाते हैं। (उदाहरण-एमर्सन व्हाइट मैन)।

विलियम जेम्स के बाद मैक्डूगल का विश्वास है कि मानवीय स्वभाव में भिन्न-भिन्न प्रकार की मूल प्रवृत्तियां होती हैं। मैक्डूगल का यह भी विश्वास है कि इन मूल प्रवृत्तियों की सापेक्ष शक्तियों में प्रजातियों में अंतर होता है।

यह परिकल्पना की जिज्ञासा की मूल प्रवृत्ति नॉर्डिक व्यक्ति में मेडिटेरेनियन की अपेक्षा प्रबल होती है तथ्यपूर्ण लगती है।

तथ्यः

(1) उत्तरी कला में रोमांटिक गुण

(2) उत्तर में विज्ञान की प्रगति चिन्हित है। ग्रीक में

दर्शनशास्त्र व विज्ञान का जन्म हुआ लेकिन शायद ग्राक में नोर्डिक रक्त था इसके बाद वहा ठहराव की स्थिति आ गई।

(3) रोमनों ने महान होते हुए भी कोई विज्ञान अथवा दर्शन पैदा नहीं किया।

(4) जैसाकि ओल्डो सेक ने लिखा है–यहा तक कि युद्ध की कला में भी इनकी कोई प्रगति नही थी।

(5) रोमन नाविक विदेशों में कहीं नहीं गए जबकि इनसे गरीब और कम सभ्य वाइकिंग गए।

एक और परिकल्पना

एक अंग्रेज का घर उसका किला है।

मेडिटेरिनियन प्रजातिया नोर्डिक की अपेक्षा अधिक सामाजिक हैं। मेडिटेरियन सभ्यता मुख्यतः शहरी सभ्यता है। चरवाहे की प्रवृत्ति नोर्डिक में कमजोर है जबकि मेडिटेरियन में प्रबल है। नोर्डिक लोग अल्पभाषी हैं। अलग घर बनाने की शुरूआत उन्होंने की।

मेडिटेरनियन की कला मूलतः सार्वजनिक कला है (अर्थात रगमच, भाषण, शिल्पकला, स्थापत्य कला काव्य पाठ सगीत) विशेष रूप से वस्तुनिष्ठ और पारपरिक। उनकी पूजा भी सार्वजनिक, औपचारिक और सास्कारिक है। उत्तर की कला वैयक्तिक, सोद्देश्य, गैर पारपारिक तथा अकेले में आनददायक है। उदाहरणार्थ–प्रकृति का काव्य, उपन्यास रोमास आदि।

तीसरी परिकल्पना

मेडिटेरिनियन प्रजाति सरचना में बहिर्मुखी है जबकि तथाकथित विषय के बारे में ज्यूरिच के डॉ. जग के अनुसार नोर्डिक प्रजाति अतर्मुखी है। बहुर्मुखी व्यक्ति उत्साहयुक्त, मिलनसार सक्रिय, मुक्त, स्पष्ट और सहानुभूतिपूर्ण होते हैं। वे आत्मनिरीक्षण नहीं करते। जब वे मानसिक दबाव से पीडित होते हैं, वे हिस्टीरिया पैदा कर लेते हैं। अतर्मुखी व्यक्ति अपनी अभिव्यक्ति मे सकोची हमेशा सोच-विचार में डूबे और विचारवान रहते हैं। जब वे मानसिक दबाव से पीडित होते हैं, वे आतरिक सघर्षो में डूब जाते हैं जिसे न्यूरोसथेन्या कहते हैं।

अल्पाइन प्रजाति स्लाव और केल्टिक

(1) शारीरिक–मेडिटेरिनियन के विपरीत–इनका सिर गोल होता है।

(2) मानसिक–बहिर्मुखी की अपेक्षा अतर्मुखी–नोर्डिको की भाति अधिक। मेडिटेरिनियन की भाति बहुत ही मिलनसार,

रिपले ने 'रेसेज आफ यूरोप' के नक्शो मे दिखाया है कि सुंदर रंग और सामाजिक स्थिति की (नार्डिक तत्व) पूर्वोत्तर फ्रांस में प्रमुखता है। ऐतिहासिक साक्ष्यों से इस विचार की पुष्टि होती है। इसी क्षेत्र में आत्महत्या की आवृत्ति अधिक है। मोरसेली इटैलियन अलगाववादी की धारणा है कि नोर्डिक प्रजाति का झुकाव अन्य यूरोपीय प्रजातियों की तुलना में अधिक है और जर्मन भाषा के प्रयोग और आत्महत्या में गहरा संबंध है। रिपले का सुझाव है कि आत्महत्या की घटना इस कारण से है कि नार्डिक लोग सर्वाधिक औद्योगिक और समृद्धिशाली गतिविधियों के क्षेत्र में रहते हैं और जहा बडे बडे नगर अधिक हैं। मैक्डूगल का सिद्धात है कि नोर्डिकों में आत्महत्या की प्रवृत्ति, किसी घटना अथवा औद्योगिक स्थितियों के कारण नहीं है वरन् मुख्यतः उनकी शारीरिक संरचना और बहिर्मुखी होने के कारण है। उनमें जिज्ञासा का तत्व भी एक कारण हो सकता है।

स्लाव के बारे में क्या है?

यूरोप के देशों में आत्महत्या से संबंधित जानकारी के लिए मोरसेली से परामर्श करें–जिनसे मैक्डूगल ने भी जानकारी ली।

इंग्लैंड में, वेल्स, कार्नवेल और लंदन के उत्तरी भाग में आत्महत्या की दर काफी कम है। इन तीनों क्षेत्रों में, नोर्डिक लोग कम है। डेविनशायर और कार्नवेल (साथ के क्षेत्र) हर मामले में समान है सिवाय आत्महत्या की दर के डेवोन में दर अधिक है। डेवान में कार्नवेल की अपेक्षा म नोर्डिक लोगों की पहचान जल्दी होती है। आत्महत्या की दर ससेक्स में सर्वाधिक है जो इंग्लैंड में अलग किस्म का सेक्सन प्रदेश है।

यूरोप में तलाक की दर का ग्राफ दर्शाता है कि जहा नोर्डिक लोग अधिक हैं वहा तलाक की दर अधिक है। बहिर्मुखी और सामाजिक प्रवृत्ति के लोग जब अपने जीवन साथी की गैर वफादारी की चोट से दुखी होते हैं तो आत्महत्या करने या तलाक लेने की अपेक्षा हत्या करना अधिक पसंद करते हैं।

दक्षिणी जर्मनी के बारे में क्या है? मैक्डूगल ने निम्न अपवाद कहे हैं। वेल्स, कार्नवेल बेलजियम के हिस्से तथा स्वीटजरलैंड के भाग जो कैथेलिक होने चाहिए लेकिन हैं प्रोटेस्टैंट।

कैथोलिकवाद सत्ता, परंपरा और संस्कारों का धर्म है। प्रोटेस्टैंटवाद अधिक व्यक्तिवादी और दृष्टिकोण में स्वतंत्र है। केवल प्रोटेस्टैंटवादी ही ऐसे स्थानो की तलाश में बडे-बडे समुद्रों में घूमें हैं जहां वे अपने अनुसार ईश्वर की आराधना कर सकें। प्रोटेस्टैंट राष्ट्र हैं उत्तरी फ्रांस हालैंड, डेनमार्क, स्कैंडेनेविया फिनलैंड इंग्लैंड, स्काटलैंड उत्तरी जर्मनी। नोर्डिक प्रजाति ने सत्ता के परंपरा के

उसके सामने एक औपनिवेशक और एक प्रणेता होने के नाते कठिनाई खड़ी कर देती है। कनाडा में एक फ्रेंच व्यक्ति अपने पड़ोसी के घर के आस पास ही रहता है। अंग्रेज औपनिवेशिक धीमा और अल्पभाषी होता है किसी के साथ की चिंता नहीं करता और पूर्वगामी नेता बनने की अपेक्षा अपने परिवार के साथ रहना चाहता है।

मैक्डूगल का विचार है कि नोर्डिक प्रजाति के पास आत्म-दृढ़ता का गुण अत्यधिक रूप से है और रहा है जो पहले साहस तथा नियंत्रण की अधीरता के द्वारा प्रदर्शित होता रहा है। जर्मन लोगों में तानाशाही या नौकरशाही के अंतर्गत अधीनता का भाव उन लोगों में अल्पाइन रक्त के कारण है जो फ्रेंच लोगों में कम देखा जाता है।

यह मैक्डूगल ने अपनी पुस्तक ग्रुपमाइंड में लिखाई है।

(ला प्ले मत के नृतत्वशास्त्री नोर्डिक तथा अल्पाइन प्रजाति में अंतर के मूल का रूचिकर कारण देते हैं।)

यही ग्रुपमाइंड अर्थात आत्मदृढ़ता के कारण है कि प्रखरता सहानुभूति और बौद्धिकता के अभाव के होते हुए भी वे भारत के 300 मील के क्षेत्र को अपने अधीनकर प्रभुत्व जमा सके।

रेड इंडियन और नीग्रो - मैक्डूगल की परिकल्पना

नैतिक गुणों में अंतर

नीग्रो प्रजाति मुख्यत बहिर्मुखी है। रेड व्यक्ति पूरी तरह से अंतर्मुखी है। काले लोग अधिक मिलनसार और सामाजिक हैं।

रेड प्रजाति प्रबल रूप से आत्म सत्तात्मक (अपनी बात को मनवा लेने वाले) है जबकि नीग्रों में अधीनता या समर्पण की मूल प्रवृति प्रबल है। रेड इंडियनों ने प्रभुत्ववादी गोरों की सामाजिक पद्धति से स्वय को कभी प्रभावित नही होने दिया।

'ला करेज' में वायवोनेस तथा हस्ट

सभ्य और असभ्य के बीच नैतिक है?
बर्मन बिल्कुल भी किफायती नहीं होते हैं। मैक्डूगल संकेत करते हैं कि भारतवासी विवाह तथा अन्य समारोहों में मितव्ययी नहीं होते

नीग्रों लोगों में आदिम सहानुभूति का अत्यधिक विकास हुआ है। इस गुण के आधार पर वे रेड और मलायाविासियों से अलग हैं। "शेलर" कहता है कि रेड के विपरीत नीग्रो निरंतर श्रम करने के योग्य है। मैक्डूगल ने ओशेनिक नीग्रो के मामले में इसका अपवाद लिया है।

किन्तु नाग और अभूषण जमा करते हैं। मैक्डूगल बाद के तथ्य को भारतीयों के संबंध में नजरअंदाज कर गए हैं।

मैक्डूगल का विचार है कि अन्तिम लोगों में दूरदर्शिता का अभाव है जबकि सभ्य लोग मितव्ययी हैं। अधिग्रहण की सहज प्रवृत्ति अल्पाइन नॉर्डिक तथा बाना प्रजातियों यहूदी अथवा फाइनीशियन प्रजातियों में अधिक है जबकि मेडिटेरेनियन प्रजाति में कम तीव्र है तथा अमेरिकन्स की अपेक्षा निम्न भाग के स्कॉटलैंड में अधिक है। मैक्डूगल के अनुसार यह मूल प्रवृत्ति ही सम्पत्ति का आधार है तथा सामाजिक स्तर में अंतर का कारण होता है। मलय और नीग्रो में अदूरदर्शिता दिखाई देता है।

अभी तक प्रजातियों में बताई गई विविधतापूर्ण निश्चित मूल प्रवृत्तियां दिखाता है। केवल दो अपवादों को छोड़कर बौद्धिक श्रेष्ठता और बहुप्रकारता अंतःकरण। मैक्डूगल का विचार है कि इन प्रवृत्तियों के अतिरिक्त अन्य भी जन्मजात विरासत में मिले गुण हैं जो चरित्र का आधार बनते हैं। कुछ प्रतिभाएं अनुवंशिक होती हैं अन्य कुछ प्रजातियों में विशिष्ट होती हैं। इन प्रतिभाओं का जन्मजात आधार ज्ञात मालूम नहीं। ये अनुवंशिक एक अकेले गुण पर हैं या जटिल गुणों पर।

जुंग के अनुसार मस्तिष्क के स्वाभाविक आधार कुछ विशिष्ट भी है और अलग अलग भी है। एक राष्ट्र के मानस में आदर्श रूप का वर्णन पुराण और लोककथाओं में है तथा उनके स्वप्नों में भी है।

(मानव का प्रतिभा आदर्शों का अवश्य वातावरण में अधिक प्रमुख है।)

अदूरदर्शिता का अर्थ आवश्यक रूप से कम बुद्धिमान होना नहीं है।

डा. सी.जी.जुंग का "सामूहिक अचेतना" का सिद्धान्त मानसिक सचेतन के प्रजातीय विविधताओं के मत को और आगे ले जाता है। सामूहिक अचेतना मुख्यतः कुछ आदि रूपों में स्पष्ट होती है। यह स्वप्न को स्वप्नों और मानसिक रोग की अवस्था में सामने लाता है और हमारा विचारधारा का पूर्वाग्रह प्रस्तुत करता है। सबसे अधिक मौलिक और पुराने आदर्श रूप समस्त मानवीय प्रजातियों में समान हैं। फिर भी विभिन्न सम्प्रदायों ने अपना सामूहिक अचेतना का विशेषीकृत कर लिया है और अपने आदर्श प्रकारों को भी विभिन्न रूपों में अपने अनुकूल ढाल लिया है। जुंग का दावा है कि उसने अपने रोगियों के प्रजातीय मूल का उनके सपनों का अध्ययन कर ढूंढ लिया है। यद्यपि उनके कोई शारीरिक चिह्न प्रकट रूप में नहीं थे। (जुंग का मत है

मैक्डूगल का विचार है कि जुंग का सिद्धान्त अभी सिद्ध नहीं हुआ है लेकिन इसे गलत भी नहीं कहा गया।

कि फ्रेंच लोग इस तरह का सिद्धात अपनाकर विकसित नहीं कर सके क्योंकि वे स्वय यहूदी हैं उनके रोगी अधिकाशत यहूदी हैं और उनके अनुयायी भी यहूदी हैं) जुग का सिद्धात नव डार्विनवादियों के साथ मल नही खाता कि अर्जित स्वभाव को आगे नहीं बढाया जा सकता। लेकिन यह सिद्धांत किसी भी प्रकार से वैज्ञानिक जगत को भी मान्य नहीं है। (अध्याय 4 में मैक्डूगल ने दिखाया है कि यूरोप की तीन बडी प्रजातियों में कौन मे गुण अनूठे हैं। *अध्याय पाच में उसने इस परिकल्पना को विभिन्न यूरोपीय* राष्ट्रों के मध्य अतरों को स्पष्ट करने के लिए लागू किया है।)

ये आदर्श क्या हैं?
इनको सपनों के जीवन से या *पौराणिकताओं में से किस तरह* निकाला जाए।

मैक्डूगल का सिद्धात

जन्मजात सभावनाए–बौद्धिक तथा नैतिक – बुद्धि की मात्रा अथवा सहज प्रवृत्तियों की शक्ति की तुलना में समृद्ध हैं। बौद्धिकता अथवा नैतिक स्वभाव का अच्छा विकास या तो पूर्व मान्यता पर आधारित है अथवा अपरिभाषित जन्मजात और अनुवांशिक विचित्रताओं से भरपूर है। "नैतिक चरित्र का यह अपरिभाषित आधार सभवत सभी सहज गुणों में मनुष्य की सर्वाधित मूल्यवान सपत्ति है।

इस सिद्धात के आधार तथ्य

(1) डार्विन का चयन सिद्धात मानव मस्तिष्क के विकास को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

(2) फ्रायड के अनुयायियों के पास सपनों और फतासी *के बार-बार के प्रतीकों का साक्ष्य था जिसके अनुसार* मस्तिष्क में सहज कारणों के मानने की आवश्यकता हुई। मेरा विचार है कि प्रारम्भिक फतासी एक प्रकार जाति जनित उपलब्धिया हैं। इनमें व्यक्ति अपने जीवन से भी आगे प्राचीनता के अनुभवों में पहुच जाता है। मुझे ऐसी सभावना लगती है कि फतासी के रूप में विश्लेषण के दौरान जो कुछ भी जानकारी होती है वह मनुष्य के आदिम काल में एक वास्तविकता थी। जो आज का कल्पनाशील बालक केवल वैयक्तिक सत्यता के खाली स्थानों को पूर्व ऐतिहासिक सत्यता से पूरा करता है (' फ्रायड जनरल इट्रोडक्शन टू साइकोएनालेसिस)।

(3) बच्चों की रुचि उन वस्तुओं में होती है जिनमें उनका कोई अनुभव नहीं होता लेकिन जो *उनकी कल्पनाओं में* उनके किन्ही सस्कारों के कारण छाए रहते हैं। यूरोप के

होती है। इनमें परिवर्तन काफी धीमा होना चाहिए। भौतिक गुणों का स्थायित्व काफी प्रभावशाली होता है।

रिपले कहते हैं—अनेक पीढियों में भी प्रजातीय विशेषताओं मे स्थायित्व वास्तविक है। फिर भी रहने के स्थान में परिवर्तन से प्रजातीय गुणों में परिवर्तन अवश्य आता है।

पर्वतीय अंचलों में अथवा जटिल सभ्य समाज में जीवनक्रम खोपडी को विस्तार देता हो।

उदाहरण—(1) नीग्रो अफ्रीका, मलेशिया वेस्टइंडीज, उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका में रहते रहे हैं परंतु उनके शारीरिक और मानसिक विशेषताओं में कोई परिवर्तन नहीं आया।

विभिन्न परिस्थिति में वही लोग

(2) मलेशिया और पैसिफिक में मलय, पॉलिनेशियन और, नीग्रो-समान परिस्थितियों में रहते रहे हैं परन्तु उन्होंने अपने शारीरिक और मानसिक भिन्नताओं को बरकरार रखा है। (ए.आर.वलास)

समान परिस्थितियों में विभिन्न लोग

(3) *आज के मिस्रवासियों का शारीरिक रंग रूप हजार वर्ष* पूर्व के मिस्रवासियों के चित्रों से मिलता जुलता है।

(4) यूरोप के प्रारंभिक वासियों के नैतिक गुणों का वर्णन आज के यथार्थ में देखने को मिलता है।

उपरोक्त उदाहरण कुछ गुणों के स्थायित्व को सिद्ध करते हैं।

अध्याय VI

"प्रत्येक राष्ट्र जिसने भी श्रेष्ठ सभ्यता प्राप्त कर ली है, अपने देश की प्रत्येक प्रजाति की बौद्धिक और मानसिक विशेषताओं के आधार पर प्राप्त की है। प्रागैतिहासिक युग के अनेक वर्षों के दौरान प्रत्येक प्रजाति की विचित्र विशेषताओं के मिश्रण से सभ्यता का निर्माण हुआ था। इस प्रागैतिहासिक युग की तुलना में इतिहास का 2500 वर्ष का इतिहास बहुत कम है। ये स्थानीय विशेषताएं एक तरह से इनकी जमापूंजी हैं जिससे एक राष्ट्र सभ्यता के रास्ते पर चलता है। इनकी चाल की गति धीमी हो सकती है। प्रत्येक प्रगतिशील व्यक्ति सभ्यता के शिखर पर पहुंचना चाहता है जो सभ्यता उसकी अपने गुणों और संस्कारों से मेल खाती है। जब वह शिखर सीमा आ जाती है। तब प्रगति में अवरोध आ जाता है और तब उसका पतन की ओर अग्रसर होना अवश्यभावी है।"

प्रजातीय विशेषताओं मे परिवर्तन लाने वाले कारण

(1) प्रत्यावर्तन (संदेहपूर्ण कारण) पतनवाली स्थिति को

तरफ प्रत्यावर्तन सकारण के कारण हो सकता है। द्र जनन यूरोप में देखा गया है जहां लोगों का ग्राउ रग बन्दना जा रहा है जो मैक्डूगल के अनुसार एक हास हो की घटना है। शारीरिक प्रत्यावर्तन तथा मानसिक प्रत्यावर्तन दोनों साथ साथ हो रहे हैं।

(2) अर्जित विशेषताओं का हस्तान्तरण

(3) चयन सभ्यता के विकास ने प्राकृतिक चयन को अधिकांशतः समाप्त कर दिया है। मैक्डूगल के अनुसार एक विवाह प्रथा महिला आन्दोलन ने लैंगिक चयन को भी समाप्त कर दिया है। सैनिक चयन तथा नगरों द्वारा चयन अभी चल रहा है। पहले प्रकार के चयन में दो तरह से सर्वाधिक के मजबूत व्यक्ति की मृत्यु अथवा तुलनात्मक रूप से वध्याकरण (नसबन्दी) होता है। दूसरे प्रकार में सबसे अधिक के योग्य का गांव से निष्कासन और प्राकृतिक जनन क्षमता को नष्ट करना।

सामाजिक उत्थान की प्रक्रिया से सामाजिक स्तर का निर्माण होता है। इससे समाज के अन्दर असमान महत्व के स्वाभाविक लदे गए स्तर के द्वारा सामाजिक विभेद पैदा होते हैं। सामाजिक उत्थान पूरे राष्ट्र की महत्वपूर्ण विशेषताओं को ऊपरी स्तर में केन्द्रित कर देता है और निचले स्तर को अच्छे गुणों से विहीन कर देता है। ऊपरी स्तर अथवा वर्ग देर से विवाह ब्रह्मचर्य अथवा सीमित परिवार के कारण सापेक्षतः जननक्षमता रहित होते जाते हैं। मानव प्रवृत्ति प्रजाति की रक्षा करती है बुद्धि अपनी उच्चतम स्थिति में पहुंच जाती है। अब स्थिति यह है कि जनसंख्या का श्रेष्ठ वर्ग अपने मां बाप का स्थान लेने के लिए संख्या को बढ़ाने में जरों से लगा रहता है। ऊपरी वर्ग के खाली स्थान की पूर्ति गांवों से आए सबसे अच्छे व्यक्तियों द्वारा अथवा सामाजिक व्यवस्था की प्रक्रिया से होती है। लेकिन ये नए लोग भी धीरे धीरे परिवार सीमित करने लगते हैं और एक समय आता है जब निचला वर्ग सर्वोत्तम लोगों से विहीन होने के कारण ऊपरी वर्ग के खाली स्थान की पूर्ति नहीं कर सकता। यह उत्कर्ष है उन लोगों के पतन का चरमबिंदु। अन्य देशों की अपेक्षा ग्रेट ब्रिटेन ने उस स्थिति के प्रति अपनी प्रतिक्रिया प्रकट की है अथवा करने वाला है। (प्रवास तथा विज्ञान ने इस स्थिति को जल्दी लाने में मदद की है। विज्ञान ने मृत्यु दर कम कर निचले वर्ग की जनसंख्या में वृद्धि की है।)

इंग्लैंड का अपकर्ष

इस लंबे समय तक चले संघर्ष का एक उल्लेखनीय तथ्य यह था कि राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं के अनुसार महान व्यक्ति पैदा नहीं कर सका। क्या कोई राष्ट्र (फ्रांस को छोड़कर) कोई भूसेना नायक या जल सेनानायक बना सका? क्या कोई राष्ट्र एक भी महान कूटनीतिज्ञ बना सका? "क्या यह तथ्य कानून का एक उदाहरण नहीं है कि सभ्यता की मार्ग इसके नेताओं के गुणों से कहीं अधिक रही हैं? मैक्डूगल के अनुसार, फ्रांसीसी क्रांति या औद्योगिक क्रांति ने, न कि महायुद्ध ने महान व्यक्ति देश को दिए व्यक्ति। सामाजिक सीढ़ी की योजना ने पुराने विश्व में सभावित ससाधनों को सभवत समाप्त कर दिया है। अमेरिका की स्थिति भी कोई बेहतर नहीं है।

उनकी विशेषताओं में बढ़ोतरी होने की जगह उनका कम होना या भ्रष्ट होना जारी रहा।

हैवलॉक इलिस भी 'स्टडी ऑफ ब्रिटिश जिनियस' में इससे सहमत हैं।

अमेरिका के बारे में एल क्यूमेल ने 'पापुलेशन एंड बर्थ कंट्रोल' पुस्तक के लेख 'रेस स्युसाइड इन दी यूनाइटेड स्टेट्स' में लिखा है–यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि एंग्लो-अमेरिकी जनसख्या में कम जन्मदर का कारण प्राकृतिक न होकर जानबूझकर जन्म दर पर प्रतिबंध है। उपलब्ध आकड़े सिद्ध करते हैं कि एंग्लो अमेरिकी जनसख्या न केवल अपनी चरम सीमा पर पहुच गई थी वरन् गिरावट की ओर भी अग्रसर हो चुकी थी।"

अमेरिकी सेना के परीक्षण-परिणाम

जनसंख्या के 75% लोगों के पास हाईस्कूल का पाठ्यक्रम पास करने की पर्याप्त बौद्धिक क्षमता नहीं है।

टर्मेन का बालकों पर परीक्षण

1 सीमारेखा पर (70-80 अक) (ये सेना के परीक्षणों के 'डी' और 'ई' के समान हैं।) विद्यार्थियों का 8%।

2 कुद बुद्धि के सामान्य • (80-90 अक) - (ये सेना के परीक्षणों के 'डी' समूह के समान हैं। विद्यार्थियों का 15%।

3 औसत बुद्धि के (90-100 अक) (सेना परीक्षण के (सी-), (सी), तथा कुछ (सी) के समान) स्कूली बच्चों का 60%।

4 उच्च बुद्धि के (110-120 अक) - सेना परीक्षण के ऊपरी सी बी और ए के समान 15%

1 यह स्पेनिश-भारतीय मेक्सिकन और नीग्रो में सामान्य बुद्धि के समान स्तर को दर्शाता है।

8%

प्रतिपादकों के गुणों में सतत वृद्धि की माग करती रही है। विशेषकर उन लोगों के गुणों की जिनमें वृद्धि की अपेक्षा ह्रास ही हो रहा है। यह लोगों का परवलय है।

उदाहरण :
रिपले के अनुसार प्राचीन ग्रीकवासियों में सख्या में लंबे सिर वाले अधिक थे आधुनिक जनसख्या में छोटे सिर वालों की तुलना में, शायद स्लावों की प्रधानता के कारण।

ग्रीक- विवाह और पारिवारिक जीवन का पतन कुछ विशेष वर्गों में मानसिक अनुर्वरता, परस्पर साघातिक गृहयुद्ध, रोमवासियों द्वारा ग्रीकवासियों का लिपिक के काम के लिए रोम ले जाना। इससे अततः पहली श्रेणी के लोगों का विनाश हो गया। मूल ग्रीक जनसख्या मे यह परिवर्तन लगभग उस सभ्यता के पतन के समय हुआ।

रोम-रोम सभ्यता काफी समय तक टिकी रही क्योंकि इसका आधार विस्तृत था। रोमन साम्राज्य ने यूरोप के सभी प्रकार की जनसख्या की योग्यता व कार्य कुशलता की सेवाए ली थी। ऐश्वर्य और उपभोग मे वृद्धि, चर्च द्वारा ब्रह्मचर्य पालन का उपदेश, विवाह को भार समझने तथा समयानुकूल न होने की सामाजिक मान्यता, तथा कुछ विशेष वर्गों की अनुर्वरता ने जनसख्या के उत्कृष्ट वर्ग को समाप्त कर दिया।

स्पेन-मूरों तथा यहूदियों का निष्कासन धर्माधिकरण का कार्य, चर्च द्वारा ब्रह्मचर्य पालन का उपदेश, लगातार युद्ध होना, औपनिवेशीकरण, धन और ऐश्वर्य में वृद्धि इन कारणों से सभी प्रकार की उत्तम नस्ल को नष्ट कर दिया।

अमेरिका-अमेरिका में प्रगति का रुख पश्चिमी था। सत्ता का केंद्र बिंदु पूर्वी राज्यों से हट गया था। मध्य पश्चिमी का प्रभुत्व बढ़ रहा था और सुदूर पश्चिम के दिन समीप आ रहे थे।

ग्रेट ब्रिटेन-युद्ध ने सीधे तौर से तथा कर के बोझ ने परोक्ष रूप से व्यावसायिक वर्ग के प्रभुत्व को समाप्त कर देने के कारण राष्ट्रीय हित को काफी नुकसान पहुंचाया।

इस विषय में ज्ञान का प्रचार-प्रसार तथा व्यक्तिगत जिम्मेदारी की भावना को उभारने की आवश्यकता थी।

निष्कर्ष-

1. क्या विभिन्न भारतीय प्रजातियो के पास नोर्डिक अथवा मेडिटेरिनियन प्रजातियों की विशेषताए हैं? विशेषकर बगालियो के बारे में क्या विचार हैं?

2. क्या बगाली लोग अंतर्मुखी हैं? क्या वे आत्महत्या की ओर प्रवृत्त होते हैं?

3 सभ्यता का परवलय सिद्धांत भारतीयों पर कितना लागू होता है? क्या हम पतनोन्मुख हैं अथवा फिर से ऊंचाइयों की ओर बढ़ रहे हैं।

4 क्या अंतर्जातीय विवाह भावी पीढ़ी के लिए हितकर होंगे यदि हां तो किस प्रकार के अन्तर्जातीय विवाह?

5 भारत के लोगों के मानसिक स्तर का सर्वेक्षण होना जरूरी है कम से कम छात्रों का ?

फिजिकल एफीसिएन्सी

(ब्रिटेन की जनता पर नगरीय जीवन के विनाशकारी प्रभावों की समीक्षा तथा उनको रोकने के उपाय) द्वारा

जेम्स कार्टालिक

एम.बी. एम बी

डी पी एच

लन्दन एवं न्यूयार्क जी पी पुटनम्स सन्स 1906

भारत में एक ऐसा संगठन चाहिए। प्राफस (भूमिका) द्वारा सर लॉडर ब्रन्टन) इंग्लैंड में एक संगठन है जिसका नाम नेशनल लीग फॉर फिजिकल एजुकेशन एंड इम्प्रूवमेंट है।

फारवर्ड (दो शब्द) (सर जेम्स क्राइक्टन ब्राउन एम.डी. एल एल.डी. एफ आर एस द्वारा) स्वास्थ्य के चिकित्सा अधिकारियों की रिपोर्ट स्थानीय रुचि की अधिक है। एक ऐसा केंद्रीय ब्यूरो होना चाहिए, जहां ये सब रिपोर्ट एकत्रित हों इसका विश्लेषण हो और जहां इन पर आधारित एक वार्षिक रिपोर्ट बने।

डा. न्यूजहोल्म के अनुसार 1906 से पहले आई इन्फ्लुएन्जा महामारी ने ब्रिटिश लोगों की स्वाभाविक शक्ति को 30% कम कर दिया।

सभी प्रजातियों में एंग्लो सेक्सन लोगों ने स्वयं को विभिन्न प्रकार की जलवायु के अनुसार स्वयं को ढाला है और उनकी अनुकूल क्षमता अभी समाप्त नहीं हुई है।

अध्याय एक

हाल में ही शारीरिक क्षमता में कमी के संबंध में दो रायल कमीशनों की नियुक्ति हुई। निष्कर्ष यही है कि ब्रिटनवासी वास्तव में कमी के शिकार नहीं हैं।

1874 से पहले की सेना के मापदंड आंकड़े विश्वसनीय नहीं हैं।

शारीरिक शक्ति और ताकत में ब्रिटिश वासी का रिकार्ड गौरवपूर्ण है। अंतर्राष्ट्रीय चैंपियनशिप की लड़ाई या तो ब्रिटेन में लड़ी जानी चाहिए या फिर यह ब्रिटेनवासियों से छीनी जानी चाहिए।

उच्च-मध्य वर्ग में शारीरिक सौष्ठव सर्वश्रेष्ठ होता है।

महानगरीय पुलिस में 17,000 लोग हैं। वे ऊंचाई में 5 फुट और 9 इंच हैं। और उनका वजन भी उसी अनुपात में होना चाहिए।

आवश्यकता पड़ने पर देश में अच्छे तगड़े लोगों की एक रिजर्व सेना भी है।

शारीरिक क्षमता और काम करने की शक्ति में ब्रिटेनवासी सबसे आगे रहता है।

"यदि यह मान लिए जाए कि समाज का एक बड़ा वर्ग कुछ समय के लिए पतन की ओर अग्रसर है तो एक प्रजाति की प्रवृत्ति अपनी सामान्य अवस्था में आने की होती है। और यहा तक कि थोड़े समय के लिए पतनोन्मुख नस्ल की संतान भी अनुकूल परिस्थितियों में अपने पूर्वजो के समान हो जाएगी।"

इंग्लैंड और वेल्स में एक साल तक के बच्चों की नवीनतम मृत्युदर 1000 में 136 है।

चीनवासी अंतर्जातीय हैं।

क्या ब्रिटेन प्रतियोगिता से बाहर आ गया? क्या वह दूसरी तरफ के दबावों में आ गया है? कैंटली ने चीनियों और जापानियों के उदाहरण यह सिद्ध करने के लिए दिए हैं कि सभ्यता के लंबे समय तक चलने का अर्थ उसकी गिरावट नहीं है।

अध्याय दो

क्या क्षमता शरीर सौष्ठव पर निर्भर है ?

क्षमता का अर्थ है, "बौद्धिक योग्यता शासन शक्ति नई खोज करना, वैज्ञानिक ढंग से शोध करना उपयोगी जोखिम उठाना, चाहे वे वाणिज्य संबंधी हों, वैज्ञानिक हों अथवा नई खोज संबंधी हो।"

शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति में सर्वश्रेष्ठ मानसिक योग्यता हो सकती है, लेकिन यह आवश्यक नहीं कि उसके बच्चे भी ऐसे ही होंगे। इसके अतिरिक्त शारीरिक रूप से

से जाना ही था। अब समस्या थी कि नगरवासी लोगों की स्वस्थ नस्ल को साम्राज्य का काम चलाने के लिए किस प्रकार सुरक्षित रखा जाए।

ग्रामीण के शहरों में जाने से पादरियों का प्रभाव नए नगरवासियों पर से समाप्त हो गया था। अपराधों की पकड़ तथा दंड का मात्र प्रतिरोधात्मक प्रभाव पड़ता है।

ब्रिटिश वंश के लोग कहां सर्वाधिक फूले फले

किसी भी नए देश में ब्रिटेनवासियों ने अपनी उच्च शारीरिक क्षमता नहीं दिखाई, जो उनके अपने स्थान पर दिखाई देती थी और यह संदेहपूर्ण है कि यहां मध्यवर्ग का सामान्य औसत स्तर भी बना हुआ है।

आस्ट्रेलिया 40° से 15.5° डिग्री अक्षांश के बीच। विक्टोरिया (राज. मेलबोर्न) 40° से 35°। न्यू साउथवल्स (राज. सिडनी) 35° से 30.5°। दक्षिणी आस्ट्रेलिया (37° से 27.5° एडिलेड)।

न्यूजीलैंड (वेलिंगटन) 35° से 48.5° उत्तरी द्वीप लगभग 42.5°।

अमेरिका 30° से 50° उत्तर में। न्यूयार्क 42° उत्तर, बोस्टन 44° उत्तर, वाशिंगटन 38° उत्तर, सैनफ्रांसिस्को 37° उत्तर, शिकागो 42° उत्तर, फिलाडेलफिया 40°, लास एंजेल्स 34° उत्तर।

बोस्टन न्यूयार्क, फिलाडल्फिया, वाशिंगटन शिकागो इत्यादि।

कनाडा के महत्वपूर्ण भाग 45° से 40° उत्तर के बीच ओटावा 45° उत्तर, मांट्रियल 40° उत्तर, विनिपेग 50° उत्तर, वैंकूवर 49° उत्तर।

ब्रिटिश द्वीप 50 और 40 डिग्री उत्तरी अक्षांश के मध्य है। यह हमेशा उन उपनिवेशों के भागों में होता है जो मूल देश की जलवायु संबंधी परिस्थितियों से मिलती-जुलती हो, कि प्रजातीय गतिविधियों का वर्चस्व होता है। कनाडा में बड़े-बड़े नगर दक्षिण की तरफ और अमरिका में उत्तर में हैं। दक्षिणी अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया में नगरीय गतिविधियों का केंद्र सर्वाधिक ठंडे अथवा कम ट्रापिकल तथा ऊपरी स्थानों पर स्थिति हैं। (ग्रेट ब्रिटेन में मध्यम वर्ग की जनसंख्या का अनुपात किसी भी अन्य यूरोपीय देश की जनसंख्या से भी अधिक होता है।

मैनचेस्टर के रेलवे कुलियों की शारीरिक क्षमता यार्क के कुलियों की तुलना में दोषपूर्ण है।

अमेरिकी नागरिक

दक्षिणी अफ्रीका केप कालोनी 35° से 25.5° दक्षिण, नैटाल आरेंज फ्री स्टेट वस्टोलैंड 31.5° और 27.5° के बीच ट्रांसवाल 23.5° से 28.5° के बीच

अमेरिका के लोगों का डील डौल, जिन्हें तीन या चार पीढ़ियों तक यूरोपीयन रक्त का सामना नहीं करना पड़ा, अब बदतर हो गया है।

अमेरिका में 'चरवाहा' (काउ बॉय) वर्ग में डील-डौल के कुछ अच्छे खूबसूरत नमूने देखने को मिल सकते हैं लेकिन कैंटली इसे एक क्षणिक बात मानता है। आम प्रवृति शहरों की तरफ जाने की देखी जा सकती है और कोई भी इंग्लैंडवासी कृषक या ग्रामीण जीवन से संतुष्ट नहीं है। अमरिकीयों (गोरे) के सुडौल नाक नक्श हैं और उनके चेहरे उत्कृष्ट बुद्धिजीवियों के समान हैं।

चीन-22° उत्तर और 43° उत्तर के बीच (मंगोलिया को छोड़कर)

अमेरिका में एंग्लो सैक्सन का बोलबाला 30° उत्तरी अक्षांश तक है अर्थात ब्रिटेन के दक्षिणी बिंदु से 20 नीचे। न केवल अमेरिका

1 उत्तरी अंटार्टिका का फैलाव दक्षिणी अंटार्टिका से अधिक है।
2 समुद्रीय प्रभाव के कारण भूमध्यरेखा के दक्षिणी हिस्से की जलवायु अलग है।
3 भूमध्य रेखा के उत्तर में भू भाग अधिक है जलीय भाग कम है। इस कारण से गर्मी भी अधिक है। बंगाल के मामले में भी यही स्थिति है।
कैंटली के अनुसार मसाहार तथा चाय मिलकर भोजन को हानिकारक बना देते हैं। चाय में उपस्थित टनिन मांस में स्थित एल्युमिन साथ मिलते हैं तथा वे टेनेटेंट एल्युमिन बना देते हैं, जो अपचनीय है तथा जिसका अवशोषण भी संभव नहीं है।

निष्कर्ष

केप टाउन के बारे में ?

है और बाहर से आने पर प्रतिबंध है। मेलबार्न एडीलेड और सिडनी में ग्रीक की जलवायु है और आगे उत्तर में जलवायु ऊष्णकटिबंधीय है। देशज गोरी जनसंख्या तीसरी पीढ़ी तक अभी नहीं पहुंची है। यह संदेहपूर्ण है कि कोई अंतरप्रजाति आस्ट्रेलिया में फल-फूल सकती है तथा उसका उत्तरी आस्ट्रेलिया में रहना संभव है, इससे पहले वहां नीग्रो मलय तथा पापुआवासी भी रह नहीं सके थे।

न्यूजीलैंड

1 द्वीपीय जलवायु 2. अधिकांश जनसंख्या अधिकांशत कृषक

3 देशज जनसंख्या-माओरी का अच्छा शरीर

4 न्यूजीलैंडवासी शांत प्रकृति के अमरिकावासियों की बड़ी-बड़ी बातों के ठीक विपरीत हैं और यह उनके भविष्य के लिए अच्छा ही है।

न्यूजीलैंड की अपेक्षा कोई देश ऐसा नहीं, जहां ब्रिटिश लोग अच्छी तरह से स्थापित हो सकते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका

सबसे अच्छे बच्चे यहां उन मां-बाप के हैं जिनमें मां बाप में एक ब्रिटिश है और एक बोअर। बोअर लोग इतने लंबे समय तक उपनिवेश में रहने के बाद भी काफी वीर्यवान रहे हैं। ब्रिटिशवासी भी सक्षम रह सकते हैं। केप कॉलोनी तथा नेटाल का समुद्री तट उपनिवेश के लिए ठीक नहीं है। ऊंचाई वाला ट्रांसवाल एक ठीक स्थान हो सकता है।

निष्कर्ष

1 1846 के लगभग ग्रामीण और शहरी जनसंख्या का अनुपात चार और एक का था। स्थिति में अभी कोई परिवर्तन नहीं है।

2 शहरों में जनता नहीं रह रही है।

3 उच्च तथा मध्यम वर्गीय व्यक्ति जो मौजमस्ती उपनगरीय घर, तथा शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, श्रेष्ठ प्रकार के लोग होते हैं।

4 नगरों में हो रहे जनशक्ति अपव्यय का 33% गावों से पूरा किया जा सकता है—इसलिए कृषि महत्वपूर्ण है।

5 1801 में 9,00,000 व्यक्ति विदेशी अन्न पर निर्भर थे जबकि 1895 में 2,50,0000 व्यक्ति थे।

नगर तथा उपनगर

निवास, घर, नाली, पानी, खान के मामले में इंग्लैंड में नगरीय जीवन ग्रामीण जीवन की अपेक्षा अच्छा था। लेकिन हवा के मामले में बहुत खराब। भीड़ भरे शहरों की हवा में ओज़ोन नहीं होता जो एक जीवनदायक तत्व है। इंग्लैंड में दक्षिण-पश्चिमी हवा जो अटलांटिक महासागर से होकर बहती है, उसमें सबसे अधिक ओज़ोन होता है। उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र हवा से ओज़ोन मिलता है लेकिन केंद्रीय भाग को बिल्कुल नहीं। कैंटली ने 18 जनवरी 1885 को लंदन में अनेक स्थानों पर एक साथ हवा के अंदर ओज़ोन की उपस्थिति के परीक्षण किए। हवा उत्तर-पूर्व से दस मील प्रति घंटे की रफ्तार से बह रही थी। ब्राउमवुड पार्क उत्तर-पूर्व में कोई ओज़ोन नहीं था।

लंदन के नवयुवकों में सबसे अधिक स्वस्थ टेलीग्राफ और संदेशवाहक लड़के थे, जो घूमते-फिरते जीवन जीते थे।

गलियों में घूमना, क्यों ठीक नहीं?

फुटपाथ पर यदि ढलान एक इंच प्रति फुट है तो इसमें चलते समय एक पैर दूसरे से एक इंच ऊपर हो जाता है। इससे संतुलन बनाकर रखने के लिए शरीर को अधिक प्रयास करना पड़ता है। इस प्रकार बच्चों में एक साइड पसंद होती है और दूसरी नीची। पुरुष नीची साइड पसंद करते हैं जबकि महिलाएं अपने भारी भरकम कपड़ों के कारण ऊपरी साइड।

1885 में प्रथम बार सुझाव दिया। एक अगस्त 1905 में इसे मल में व्यावहारिक तरीका दर्शाया गया।

कैंटली ने पाइपों के द्वारा शहरों में ताज़ा हवा लाने का सुझाव दिया। कुछ वर्षों बाद, सर बेंजामिन वार्ड रिचर्डसन ने अपनी पुस्तक 'सिटी आफ हाइजिया' में शहर में पाइपों द्वारा ताज़ी हवा शहर के बाहरी वातावरण से लाने की बात की।

हवा

मि. हिक्स बड की योजना के अनुसार कमरे में हवा के लिए खिड़कियां उठाकर बनायी जाएं

एक वयस्क व्यक्ति के लिए 1,000 घन मीटर हवा बीस मिनट के लिए पर्याप्त है।

मस्तिष्क और शरीर के बीच संबंध

"कोई भी व्यक्ति विनम्र नहीं हो सकता, कार्य नहीं कर सकता, अपने उत्तरदायित्व को नहीं निबाह सकता यदि वह प्रदूषित और कार्बोनिक एसिड से भरे वातावरण में रह रहा हो।"

अध्याय 5

लड़कियाँ–मध्यम और उच्च वर्ग की लडकिया शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ होती हैं जबकि सामान्य वर्ग की लडकिया-विशेषकर घरेलू काम करने वाली का स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। यह अस्वास्थ्यकर परिस्थितयो क कारण है जिसमें इन्हें रहना पड़ता है। अब महिलाआ ने खतों मे और फल चुनने का काम भी छोड दिया है।

लड़के-मध्यम और उच्च वर्ग के लडकों का स्वास्थ्य घरेलू लडकियों की तरह सुधरने की बजाय गिरता जा रहा है। लडकों को पालन-पोषण लडकियों की अपेक्षा कठिन माना जाता है। कैंटली का विचार है लडके ठीक से कपडे नही पहनते। 4 से 10 वर्ष तक की लडकियों की पोशाक का वजन इसी आयु समूह के लडकों की पोशाक से दुगना होता है। गर्मी के मौसम को छोडकर इग्लैंड जैसे देश में, पोशाक का वजन प्रत्येक एक स्टोन में एक पौंड होना चाहिए। एक 3 स्टोन के वजन के लडकी की पोशाक· सामान्यत: 3 पौंड होती है। जबकि उसी वजन क लडके की पोशाक सामान्यत· पौने दो पौंड होती है। 'सलर सूट' और 'एटन जाकिट' मनुष्य के शरीर को कमर और पट की तरफ पर्याप्त गर्मी नही देते। एटन जाकिट के स्थान पर नोरफोक जाकिट होनी चाहिए।

कैंटली ने ऊचे सख्त कालरों और गेलिस की निंदा की है। बेल्ट कूल्हे की हड्डियों के ऊपरी स्तर के पास बाधनी चाहिए। जूते के मामलों में ऊची एडी खराब होती हैं। जूते का केंद्र या नोक जूते की बीच में नहीं होनी चाहिए वरन् बडे पजे के सामने होनी चाहिए।

शारीरिक शक्ति और इसका खर्च

अध्याय 6
तकनीकी शब्दावली

'फुट पौंड' – पौंड को जमीन से एक फुट ऊचा उठाने के लिए ताकत की आवश्यकता होती है उसे फुट पौंड कहते हैं।

फुट टन – एक टन को एक फुट की ऊचाई तक उठाने के लिए जितनी ताकत की आवश्यकता होती है उसे फुट टन कहते हैं।

फुट पौंड को कार्य इकाई कहा जाता है। एक ग्यारह स्टोन वजनी व्यक्ति प्रतिदिन 3400 फुट-टन की ताकत खर्च करता है। यह खर्च (1) घरेलू कार्य, (2) ऊर्जा उत्पादन (3) शारीरिक कार्य मे होता है। मेटाबॉलिज्म (रक्त सचार पाचन शक्ति और सास लेना) में 260 फुट टन 24 घटे

3 चार " " " ' " " " 2400 ' '

4 छह " " " " " " " 3260 " "

सास लेने के लिए सिपाही या किसी अन्य प्रकार की जाकिट की अपेक्षा नाविक वाली जाकिट अच्छी होती है कैंटली को गेलिस और बेल्ट दोनों नापसंद हैं। बेल्ट यदि लगानी ही हो तो पेट के ऊपर से नही वरन् कूल्हे की हड्डी के ऊपरी सतह के नीचे से ठीक है। पेट के चारो तरफ से पहनी बेल्ट हार्निया, बवासीर आदि का कारण बन सकती हैं। गेलिए घुटनों के नीचे धमनियों में बीमारी कर सकती है। 12 वर्ष से कम के बच्चो का बडे व्यक्ति के साथ चलना एक कठिन तपस्या होती है, क्योंकि दोनो के कदमों की लबाई में अतर होता है।

घूमने के बारे मे सकेत

1 घूमना सबसे अच्छा व्यायाम है लेकिन बडो के लिए, बच्चो के लिए नहीं।

2 प्रतिदिन एक घटा एक साथ 116 से 130 कदम प्रति मिनट की गति से चलना चाहिए।

3 कोई भी व्यायाम करो, घूमना फिर भी आवश्यक है।

4 घूमते समय नाक से सास लेना चाहिए।

दौड़ लगाना—साधारण दौड में एक कदम की लबाई 30 इच से 33 इच तक और कदमों की सख्या 116 से 166 तक हो जाती है।

भोजन करना—अडे की एक ग्राम सूखी सफेदी लगभग 923 फुट पौंड ताकत देती है। एक ग्राम सूखी चर्बी 1847 तथा एक ग्राम सूखा स्टार्च लगभग 781 फुट पौंड अर्थात् कुल 3551 ताकत देता है। इस प्रकार 2144 दाने लगभग 3551 2144 फुट पौंड ताकत जो 7613 344 फुट पौंड अथवा 3388 फुट पौंड– मोटे तौर पर 3400 फुट पौंड ताकत देते हैं।

सूखी सफेदी (ड्राई एल्ब्युमिन) जितनी मात्रा दर्शायी गयी है उसे जब शुद्ध आक्सीजन मे जलायी जाए तो उससे प्राप्त गर्मी है। इसकी सावधानी पूर्वक गणना की गयी है। इसे 'यूनिट ऑफ हीट' माना जाता है।

भोजन

1 मास 2 रोटी 3 मक्खन 4 आलू आदि 5 दूध 6 शक्कर।

	मात्रा (पौंड औंस)	नाइट्रोजन (ग्राम)	कार्बन (ग्राम)	फुट टन में उत्पादित ताकत (ग्राम)
1	1 0	160	1024	880

2.	1 8	120	1676	13–0
3	0 1½	3	450	–20
4	0 12	12	585	456
5	0 9½	10	100	79
6.	0 1	0	8	275
	4–0	302.3	–025	3450

आवश्यक भोजन की मात्रा की गणना दो प्रकार से की जा सकती है–(1) एक ऐसा पथ्य तैयार करना जिसमें सूखा सफ़ेदा वसा और स्टार्च की मात्रा 6–32 ग्राम तक हो। (2) एक व्यक्ति द्वारा उत्सर्जित पदार्थ की मात्रा को देखकर उसके आधार पर तैयार करना। एक वयस्क 4500 ग्राम तक उत्सर्जित करता है। उपरोक्त दशा में नाइट्रोजन मुख्य तौर पर होता है। नाइट्रोजन की आपूर्ति सफ़ेदा तथा जानवरों के टिशु से होती है। कार्बन वनस्पति से आता है।

यदि हम केवल मांस पर आश्रित रहे तो हमें अत्यधिक नाइट्रोजन मिलेगा। यदि हम केवल शाकाहार लेते हैं तो हम एक पथ्य में अत्यधिक कार्बन लेंगे। इसलिए मिश्रित पथ्य ठीक होता है।

1906
30
————
1876

शारीरिक अवनति और विदेशी खाद्य का उपयोग लगभग 30 वर्ष पहले (1876 में) एक साथ शुरू हुआ। ब्रिटिश वीरता का विकास क्रमशः खान में बने ब्रिटेन के लिए डिब्बा बंद खाद्य पदार्थ से बनकर नहीं रखा जा सकता।

मद्यपान

किसे शराबी कहा जाए?
(1) वह आदमी जो नाश्ते से पहले पीता हो।
(2) वह जो दिन भर में एक बोतल शराब पी जाए। इसके बाद वह आदमी जिसे सुबह 11 बजे शराब चाहिए।

उत्तरी यूरोप अर्थात्–स्काटलैंड स्कैंडिनेविया और रूस जिसके मध्य यूरोप अर्थात इंग्लैंड हालैंड जर्मनी होता दक्षिण यूरोप बाद। मद्य पदार्थों का प्रभाव कम होता जाता है जैसे जैसे हम उष्ण कटिबंध की ओर जाते हैं। मद्यपान से गाउट की बीमारी हो जाती है। गाउट के कारण मंद बुद्धि और कमजोर बच्चे होते हैं तथा इससे नपुंसकता बढ़ती है। एक शराबी बाप अथवा शराबी मां का बच्चा मानसिक और शारीरिक रूप से विकृत होता है। एक पियक्कड़ सैनिक पूरे टिशु शराब में डूबे हैं। वह खतरनाक है उस व्यक्ति से जो कभी कभी अधिक शराब पी लेता है और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए हानिकर होता है।

कानून कभी कभी पीने वालों पर लागू होता है शराबियों पर नहीं

"मद्यपान किसी भी रूप में एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए आवश्यक नहीं है। एक व्यक्ति को स्वयं को चुस्त रखना

पसता।

के लिए शराब की मांग करता है वह शरीर म स्वास्थ नहीं है। उसे चाहिए कि वह किसी कम मह त्व के काम को ढूंढ ले।"

बाल आहार

यदि मां शिशुओं को अपना दूध नहीं पिलाती है तो संबंधित अवयव अपना काम करना छोड़ देते हैं।

किसी भी बच्चे को ऊपर का दूध नहीं देना चाहिए जब तक कि वह 5 6 महीने का न हो जाए। पैंक्रिआज का स्राव जिससे खाना पचता है जन्म से पांच महीने तक नहीं बनता।

बच्चों के लिए कृत्रिम आहार

1 पहला महीना – 1/3 गाय का दूध 2/3 पानी

2 दूसरा महीना – 1/2 गाय का दूध 1/2 पानी

3 तीसरा महीना – 2/3 गाय का दूध 1/3 पानी

तीसरे से छठे महीने तक केवल दूध।

रबड़ के अंगूठे या चुसनी का चूसना हानिकारक है। इससे मुंह में नासिकाछिद्र में सांस की नली में स्थायी प्रकार की विकृतियां और विकार बन जाते हैं। इससे सदा ही ऐडनायड (कंठशूल) अर्थात नाक और गले के पीछे की तरफ सूजी टिशू बन जाते हैं।

कॅटली चूसनी प्रयोग के इस बुरे प्रभाव को बतलाते हुए इस तर्क को नकारते हैं कि चूसनी के प्रयोग से मुंह से सांस लेने के बजाए शिशु नाक से सांस लेने के लिए विवश होता है।

कॅटली के अनुसार चूसनी का प्रयोग कानून के द्वारा नियमित या निषेधित करना चाहिए

वह पेप्सिन और हाइड्रोक्लोराइड एसिड है।

कॅटली कहते हैं 140° तापमान वाली चाय चम्मच से 130° की कप से पी जानी चाहिए। 120° फै तापमान की चाय ठंडी मानी जाती है। हम अपने शरीर के तापमान से 20° अधिक तापमान वाली चाय पीते हैं और 115° तापमान वाले अंडे और आलू खाते हैं।

दंतचिकित्सक का उद्देश्य अच्छे दांतों को बनाए रखना और उन्हें खराब होने से बचाना होना चाहिए

मुंह और नाक से श्वास लेना

सांस लेने का प्राकृतिक रास्ता नाक है जहां हवा सांस की नली में जाने से पूर्व अनुकूलित होती है। जब सांस मुंह से ली जाएगी तो गले और टॉन्सिल में परेशानी होगी जिससे टॉन्सिल बढ़ जाते हैं और आगे श्वास में कठिनाई होती है।

कंठशूल प्राय उस नली का मुंह बंद कर देता है जो कान तक जाती है। इससे कानों में हवा का संतुलन बिगड़ जाता है और कान का दर्द शुरू हो जाता है।

चूसनियां लारिक ग्रंथि को हमेशा क्रियाशील रखती हैं और *उन्हें इस प्रकार आराम नहीं मिल पाता। लारिक क्षार जो* पाचन क्रिया में उचित समय पर सहायता करता है चूसनियों से व्यर्थ जाता है। पेट की ग्रंथियों से निकलने वाली लार भी उसी प्रकार व्यर्थ जाती है जिस प्रकार जिगर और पैंक्रियाज ग्रंथि से।

दांत

दांतों का जल्दी क्षय हमारे आहार में अधिक तापमान के

न कि खराब दांतों का उपचार करना।

कारण होता है।

1 स्तनपायी बच्चे जो दूध 98.4 फॉ पर पीते हैं अपने दांतों को काफी समय तक बचा सकते हैं।

2 बोतल का दूध अधिक गर्म होता है (कभी कभी 115 फा.) क्योंकि मां का दूध 98.4 फॉ पर स्वाभाविक ठंडा होता है।

3 हमने अपने मुंह की श्लेष्म झिल्ली को शरीर की गर्मी से 10° से 30° ऊपर के तापमान के अनुकूल बना रखा। बोतल से दूध पीने वाले बच्चे को दूध 20° और अधिक तापमान में दिया जाता है। इसका अर्थ है एक व्यक्ति का खाना 140° या 150° फा. पर लेने को विवश करना। श्लेष्मल झिल्ली में गर्मी के कारण हुई परेशानी से मसूड़ों में खून आने लगता है और दांतों को जो सामान्य रूप से खून मिलना चाहिए था, उससे वे वंचित रह जाते हैं। रक्त रहित दांतों का विकास अधूरा होता है और उनमें शीघ्र क्षय की प्रवृत्ति अधिक होती है।

व्यायाम के सिद्धांत

अध्याय VIII

दो सिद्धांत - (1) शिकार करना और खेत जोतना आदमी के दो सामान्य व्यायाम थे और ये आदर्श रूप में माने जाने चाहिए।

(2) ऊपरी अंगों का विकास नीचे के अंगों को छोड़कर नहीं करना चाहिए।

जमनवासी व्यायाम में प्रशिक्षित होते हैं किन्तु मैदानी खेलकूद में नहीं।

व्यायाम से ऊपरी अंगों का विकास आवश्यकता और अनुपात से अधिक होता है। कुछ प्रदर्शनकारी खिलाड़ियों के नीचे के अंग सुडौल होते हैं। जर्मनवासियों के कंधे चौड़े होते हैं जबकि उनके नीचे के अंग कमजोर होते हैं। इसी प्रकार उनका प्रदर्शन और चलना दोषपूर्ण होता है।

एक मनुष्य की ताकत उसकी कमर और जंघाओं में होती है। कोई रोमन और ग्रीक खिलाड़ी अपनी भुजाओं के प्रदर्शन का इच्छुक नहीं होता। उनकी जंघाओं, कूल्हों और कमर की मांसपेशियां अलग से दिखाई देती हैं और अंग शरीर पर अलग से नजर आते हैं।

काफी समय तक बैठने का कार्य करते अचानक कठिन व्यायाम जैसे पर्वतारोहण लंबी दौड़, साइकिल भ्रमण आदि करना हृदय

के लिए हानिकारक है और इससे सिर चकराने और थकान होने लगती है। साइकिल दुर्घटनाएं कभी-कभी फिसलन के कारण न होकर चक्कर आने के कारण होती हैं और चक्कर आने का कारण रक्त संचार में असंतुलन है।

यदि प्रारंभिक अवस्था में व्यायाम की उपेक्षा कर दी जाए तो हृदय की मांसपेशियां अत्यधिक कमजोर हो जाती हैं और इस सीमा तक सिकुड़ सकती हैं कि उनके सामान्य अनुपात में आने की संभावना समाप्त हो जाती है।

शरीर का विनाश क्यों होता है ?

रक्त वाहिकाएं जब अपनी लोच खो देती हैं उनके चारों तरफ खारापन आ जाता है और वे नष्टप्राय हो जाती हैं तथा विस्तार के योग्य नहीं रहती।

शारीरिक व्यायाम क्यों आवश्यक है?

"*हमारी मांसपेशियां और शारीरिक अवयव सुरक्षित रहने और* इनकी देखभाल होनी चाहिए। जिससे इनके पास सरक्षित शक्ति हो और ये बिना किसी कठिनाई के आवश्यकता पड़ने पर अपना काम कर सकें। ठीक रहना और ठीक महसूस करने का अर्थ है काम के लिए सरक्षित शक्ति की प्राप्ति—वह काम कैसा भी हो। शरीर के सभी अंग चाहे वे मांसपेशियां हों, श्वास संबंधी हो या रक्त संचारी हो, सभी का विकास आनुपातिक रूप से ठीक और समान होना चाहिए।

एक समय तक मेहनत पूर्ण व्यायाम करने के बाद अचानक आराम स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इसलिए आराम भी धीरे-धीरे होना चाहिए। लंबे समय तक छुट्टी मनाने के बाद जब लोग सामान्य जीवन शुरू करते हैं तो उन्हें खराब लगता है क्योंकि श्रम की बढ़ी हुई मात्रा से एकदम आराम करना अचानक होता है।

बच्चे

व्यायाम के लिए भी

कैंटली मां की गोद में शाल में लपेटकर बच्चों को लेकर चलना अच्छा मानते है। इससे बच्चे में गर्माहट रहती है। बाबागाड़ी में बच्चे को समान तापमान नहीं मिलता। हमारे नगरीय जीवन के लिए खेल के मैदान अति आवश्यक है।

शिक्षा

हमें नहीं लगता कि बच्चों के तौर-तरीकों में कुछ विकास हो रहा है अथवा सामाजिक और नैतिक अनुशासन तथा मां-बाप के प्रति सम्मान की भावना बढ़ रही है।

7 स्पेन — 96 7 " "
8 आस्ट्रिया — 226 " " "
हंगरी — 154 " " "
9 रूस यूरोपीय रूस — 59 7 " " "
–पोलैंड — 227 2 प्रति वर्ग मी
–साइबेरिया — 1 4 " " "
10 बुल्गारिया — 150 0 " " "

अमेरिका
1 संयुक्त राज्य (अलास्का सहित) – 25 6
2 कनाडा – 1 48
3 मैक्सिको – 17 7
4 ब्राजील – 5 4
5 अर्जेंटाइना – 5 4

एशिया
1 भारत (ब्रिटिश) – 221
पूरा भारत 167
2 चीन – 266
3 जापान – 320
4 पर्शिया – 15
5 स्याम 35
6 अफगानिस्तान – 20

आस्ट्रेलिया आदि
1 आस्ट्रेलिया 1 5
2 न्यूजीलैंड – 10
3 जावा – 600
4 सुमात्रा – 25
5 बोर्नियो 6

अफ्रीका
1 अल्जीरिया – 28
2 केपटाउन (केप कालोनी) 8 7
3 ट्रांसवाल 10
4 मिस्र (विस्थापित भूमि – 950
5 कांगो (मुक्त राज्य) 15

विश्व के वे जनसंख्या रहित भू-भाग जो जनसंख्या वृद्धि के द्वारा अत्यधिक विकास के योग्य हैं-

1 साइबेरिया 2. ब्राजील और अर्जेंटाइना
3 कनाडा 4 आस्ट्रेलिया
5 मंगोलिया और मंचूरिया

ये क्षेत्र विश्व की वर्तमान जनसंख्या के दोगुने और तीन गुने भाग को भी सहारा दे सकते हैं।

देशबंधु और राष्ट्र निर्माण

(नेताजी ने यह लेख शिलांग में मई 1927 में लिखा था। यह पहली बार प्रकाशित हो रहा है—स.)

देशबंधु के बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है बहुत कुछ कहा जा चुका है लेकिन फिर भी बहुत कुछ कहने और लिखने के लिए बाकी है। संभव है अभी मुख्य बातें कहीं नहीं गई हों। आज मैं उनके बहुआयामी जीवन के एक पहलू के बारे में बात करूंगा जिसका अभाव अब हम काफी महसूस करते हैं।

देशबंधु के पास असाधारण मानसिक ऊर्जा और शक्ति थी। उनके सक्रिय जीवन के दौरान जो भी शक्ति उभरी उनकी जबरदस्त शक्ति के सामने वह टिक नहीं सकी। वे अपनी शक्तियों को जिस तरफ चाहे मोड़ सकते थे। यह हम सब जानते हैं लेकिन हमारे लिए यह जानना जरूरी है कि उनके पास ऐसी अलौकिक शक्ति आई कैसे? वह ताकत जिससे देशवासी भी और ब्रिटिशवासी भी चकित थे साधना द्वारा प्राप्त की गई थी या जन्मजात थी।

सभी शक्ति साधना से प्राप्त होती है कम से कम मेरा तो यह विश्वास है और स्पष्टतः जो जन्मजात है वह पूर्वजन्म में की गई साधना के परिणामस्वरूप है।

जब देशबंधु ने इंग्लैंड से लौटकर पुनः कलकत्ता में बैरिस्टर की प्रैक्टिस आरंभ की तो वह अपने पिता द्वारा छोड़ गए कर्ज में डूबे हुए थे। उनके पास एक ही उपलब्ध था—अपनी आंतरिक शक्ति। उनके पास पूरे तन और मन से काम में डूब जाने की क्षमता थी। इन साधनों पर विश्वास कर उन्होंने जीवन के इस महासागर में अपनी यात्रा शुरू की। उन्हें पहला अवसर मिला अलीपुर बम केस में। जब उन्होंने इस केस को हाथ में लिया उनके मस्तिष्क में कोई विचार नहीं था। उन्होंने न केवल रात और दिन मेहनत की, वरन् अपने परिवार का खर्च चलाने के लिए कर्ज लेने में भी संकोच नहीं किया और जब तक केस चलता रहा अपने परिवार से उनका कोई संपर्क नहीं रहा। अपने परिवार को उन्होंने पहले बता दिया कि उन्हें इस दौरान घर की समस्याओं से तंग नहीं किया जाए। और जब इसी समय में उनके पुत्र और पुत्रियां सख्त बीमार हुए, वे उन्हें देखने भी नहीं गए। इस तरह की अटूट और संपूर्ण कर्तव्य परायणता का परिणाम सामने था। इस केस से उन्हें धन का नुकसान हुआ परंतु उन्हें सफलता का शानदार दान प्राप्त हुआ और इसका परिणाम था उनकी गौरवपूर्ण प्रैक्टिस की शुरुआत। इसके बाद उन्हें कभी अपने व्यवसाय के लिए चिंता करने की आवश्यकता नहीं हुई।

अपने पूरे जीवन में जब भी देशबंधु ने कोई उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया उसको पूरे हृदय से निभाया। जब तक वह काम पूरा नहीं होता था वे कुछ और सोच ही नहीं सकते थे। जो उनके संपूर्ण सक्रिय जीवन से परिचित हैं, इस बारे में अनेक उदाहरण दे सकते हैं। इस प्रकार अपने काम में पूरी तरह लग जाने के कारण उन्होंने अपने अंदर असीमित शक्ति अर्जित कर ली थी। कुछ पाने के लिए अपना पूरा जीवन लगाना पड़ता है। जो अपना सर्वस्व किसी काम को पूरा करने में लगाता है—उसे अपनी आत्मा में

मूल बांग्ला से अनूदित

नई जागृति और असीमित शक्ति के स्रोत मिल जाते हैं, उसे स्वयं इसकी जानकारी नहीं होती कि उसे यह शक्ति कहा से मिली। एक ऐसी जागृति की शक्ति जिसे कोई वैभ ही प्राप्त नहीं कर सकता और इस प्रकार का कोष जो किसी साधना या प्राणायाम या भजन कीर्तन से नही मिल सकता। लेकिन यह सब कुछ संभव है यदि वह स्वयं को पूरी तरह निष्काम कर्म-अर्थात फल की इच्छा किए बगैर, अपने काम में लगा दे।

जब 1921 में मुझे उन्हें जानने का सौभाग्य मिला तब तक उन्होंने सुख और ऐश्वर्य का जीवन छोडकर अपने परिवार के साथ त्याग और तपस्या का जीवन अपना लिया था। जब भी लोगों को संदेह था कि क्या देशबंधु इस प्रकार का जीवन लंबे समय तक जी सकेंगे और जब 1922 में उन्होंने विधान सभा में जाने की नीति का समर्थन किया तो उनके विरोधियों ने कहना शुरू कर दिया कि देशबंधु अब फिर अपने उसी पुराने रूप में आ जाएगे। लेकिन हममें से जो उन जैसे आतरिक शक्ति के व्यक्ति को कुछ सीमा तक जानते थे, यह भी जानते थे कि उनके द्वारा अपनायी गई विधानसभा-प्रवेश की नीति, कोई पीछे हटने की नीति नहीं थी। और फिर, त्याग और असहयोग का रास्ता जो उन्होंने अपनाया था वह कल्याण का रास्ता था और वे उससे कभी पीछे हटने वाले नहीं थे। वास्तव में, व किसी क्षणिक प्रभाव में असहयोगी नही बने थे। यहा तक कि 1921 से पहले भी वे त्याग के लिए मानसिक रूप से इस सीमा तक तैयार थे कि प्रैक्टिस छोडने में उन्हे कोई मुश्किल पेश नही आई। वे 'स्वधर्म' की आवाज पर 'दरिद्रनारायण' की सेवा के लिए अपना सुख-ऐश्वर्य आदि छोडने को तैयार थ। इसीलिए जब व कर्ज में डूबे थे अपनी प्रैक्टिस छोडने के बाद भी उन्हे अपनी फीस के रूप में लाखों रुपये छोडने में कोई कठिनाई नही हुई। गया कांग्रेस के बाद जब वे अपने लिए घर-घर मागने के बाद भी कुछ हजार रुपये भी इकट्ठा नही कर सके तब उनके कुछ अनुयायी कहा करते थे कि वे अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति एक दो जगह से लेकर ही कर सकते थे बजाय बेशर्म होकर इधर-उधर अन्य लोगों से माग कर। लेकिन वे कभी ऐसी सलाह नहीं मानते थे क्योंकि उनके लिए पैसे की तुलना में अपना आदर्शवाद अधिक महत्वपूर्ण था और हमारे लिए उस समय सबसे बडा काम असहयोग की नीति को निष्कलंक रखना था। सत्यता यह है कि मनुष्य धन की माग से तो किसी तरह निपट सकता है लेकिन धन कभी भी व्यक्ति की वास्तविक मागो की पूर्ति नही कर सकता। इसलिए धन रहित दृढ किंतु आदर्शवाद द्वारा प्राप्त परिणाम कभी भी बडी-बडी धन राशि को खर्च करने से भी प्राप्त नहीं किए जा सकते। विश्व के प्रत्येक देश में और प्रत्येक युग में आदर्शवाद को धन से कहीं अधिक ऊंचा दर्जा दिया गया है। बडे-बडे आदर्शों से व्यक्ति का नाम होता है और व्यक्ति ही धन एकत्र करते हैं लेकिन धन कभी भी अपने आप से वास्तविक व्यक्ति का निर्माण अथवा ऊँचे आदर्शों की स्थापना नही कर सकता।

यदि वे उच्चकोटि के आदर्श पुरुष नहीं होते, वे कभी भी अनजान कार्यकर्ताओ के साथ, अपने पुराने साथियों को छोडकर, तथा विपरीत परिस्थितियो की परवाह किए बिना असहयोग के अनजान रास्ते पर चलने की हिम्मत नही कर सकते थे, और अपने घर के सदस्यो के साथ बिता रहे सुखपूर्ण आराम के जीवन को त्यागकर एक साधु का जीवन अपना नही सकते थे।

की नियुक्ति में कठिनाई उत्पन्न करना था। जिन्हें बंगाल विधानसभा के कार्यों के बारे में जानकारी है उन्हें आश्चर्य था कि वे किस तरह मंत्रियों के वेतन के बिल बार बार अस्वीकृत कराते थे। किस प्रकार महीनों तक उन्होंने अपनी तिकड़म को सफल बनाने में रात और दिन कड़ी मेहनत की यह सिर्फ स्वराज्य पार्टी के सदस्यों को ही मालूम है। अपने देश की सेवा के लिए उन्होंने अपने मान सम्मान को भी दाँव पर लगा दिया। अपने देश के लिए उन्हें छोटे से छोटे व्यक्ति से भी धन और वोट मांगने में संकोच नहीं हुआ। एक कहावत प्रचलन में है–तुम कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं कर सकते यदि तुम शर्म घृणा और भय से मुक्त नहीं हो। यह एक दुख की बात है कि इस अभागे देश में कुछ ऐसे भी दुष्ट लोग थे जो निरन्तर रहते थे। पिछली बार जब मंत्रियों के वेतन के बिल पर विधानसभा में मतदान होने वाला था ठीक उससे पहले देशबंधु पटना में आराम कर रहे थे और स्वराज्य पार्टी के कुछ कार्यकर्ता कलकत्ता से उनसे मिलने गए और उनसे मतदान के बारे में सलाह मांगी। उस समय देशबंधु के अतिरिक्त अन्य सभी निराशा की मुद्रा में थे और उन्होंने महसूस किया कि इस मंत्रिमंडल को समाप्त करना असंभव है। देशबंधु ने अपनी पूरी हार्दिक संवेदना से उनको संबोधित करते हुए कहा यदि आप लोग इस बार सरकार को हराने में असफल हो जाते हैं तो मैं अब बंगाल लौट कर नहीं आऊंगा। मैं आपसे इस बात का वायदा चाहता हूं कि इस बार आप पूरे तन मन से इस ध्येय में लग जाएंगे कि इस सरकार को किसी प्रकार से हरा कर रहेंगे। देशबंधु के भावपूर्ण और हृदय से निकले इन शब्दों ने निराश हृदयों में आशा और शक्ति का संचार किया। कलकत्ता वापिस आने पर उन लोगों ने अपनी पूरी शक्ति रात दिन अपने ध्येय की प्राप्ति में लगा दी। कुछ दिनों के बाद देशबंधु स्वयं भी इसमें आकर लग गए और अंतत: उनकी विजय हुई।

मैं एक और घटना का जिक्र करूंगा जो तारकेश्वर सत्याग्रह के दौरान हुई। मैं उस समय कलकत्ता नगरनिगम में काम करता था। तारकेश्वर सत्याग्रह के दौरान धन एकत्र करने के लिए मेरे मित्र श्री दिलीप कुमार राय ने राममोहन लाइब्रेरी हाल में एक शाम संगीत गोष्ठी का आयोजन किया। हम काफी सारे लोग वहां इस इरादे से गए कि सत्याग्रह में अपने तुच्छ ढंग से सहायता करेंगे और इस इरादे से भी यूं कहिए कि विशेष रूप से दिलीप कुमार राय के संगीत का भी रसास्वादन करने तथा इस आशा में कि वहां देशबंधु के विचार संगीत और कला के बारे में सुनने को मिलेंगे। वे बहुत बड़े कला समीक्षक थे और उनमें संगीत समझने की योग्यता के साथ साथ सौन्दर्यबोध था इसलिए हमें उम्मीद थी कि वे संगीत और कला के बारे में अवश्य कुछ न कुछ कहेंगे। दिलीप कुमार ने भी वास्तव में उनसे संगीत और कला के बारे में कुछ सुनने की इच्छा व्यक्त की और उनसे अनुरोध भी किया। लेकिन देशबंधु इस बारे में कुछ नहीं बोले। उन्होंने श्रोताओं को तारकेश्वर सत्याग्रह के लिए धन्यवाद किया और कहा कि वे आजकल इस सत्याग्रह के बारे में मानसिक और शारीरिक रूप से इतने व्यस्त हैं कि वे इस समय संगीत और कला के बारे में कुछ सोच भी नहीं पाते। इससे काफी लोगों को निराशा हुई विशेषकर मुझे। लेकिन इसके बाद जब मैंने घर आकर इस बारे में गहराई से सोचा तो मैंने महसूस किया कि इस तरह के चरित्र का व्यक्ति अपने कर्तव्य के साथ पूरी तरह बंध जाता है और जिस प्रकार वे तारकेश्वर सत्याग्रह में डूबे थे उनके लिए किसी

और ध्यान देना असम्भव था

इस तरह के उदाहरणों की कोई कमी नहीं है और क्या और उदाहरणों की आवश्यकता है? अतः मैं एक और उदाहरण देकर समाप्त करता हूं। मैंने देशबंधु के नजदीकी संबंधियों और साथियों से सुना है कि हमारे पकड़े जाने के बाद सभी राजनैतिक कैदियों को छुड़ाना उनका प्रमुख कर्त्तव्य बन गया। उनके एक नजदीकी रिश्तेदार ने मुझे दूसरे दिन लिखा कि मेरे पकड़े जाने के बाद कुछ महीने जब वे जीवित रहे तब उनकी काफी मानसिक यंत्रणा थी। कोई भी नजदीक आने वाला व्यक्ति उनके दुःखों को तीव्रता को समझ सकता था जैसा कि उनका अंतर्मन एक व्यर्थ के गुस्से आवेश और दुःख से भरा हो। मैं इसलिए प्रायः सोचता हूं कि शायद इसलिए वे चले गए। वे और अधिक सहन नहीं कर सकते थे मैं गत कुछ दिनों से सोच रहा था शायद अगर वे हमें छोड़कर इतनी जल्दी नहीं जाते आप इतने लंबे समय तक यहां जीवन में पीड़ित नहीं हो सकते थे बगान के इतने बड़े इतना अधिक दुख नहीं उठाते इतने अधिक निराशा और अंधकार के गर्त में डूब नहीं गए होते। देशबंधु हमें तो समाधान दूँढें बगैर अपनाया नहीं कर यह पूर्णतया सच है जब बंगाल विधानसभा में अध्यादेश वाला बिल रखा गया देशबंधु बीमार और काफी कमजोर थे इसलिए वे विधानसभा भवन में स्ट्रेचर पर लाए गए। उन्हें उनके डाक्टर और उनके रिश्तेदारों द्वारा जो उनके स्वास्थ्य के बारे में चिन्तातुर थे विधानसभा में जाने से रोकने की कोशिश की गयी। लेकिन उन्होंने कहा कि यदि उनके विधानसभा में जाने की कोई व्यवस्था नहीं की गई तो वे स्वयं किसी न किसी प्रकार वहां चले जाएंगे फिर चाहे रास्ते में जो कुछ भी होना हो। अतः जब सब यह समझ गए कि उनको रोका नहीं जा सकता और वे उस दिन सभा भवन में जाने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हैं तो उनको ले जाने के लिए प्रबंध किए गए। सम्भवतः यह उनके स्वास्थ्य के लिए अधिक अच्छा होता यदि वे उस दिन अपने ऊपर इतना बोझ न डालते। लेकिन उन्होंने स्वयं को राजनैतिक कैदियों के कार्य से इतना अधिक जुड़ा महसूस किया कि उनके लिए रुकना असम्भव था। जिस व्यक्ति का हृदय जितना विशाल होगा वह उतना ही दुख उठाएगा। यह उनका अपने साथियों और अनुयायियों के साथ गहरा प्रेम और सहानुभूति के कारण था कि वे इतनी बड़ी शक्ति सेना खड़ा कर सके और बंगाल के बेताज बादशाह बन सके। जब कोई कार्यक्रम की वर्तमान दुखद स्थिति के बारे में सोचता है उसके मन में एक स्वाभाविक सा प्रश्न उठता है कि देशबंधु के असीमित स्नेह और सहानुभूति का कितना भाग विरासत में उनके उत्तराधिकारियों को मिला? सब कोई नेता तो बनना चाहते हैं परंतु इस हेतु अपना जीवन अर्पित करने में संकोच करते हैं। तब वह अपने अनुयायियों से किस प्रकार अंध भक्ति और सम्मान प्राप्त कर सकते हैं।

चूंकि वे किसी भी कार्य में अपना तन मन लगा सकते थे इसलिए उनकी परम असाम शक्ति थी। मनुष्य को कभी अमृत का स्वाद नहीं आ सकता यदि वह अपना जीवन अपनी अंतःप्रेरणा से दूसरे के लिए नहीं दे सकता। मैंने सुना वे कभी कभी मजाक में कहा करते थे—' मेरे लिए कोई स्मारक बनाने की अपेक्षा एक पत्थर पर ये शब्द खुदवा देना यहां सोता है एक बिलकुल ही पागल बंगाली ' मैं उनके असल शब्द उद्धृत नहीं कर रहा हूं। फिर भी मैं सोचता हूं कि मैं उनकी भावना को व्यक्त करने में सफल

हुआ हूँ। ये शब्द वास्तव में उनके मस्तिष्क का पूर्ण प्रतिबिंब हैं। जब वे जीवित थे काफी लोग उन्हें पागल कहा करते थे। मेरी भी इच्छा उन्हें ऐसा ही कहने की होती है क्योंकि प्रायः कोई भी व्यक्ति पागलपन के लक्षण दिखाए बिना महान नहीं हो सकता। जब किसी में पूर्ण समझदारी हो तब केवल नीरसपन ही होता है जीवन में।

आज हमें जिस चीज की आवश्यकता है, वह है निःस्वार्थ और पूर्ण समर्पण की भावना। राष्ट्र निर्माण के लिए सबसे पहली आवश्यकता शुद्ध व्यक्तियों की है। शुद्ध व्यक्ति होने के लिए उसमें अपने आदर्शों के प्रति गहरी भक्ति होनी चाहिए। किसी को भी देश-सेवा का काम एक अस्थायी व्यवसाय के रूप में अथवा समय बिताने के लिए नहीं लेना चाहिए। देश-सेवा के लिए माना भाषणों और लेखों की जरूरत है लेकिन इन सबसे ऊपर, जीवन में प्रशिक्षण की आवश्यकता है जो व्यक्ति स्वयं शुद्ध नहीं है उसके भाषणों और लेखों का क्या महत्त्व? केवल जीवित रहना ही काफी नहीं है और मनुष्य जीवन में तभी कुछ उपलब्धियाँ कर सकता है जब वह सब कुछ त्यागने को तैयार हो। जो व्यक्ति शत-प्रतिशत त्याग की भावना रखता है, वह शत-प्रतिशत प्रेम और शक्ति प्राप्त कर सकता है। जो वास्तविक रूप में मनुष्य बनना चाहता है, वह यह कहने के योग्य होना चाहिए–

हमने शारीरिक शक्ति प्राप्त की है
हमने अपने मन की शक्ति प्राप्त की है
हमने अपने धर्म के प्रति श्रद्धा प्राप्त की है
हमने अपने जीवन की शक्ति प्राप्त की है
हम अपनी सबसे सुंदर भेंट चढ़ाने आए हैं।

यदि कोई अपने जीवन का तादात्म्य अपने राष्ट्र के जीवन के साथ न बना सके वह देशभक्ति को नहीं समझ सकता। जिस व्यक्ति में इस प्रकार के तादात्म्य से देशभक्ति की भावना जागृत हो गई हो वह अकेला ही नया आदर्श और नया राष्ट्र खड़ा कर सकता है। सभी साधना का मूल सत्य वही है–आध्यात्मिक विचारों से आत्मसात हो जाना जीवन-मृत्यु नींद और स्वप्न में उन्हें आध्यात्मिक विचारों से पूर्णतया प्रेरित होना। जब कोई व्यक्ति इस प्रकार से आध्यात्मिक विचारों की साधना में लीन हो और जब वह उस रास्ते से कहीं भी एक भी क्षण के लिए डगमगाए नहीं तब वह इस संसार में सिद्धपुरुष बन जाता है। जो राष्ट्र निर्माण के काम करना चाहते हैं, उन्हें साधना में सफलता प्राप्त कर सिद्धपुरुष बनना होगा। मातृभूमि की सच्ची तस्वीर का महसूस कर, व्यक्तियों को अपने व्यक्तिगत दुख-सुख, आशाओं और आकांक्षाओं को एक भक्त की भांति देश की बलिवेदी पर भेंट कर देना चाहिए। जब यह आत्मसमर्पण पूरा हो जाए तब ही राष्ट्र की यौवनता व्यक्ति के जीवन में प्रस्फुटित होती है। तभी उसके जीवन में निर्बाध और अटूट शक्ति का प्रवेश होता है। आदर्शवाद के स्पर्श से ही उसका जीवन अचानक परिवर्तित हो जाता है। मनुष्य अपने परिवर्तन से स्वयं आश्चर्यचकित हो जाता है और वह स्वयं से कह उठता है देखो मैं क्या था और अब क्या हो गया हूँ।

देशबंधु ने अपने जीवन के कुछ अंतिम वर्षों में इसी प्रकार की साधना की थी और अपना सब कुछ त्याग दिया था। उनके पास अपना कहने के लिए कुछ नहीं था।

और व अपना व्यक्तिगत चिन्ताओ स बिल्कुल मुक्त थ। उनक जीवन का प्रत्यक क्षण प्रत्यक कोना देश का चिन्ताओ आशाओ और आकांक्षाओ स भरा था। सभव म देशप्रेम क्या है? इस बात का उन्ह पूर्ण ज्ञान था। इसलिए देश का महान और असीम शक्ति का अभिव्यक्ति उनक द्वारा स्पष्ट होता था और व लोग क सामन एक नरसिंह क रूप में अवतरित हुए।

आज देशबंधु का दैहिक रूप हमार साथ नहीं है। लेकिन उनका आदर्शवाद उनका साधना अमिट है। उनका इच्छाशक्ति आत्मविश्वास और साधना अनेक स्त्रिया और पुरुषो क जीवन में प्रतिबिंबित होना चाहिए। जैस फूल का खुशबू कली स निकलकर फैलन लगता है उसी प्रकार भारतीय जीवन का शक्ति असख्य भारतीया क मस्तिष्क स व्यक्त होन क लिए मचल रही है।

कोई भी राष्ट्र मात्र एक कल्पना नहीं होता। यह एक वास्तविक सत्य है। जैस कि व्यक्ति एक वास्तविकता है इसी प्रकार राष्ट्र एक वास्तविकता है। व्यक्ति क बिना कोई राष्ट्र नहा हो सकता और राष्ट्र से हटकर किसी व्यक्ति का अस्तित्व नहीं होता। राष्ट्र का एक सामूहिक आत्मा एक संस्कृति एक अतीत और एक भविष्य होता है। एक राष्ट्र म अभावो और उपलब्धियो को भावना होता है। एक राष्ट्र जन्म भी लेता है और मरता भी है। जो इस बात को नहा समझता वह राष्ट्र का वास्तविक पहचान को नहा समझ सकता और इसक लिए देशभक्ति मात्र कोरे शब्द होत हैं। जिस व्यक्ति म देशभक्ति की वास्तविक भावना जागृत हो जाता है वह सकीर्ण व्यक्तिवाद का सीमाओ स ऊपर उठ जाता है और लोगो क सम्मुख जागृत राष्ट्र का जीवित प्रतीक बन जाता है। देशभक्ति स प्रेरित होकर वह अपना जीवन मातृभूमि को समर्पित कर देता है और इस प्रकार वह पूर्ण जीवन की उपलब्धि करता है। इस नए जीवन का मुस्कान म वह अपना सिर ऊंचा करक चल सकता है और पूरे विश्व क सामन निडर होकर कह सकता है

ईश्वर कर मुझमें नए जीवन का प्रेरणा और जागृत हो मुझ यह इस नए बंगाल स कहना है कि यदि तुम्हे वास्तविक व्यक्ति बनना है यदि तुम्हें नया राष्ट्र बनना है यदि स्वतत्र भारत का सपना साकार करना है तो आओ हम स्वय को इस साधना म लगाए।

शिलाग 1927

उत्तरी कलकत्ता के नागरिको के नाम

कलर्मेल लॉज

शिलांग 10.8.27

प्रिय बधुओ

गत वर्ष मैंने उत्तरी कलकत्ता के गैर मुस्लिम निर्वाचन क्षेत्र स बंगाल विधान परिषद का चुनाव लड़ा था। उस सबध में मैंने माडले जेल स गत 24 सितम्बर का एक पत्र

लिखा था। दुर्भाग्यवश वह पत्र आप तक नहीं पहुचा। किन्हीं अज्ञात कारणों से अधिकारियों ने उस पत्र को उचित स्थान पर पहुचाना ठीक नहीं समझा। मेरे पूछने पर कि यह साधारण सा पत्र उन्होंने क्यों दबा दिया मुझे कोई उत्तर नहीं मिला। अधिकाश ऐसे पत्र जो मैंने अपने चुनाव के सबध में कुछ लोगों को लिखे थे उन तक बिल्कुल नहीं पहुचे। मैं जब जेल में ही था एक सरकारी उच्च अधिकारी ने मुझे बताया था कि सरकार का इरादा यह है कि मैं किसी भी प्रकार का चुनाव कार्य जेल के अदर से न करू।

यद्यपि मेरा पत्र आप तक नहीं पहुचा लेकिन जेल की सीखचों के पीछे से मेरी मौन अपील आपके दिलों तक अवश्य पहुची होगी जिससे कि आप मुझे बावजूद एक ताकतवर विरोध के भारी बहुमत से जिता सके। जब एक दिन लगभग रात्रि के दस बजे हमने मैं और मेरे कैदी साथी ने माडले जेल की छोटी सी कोठरी में आपकी सफलता की इस खबर को सुना मेरा हृदय आपके प्रति कृतज्ञता से भर गया। लेकिन मेरे लिए यह सभव नहीं था कि मैं अपनी कृतज्ञता सार्वजनिक रूप से प्रकट करू। मैं आशा करता हू कि मेरे हृदय का मौन सदेश पहाडों नदियों जगलों को पार कर आप तक अवश्य पहुचा होगा।

मैं आपके प्रति विशेष रूप से एक और कारण से भी कृतज्ञ हू। ऐसे समय जब सरकार द्वारा मुझे असीम कष्ट पहुचाया जा रहा था और मुझे ऐसी विकट स्थिति में ला दिया गया था कि घनिष्ठ मित्रों ने भी मुझे न पहचानने का बहाना कर दिया। आपने मुझे इस नौकरशाही के शक्तिशाली तत्र की परवाह किए बिना अत्यधिक सम्मान दिया। इस प्रकार आप लोगों ने मुझ में जो विश्वास व्यक्त किया है वह न केवल मेरे लिए व्यक्तिगत सम्मान की बात है वरन सभी राजनैतिक बदियों के प्रति आपका सम्मान प्रकट करता है।

बदी के रूप में मेरे पास आपके प्रति अपना आभार प्रकट करने या देश के सामने खडी विभिन्न समस्याओं में आपकी सलाह मागने का कोई अवसर नहीं था। मैंने सोचा था कि रिहा होते ही तुरत मैं अपने दोनों कर्तव्यों को पूरा करूगा। मेरे जल्दी छूटने का कोई मौका नहीं था परतु जब मुझे अतत छोड दिया गया तब मैं शारीरिक रूप से अशक्त तथा चारपाई पर पडा व्यक्ति का ढाचा मात्र था। छूटने के बाद से मुझे जो कार्य आपके निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप में करना चाहिए था वह मैं अभी तक कर नहीं सका हू। इससे पहले कि मैं आपके साथ सपर्क करू। मुझे अपनी इच्छा के विरुद्ध अपने स्वास्थ्य सुधार के लिए यहा शिलाग आना पडा। यद्यपि मैं पहले से कुछ बेहतर हू। मुझे अपने कार्यक्षेत्र में जुटने के लिए कुछ समय लगेगा। इसीलिए आप तक पहुचने के लिए मैंने यह पत्र का रास्ता चुना। मैं अपने जीवन में उस सम्मान को कभी नहीं भूल सकता जो आपने मेरे छूटने पर प्रदर्शित किया तथा मेरे शीघ्र स्वास्थ्य सुधार के लिए अपनी शुभकामनाए दीं। आपने मुझे अपनी सेवा का अवसर देकर अत्यधिक सम्मान दिया है। मैं केवल ईश्वर से प्रार्थना कर सकता हू कि मैं इस प्राप्त अवसर का समुचित लाभ उठा सकू। मैं आपके स्नेह और प्यार से अभिभूत हू विशेषकर मुझ में व्यक्त विश्वास से। मेरी ईश्वर से एक ही प्रार्थना है कि आप द्वारा दिए आदर और सम्मान के योग्य सिद्ध हो सकू।

आपके आशीर्वाद और शुभकामनाओं से मैं अब स्वास्थ्य लाभ कर रहा हूं। यद्यपि इसमें कुछ थोड़ा समय लगेगा, जब मैं पूर्णतया स्वस्थ हो जाऊंगा। लेकिन शारीरिक स्वास्थ्य एक बात है और मानसिक शांति दूसरी। वास्तव में, जब हमारे अनेक देशभक्त नवयुवक बिना सजा के जेलों में बंद हैं, जब असंख्य नर और नारी अपने मर्मांतक रिश्तेदारों से अलग होकर जेलों के दुख झेल रहे हैं, जब हमारे असंख्य घर बच्चों और भाइयों, पति और पिता की अनुपस्थिति में वास्तव में सूने हो गए हैं तब कोई भी देशवासी शांति से कैसे रह सकता है। बंगाल के राज्यपाल ने मुझे सूचित किया है कि यदि मैं परिषद के आगामी सत्र में उपस्थित न भी रहूं तब भी मेरा नाम सदस्यों की सूची से काटा नहीं जाएगा। लेकिन जब अगले सत्र में कैदियों का मामला सामने आएगा मैं अपने कर्त्तव्य पालन की दृष्टि से वहां होना चाहता हूं। मैं नहीं जानता कि मेरे डाक्टर मुझे इस बात की आज्ञा देंगे। फिर भी मैं कुछ दिनों के लिए कलकत्ता में रहना चाहूंगा। जिससे कि अपने लोगों का एक विश्वासी प्रतिनिधि होने के नाते कम से कम कुछ तो कर सकूं। मैंने कुछ प्रश्नों और विषयों को उठाने के नोटिस भेजे हैं। इसी आशा से कि मैं अगले सत्र में उपस्थित रह सकूं। यदि फिर भी डाक्टर मुझे जाने की आज्ञा नहीं देते तो मैं यथाशीघ्र स्वास्थ्य लाभ करने का प्रयत्न करूंगा, जिससे कि मैं जनसेवा के लिए यथाशीघ्र उपलब्ध हो सकूं। मैं चारों तरफ आप लोगों में जागृति की एक नई लहर देख रहा हूं। यह ठीक भी है कि हम सब लोग तैयार और चुस्त रहें, जिससे कि हम देश की पुकार पर एक दम खड़े हो सकें, जो हमें शीघ्र ही जीवन के बड़े संघर्ष के रूप में सुनाई देगी।

मुझे इससे अधिक और कुछ नहीं कहना। कृपया मेरी हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें।

आपका ही

भवदीय

'इंटरनेशनल टाइम्स' के संपादक के नाम पत्र,

13 अगस्त, 1927

"मेरा ध्यान आपके 11 अगस्त के अंक में मेरे बारे में प्रकाशित एक वक्तव्य की ओर आकर्षित किया गया है। आपकी रिपोर्ट में वास्तव में कोई सच्चाई नहीं है कि मैं भारत के लिए स्वराज संविधान बनाने में व्यस्त हूं। मुझे अचंभा है कि आपने यह आश्चर्यजनक सूचना कहां से ली। मैं ने सोचा था कि यह सामान्यतः सभी को मालूम है कि मैं यहां पर स्वास्थ्य लाभ के लिए आया था। आप अनुमान लगा सकते थे यदि मैं आप द्वारा इंगित इस प्रकार के कार्य करने के लिए ठीक होता तो मैं अपना बहुमूल्य समय इस सुंदर पर्वतीय स्थल पर नष्ट नहीं करता जबकि मेरे बहुत से साथी जेल में सड़ रहे हैं। मैं चाहता हूं कि अखबार इस प्रकार की खबरें प्रकाशित करने से पहले सत्यता की जानकारी लेने का कष्ट करें। जिस दिन भी मैं काम करने के योग्य हो जाऊंगा, मेरी रत्ती भर भी इच्छा शिलांग में रहने की नहीं है। मैं अनुगृहीत रहूंगा यदि

आप यह अपने आगामी अंक में छाप सकें।

संपादक ने उत्तर देते समय खेद प्रकट किया कि इस समाचार से श्री सुभाष बोस की भावनाओं को ठेस पहुंची। संपादक ने आगे लिखा कि सुभाष बोस भारत में एक *अकेले व्यक्ति हैं जो ऐसा बिल बना सकते हैं जिसे सभी का समर्थन प्राप्त हो* -एसोसिएटेड प्रेस।

इंटरनेशनल टाइम्स में प्रकाशित खबर (एसो. प्रेस द्वारा दी गई) इस प्रकार थी–

शिलांग, अगस्त 11 'इंटरनेशनल टाइम्स' को मालूम हुआ है कि श्री सुभाष बोस भारत के लिए एक स्वराज संविधान लिखने में व्यस्त हैं। कहा जाता है कि संविधान में स्वराज सरकार के अंतर्गत स्थानीय रियासतों तथा उनके शासकों के साथ संबंधों पर विशद चर्चा होगी। कहा जाता है कि वे संवैधानिक शासक होंगे और उनको रियासतों का राजकाज चलाने के लिए निर्वाचित परिषद होगी जबकि प्रत्येक रियासत का एक प्रतिनिधि विधानसभा में होगा।

यह ड्राफ्ट श्री सुभाषचंद्र बोस, श्री एन.सी. बोरदोलाई तथा श्री रोहिणी कुमार हातीबरूआ द्वारा संयुक्त रूप से हस्ताक्षरित होगा जो एक संघीय कामनवेल्थ बिल के रूप में होगा और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सामने रखा जाएगा। देशी रियासतों के अतिरिक्त लगभग पंद्रह या अधिक सूबे भाषायी आधार पर बनाए जाएंगे जिनका प्रतिनिधि संघीय असेंबली में होगा और जो सम्राट के प्रति अपनी निष्ठा रखेंगे।

यह बिल ऐनी बेसेंट के कामनवेल्थ बिल से इस मायने में थोड़ा अलग है कि इसमें देशी रियासतों को सम्मिलित किया जाएगा तथा इसके अंतर्गत थलसेना और नौसेना के मामलों में असेंबली का सीधा दखल होगा। अलग-अलग मतदाताओं की पद्धति को समाप्त कर एक संयुक्त मतदाता प्रणाली होगी– "एसोसिएटेड प्रेस"।

---

14 अगस्त, 1927 को वार्ड 72 के करदाताओं से अपील

मैं वार्ड 12 के करदाताओं से हृदय से अपील करता हूं कि वे कांग्रेस के प्रत्याशी *श्रीयुत अवनी कुमार दत्त को वोट दें। कोई भी सदस्य कितना ही योग्य क्यों न हो,* म्युनिसिपल सुधार या करदाता की सेवा तब तक नहीं कर सकता जब तक कि उसके पास पार्टी का बहुमत न हो, क्योंकि निगम के सभी काम बहुसंख्यक मतों से निश्चित किए जाते हैं। केवल बहुसंख्यक दल ही, सफलतापूर्वक शहर के सुधार के कार्य तथा करदाताओं के लाभ के कार्य शुरू कर सकता है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी के अपने अनुभवों के आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि *निगम में एक सुनिश्चित प्रगतिशील नीतियों तथा अनुशासित बहुसंख्य पार्टी के अभाव* में म्युनिसिपल कार्यकारिणी कोई सक्षम कार्य नहीं कर सकती एक बिखरा हुआ निगम अपना कोई विचार नहीं रखता, उसकी कोई निश्चित नीति नहीं होती तथा वह अपनी कार्यकारिणी को कोई नेतृत्व नही दे सकता। इसलिए स्थानीय स्वशासन संस्थाओं में इंग्लैंड सहित सभी प्रजातांत्रिक देशों में अपने एक निश्चित कार्यक्रम वाली सुनिश्चित पार्टियां

होती हैं।

कलकत्ता में एक अनुशासित और सुनिश्चित कार्यक्रम वाली एकमात्र पार्टी कांग्रेस म्युनिसिपल पार्टी है। इसलिए म्युनिसिपल सुधार और विकास के कार्यों की उम्मीदें इसी में केंद्रित हैं। यह वार्ड 12 के करदाताओं का कर्तव्य है कि इस पार्टी के प्रत्याशियों का निर्वाचन कर इसे मजबूत करें।

वर्तमान महापौर (मेयर) हमारे दिवंगत नेता द्वारा अपने उद्घाटन भाषण में तय की गई नीतियों को क्रियान्वित करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। श्रीयुत नवीन कुमार दत्त का चुनाव, हमारे अपने क्षेत्र में कांग्रेस म्युनिसिपल पार्टी में देशबंधु द्वारा निर्धारित नीतियों में तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में विश्वास का मत होगा।

कलकत्ता कांग्रेस का गढ़ रहा है और चाहे वह म्युनिसिपल कमेटी का मामला हो या परिषद के चुनाव या सविनय अवज्ञा आन्दोलन का कलकत्ता ने न केवल बंगाल को वरन् पूरे भारत को नेतृत्व दिया है।

क्या वार्ड 12 के करदाता इस अवसर का लाभ नहीं उठाएंगे तथा कांग्रेस के पक्ष में मत देकर कलकत्ता की प्रतिष्ठा बना कर रखेंगे?

---

24 अगस्त, 1927 को 'फारवर्ड' को दिया गया वक्तव्य

मैं यह स्वीकार करता हूं कि बंगाल विधान परिषद के समक्ष महामहिम गवर्नर द्वारा दिए गए अपने अभिभाषण में बंदियों के बारे में दिए गए वक्तव्य से मैं निराश हुआ हूं। यदि मुझे ज़रा भी इस बात का संदेह होता कि इस तरह का वक्तव्य आने वाला है तो मैं इस सत्र के पहले दिन उपस्थित रहने की भी चिंता नहीं करता। यह वक्तव्य सरकार के सदस्यों द्वारा दिए गए किसी भी पहले बयान से अलग नहीं है। वही पुरानी घिसी पिटी बातें हैं। मेरे विचार से मैं बंगाल की उन भावनाओं को अभिव्यक्ति दे रहा हूं जब मैं यह कहता हूं कि महामहिम से आशा थी कि वे बंगाल की जनता, बंदियों पर विशेषकर, लार्ड लिटन की सरकार द्वारा की गई ज्यादतियों को पूरे तौर से ठीक करने का साहस दिखाएंगे।

मुझे अफसोस है कि महामहिम ने उन असंख्य बंदियों की कोई चर्चा नहीं की जो बंगाल के अलग-अलग भागों में बंद हैं तथा जो अधिकांशतः अस्वास्थ्यकर स्थानों में हैं। मैं सदा इस मत का पक्षधर रहा हूं कि वर्तमान परिस्थितियों में नज़रबंदी जेल में बंद होने से भी बदतर है। परिणामस्वरूप, महामहिम की यह आशा कि वर्ष पूरा होने से पहले ही, अनेक बंदियों को नज़रबंदी में स्थानांतरित कर दिया जाएगा, कोई भी आशा या उम्मीद नहीं जगा सकती। जब तक कि सभी पटल पर सभी आरोप के विरुद्ध सिद्ध न हों, बंगाल के लोगों को पूरी तरह से अपनी शक्ति और संसाधनों पर निर्भर होना पड़ेगा, यदि वे इन कैदियों की रिहाई शीघ्र चाहते हैं।

'भूल जाओ और क्षमा करो'

बंगाल विधान परिषद में एक पखवाड़ा पहले हुई लोकप्रिय जीत उन सबके लिए एक संकेत होना चाहिए, जिनके हृदय में देशहित है और उन्हें यह सोचने को मजबूर कर देना चाहिए कि इस जीत के क्या-क्या सबक हैं। मुझे तो यह एक स्पष्ट संकेत है कि लोगों की इच्छा शक्ति क्या कुछ नहीं कर सकती! यदि केवल कांग्रेसी ही आपस में एकता का समझौता कर लें तथा उन संघों और समुदायों से दोस्ती कर लें जो कांग्रेस से बाहर चले गए। इसलिए यह समय अत्यधिक अच्छा है जब हम अपने घर को व्यवस्थित तथा गैर कांग्रेसी संगठनों के साथ मित्रता और भाईचारे के संबंध स्थापित करने की दिल से कोशिश कर सकते हैं। हम इस तथ्य से आंख नहीं फेर सकते कि बंगाल में कांग्रेस आज वह नहीं है जो 1925 के शुरू में थी। हममें आपस में ही वैमनस्य बढ़ रहा है और कांग्रेस के कुछ अनुभवी सेनानी, भक्त और सहानुभूति रखने वाले अब समाप्त हो गए हैं।

हमारे दुख और दुर्भाग्य को बढ़ाने के लिए, बंगाल भी पूरे भारत के साथ साथ सांप्रदायिक द्वेष की चपेट में आ गया है लेकिन समय के संकेत अत्यंत आशापूर्ण हैं। राजनैतिक क्षितिज स्पष्ट हो रहा है। अब हम जागृति की दहलीज पर हैं। लोग छोटे-छोटे झगड़ों से तंग आ गए हैं और सांप्रदायिकता की ताकतें भी थकान की स्थिति में हैं। हमारे सामने महत्वपूर्ण भविष्य है। राष्ट्रीय जीवन तथा सुख समृद्धि की विशेष महत्ता के मामलों का अब सामना करना है और इन्हें आगामी कुछ वर्षों में निपटाना है। आने वाले समय और स्थिति का सामना केवल एक मजबूत और संगठित कांग्रेस ही कर सकती है। इसलिए हमें पूरे साहस से आगे बढ़ना चाहिए और हमारा सिद्धांत "भूल जाओ और क्षमा करो" को अपनाकर सभी समूहों और सांप्रदायिक झगड़ों से ऊपर उठना चाहिए। अपने हृदय की विशालता तथा सहानुभूति के साथ आओ हम अपने पुराने साथियों और दोस्तों को फिर से अपने साथ ले आएं।

हमें एकबार फिर से और अधिक कोशिश करनी चाहिए कि वे जो अपने किन्हीं कारणों से अभी तक अलग हैं अथवा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की हिंदू-मुस्लिम एकता में संकोच करते हैं उन्हें फिर से अपने साथ मिलाएं। यह एकता केवल कहने के लिए नहीं होनी चाहिए वरन् सच्चे विश्वास और सद्भावना पर आधारित होनी चाहिए। इसे हमें फिर से स्थापित करना है। संक्षेप में हमें कांग्रेस को एक बार फिर से वही महान संस्था बनाना है जो देशबंधु की विरासत थी, जब 16 जून, 1925 को उन्होंने इस नश्वर संसार को छोड़ा। अपने उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमें सभी रास्ते खोजने हैं और वह सब कुछ करना है जो मानवीय रूप से संभव हो।

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पहला कदम बंगाल प्रांतीय कांग्रेस कमेटी में एकता और पारस्परित सद्भावना स्थापित करनी है। अगला कमेटी के चुनाव समीप हैं और इनके बाद निर्वाचित प्रतिनिधियों की आम सभा में लगभग 60 सदस्यों को सहनामित (को-आप्ट) करना है। मैं बंगाल में सभी कांग्रेसियों से निवेदन करता हूं कि चुनावों तथा सदस्यों को सहनामित करते समय इस बात का ध्यान रखें कि सभी ईमानदार वफादार और देशभक्त

कांग्रेसी ही चुने जाएं। बिना इस बात का ध्यान रखे कि उनके किसी विषय विशेष पर क्या विचार हैं, वे किस समूह से संबंधित हैं अथवा गत दो वर्षों के दौरान इन के समूहों में उनकी कुछ भी भूमिका रही हो। आने वाले कुछ वर्षों में हमारे कंधों पर इतना अधिक उत्तरदायित्व है कि देशहित में कांग्रेस एक भी कार्यकर्ता को खोने का जोखिम नहीं उठा सकती। हमें कांग्रेस के नव वर्ष में विश्वास, सद्भावना और प्रेम से प्रवेश करना चाहिए, जिससे कि हम बदले में वही पाने की आशा कर सकें।

---

22 सितंबर 1927 को सरकार द्वारा बंदियों को बिना शर्त रिहा करने के बारे में अपनाई नई चालों पर वक्तव्य

एसोसिएटेड प्रेस ने अपने हाल ही के एक वक्तव्य में लिखा है कि बंगाल सरकार कैदियों की रिहाई के बारे में सर अलेक्जेंडर मुडीमैन द्वारा बनाई गई नीति पर कार्य करने का विचार कर रही है। जो भी कदम बंगाल सरकार उठाना चाहे इस अवसर पर जनता के दृष्टिकोण पर विचार करना आवश्यक है।

बंदियों को बिना शर्त रिहा न करने की दृष्टि से पुलिस ने अभी हाल में एक नई चाल चली है। वे अब कैदियों को जेलों से बाहर, *अस्वास्थ्यकर तथा मच्छरों से भरे स्थानों* तथा बंगाल की खाड़ी के द्वीपों में नजरबंद कर रहे हैं। जहां उन्हें ठीक से खाना, चिकित्सा सुविधा तथा जिंदगी की दूसरी न्यूनतम आवश्यकताएं भी उपलब्ध नहीं होतीं। इस तरह की नजरबंदी को सरकारी भाषा में 'ग्रामीण निवासी' तथा बंगाल की असेंबली और विधान परिषद् दोनों में इसे 'रिहा करना' कहा जाता है यद्यपि यह सच्चाई को तोड़ना मरोड़ना है। कैदियों को रोज मीलों चलकर नजदीक के थाने में रिपोर्ट करना पड़ता है और उन्हें भत्ते के रूप में बहुत कम राशि, जो किसी मजदूर के लिए भी कम पड़ती है, दी जाती है। इससे उनकी कठिनाई और अधिक बढ़ जाती है। जिले के नगर काफी दूर हैं और जिला मुख्यालय की पुलिस इतनी उदासीन है कि अचानक आई कठिनाई के समय कैदियों को मदद या सलाह भी नहीं मिलती। बंदियों को स्थानीय लोगों से मिलने-जुलने की मनाही है। उदाहरण के लिए बंदी श्रीयुत तारण भट्टाचार्य को एक गांव के लड़कों के फुटबाल मैच में रेफरी बनने के लिए पकड़ा गया था। इससे भी आगे असहनीय कठिनाइयों से विवश होकर यदि बंदी अपने अधिकारियों को पूर्व सूचना देकर अपने दुखों की कहानी जिला अधिकारियों को बताने के लिए मुख्यालय से बाहर जाते हैं, तब उनका चालान हो जाता है और कड़ी सजा भुगतनी पड़ती है जैसे कि बंदी श्रीयुत परमानंद डे को भुगतनी पड़ी। इसी दृष्टि से जनमत इस तरह की नजरबंदी की कड़ी भर्त्सना करता है।

पुलिस ने नजरबंदियों को बंगाल से बाहर भेजने की नीति अपनाई है। जब वे देखते हैं कि कुछ आवश्यक कारणों से उनसे रिहा करना रोका नहीं जा सकता और वे स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए कोई शर्त रखना पसंद नहीं करते। बाहरी कैदी केवल नाममात्र की आजादी का आनंद ले सकते थे क्योंकि पुलिस द्वारा उनके बारे में बार-बार जांच पड़ताल करना और पीछा करना आदि से इनका जीवन अत्यंत कष्टदायी हो गया था और पुलिस

की *गतिविधियों के कारण लोग* इन नजरबंदियों से जुड़ना पसद नहीं करते थे जैसा कि श्रीयुत जीवन लाल चटर्जी के साथ अल्मोडा में हुआ था। बाहर किए गए कैदियों की कठिनाई सैकडों गुना बढ जाती है जैसाकि श्रीयुत जदु गोपाल मुखर्जी के मामले में सरकार ने *गुजारा भत्ता स्वीकार नहीं किया और* पुलिस की *दुराग्रहपूर्ण और तग करने वाली नीति* के कारण उनके लिए बगाल से बाहर रहकर रोजी-रोटी कमाना असभव है।

यदि कैदी लोग इतने ही खतरनाक और अवांछित प्राणी हैं तो यह समझ में नहीं आता कि बगाल सरकार दूसरे राज्यों को उनको अपने यहा रखने के लिए क्यों मजबूर करती है। बदी प्रत्यक्षीकरण अधिनियम को रोके रखने तथा अनजाने, बिना मुकदमा चलाए लोगों को बद रखने का क्या औचित्य है? सरकार मुकदमा नहीं चला रही, क्योंकि उनके विरुद्ध कोई केस नहीं बन रहा। लार्ड लिटन जब गर्वनर थे, उनका कथन था कि नागरिकों को बिना मुकदमा चलाए बद किया हुआ है इसलिए नहीं कि उन्होंने कोई अपराध किया है वरन् इसलिए कि उन्हें अपराध करने से रोकना है। इसी तरह के वक्तव्य पुलिस *अधिकारियों द्वारा श्रीयुत जदु गोपाल मुखर्जी जैसे नजरबंदियों के लिए दिए गए हैं* जिससे हम अपराधी अधिनियम संहिता को सीख सकें।

और अधिक बदीकरण का औचित्य देने में असफल रहने पर पुलिस ने अब टूटे रिवॉल्वर और खाली बम उठाने शुरू कर दिए हैं जिससे सिद्ध कर सकें कि षड्यत्र अभी भी चल रहा है। वास्तव में गत कुछ वर्षों के दौरान जब भी रिहाई की बात आई है और जब भी विधानसभा या बगाल विधान परिषद में नजरबंदियों की रिहाई का मामला उठा है तभी कहीं से कुछ भले लोग हाथ में शस्त्र लेकर पकडे जाने के लिए तैयार हो गए हैं और तभी अचानक कहीं से बम फैक्टरी के पकडे जाने की खबर मिली है। इन फैक्ट्रियों में कुछ रसायन मिला जो सब जगह आसानी से मिल जाता है *और कुछ टूटे रिवाल्वर, जो इस्तेमाल करने वाले के लिए अधिक खतरनाक हो सकते* हैं बजाय उसके जिनको इसका निशाना बनाया जाएगा जैसा कि पुलिस कि गवाही ने दक्षिणेश्वर बम केस में कहा था। ये सब खोजी गई वस्तुए यद्यपि व्यर्थ की थी परतु मुकदमा चलाने और सजा दिलवाने के लिए पर्याप्त थी। आर्म्स एक्ट के अतर्गत एक क्रांतिकारी व षड्यत्र सबधी साधारण केस को सिद्ध करने के लिए पुलिस उन्हें 'राजनैतिक केस' कहकर एग्लो इडियन अखबारों में ज्ञापित कराती है और हाल ही के एक तथाकथित राजनैतिक केस में एक पुराना पुलिस का एजेंट एक मुखबिर के रूप में पेश हुआ।

गत कुछ वर्षों के दौरान पुलिस ने कुछ एजेंटों को नियुक्त किया है जिनका उपयोग एक कृत्रिम क्रांतिकारी आदोलन खडा करने में किया है जिससे कि इटेलिजेंस ब्रांच के *अस्तित्व को उचित ठहराया जा सके, यद्यपि इस ब्रांच को समाप्त करने की सिफारिश* कुछ साल पहले बगाल रिट्रेंचमेंट कमेटी ने की थी। मैं अपना यह वक्तव्य पूरे उत्तरदायित्व के साथ दे रहा हू और इसको सिद्ध करने की जिम्मेदारी भी लेता हू। यदि एक *निष्पक्ष* कमेटी की नियुक्ति हो और कैदियों और जनता को बिना किसी संकोच या कठिनाई के गवाही देने के लिए अनुमति दी जाए।

मैं यह नहीं कहता कि गवर्नर-इन-कौंसिल एजेंटों की इस चाल मे *शामिल है या* फिर सभी पुलिस अधिकारी इससे परिचित या इसमें शामिल हैं। वास्तव मे यह घृणित

पद्धति विदेश से आई है क्योंकि महायुद्ध के दौरान भी बंगाल में इसे कोई नहीं जानता था जब वास्तविक क्रांतिकारी आन्दोलन चल रहा था और पुलिस उसमें निरत रहा था। यह कुछ ही दिमागदार पुलिस अधिकारियों का काम है और पुलिस के ही कुछ लोग न केवल इसके विरोधी रहे हैं वरन् बंगाल अध्यादेश को जारी करने के भी वे विरोधी थे। अब यह पद्धति इतनी पक्की हो गई है कि राजनैतिक अपराध को भी पुलिस अपने इच्छानुसार तोड़ मरोड़ देती है यहां तक कि शस्त्र और बम की फैक्टरी भी जहां चाहे वहां दूढ़ी जा सकती है। जब हमारे बंद रहने के दौरान हमने पुलिस की इन चालों को देखा तो हमें महसूस हुआ कि कहीं भी क्रांतिकारी षड्यंत्र सिद्ध किया जा सकता है और अध्यादेश की अवधि कयामत तक खींची जा सकती है और इस कारण मैं हमने अपनी रिहाई की उम्मीद छोड़ दी। व्यक्तिगत रूप से मुझे संदेह है कि हम इस तारीख में छोड़ दिया गया होता यदि दार्जिलिंग का वातावरण अचानक बदल न गया जिसके कारण स्पष्ट हैं।

गत चार पांच सालों में बंगाल पुलिस राज का यंत्रणा से गुजरा है। गवर्नमेंट हाउस पूरी तरह से लाल बाजार और इलिसियम रो के सामने से रहा है। इसमें पुलिस की प्रशंसा की जाएगी कि इस दौरान उन्होंने राजतंत्र को मुश्किल से ही सही चलाकर रखा। यह गवर्नर सहित उच्च अधिकारियों में डर पैदा कर सका। उन्हें समझाया गया कि उनके जीवन को खतरा है यदि कुछ लोगों को फौरन जेल में नहीं डाला जाएगा।

लार्ड लिटन से जनता की शिकायत यह है कि उसने केवल इस कहानी का पुलिस का हिस्सा ही सुना और न तो किसी भी भले व्यक्ति से पूरे तथ्य जानने का कोशिश की और न ही किसी ऐसे व्यक्ति पर विश्वास किया जो सरकार का पिट्ठू न हो। लेकिन दूसरी तरफ वह पुलिस की तथा विशेषकर पुलिस अधिकारियों की इतनी खुली और भद्दी तारीफ करने में व्यस्त है कि जनभावनाओं को भी ठेस पहुंची।

पुलिस अधिकारियों को कैदियों की मानसिक स्थिति देखने के लिए भेजना और उनके बाद यदि वे एक बांड भर दें उन्हें रिहा करने की सरकार की वर्तमान नीति बहुत ही घृणास्पद है। कैदी लोग यह महसूस करते हैं कि उन्होंने कोई गलती नहीं की है और मेरी तरह वे कभी पश्चात्ताप भी नहीं करेंगे। इस शर्त पर रिहा करना एक तरह से जले पर नमक छिड़कना है और मेरा सरकार से अनुरोध है कि वे इस अनावश्यक अपमान से कैदियों को बचाए।

इसके अतिरिक्त पुलिस अधिकारियों को कैदियों की मानसिक स्थिति जांचने के लिए भेजना व्यर्थ है क्योंकि उनकी दृष्टि में पुलिस ही उनकी इस दुखद स्थिति के लिए प्रमुख रूप से जिम्मेदार है और इन पुलिस अधिकारियों का मात्र दिखाई देना ही इन कैदियों को जो इनमें सबसे अधिक गंभीर और संवेदनशील भी हैं अत्यधिक कष्टकारक है।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि जब भी सरकार कोई सही कदम उठाती है। वे कभी उस अच्छे ढंग से और खुलकर क्रियान्वित नहीं करती। इस मामले में उनका 'ग्रामीण नजरबंदी', 'सशर्त रिहाई' और 'बाह्य निष्कासन' से कोई अर्थपूर्ण उद्देश्य पूरा नहीं होगा और इससे राजनैतिक तनाव कुछ कम होने में सहायता नहीं मिलेगी। यदि सरकार वास्तव में एक उचित वातावरण पैदा करने तथा जनता की खीझ कम करने की इच्छुक

है तो एक बार पूरे मन से साहस बटोर कर क्यो नहीं जेल के दरवाजे खुले कर देती। यदि यह वक्तव्य नीति की तरह अपना लिया गया तो इस पर कभी खेद नही होगा। जब तक यह नहीं होता, कोई भी नेता कितना ही प्रभावशाली क्यों न हो बगाल में जनता के सामने सहयोग की बात नही कर सकेगा।''

एस.सी.बोस, एस.सी. मित्र तथा डा. जे. एन. दासगुप्त ने यह वक्तव्य एक कैदी की संपत्ति को खतरे में देखकर जारी किया था, 13 नवंबर, 1927

यह सुनने पर कि 1818 के रेगुलेशन III के अतर्गत बद श्रीयुत बिपिन बिहारी गागुली की पैतृक सपत्ति खतरे में है, हम अधोहस्ताक्षरित ने, पूरे तथ्य जानने की दृष्टि से 3 नवबर, 1927 गुरुवार को श्रीयुत गागुली के गाव हालीशहर 24 परगना जिले में स्थित का दौरा किया।

हमने देखा कि श्री गागुली के घर की मरम्मत नही हुई है और इसका कुछ हिस्सा टूटी-फूटी हालत में दिखाई दिया। घर पूरी तरह जगल घना हुआ था लेकिन इसके एक भाग की सफाई हाल ही में श्रीयुत गागुली के मित्रों तथा उसी गाव के उनके हितैषियों ने की भी थी। घर के एक हिस्से में उनके पडोसी तथा हुक्मचद जूट मिल्स मे काम करने वाले बाबू जोगेंद्र नाथ घोषाल रहते थे। हम हालीशहर जानबूझकर छुट्टी के दिन गए थे और जोगेन बाबू को पहले से सूचित कर दिया गया था। श्री गागुली के एक प्रतिनिधि को भी घर पर रहने के लिए कह दिया गया था जिससे कि उनसे भेंट की जा सके। हमारे पहुचने पर हमें जोगेन बाबू के घरवालों ने बताया कि वे अपने कार्यालय गए हैं और घर पर नहीं है, लेकिन बाद में हमें मालूम हुआ कि वह पूरे समय घर में ही थे और जैसे हम लोग हालीशहर से कलकत्ता के लिए रवाना हुए तभी वे बाहर आ गए।

जोगेन बाबू श्री गागुली के घर में उस दौरान से रह रहे हैं जब से वह जेल में हैं। हमें मालूम हुआ कि उन्होंने एक पाई भी श्री गागुली को या उनके किसी प्रतिनिधि को किराए के रूप में नहीं दी थी और न ही उन्होंने म्युनिसिपल टैक्स ही जमा कराया था। हमें यह भी मालूम हुआ कि म्युनिसिपल टैक्स कुछ वर्षों से अभी देना बाकी है। कुछ समय पहले श्री गागुली ने सरकार से अपने घर की मरम्मत के लिए 1000 रुपये के अनुदान की माग की थी। इसके बाद हालीशहर में एक पुलिस जाच-पडताल हुई और हमें मालूम हुआ कि जिस पुलिस अधिकारी को यह जाच पडताल सौंपी गई थी उन्होंने सरकार को रिपोर्ट दी कि श्री गागुली ने अपना घर किसी भद्र पुरूष (बाबू जोगेंद्र नाथ घोषाल) को किराए पर दिया था और वे म्युनिसिपल टैक्स भी दे रहे थे। हम यह जानने की स्थिति में नहीं हैं कि पुलिस रिपोर्ट के बारे में यह अफवाह ठीक है या नहीं, लेकिन हमें यह कहने में सकोच नहीं कि इस तरह की रिपोर्ट - यदि यह पुलिस द्वारा भी दी गई है तो, बिल्कुल गलत है और श्री गागुली के अपने घर की मरम्मत के लिए मागी गई धनराशि के दावे को समाप्त करने की दृष्टि से बनाई गई

थी। हम यह कहे बगैर नहीं रह सकते कि गांव के अनेक सम्मानजनक और प्रभावशाली व्यक्तियों में यह धारणा थी कि जब भी किसी पुलिस अधिकारी ने श्री गांगुली के घर के मामले में जांच-पड़ताल की वह ऊपरी तौर पर ही की और किसी भी ऐसे व्यक्ति से संपर्क नहीं किया जिससे कोई महत्वपूर्ण सूचना मिल सकती है।

हमने यह भी देखा कि ज्ञान बाबू, श्री गांगुली के घर के एक भाग को ही अवैधानिक तरीके से हथियाकर ही संतुष्ट नहीं थे उन्होंने उनकी जमीन का एक हिस्सा भी हथिया लिया और इसे चारों तरफ से दीवारों से घेर लिया था। एक बार पहले भी उन्होंने इस तरह का अतिक्रमण किया था परन्तु उस समय श्री बिपिन गांगुली के बड़े भाई श्री ललित मोहन गांगुली ने वह हटवा लिया था। वह उस समय जीवित थे।

हमें बताया गया कि श्री गांगुली के मित्रों ने बार-बार ज्ञान बाबू को श्री गांगुली के घर तथा उनकी जमीन पर किए गए अवैधानिक अधिग्रहण को छोड़ने की प्रार्थना की लेकिन सब व्यर्थ। चूंकि अब श्री गांगुली राज्य सरकार के मेहमान हैं तब यह सरकार का कर्तव्य है कि उनकी संपत्ति की रक्षा उनकी गैरहाजिरी में करे। इसलिए हम 24 परगना के जिला मजिस्ट्रेट तथा पुलिस अधीक्षक का ध्यान इसी शहर में श्री गांगुली के घर और जमीन पर गैर वैधानिक अधिग्रहण की ओर आकर्षित करना चाहेंगे।

एक और महत्वपूर्ण मामला है जिस पर हम सरकार और जनता दोनों का ही ध्यान खींचना चाहेंगे। श्री बिपिन गांगुली के पकड़े जाने के समय उनके नजदीकी रिश्तेदारों में एक बड़े भाई था। उनके भाई का एक पत्नी और बच्चा था। बड़े भाई की मृत्यु जून, 1924 में बिपिन बाबू के पकड़े जाने के पश्चात हो गई थी। उनकी मृत्यु के बाद उनकी भू संपत्ति की देखभाल करने वाला कोई नहीं रह गया था। जब श्री बिपिन गांगुली जेल में थे यह निश्चित करना भी मुश्किल था कि क्या संपत्ति, जमीन या कुछ और उनके पास था। इस जांच पड़ताल से जो हम अब तक पूरी कर चुके हैं, ऐसा लगता कि श्री गांगुली के पास नदिया जिले के चकदहा थाना के कुल्पिया गांव में तथा 24 परगना में नैहाटी, आमडांगा और बैरकपुर थाना में कुछ भू संपत्ति था। नैहाटी थाना में उनके पैतृक घर के अतिरिक्त भू संपत्ति थी। यह विश्वस्त रिपोर्ट के लिए इससे पर्याप्त कारण है कि उपरोक्त के अतिरिक्त श्री गांगुली के पास और भी भू संपत्ति थी।

नदिया जिले में बंदोबस्ती का कार्य कुछ समय पहले पूरा हो चुका था और यह मालूम नहीं कि उस क्षेत्र में श्री गांगुली की संपत्ति उनके नाम में चढ़ी या नहीं। 24 परगना जिले में बंदोबस्ती का काम अभी चल रहा है और श्री गांगुली के हितों की देखभाल करने वाला कोई नहीं है। उनके कुछ रिश्तेदार मित्र हैं जो अपनी तरफ से यथासंभव कोशिश कर रहे हैं परन्तु उन्हें कोई खास उपलब्धि की उम्मीद नहीं क्योंकि उन्हें यह मालूम ही नहीं कि श्री गांगुली की भू संपत्ति कहां-कहां और कितनी थी? इन कठिनाइयों के कारण श्री बिपिन गांगुली ने कुछ महीने पहले सरकार को एक आवेदन दिया, जिसमें उन्होंने सरकार से बंदोबस्ती के दौरान घर जाने की आज्ञा मांगी, जिससे कि वे अपने हितों की देखभाल कर सकें। इसका कोई उत्तर नहीं दिया गया और इस दौरान यह खतरा है कि श्री गांगुली की अनुपस्थिति में उनकी भू संपत्ति किसी और के नाम कर दी जाए। हम इसलिए सरकार तथा विशेषकर बंदोबस्त अधिकारी का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहेंगे।

हमे मालूम है कि सी आई डी के डी आई जी मि० लोमैन बर्मा बेसिन जेल में पिछली पूजा की छुट्टियों के दौरान श्री गागुली से मिले थे। तब उन्होंने डी आई जी को अपने पारिवारिक मामलों के बारे में सब कुछ बताया था। मि० लोमैन ने इस मामले में कुछ करने का वायदा किया था लेकिन अभी तक कुछ नहीं हुआ है और इस दौरान श्री गागुली और उनका परिवार समाप्ति के कगार पर पहुंच गए हैं।

गागुली बधुओं ललित बाबू और बिपिन बाबू, का सयुक्त परिवार था और उन्हें ललित बाबू की पत्नी और बेटे के अतिरिक्त अनेक आश्रितों की देखभाल करनी पडती थी। ललित बाबू की मृत्यु के बाद उनका परिवार कगाली की स्थिति तक पहुच गया - मुख्यत विपिन बाबू के दूर बर्मा में बदी बना दिए जाने के कारण। 50 रुपये महीने की थोडी सी राशि सयुक्त परिवार के गुजारे के लिए स्वीकृत की गई है जो बहुत ही अपर्याप्त है। हम इस मामले में सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहेंगे।

हस्ताक्षर-सुभाषचद्र बोस, जे.एन.दास गुप्ता सत्येंद्र चद्र मित्र, जितेंद्र नाथ मित्र

सुभाष चंद्र बोस की बंगाल में कांग्रेस सगठनों से अपील - 22 नवंबर, 1927

नव काग्रेस वर्ष के प्रारभ होने पर मैं सभी काग्रेस के कार्यकर्त्ताओ, मित्रों और सहानुभूति रखने वालों से हार्दिक अपील करता हू कि बगाल में काग्रेस सगठन को पुन *गठित और मजबूत करने का काम गभीरता से लें, जिससे कि हम अपना भावी कार्यक्रम* ठोस आधार पर शुरू कर सकें। बगाल के हर भाग में हिंदू और मुस्लिमों मे पारिस्परिक *मित्रता के घनिष्ठ सबध बनाने के लिए जो भी सभव हो वह करना चाहिए जिससे कि* दोनो समुदाय काग्रेस के झडे के नीचे कधे से कधा मिलाकर एक साथ खडे हो सकें *और काग्रेस के कार्यक्रम को दिल से साकार कर सकें। काग्रेस की शाखाए जो समाप्त* हो चुकी हैं उनको पुनर्जीवित करना आवश्यक है। नए केंद्र खोलना आवश्यक हैं। जहा *वर्तमान सगठनों में नया जीवन और शक्ति प्रदान करनी है वहां हर कार्यकर्ता से अपील* है कि जिसने भी अस्थायी तौर पर काग्रेस का काम छोड दिया हो वह वापिस लौट आए। हर जिले में नए कार्यकर्ताओं की भर्ती की जानी है जो पहले से ही क्षेत्रों में काम कर रहे हैं उनमें शक्ति और उत्साह का सचार करना आवश्यक है। सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि काग्रेस सदस्यों की सूची बनाने का काम बडे पैमाने पर तुरत शुरू किया जाए। बगाल प्रातीय काग्रेस कमेटी की मीटिंग लगभग 10 दिसबर को होगी और मैं हृदय से आशा करता हू कि जब *विभिन्न जिलों के सदस्य पुन इकट्ठे होंगे। वे* उपरोक्त दिशा में इस दौरान किए गए कार्यों की एक अनुकूल रिपोर्ट देने में समर्थ होंगे। *यह सरजाम नहीं किया जा सकता जब तक कि शुरूआत ठीक प्रकार से न की गई* हो।

आज बगाल के सामने एक समस्या है - बंदियों की समस्या। यह समस्या महज प्रतीक है एक बहुत बडी समस्या की, अर्थात् हमारी राष्ट्रीय गुलामी की समस्या। कैदियो

की जल्दी रिहाई की सभी उम्मीदें समाप्त हो चुकी हैं और यह स्पष्ट है कि जब तक हमारी राष्ट्रीय गतिविधियां अस्थायी रूप से ठप्प रहेंगी सरकार हमारी मांगों को घृणा से देखती रहेगी। केवल एक व्यापक जन आंदोलन से ही हम जन भावनाओं की गहराई का प्रदर्शन कर सकेंगे और कैदियों को जल्दी रिहा करा सकेंगे।

कांग्रेस के सभी समूहों तथा देश की सभी पार्टियों के लिए यह सुअवसर है कि अपने मतभेदों को भुलाकर स्वतंत्रता प्राप्ति की लड़ाई दृढ़ निश्चय से लड़ें। जबसे हमारे महान नेता देशबंधु चितरंजन दास का दुखद और असामयिक निधन हुआ है संयुक्त कार्यवाही के लिए वातावरण इतना अनुकूल कभी नहीं रहा। मुझे इसमें कतई संदेह नहीं कि इस स्वर्णिम अवसर का लाभ देश-प्रदेश की जनता अवश्य उठाएगी।

कला और राष्ट्रवाद पर भाषण
13 दिसंबर, 1927

प्रारंभ में ही स्वीकार कर लूं कि मैं देश के उन लोगों में से हूं जिनमें कला चेतना का अभाव है। लेकिन वास्तव में यह मेरे लिए कोई गौरव की बात नहीं है। इसे हम दूसरी तरह से लें। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि हमारे देश में कला के प्रति उतना प्रेम नहीं है लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि हममें कोई भी कला प्रेमी नहीं है। लेकिन यह देश की कला की सामूहिक भावना को परखने की कसौटी नहीं है। जब तक यह जन-जन तक नहीं पहुंचती तब तक हम चारों तरफ कला चेतना की आशा नहीं कर सकते।

यह न तो यहां आवश्यक है और न ही मैं इसमें स्वयं को सक्षम मानता हूं कि राष्ट्र के जीवन में कला-संस्कृति की आवश्यकता की व्याख्या करूं।

दिलीप कुमार से साहचर्य के बाद अब मैं शर्मिंदा हूं कि मेरे पास वह नहीं है जो होना चाहिए था। मैं याद कर सकता हूं कि जब मैं इंग्लैंड में था, दिलीप कुमार के कहने से मैं वहां कुछ संगीत सभाओं में गया था मुझे आश्चर्य हुआ कि वहां संगीत सुनने के लिए पैसा खर्च करना पड़ता है। कला और संगीत की मांग वहां पश्चिम में इतनी अधिक है कि प्रतिष्ठित कलाकारों की भी सीट पहले से बुक कराए बिना नहीं मिलती। मैंने तब अपने देश के बारे में सोचा काश लोग दस रुपये खर्च करके भी सीट नहीं ले सके?

लेकिन उस समय मुझे आशा नहीं थी कि हमारा देश गत छह वर्षों में संगीत में इतना तेजी से आगे बढ़ जाएगा। वास्तव में यह एक उपलब्धि है जिस पर हमें गर्व होना चाहिए। यदि यह गति बना कर रखी जा सकती है तो मुझे विश्वास है कि दस वर्षों के बाद कोई भी इस स्पंदन के साथ नहीं जाएगा जो हमारे कलात्मक जीवन पर लगा है। इस आश्चर्यजनक प्रगति के लिए श्रेय दिलीप कुमार को दिया जाना चाहिए

की है मैं इतना कहना चाहूंगा कि मुझे यह महसूस करने में मदद मिली है कि एक कलाकार को महान और सच्चा बनने के लिए अपने व्यक्तित्व का स्वयं विकास करना चाहिए, जो कला तकनीक से पूरी तरह से अलग हो। मैं नहीं जानता कि कलाकार कहां तक मेरे साथ इस बात पर सहमत होंगे लेकिन मैं महसूस करता हूं कि कला में भी व्यक्तित्व का स्थान है यदि वह सार्वजनिक आनंद के लिए बनाया गया हो। मैं दिलीप कुमार का संगीत पसंद करता हूं, सिर्फ इसलिए कि उनमें कला और व्यक्तित्व का पूर्ण समन्वय है। मैं जब उनकी कला का आनंद उठाता हूं मुझे यह याद रहता है कि इसके पीछे एक विचित्र दिमाग का व्यक्तित्व है। मेरे विचार से यह सभी के साथ है—कवि, कलाकार, कूटनीतिज्ञ और खिलाड़ी। विकास चहुंमुखी होना चाहिए।

सेवक समिति, दिलीप कुमार की मदद और दया ने अनेक कार्यों के लिए ऋणी है। कांग्रेस की तरफ से मैं यह बताना चाहूंगा कि उन्होंने नजरबंदी कोष (डिटेन्यू फंड) में वह सब कुछ देने का वायदा किया है जो उनकी पहली सार्वजनिक सभा से एकत्र होगा लेकिन यह छोटी सी बात है। हम दिलीप कुमार से जो सीखना चाहते हैं वह है कला और राष्ट्रीयता का संबंध। एक राष्ट्र को एक व्यक्ति की भांति सभी समय क्षेत्रों में विकसित किया जा सकता है। कला, साहित्य, उद्योग—ये सभी राष्ट्रीय पुनर्जागरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

मैं उस राष्ट्रीय जागृति के बारे में सोच रहा हूं जो हम किसी न किसी मात्रा में पूरे देश में देख रहे हैं। सुझाया गया है कि यह बाहरी झटके की क्षणिक प्रतिक्रिया है जैसा कि शारीरिक विज्ञान में झटका लगने पर प्रतिक्रिया होती है। यह एक आंदोलन मात्र है जो समुद्र पार से उठा है। मैं इसमें विश्वास नहीं करता। एक आंदोलन यदि कृत्रिम है तो वह चारों तरफ से नहीं उठ सकता। लेकिन हमारी चेतना और इतिहास की दृष्टि से देखा जाए तो एक राष्ट्र की आंतरिक भावनाओं की अभिव्यक्ति मात्र है जो पूरे देश में और विशेषकर बंगाल में दृष्टिगोचर होती है। कला साहित्य और उद्योग—जीवन के हर क्षेत्र में बंगाल प्रगति के पथ पर है। ये सब राष्ट्र को प्रेरणा प्रदान करते हैं और बार-बार प्रेरणा देते हैं, जब एक राष्ट्र स्वस्थ रास्ते पर विकसित होता है। हम सब यद्यपि अलग-अलग तरीकों से काम कर रहे हैं लेकिन एक बात में समान हैं कि हम सभी विभिन्न तरीकों से आत्मा की स्वतंत्रता की खोज में लगे हैं। इस संबंध में मैं अपने युवाओं से दिलीप कुमार की बात को सुनने और उस पर अमल करने को कहूंगा।

गत स्वदेशी सत्याग्रह में कवियों, कलाकारों तथा उद्योगपतियों ने जो भूमिका अदा की थी उसकी याद आती है। एन.सी.ओ. के आंदोलन को एक ठंडे आंदोलन की संज्ञा दी जाती है क्योंकि इसने हमारे अंदर किसी कला चेतना को नहीं जगाया। यह आंशिक रूप से सत्य है। देश में इस समय विचारों और आनंद की कमी है। लेकिन इसका मुख्य कारण क्या है? अनेक कारणों में से संभवतः ये दो हैं— (1) आर्थिक दबाव (2) पुलिस दमन। हमारी दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति मुख्य रूप से इस स्थिति के लिए जिम्मेदार है। समय आ गया है कि हम इसका समाधान खोजें और उन पर कार्य करें। इस पर विचार करना भी ठीक होगा कि किस सीमा तक हमारे कवि और कलाकार इस दुर्दशा से निपटने में अपना योगदान दे सकते हैं।

युवाओं के सपने

हमारा जन्म इस विश्व में एक उद्देश्य की पूर्ति के लिए हुआ है–एक सदेश देने के लिए। जैसा कि सूर्य का उदय विश्व को प्रकाश देने के लिए होता है, जगल में फूल सुगध बिखेरने के लिए खिलते हैं, नदिया समुद्र की ओर अपने जल का उपहार लेकर चलती हैं। उसी प्रकार हम भी इस पृथ्वी पर अपनी युवा शक्ति और आनद के साथ एक सच की स्थापना के लिए आए हैं। इस अनजान और रहस्यात्मक उद्देश्य, जिससे हमारा यह निरूद्देश्यपूर्ण जीवन सार्थक हो जाता है, की हमें खोज करनी चाहिए और इसकी खोज अपने जीवन में किए गए कार्यों से, अनुभव और चिंतन के माध्यम से होनी चाहिए।

तरूणाई के इस तेज प्रवाह ने हमें आनद के रसास्वादन के योग्य बनाया है क्योंकि हम उस आनद स्वरूप की अभिव्यक्ति हैं। हम इस पृथ्वी पर आनद के प्रतीक बनकर विचरण करेंगे। हम अपने अत स्थल में रचे बसे आनद में निमग्न होकर पूरे जग को आनदमय कर देंगे। जिस भी दिशा में हम जाएगे वहा से कष्ट स्वयमेव समाप्त हो जाएगे। हमारे जीवनदायक स्पर्श से रोग, दुख तकलीफ सब दूर हो जाएगे।

हम इस अश्रुपूरित ससार को, इस कष्टपूर्ण जग को आनद से सराबोर कर देंगे।

हम इस ससार में आशा, उत्सर्ग, उत्सर्ग और नायकत्व की भावना से आए हैं। हम यहा नया सृजन करने आए हैं क्योंकि सृजन में ही आनद है। हम अपने तन, मन, जीवन और बुद्धि का उत्सर्ग कर देंगे। हमारी सब अच्छाई, सत्यता और देवत्व हमारी सृजनशीलता में अभिव्यक्त होंगे। हम आत्मोत्सर्ग से प्राप्त आनद से पूरी तरह भीगे होंगे और पूरा विश्व हमारे उस आनद से लाभान्वित हो सकेगा।

जो कुछ भी हम दे सकते हैं उसका कोई अत नहीं है। जो कुछ भी हम कर *सकते हैं उसका कोई अत नहीं है क्योंकि–*

"जितना अधिक त्याग करेंगे हम जीवन का
उतने ही वेग से प्रवाहित होगी जीवन धारा,
जीवन चलेगा तब अतहीन,
बहुत कुछ है कहने के लिए, बहुत से गीत है गाने के लिए,
और जीवन शक्ति भरपूर है मुझमें,
बहुत सी खुशिया हैं यहा, बहुत सी हैं अभिलाषाएं
इन सबसे परिपूर्ण मात्र है जीवन मेरा"
याटा देबा प्राण बाहे यावे प्राण
पुरावे ना अर प्राण
एटा कथा आछे एटा गान आछे,
एटा प्राण आछे मोर,
एआ सुख आछे एटा साध आछे,
प्राण होए आछे भोर!

हमारे पास शाश्वत आशा, असीमित उत्साह, अतुलित ऊर्जा, तथा अडिग साहस है इसलिए कोई हमें हमारे पथ से विचलित नहीं कर सकता। हमारे सम्मुख चाहे निराशा और अविश्वास

और *विज्ञान का निर्माण अनेक युगों में विभिन्न देशों में किया है। और जब हमने रौद्र (विध्वंसक)* रूप धारण किया और हमने विनाश लीला प्रारंभ की, अनेक समाज और साम्राज्य धूल धूसरित हो गए।

अनेक युगों के बाद हमें अपनी शक्ति का आभास हुआ। हम यह पहचान करने योग्य हुए हैं कि हमारा धर्म क्या है? अब किसमें साहस है जो हमारा शासन कर सके या हमारे ऊपर अपना आधिपत्य जमा सके। इस नई जागृति के बीच यह सबसे बड़ी उपलब्धि है कि *युवा शक्ति अपनी उपस्थिति का भान करा चुकी है।*

यौवन की यह सोई हुई शक्ति जीवन के हर क्षेत्र में दैदीप्यमान है और यौवन की यह गौरवपूर्ण लालिमा और अधिक दिव्य होकर चमकेगी। युवा आंदोलन सर्वव्यापी है क्योंकि यह *शाश्वत है। आज विश्व के हर देश में, विशेष रूप से जहां-जहां पुरातन को* बुढ़ापे की काली छाया फैलती जा रही है वहां-वहां युवा आगे बढ़ रहे हैं और दृढ़ निश्चय के साथ बागडोर संभाल रहे हैं। कौन इस बात को कह सकता है कि किस दिव्य रोशनी में यह संसार चमकेगा? ऐ मेरे नव जीवन के युवा प्राणदाता, जागो, उठो, उषा की लालिमा आसमान में दिखाई देने लगी है।

द्वितीय ज्येष्ठ, 1330

(16 मई, 1923)

मातृभूमि की पुकार
(देशेर डाक)

डेढ़ सौ वर्ष पूर्व ये बंगाली ही थे जिन्होंने विदेशियों को भारत में घुसने का रास्ता दिखाया। अब यह बीसवीं शताब्दी के बंगालियों के लिए आवश्यक है कि अपने उस पाप का प्रायश्चित करें। बंगाल के स्त्रियों और पुरुषों के लिए भारत के उस खोए गौरव को वापस लाना आवश्यक है। इसे किस प्रकार सबसे अच्छे ढंग से किया जा सकता है–यह एक ऐसी समस्या है जिससे मूलतः बंगालियों का सीधा संबंध है।

यद्यपि महात्मा गांधी, राष्ट्रीय आंदोलन के प्रतिपादक, एक गैर-बंगाली हैं फिर भी इस आंदोलन का प्रभाव अन्य प्रदेशों की अपेक्षा बंगाल में अधिक व्यापक है। इसका अनुभव मुझे, बिहार, संयुक्त प्रांत तथा मध्य प्रांत में घूमने के बाद हुआ है।

यद्यपि बंगाली लोग जीवन के अन्य क्षेत्रों में आगे नहीं आए हैं लेकिन यह मेरा निश्चित मत है कि बंगाली स्वराज की लड़ाई में सबसे आगे हैं। मुझे अपने मन में जरा भी संदेह नहीं है कि भारत को स्वराज अवश्य मिलेगा और मूलतः बंगालियों को इस स्वराज प्राप्ति के कठिन कार्य में अपना योगदान देना होगा। कुछ लोग शिकायत करते हैं कि बंगाली, मारवाड़ियों या भाटियाओं की तरह नहीं हैं। मैं अपनी तरफ से यही प्रार्थना करता हूं कि बंगालियों को हमेशा बंगाली ही रहना चाहिए।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है "स्वधर्मे निधनं श्रेयः-परधर्मो भयावहः"। मनुष्य को अपने धर्म के लिए प्राणोत्सर्ग करना उत्तम है लेकिन अपना धर्म परिवर्तन करना उचित नहीं है। मैं इसी उक्ति में विश्वास करता हूं। बंगालियों के लिए स्वधर्म का त्याग करना आत्महत्या के पाप के समान है। ईश्वर ने हमें धन तो नहीं दिया है लेकिन उसने हमें भरपूर जीवन-धन दिया है। यदि हम धन प्राप्ति के लालच में अपने जीवन की सर्वोत्कृष्टता को छोड़ देंगे तब अच्छा है हम धन का परित्याग कर दें।

बंगालियों को सदा यह याद रखना चाहिए कि उनका भारत में विशेष स्थान है। केवल भारत में ही क्यों, वरन् पूरे विश्व में–और उन्हें अपनी स्थिति के अनुकूल कर्तव्य पालन करना है। बंगालियों को स्वतंत्रता प्राप्त करनी ही है और जैसे ही स्वतंत्रता मिलती है, उन्हें नए भारत का निर्माण करना है और नए भारत का निर्माण बंगालियों को ही अपने विभिन्न कार्यकलापों से - जैसे साहित्य, विज्ञान, संगीत, कला, शारीरिक शक्ति और कौशल से जुड़ी गतिविधियों के द्वारा, एथलेटिक्स, दान और उदारता के द्वारा करना है। ये केवल बंगाली ही हैं जो राष्ट्रीय जीवन के हर क्षेत्र में प्रगति ला सकते हैं तथा सांस्कृतिक संश्लेषण की मूल प्रवृत्ति इन्हीं में है।

मेरा विश्वास है कि बंगालियों का अपना एक अलग स्वभाव है। बंगालियों के चरित्र की यह विशेषता शिक्षा, संस्कृति तथा उनके आनुवंशिक मानसिक स्थिति में सुस्पष्ट होती है। बंगाल की प्राकृतिक संरचना की भी एक विशेषता है। बंगाल की मिट्टी में, उसकी नदियों में, आसमान में, घाटियों में, लहलहाते हरे-भरे खेतों में, लंबे ऊंचे खजूर के पेड़ों से घिरे तालाबों में, क्या कोई विशेषता नहीं है? बंगाल के इस विशेष प्राकृतिक परिदृश्य ने बंगालियों के चरित्र को क्या कुछ विशेषता प्रदान नहीं की! ऐसी कोमल मिट्टी की भूमि पर जन्म लेकर ही बंगाली इतने अधिक उदारमना हैं। ऐसे सुंदर प्राकृतिक पृष्ठभूमि

में लालन पालन होने के कारण बंगाली सौंदर्य के उपासक हो गए हैं। सुसिंचित उपजाऊ तथा अत्यधिक उत्पादनशील मातृभूमि द्वारा स्वच्छ जल और भोजन से लालित पालित बंगाली लोग साहित्य और काव्य में सृजनशील प्रतिभा का प्रदर्शन कर सके हैं।

प्राकृतिक जागृति की लहर जो दो तीन वर्ष पहले पूरे बंगाल में दिखाई दी थी अब निःसंदेह अपनी शक्ति खो चुकी है। यद्यपि कुछ ही समय में परिवर्तन फिर आएगा। बंगाल में राष्ट्रवाद के दरवाजे फिर से खुलेंगे। बंगाली लोग फिर से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए पागल होंगे और अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देंगे। राष्ट्र फिर से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कमर कस कर खड़ा होगा।

कौन कह सकता है कि वह सौभाग्यशाली कहां है जो इस कठिन कार्य के संचालक की भूमिका को अदा करेगा और वह अब किस प्रकार की साधना में व्यस्त होगा? हम नहीं जानते कि महात्मा गांधी इस आंदोलन का नेतृत्व करेंगे या फिर उनके स्थान पर किसी नए नेता का आगमन होगा।

लेकिन हमें इन प्रश्नों के उत्तर की हाथ पर हाथ धरकर चुपचाप बैठकर प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। हमें अब से ही नए प्रकार की जागृति या आह्वान के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें साधना की स्थिति के लिए चिंतन अंतर्दृष्टि गहरी खोज कर्म त्याग आनंद आदि की व्यापक प्रक्रिया से गुजरना होगा जिससे कि जब भी मातृभूमि की पुकार होती है हम तैयार मिलें।

बंगाल की मातृभूमि की मांग युवा सन्यासियों के समूह की है। भाइयो आप में से जो भी आत्मत्याग के लिए तैयार हो आगे आओ। अपनी मातृभूमि तुम्हें केवल दुख तकलीफ भूख निर्धनता तथा जेल की कठिनाइयां ही दे सकती है। यदि तुम नीलकंठ की भांति दुखों और निर्धनता के विष को बिना किसी प्रतिवाद के पी सकते हो तो आओ आगे बढ़ो क्योंकि इस देश को तुम्हारी आवश्यकता है। यदि ईश्वर ने चाहा और तुम जीवित रहते हो तो तुम्हें स्वतंत्र भारत में जीने का अवसर मिलेगा। यदि तुम अपनी मातृभूमि की सेवा के पवित्र कार्य को करते हुए मृत्यु को प्राप्त होते हो तो मृत्यु के बाद स्वर्गिक आशीर्वाद के तुम हकदार बन जाओगे। यदि तुम अपनी मातृभूमि के सच्चे वीर सपूत हो तो आओ आगे बढ़ो।

तुम नव जीवन के संदेश वाहकों यह तुम्हीं हो जिन्होंने प्रत्येक देश में स्वतंत्रता का इतिहास लिखा है। क्या तुम सोते ही रहोगे? जब अखिल विश्व में स्वतंत्रता का संदेश गूंज रहा हो। यह तुम ही हो जिसने 'जीवन और मृत्यु' को अपना दास बनाया है। यह तुम ही हो जिसने प्रत्येक देश में बलिदान के पवित्र आधार पर राष्ट्रवाद के मंदिरों का निर्माण किया और यह तुम ही हो जिन्होंने सभी प्रकार के दुख और तकलीफें उठाकर बदले में सेवा और त्याग ही दिया है। तुम लोग कभी लोभ के पीछे नहीं भागे हो। तुम कभी भयभीत नहीं हुए हो। तथा स्वतंत्रता के संदेश से प्रेरित रहे हो। तुमने बहादुर सिपाहियों की भांति सदा मृत्यु को गले लगाया है। तुम्हारी चारित्रिक दृढ़ता तुम्हारी पराक्रम और दिलेरी की मान्यता स्वरूप धरती माता ने तुम्हारे निष्कलंकित मस्तक पर विजय तिलक लगाया है।

अरे बंगाल के नवयुवकों! मैं तुम्हें देश सेवा के पवित्र कार्य के लिए निमंत्रित करता

हू। जहा भी हो जिस भी स्थिति में हा, दौडकर आओ। आकाश-मातृभूमि के पवित्र शख की ध्वनि से गुजायमान है। भारत के भग्य का निर्णायक, एक नए उभरते सूर्य के रूप में पूर्व क्षितिज पर उदय हो रहा है। स्वतत्रता के पवित्र प्रकाश में आह्लादित, चीन, जापान तुर्की और मिस्र अब विश्व के राष्ट्रों के मध्य अपना मस्तक ऊचा करके खड हैं। क्या अब भी तुम सोते और जडवत बने रहोगे? उठो, जागो, यह समय खान का नहीं है। 18वीं शताब्दी में विदेशियों को लाकर आपके पूर्वजों न जो पाप किया था उसका प्रायश्चित अब तुम्हारे द्वारा बीसवीं सदी में किया जाना आवश्यक है। भारत की उभरती राष्ट्रीय भावना आज स्वतत्रता के लिए तडप रही है। इसीलिए मैं तुम सब से आग आने की अपील करता हू। उठो राखी बाधो। राखी जो भ्रातृत्व का प्रतीक है। राष्ट्रमाता के मंदिर में इस शपथ के साथ प्रवेश करो कि जिस शाम से हमारी यह माता पीडित है, उसे हमें समाप्त करना है। भारत को पुन: स्वतत्रता को उस ऊचाई पर स्थापित करना है तथा हमारी पवित्र मातृभूमि के खोए गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा करना है।

11 पौष, 1332

(दिम्बर, 1925)

मूलभूत प्रश्न
(गोरार कथा)

मनुष्य जीवन की भांति एक राष्ट्र के जीवन में भी बालावस्था, युवावस्था, अधेड़ावस्था और वृद्धावस्था होती है। मनुष्य की मृत्यु होती है और वह मृत्यु के बाद फिर से अवतार लेता है। इसी प्रकार एक राष्ट्र भी मृत्यु को प्राप्त होता है और मृत्यु की प्रक्रिया के माध्यम से नए जीवन को प्राप्त करता है। लेकिन एक राष्ट्र और एक मनुष्य के जीवन में अंतर इतना है कि विश्व में कुछ राष्ट्र ऐसे भी होते हैं जो मृत्यु के बाद नए जीवन को प्राप्त नहीं होते हैं। एक ऐसा राष्ट्र जिसका अस्तित्व कोई महत्व नहीं रखता, एक ऐसा राष्ट्र जिसने अपनी जीवनशक्ति समाप्त कर दी है, इस पृथ्वी से मिट जाता है। या फिर यदि किसी कारण से वह जीवित भी रहता है तो उसका जीवन एक निम्न स्तर के प्राणी के समान होता है जो जैविकीय दृष्टि से तो किसी प्रकार जीवित है परंतु जिसके अस्तित्व का कोई प्रभाव नहीं होता, वह केवल इतिहास के पृष्ठों तक सिमट कर रह जाता है।

भारतीय राष्ट्र ने अनेक बार मृत्यु को प्राप्त किया है अर्थात् रसातल में पहुंचा है, परंतु हर बार उसने नया जीवन प्राप्त किया। यह इस तथ्य के कारण है कि भारत के अस्तित्व का महत्व अतीत में रहा है और अब भी भारत के पास सम्पूर्ण मानव जगत को देने के लिए बहुत कुछ है। भारतीय संस्कृति में कुछ न कुछ ऐसा है जो पूरी मानवता के लिए आवश्यक है और यदि मानव जगत को यह स्वीकार्य नहीं है तो विश्व सभ्यता अपनी वास्तविक पूर्णता तक नहीं पहुंच पाएगी। इतना ही नहीं हमारे राष्ट्र के पास विज्ञान कला, साहित्य, उद्योग और वाणिज्य के क्षेत्र में विश्व को कुछ न कुछ देने के लिए तथा शिक्षित करने के लिए है। इसलिए भारत के संतों ने भारत के ज्ञान के प्रकाश को घोर अंधकार और निराशा के समय में भी बहुत ही संभाल कर रखा। हम उन्हीं के वंशज हैं। हम इस राष्ट्रीय कार्य को किए बिना कैसे मृत्यु को प्राप्त हो सकते हैं?

मानव शरीर पंच तत्व में परिवर्तित हो जाता है परंतु आत्मा कभी नहीं मरती। इसी प्रकार जब कोई राष्ट्र समाप्त होता है तब उसके ज्ञान, संस्कृति और सभ्यता आत्मा के रूप में जीवित रहते हैं, किन्तु जब किसी राष्ट्र की सृजनशीलता समाप्त हो जाती है तब यह मानना पड़ता है कि राष्ट्र अब रसातल की ओर अग्रसर है। इसकी गतिविधियां केवल खाने, सोने और संतानोत्पत्ति तक सीमित हो जाती है तथा रोजमर्रा के कार्य करना उसकी दिनचर्या बन जाता है।

यहां तक कि कुछ राष्ट्र जो इस रसातल की स्थिति तक पहुंच जाते हैं वे अपना पुनर्निर्माण करते हैं बशर्ते उनके अस्तित्व का कोई उद्देश्य हो। ऐसे राष्ट्र जब निराशा के अंधकार में डूब जाते हैं तब वे किसी न किसी प्रकार अपनी सभ्यता और संस्कृति की विरासत को जीवित रखते हैं और दूसरे राष्ट्रों के साथ मिलकर अपनी पहचान को समाप्त नहीं करते। तब भाग्यवश या ईश्वरीय कृपा से ऐसे राष्ट्र में पुनरुद्धार का कार्य होता है। अंधकार के बादल छंटते हैं और गहरी निद्रा से जागकर राष्ट्र फिर एक बार अपनी आंखें खोलता है और अपनी खोई शक्ति को प्राप्त करता है। तब राष्ट्र की जीवन शक्ति कमल की हजार पंखुड़ियों के समान प्रस्फुटित होती है और राष्ट्र रूप में नये

सिद्धांतों और नए विचारों के साथ अपने को अभिव्यक्त करता है। भारतीय राष्ट्र ने इस प्रकार के अनेक विनाश और पुनर्जन्म के चरणों को देखा है और यह इसी सत्य के कारण है कि भारत का एक उद्देश्य है और भारतीय सभ्यता का एक लक्ष्य है जो अभी पूरा नहीं हुआ है।

अतः केवल वही भारतीय जो भारत के लक्ष्य और कार्य में विश्वास रखता है वास्तव में जीवित कहा जा सकता है यह नहीं कि तैंतीस करोड़ भारतीय वास्तव में जीवित कहे जा सकते हैं। चूंकि भारत और बंगाल के नवयुवक इस लक्ष्य के प्रति सचेत हैं अतः वे ही वास्तव में जीवित हैं।

जितना भी समय मैंने इस अपने देश से दूर जेल में व्यतीत किया उस समय यही प्रश्न मेरे मन में लगातार उठता था कि वह कौन सा कारण और प्रेरणा है जो हम जेल के इस बोझिल वातावरण में भी निराश होने की अपेक्षा और अधिक उत्साही और साहसी बनाता है। जिस व्यक्ति में यह आत्मविश्वास और यह श्रद्धाभाव हो वही मुक्तात्मा है और अपने देश की सेवा का अधिकारी है। जो भी अच्छे कार्य इस संसार में दिखाई देते हैं वे और कुछ नहीं इस आत्म विश्वास और मनुष्य के अंदर छिपी सृजन शक्ति के प्रतिबिंब हैं। जिस व्यक्ति में न कोई आत्मविश्वास है और न राष्ट्र के प्रति आस्था है क्या वह कोई सृजनशील कार्य कर सकता है?

निःसंदेह बंगालियों में अनेक दोष है लेकिन उनमें एक गुण है और इस गुण ने उनके अनेक दोषों को छिपा लिया है और जिसके कारण वे इस संसार में मानव प्राणी के रूप में सम्मानित होते हैं। बंगालियों में आत्मविश्वास है उनमें मानसिक रूप से सृजनशीलता और कल्पनाशीलता है और इसलिए अपनी सभी असफलताओं सीमाओं तथा आज के बंगाल के भौतिक जीवन में नाकामयाब होने के बावजूद वे महान आदर्शों को पूरा होते हुए देखने की कल्पना कर सकते हैं। उनमें इतनी शक्ति है कि वे अपने उन आदर्शों को पूरा करने की चिंता में स्वयं को डुबो देते हैं और स्वप्न जो कठिन साध्य कार्य लगता है उसे बिना झिझक पूरा करने में पूर्णतः जुट जाते हैं। इसी कल्पनाशीलता और आत्मनिर्भरता की शक्ति के कारण बंगाल ने अनेक समर्पित व्यक्ति पैदा किए हैं और भविष्य में भी पैदा होते रहेंगे। यही कारण है कि सभी दुखों कष्टों और पीड़ाओं के होते हुए भी बंगाली कभी झुकेंगे नहीं। जिस राष्ट्र के पास आदर्शवाद है वह अपने आदर्शों की प्राप्ति हेतु खुशी खुशी दुखों और तकलीफों का सामना करेगा।

अनेक व्यक्ति ऐसे हैं जो यह सोचते हैं कि दुख तकलीफ केवल पीड़ा ही पहुंचाते हैं लेकिन यह सत्य नहीं है। जैसे दुख में पीड़ा होती है वैसे ही उसमें अनंत आनंद की प्राप्ति भी होती है। लेकिन जिस व्यक्ति ने उस अनिर्वचनीय आनंद का रसास्वादन दुखों और तकलीफों में रहकर किया है जिसके लिए दुख भी गौरवमय हो जो दुखों और तकलीफों के सामने घुटने टेकने के बजाए उनका सामना करता हो वह अधिक शक्तिशाली और गौरवमय बन जाता है। अब प्रश्न है "इस आनंद का स्रोत क्या है? उस प्रकाश का स्रोत क्या है जो अंधेरी रात में घने बादलों में अपनी चमक बिखेरता है? मुझे लगता है कि इस आनंद का स्रोत कुछ नहीं वरन् अपने आदर्शों के प्रति प्रेम है। जो व्यक्ति अपने आदर्शों के प्रति निस्वार्थ प्रेम के कारण दुख उठाता है उसके लिए

दुख अर्थहीन नहीं है। उसके लिए दुख भी आनद में बदल जाते हैं और यह आनद अमृत उसकी शिराओं को शक्ति प्रदान करता है। जिसने अपने आदर्शों की बलिवेदी पर स्वय को न्योछावर कर दिया हो, वही जीवन का सच्चा अर्थ समझ सकता है और वही अतर्निहित जीवन के रस का स्वाद उठा सकता है।

गत अप्रैल में जब मैं एक रूसी उपन्यास पढ़ रहा था मुझे उसमें अपने आदर्शों की प्रतिध्वनि सुनाई दी। रूसी उपन्यासकार ने अपने नायक के माध्यम से रूसी लोगों को इन शब्दों में ललकारा :

"अभी भी लोगों को और दुख उठाने हैं, अभी और उनका रक्त बहना है, लालची हाथों के शिकजे से निकलना है लेकिन इसके लिए, मो सभी दुख, मेरे रक्त की कीमत कुछ नहीं है, *यदि मेरे आदर्श मेरे हृदय में उठता आवेग, मेरे मस्तिष्क म उठता आवेश,* मेरा हड्डियों में सचारित होती ज्वाला का निदान मिलता है तो मैं अपने अदर समृद्ध हू, जैसे कि कोई घर सुनहरी किरणों से समृद्ध रहता है। मैं सब कुछ सहन करने को तैयार हू, सब दुख उठाने को तैयार हू, क्योंकि मेरे हृदय में एक अनोखे आनद का सचार हो रहा है। इस आनद में ही मेरी पूरी शक्ति है।"

जो व्यक्ति "नीलकठ" को अपना आदर्श मान लेता है और कहता है—"मेरा पूरा अतर ईश्वरीय अनुकपा स ओतप्रोत है, इसलिए मैं पूरे तौर पर ससार के सारे दुख और कष्ट झलने को तैयार हू। जो व्यक्ति यह कह सकता है कि मैं अपने ऊपर सभी दुख लने का तैयार हू, क्योंकि यही एक साधन है सत्यान्वेषण का वास्तव में वह व्यक्ति परमानद की अनुभूति कर सकता है।

आज हमें उसी अनुभूति को प्राप्त करना है जो नया भारत बनाना चाहते हैं उन्हें मात्र त्याग करना है, अपने आप को समर्पित करना है और बदले में कुछ न मागकर *स्वय को एक कगाल-दीन-हीन की स्थिति में ले आना है। जीवन अपने उस त्याग के बल पर अपने आदर्शों की प्राप्ति कर लेगा। इस प्रकार के आदर्शों के हिमायती लोगों* के पास आत्मविश्वास, *आदर्शवाद तथा आनद के अतिरिक्त और कोई कोष नहीं होगा।*

कुछ दिन पहले मुझे मेरा एक शिष्य मित्र मिला। वह बहुत अधिक निराशा और अविश्वास से घिरा था। उसने मुझसे इसी तरह के निराशापूर्ण प्रश्न पूछे। उसके प्रश्नों का मूल था—कि इस देश को कुछ भी मिलने वाला नहीं है। जब मैंने उसके प्रश्नों का उत्तर दे दिया तो उसने पूछा "क्या यह कौंसिल में जाना, सरकार की कार्यवाही *म रूकावट डालना तथा मत्रियों को भगाना सब व्यर्थ नहीं है।" मेरा उत्तर था "ठीक है यदि तुम यह सब कुछ नहीं करना चाहते हो, तब भी क्या सब कुछ व्यर्थ नहीं है?" उसके अविश्वास और अश्रद्धा के मन को देखते हुए मैंने उससे पूछा "देखो तुम* अभी मुझसे बहुत छोटे हो और इन्हीं आदर्शों से प्रेरित होकर तुमने यह असहयोग का रास्ता अपनाया है मेरी उम्र के साथ-साथ मेरा आदर्शवाद गहरा होता जाता है जबकि तुम्हारे साथ उल्टा हो रहा है।" तब उसने स्वीकार किया कि गत कुछ वर्षों म अनेक परेशानियों और कठिनाइयों के कारण उसका मानसिक सतुलन ठीक नहीं है।

अब इस बात से इकार नहीं किया जा सकता कि गत दो वर्षों के दौरान बगाल कुछ समय के लिए निराशा और अवसाद की स्थिति में है। कुछ सीमा तक उसने हमारी

शक्ति को पंगु बना दिया है। लेकिन अब समय आ गया है कि हम इस अनगता से छुटकारा पाएं। आदमी के मन में बैठे डर से बड़ा मनुष्य का दुश्मन और कोई नहीं हो सकता। इसलिए तुम्हें सबसे पहले उस अविरवाम के रूप में अपने अंदर बैठे दुश्मन को समाप्त करना है तब फिर हम बाहर के दुश्मन को समाप्त कर सकते हैं। आज बंगालियों को न केवल अचल आत्मविश्वास को फिर से प्राप्त करना है वरन् हमें आदर्शवाद में भी विश्वास रखना है। हमारा अपनी शक्ति में विश्वास और भारत के गौरवमय भविष्य में दृढ़ निश्चय के बल पर ही हम विश्व की चेतना को जगा सकते हैं।

वर्तमान बंगाल के सर्वेक्षण से हमें दो कारणों से उम्मीदें लगती हैं-(1) बाह्य संस्कृति और विश्व भ्रमण के प्रति झुकाव (2) युवावर्ग की जागृति। एक समय बंगालियों का कट्टर दुश्मन भी इस प्रकार का लांछन लगाने की हिम्मत नहीं कर सकता। प्रत्येक बंगाली जनता है कि उसे यह गलत नाम किसने दिया और किस प्रकार उसे इससे छुटकारा मिला। मुझे अब उस विवरण में जाने की जरूरत नहीं। लेकिन अभी भी वह शारीरिक कमजोरी है जिससे बंगालियों को छुटकारा पाना है।

यह एक बड़े संतोष का विषय है कि बंगाली अब इस कमजोरी से छुटकारा पाने को कृतसंकल्प हैं और इस दृष्टि से चारों तरफ संस्थाओं की स्थापना की जा रही है। यदि इस कलंक से हमेशा के लिए छुटकारा पाना है तब बंगालियों को एक राष्ट्र के रूप में बहुत अधिक मजबूत और शक्तिशाली बनाना चाहिए। इस लक्ष्य की प्राप्ति इस बात से नहीं हो सकती कि हम राष्ट्र का मान बढ़ाने के लिए अपने यहां कुछ जगत्प्रसिद्ध पहलवान रख लें। इससे सामान्यतः बंगालियों की शक्ति में वृद्धि नहीं होती। एक राष्ट्र विशेष को परखने के लिए न केवल उसके सर्वोत्कृष्ट नेताओं के बारे में सोचना चाहिए वरन् जनसाधारण को भी ध्यान में रखना चाहिए।

यह भी एक बड़े संतोष की बात है कि बंगालियों में घुमक्कड़पन की प्रवृत्ति आ गई है। क्या कोई इस पर विश्वास करेगा कि 20 वर्ष पहले भी बंगाली आदमी अपना घर बार छोड़कर पैदल, साइकिल पर या जलयात्रा पर निकल जाएगा। अज्ञात स्थानों को देखने, अनजान जगहों से व्यापार करने तथा अनभिज्ञ लोगों से मिलने की ऐसी इच्छा ने ही बड़े-बड़े राज्यों की स्थापना की है। जो राष्ट्र अपनी संकुचित राष्ट्रीय सीमाओं से आगे नहीं जा सकते, निश्चित रूप से पतनोन्मुख होते हैं। दूसरी तरफ जो राष्ट्र सभी कठिनाइयों को पार करते हुए और मृत्यु के भय से विचलित हुए बिना आगे बढ़ते जाते हैं वे साम्राज्यों के संस्थापक बन जाते हैं। जब कवि द्विजेंद्रलाल ने गीत गाया-

अमार ए देशेटेइ जन्मा, जानो ए देशेटेइ मोरि (मैं इस देश में पैदा हुआ हूं और मैं यहीं मरना चाहता हूं) उन्होंने हमारे सामने एक गलत धारणा रखी। अब समय आ गया है यह कहने का- "अमी जाबो ना, जबो ना, जाबो ना घोरे, बाहिर करे छे पागोल मोरे" (मैं अब अपने घर तक ही सीमित नहीं रह सकता। अब मुझ पर बाहरी जगत का नशा छा गया है।)

अब समय आ गया है कि अब हम अपने घरों की संकुचित सीमाओं को छोड़ें और बाहर के संसार को देखें। पहले हम अपने देश की सीमाओं को पार करें। संसार में चारों तरफ घूमें और अनजान और अनभिज्ञ देशों की खोज करें। जो राष्ट्र यह सब

कुछ कर सकता है यह भौतिक शक्ति, समृद्धि, हिम्मत, ज्ञान तथा अनुभव प्राप्त करता है और साथ-साथ व्यापार और वाणिज्य तथा राज्यों के साथ संपर्क बनाने में भी उन्नति करता है। ब्रिटिश लोग इतने आगे क्यों हैं और किस प्रकार उन्होंने इतना बडा साम्राज्य बना लिया है? इसका मुख्य कारण यह है कि वे भ्रमण के अत्यधिक शौकीन हैं। यद्यपि हमारी कोई इच्छा इस तरह का साम्राज्य बनाने की नहीं है। लेकिन नि:संदेह विश्वव्यापी भ्रमण हमें अधिक उदारमना बनाएगा, हमारे ज्ञान और अनुभव में वृद्धि करेगा। हमारे आत्मविश्वास को शक्ति प्रदान करेगा और हमारी बुद्धि को और कुशल बनाएगा। लेकिन विश्व भ्रमण से यथासंभव अधिकतम लाभ लेने के लिए एक आधुनिक अमीर अमेरिकन पर्यटन की भांति न जाकर पैदल घुडसवारी से या साइकिल पर अर्थात् कठिनाइयों की परवाह किए बिना जाना चाहिए।

विश्वास का एक और चिह्न है कि आज लगभग सभी जिलों के युवाओं में एक प्रकार की सक्रियता दिखाई पडती है। यह सक्रियता जीवन की शक्ति का परिचायक है। *युवा मस्तिष्क आज जाग्रत है और युवा मन ने यह महसूस किया है कि उनके क्या-क्या* कर्तव्य हैं और यही करण है कि अनेक स्थानों पर आज अनेक युवा कांग्रेस हो रही है। समय-समय पर सुना जाता है कि युवा लोग कार्यवाही करने को तैयार हैं, लेकिन *वे सही रास्ते की तलाश में हैं। कुछ लोग कहते हैं कि नेतृत्व के अभाव में वे अपना* काम पूरा नहीं कर पाते। कुछ लोग कहते हैं कि वे कर्तव्यों के प्रति सजग हैं और अपनी जिम्मेदारियों को पूरी तरह से समझते हैं, यद्यपि उन्हें उचित नेतृत्व नहीं मिलता है तो क्या आप हाथ पर हाथ धरे बैठे रहोगे? अपना नेतृत्व स्वयं चुनो और आगे बढ़ो और अपना काम करो। नेता आसमान से नहीं टपकता। नेता आंदोलन से उभर कर निकलता है। उसके बाद तुम सिर्फ यह नहीं कर सकते कि "चलो, जाने दो" और सिर पकडकर बैठ जाओ। अब यह नहीं चलेगा। अपनी चेतना और बुद्धि के अनुसार अपने तरीके से अपना रास्ता ढूंढो। समस्या उतनी बडी नहीं है जितनी तुम समझ रहे हो। हमारा आदर्श है कि हम एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं जो जीवन के हर क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट हो और जो विश्व के अन्य राष्ट्रों के साथ ज्ञान और कार्य में, शिक्षा और धर्म में कंधे से कंधा मिलाकर चल सके। इसलिए राष्ट्र के जीवन में चहुमुखी जागृति आनी चाहिए। जीवन का कोई क्षेत्र छूटना नहीं चाहिए। हर व्यक्ति को अपना कार्यक्षेत्र अपनी योग्यता और रुझान के अनुसार चुनना है। हर व्यक्ति के पास जो भी शक्ति है, चाहे वह विरासत में मिली हो, या अर्जित की गई हो, या ईश्वरीय देन के रूप में हो, वह उसे अपनी मातृभूमि की सेवा में समर्पित करनी चाहिए।

गत 20 वर्षों में बंगाल ने अनेक संत, कवि साहित्यकार, वैज्ञानिक, कार्यकर्ता तथा नेता पैदा किए हैं। उनमें से काफी लोग अपना-अपना काम पूरा कर अपने देशवासियों को रोता छोडकर संसार से चले गए। उनके द्वारा खाली किया गया स्थान अभी तक भरा नहीं जा सका है। क्या यह बंगालियों के लिए शर्म की बात नहीं है? यदि बंगाल एक जीवित राष्ट्र है तब ऐसे लोगों को शीघ्रातिशीघ्र आगे बढ़कर आना चाहिए। जब कोई राष्ट्र वास्तव में चेतन रहता है तब उसके जीवन में ऐसा खालीपन काफी समय तक नहीं चलता। एक बडे व्यक्ति के जाते ही समर्पित व्यक्तियों की एक नई पीढ़ी आगे आकर उसका स्थान ले लेती है। जो राष्ट्र मानवीय प्रयत्नों के विभिन्न क्षेत्रों के

को मजबूत करना और इसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाना।

डा० मुखर्जी हिंदू महासभा के अध्यक्ष हैं और अपने इस अधिकृत पद पर रहकर इस प्रकार का वक्तव्य देकर यह संकेत देना चाहते हैं कि उनके व्यक्तिगत विचार हिंदू महासभा के विचार हैं। लेकिन यह सत्य से परे है। यद्यपि मैं मद्रास में नहीं था लेकिन मैं यह समझता हूं कि पंडित मदनमोहन मालवीय तथा हिंदू महासभा के अन्य अनेक प्रतिष्ठित नेताओं ने हिंदू-मुस्लिम एकता सहित कांग्रेस के सभी प्रस्तावों का हृदय से समर्थन किया। इसके लिए भारत के विभिन्न प्रांतों में हिंदू सभाओं में गाय तथा संगीत जैसे विवादास्पद विषयों पर एकमत नहीं हैं। इसलिए किसी एक नेता विशेष के या फिर एक प्रांत विशेष के विचारों को हिंदू महासभा के द्वारा प्रसारित करना उचित नहीं है।

अखिल भारतीय हिंदू महासभा के विचारों पर ध्यान देते समय बंगाल हिंदू सभा की राय को नकारा नहीं जा सकता। बंगाल में हिंदुओं की जनसंख्या और न केवल भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनके अनूठे योगदान को देखते हुए वरन् 1857 से हिंदुत्व के पुनर्जागरण के लिए हिंदू बंगाल के विचारों को भी और अधिक महत्ता दी जानी चाहिए। भारत एक ऐसा विशाल देश है जो हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक विस्तृत है और मैं इस बात के सख्त खिलाफ हूं कि कुछ प्रांतों के हिंदुओं के विचारों को पूरे हिंदू भारत के विचार कहकर प्रचारित किया जाए।

मैंने हिंदू सभा के कुछ महत्त्वपूर्ण और विश्वस्त कार्यकर्ताओं को यह कहते सुना है कि हिंदू महासभा ने बंगाल में भारत के अन्य प्रांतों की अपेक्षा अधिक कार्य किया है। यदि यह सच है तो इसका कारण है कि मेरे इस प्रांत में हिंदू महासभा के अधिक समर्थक हैं। लेकिन मैं बंगाल को जानता हूं और मैं कम-से-कम बंगाल के कुछ प्रमुख हिंदू महासभा कार्यकर्ताओं को जानता हूं। मैं डा. मुखर्जी को बहुत ही स्पष्ट रूप से कहना चाहूंगा कि साधारण से साधारण गणना में भी कम से कम 80% बंगाल हिंदूसभा के सदस्य और कार्यकर्ता दिल से राष्ट्रवादी हैं और डा० मुखर्जी द्वारा प्रदर्शित मानसिकता और स्वभाव में उनकी कोई साम्यता नहीं है।

मैं हिंदू हूं और यद्यपि मैं हिंदू महासभा द्वारा किए जा रहे कुछ कार्यों से सहमत नहीं हूं, फिर भी मैं उनके सामाजिक पुनरुत्थान और धार्मिक सुधार के क्षेत्र में कुछ कार्यों की हृदय से सराहना करता हूं। लेकिन मैं हिंदू महासभा को उन समस्याओं में उलझने से रोकना चाहूंगा, जो मुख्यतः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यक्षेत्र में आती हैं।

मैं यह भी कहना चाहूंगा कि कांग्रेस के एकता प्रस्तावों पर डा० मुखर्जी ने जो विचार व्यक्त किए हैं, उन्हें हिंदू बंगाल का समर्थन प्राप्त नहीं है। यदि उन्हें इस बात पर कोई संदेह हो तो मैं उनके साथ पूरे बंगाल का दौरा करने को तैयार हूं और एक ही मंच से जनता को संबोधित करने को तैयार हूं। यह निर्णय तब भारतवासियों के हाथ में होगा कि हिंदुओं का प्रतिनिधित्व कौन करता है। मैंने चुनौती दे दी है-अब आगे डा० मुखर्जी पर निर्भर है।"

---

4 फरवरी, 1928 को हड़ताल के समय पर दिया गया भाषण

आज हमने ब्रिटिश कानून व्यवस्था का स्वाद ले लिया है। हम हर समय पैक्स ब्रिटनिका के बारे में सुनते रहते हैं लेकिन क्या यही ग्रेट ब्रिटेन की नकल है? लार्ड लिटन ने एक कड़वी सच्चाई कह दी जब उन्होंने कहा इंग्लैंड अपनी कामना पर भारत का कुछ भला नहीं कर सकता।

भारत के स्वतंत्रता के इतिहास में 3 फरवरी 1928 एक स्मरणीय दिन है। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक हमें ब्रिटिश चरित्र स्पष्ट हो जाता है। मुझे उम्मीद है कि हमारे दिलों पर उतरा आज का यह सबक हम अंतिम दिन तक भूलेंगे नहीं। इन लोगों में छिपा वहशीपन नंगा होकर सामने आ जाता है जैसे ही हमारी तरफ से थोड़ा सा भी विरोध होता है। हमारे पास शब्द नहीं हैं कि हम इस वहशीपन का वर्णन कर सकें। हम इसे गुंडाराज पुलिसराज या सेनाराज भी कह सकते हैं।

मैं वकील नहीं हूं। मुझे राजद्रोह के कानून का भी कुछ ज्ञान नहीं है। मुझे सच्चाई को कहने में कोई डर नहीं है। ब्रिटिश राज के अन्तर्गत जो राज हमें देखने को आज मिला है वह गुंडातंत्र का बड़ा रूप है। मुझे अंग्रेजों से कोई दुर्भावना नहीं है।

सभी व्यक्ति हमारे अपने बंधु बांधव हैं। यदि ब्रिटिश को एक स्वतंत्र राज के रूप में रहने का अधिकार है तो यह हमारा भी अधिकार है। अंग्रेज फ्रेंच अफगान सभी को जीने का अधिकार है। फिर हमें ही इस अधिकार से वंचित क्यों रखा जाए?

अब समय आ गया है कि हमें खुलकर कह देना चाहिए कि हम ब्रिटिश से डरकर लम्बे समय तक नहीं रहेंगे। हम उनके हवाई जहाज, मशीनगनों, ब्रैनटों से परिचित हैं लेकिन धनडुब्बिया को नहीं जानते। मैं हमेशा से आशावादी रहा हूं। कुछ मामलों में मेरे विचार से हम अंग्रेजों से उच्च हैं। हम शक्ति के भण्डार हैं। आशावादी होते हुए भी मैं यह कभी नहीं सोच सकता था कि कलकत्ता के नागरिक इस प्रकार की परीक्षा में इस अनूठी सफलता के साथ खरे उतरेंगे। न केवल नई पीढ़ी बल्कि बुजुर्गों द्वारा भी प्रदर्शित साहस और आत्मविश्वास ने हमारे के लिए यह सिद्ध कर दिया है कि देश ने कितनी प्रगति की है। दस साल पहले ऐसी जबर्दस्त सफलता असम्भव लगता था। 1928 और 1929 ऐसे अवसर हैं जो भारत जैसे राष्ट्र के भाग्य में मुश्किल से आते हैं। यह कमीशन कोई भारत को अंग्रेजों का उपहार नहीं है। अंग्रेज और भारतीय के बीच समझौता होना तो अवश्यम्भावी है। यदि हम अपने आपसी झगड़ों को मिटा सकें तो वे हमारी एकजुट मांग को पूरी तरह से मानने को बाध्य हो जायेंगे। सरकार का डर तभी तक है जब तक हम एक नहीं हैं। यदि केवल बंगाल के ही पांच करोड़ लोग एक हो जाएं तो हमारी जीत हमारे सामने होगी। मरना ही है तो एक गरीब भेड़ की भांति मरने की अपेक्षा एक बार की भांति मरें।

---

22 फरवरी, 1928 को कार्यकर्ताओं के नाम मार्मिक अपील

स्वतंत्र होने की इच्छा की कसौटी

हमले की घटना की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा "हमें लगता है कि स्वराज आ रहा है और यह उन्हें भी अच्छी तरह महसूस हो रहा है और इसी लिए व कुंठित होकर आखिरी ओछी कोशिश कर रहे हैं। ये दबाव, ये प्रहार सब हमारी गुलामी के इतिहास के आखरी अध्याय होंगे। यह हमारे स्वतत्र होने की इच्छा की एक कसौटी है, गुलामी के वातावरण में पैदा होने के कारण हमारे मन में एक विश्वास गहरे पैठ गया है कि गुलामी की इस जिन्दगी का कभी अत नहीं होगा और यूरोप बना ही है एशिया पर राज्य करने के लिए। रोम ने ग्रीक पर विजय प्राप्त की और ग्रीक ने फिर रोम को फतह किया। कौन कह सकता है कि इतिहास फिर स्वय को नहीं दोहराएगा? मैं नहीं कहता हू कि हम भी इग्लैंड पर फतह पाएगें। उन्होंने आगे कहा "जिस सघर्ष में हम लोग लगे हैं इसके लिए वे स्वय जिम्मेदार हैं। हमें वे उस स्वतत्रता और वैयक्तिकता का आनद नही उठाने देते जिसका उपभोग वे स्वय अपने देश में करते हैं। रूस, जापान, टर्की और यहा तक कि अफगानिस्तान का छोटा सा देश भी आजाद है लेकिन हम तीस करोड होकर भी अपने नाम के साथ गुलामी लिए घूम रहे हैं। अब समय आ गया है उन्हें स्पष्ट रूप से बता देने का, कि यदि वे हमें आजाद होने का अधिकार नहीं देते हैं तो हम इसे प्राप्त करने में अपनी पूरी ताकत लगा देंगे।

साइमन कमीशन की बाबत उन्होने कहा "यह समझ से परे की बात है कि एक विदेशी राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के बारे में कैसे निर्णय ले सकता है। यदि हम इग्लैंड के स्वय के शासन को परखने के लिए अपने देश से सात व्यक्तियों का एक दल भेज दें तब इग्लैंड को कैसा लगेगा? इसलिए हमें इस अपमानजनक चुनौती का उत्तर देने के लिए संविधान का हवाला देकर उत्तर देना चाहिए–संविधान जो दिल्ली मे निर्माणाधीन है। यदि वे हमसे पूछते हैं कि स्वतत्रता का हमारा मानक क्या है? तो हमारा नि मकोच उत्तर होना चाहिए–"स्वतत्र होने की इच्छा"।

निरक्षरता की थोथी दलील

प्रायः हमारी स्वतत्रता के विरोधियों द्वारा यह दलील दी जाती है कि हमारे लोगो में विशाल स्तर पर अज्ञानता और निरक्षरता है। लेकिन अफगानिस्तान में शिक्षा का प्रतिशत कितना है? नेपाल मे कितना है? और क्राति से पहले रूस में कितना था? टर्की में टैगोर जैसे कितने कवि हुए हैं? बोस जैसे कितने वैज्ञानिक हैं और इतिहास साहित्य, ललित कला और सगीत का इन देशों में कितना विकास हुआ है, फिर भी वे आजाद हैं, और हम गुलाम हैं। एक यूरोपीय लेखक ने एक बार कहा था कि यदि एक विदेशी राष्ट्र अफगानिस्तान पर हमला करता है तो सभी पुरुष, महिला और बच्चा एक साथ खडे हो जाएगे और अपने देश के रक्षार्थ अस्त्र-शस्त्र उठा लेंगे। आजाद रहने की उनमें एक अदम्य इच्छा शक्ति है। जिससे उन पर बाहरी व्यक्तियों द्वारा विजय को पाना आसभव हो जाता है। बधन का दुख सभी भारतीयो द्वारा विजय को पाना आसभव हो जाता है। बधन का दुख सभी भारतीयों द्वारा समान रूप से समझा जाना चाहिए।

हर वर्ष कितने ही लोग बीमारी और अकाल के शिकार हो जाते हैं। जब मलेरिया प्लेग तथा अन्य महामारी हर साल काफी लोगों को उठा लेती है और जब इन बीमारियों को समाप्त करने के लिए पैसे की माँग की जाती है तब पैसा न होने का दलील बार बार दी जाती है। जब बाढ़ अथवा अकाल में राहत के लिए पैसे की माँग की जाती है तो निर्लज्जता से जवाब मिलता है सरकार कोई खैराती संस्था नहीं है। इन सबका स्वतंत्रता के अतिरिक्त और कोई इलाज नहीं है।

श्रीयुत बोस ने एक अंग्रेज अर्थशास्त्री का उद्धरण दिया जिसने कहा था "बहिष्कार से न केवल उद्योगों पर दबाव पड़ता है वरन् इसका दीर्घकालीन असर भी होता है जिससे बाजार पर फर्क पड़ता है। ब्रिटिश कपड़े का बहिष्कार ब्रिटिश को समझौते के लिए विवश करेगा।"

बहिष्कार मीटिंग पर भाषण, 24 फरवरी, 1928

अपना अधिकार लागू करने के लिए हमारे सामने दो ही रास्ते हैं। एक है सशस्त्र क्रांति का और दूसरा है आर्थिक नाकबंदी का। पहला हमारे लिए एक कठिन रास्ता है क्योंकि हम निःशस्त्र देश हैं। इसलिए दोनों में से अधिक अच्छा और मजबूत तरीका दूसरा ही है। इसका एक खास उदाहरण पिछली लड़ाई में देखने को मिलता है। जब जर्मनी यद्यपि विजयी था और बेल्जियम तथा फ्रांस के एक बड़े हिस्से पर इसका आधिपत्य था किन्तु आर्थिक संकटों के कारण फ्रांस के साथ शांति वार्ता के लिए झुकना पड़ा। यह प्रायद्वीप की नाकबंदी थी अर्थात् बाहर से खाद्य सामग्री के आयात पर रोक जिसमें जर्मनी को समर्पण करना पड़ा। अब इंग्लैंड के पाँच करोड़ से अधिक लोगों को जीवित रहने के लिए भारत के साथ व्यापार और व्यवसाय करना पड़ता है। यदि हम बहिष्कार के इस शस्त्र का उपयोग उनके विरुद्ध करें तो इंग्लैंड में गृहयुद्ध की स्थिति हो सकती है और अधिकारियों को समझौते के लिए विवश होना पड़ेगा। युद्ध के आधुनिक विज्ञान के अनुसार यही तरीका सर्वोत्तम और प्रभावपूर्ण कहा गया है। इसलिए क्या इस शस्त्र का उपयोग अपने घर बैठकर ही उनके विरुद्ध करना अधिक सरल और प्रभावकारी नहीं होगा?

अनूठी प्रतियोगिता

हम इंग्लैंड के लोगों का सामान खरीदकर उन्हें एक तरह से खिला रहे हैं। क्या यह उचित नहीं होगा वरन् होना भी चाहिए कि हम अपने उद्योगों को प्रोत्साहित करें और अपने देशवासियों की मदद करें? इस प्रकार हम अपने राष्ट्रीय उद्योगों की यथासंभव मदद कर सकेंगे। अभी हम इस बारे में प्रतिबंधित हैं। उदाहरण के लिए एक भारतवासी के लिए अपने व्यापार के लिए इम्पीरियल बैंक से रुपया उधार मिल पाना कठिन है जबकि एक यूरोपियन को मात्र माँग भर लेने से मिल जाएगा। यदि कोई भारतीय अपना व्यवसाय शुरू करता है जैसे कि माचिस का निर्माण तो फौरन ही एक यूरोपियन व्यावसायिक संस्था भी माचिस बनाना शुरू कर देगी और इस कम कीमत पर नुकसान उठाकर भी बेचकर भारतीय व्यापारी को नष्ट कर देगी। यहाँ तक की टाटा की मदद के लिए दिल्ली

दौड़ना पड़ा। बेरोजगारी की समस्या का हल तब तक नहीं निकाला जा सकता जब तक कि हमारी तरफ से बड़े स्तर पर उद्योग और व्यवसाय नहीं लग जाते। यह तब तक नहीं हो सकता जब कि स्वराज नहीं मिल जाता।

युवकों की जिम्मेदारी

इस राष्ट्रीय संकट में युवाओं का कर्तव्य है कि वे देश के लिए काम करें। यदि हमें अच्छे कार्यकर्ता मिल जाएं अर्थात् इस देश के युवा–तब यह निश्चित है कि हम अपना लक्ष्य यथाशीघ्र प्राप्त कर लेंगे। और हमारी महिलाओं का कर्तव्य भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। ये महिलाएं ही हैं जो इन अवनति के दिनों में भी हमारे घर चलाती हैं और यदि ये संकल्प कर लें कि राष्ट्रीय कार्य में मदद करनी है और ब्रिटिश माल का बहिष्कार करना है तो यह निश्चित है कि परिवारों के पुरुष सदस्य झुक जाएंगे और इस अनिष्ट से सभी घरों को छुटकारा मिल जाएगा। अब हमारे पास जो यह सुअवसर आया है वह फिर आने वाला नहीं है। और जब समझौते का समय आएगा तो राजभक्त का नहीं (जैसा कि बाल्डविन ने कहा है) वरन् बहिष्कार करने वाले ही-स्वतंत्रता संग्राम के सिपाही-राष्ट्र की तरफ से बात करने के अधिकारी होंगे।

और जब 1921 में प्रिंस के भारत के आगमन के दौरान वास्तव में ऐसा अवसर आया तो ये लार्ड सिन्हा नहीं थे जिनकी तलाश थी, वरन् ये देशबंधु थे जिनसे मिलने पंडित मालवीय जेल में 7 बजे के बाद गए जब दरवाजे बंद हो चुके थे। इसलिए हम इस नीति का मजबूती से पालन करें तो कम-से -कम आने वाले समय में हम अपने लक्ष्य तक पहुंच सकेंगे।

सिटी कालेज कांड के विरोध में हुई मीटिंग में भाषण
2 मार्च 1928

हमारे खिलाफ प्रायः एक आरोप लगाया जाता है कि हम देश के युवाओं को उकसाते रहते हैं।–एक ऐसा आरोप जिस पर मुझे विश्वास है, लेकिन जो इस समय चर्चा का विषय नहीं है। लेकिन वह दिन दूर नहीं जब उन्हें हमारी प्रेरणा की आवश्यकता होगी। काफी लोग यह जानने को उत्सुक हैं कि मैं इस आंदोलन के बारे में क्या सोचता हूं। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि देश की आजादी की लड़ाई में मैं इस देश के युवाओं के साथ हूं। मैं अपना जीवन देश के उन नौजवानों के किसी भी आंदोलन के लिए न्यौछावर करने को तैयार हूं जो उनसे प्रेरित हो। यह सुखद अनुभूति है कि बंगाल में एक नई जागृति छाई है–जीवन के प्रति एक नया दृष्टिकोण। कालेज अधिकारियों द्वारा हिंदू छात्रों की धार्मिक भावनाओं को भड़काने तथा बाद में मनमानी कार्रवाई के खिलाफ चलाया गया सिटी कालेज के छात्रों के इस आंदोलन को मेरा पूरा समर्थन है। यह देखना हमारा काम है कि यह ठीक रास्ते पर चले।

मैं अपनी तरफ से किसी भी तरह के सम्मानजनक समझौते के खिलाफ नहीं हूं। ऐसा समझौता जिसे अधिकारीगण उचित समझें यद्यपि ऐसी आशा करना व्यर्थ है।

सिख कालेज के झगड़े का समाधान बहुत आसान है। कुछ स्थानों से इसे जटिल बनाने की कोशिश चल रही है जो वास्तव में कुछ नहीं है वरन् राई का पहाड़ बनाने जैसा है।

मैं अपनी धार्मिक मान्यताओं को दूसरे हिंदुओं पर थोपने का हामी नहीं हूं क्योंकि हम स्वभाव से काफी सहिष्णु हैं और यह सहिष्णुता प्रायः अकर्मण्यता और आलस्य की ओर ले जाती है। यह मेरी समझ से बाहर की बात है कि एक पढ़ा लिखा ब्राह्मण इतना गिर सकता है कि हिंदू छात्रों पर अपने धार्मिक विचारों को लादने की कोशिश करे।

जनता से चंदे की अपील-21 अप्रैल 1928

लिलुआ मजदूर अपनी बात पर 42 दिनों तक डटकर खड़े रहे। रेलवे अधिकारियों की ओर से मजदूरों की वैधानिक मांगों को मानने की स्वीकृति न देने पर भी और समस्या का समाधान ढूंढने के लिए सहमत होने पर भी एक घोषणा की गई है कि अर्थव्यवस्था और कार्यकुशलता के हित में 2,600 मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया जाएगा। बामनगाछी में हुई वारदात के साथ साथ यह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि अधिकारीगण समझौता करने के मूड में नहीं हैं। मजदूरों को या तो जीत हासिल करनी होगी या फिर बिना शर्त काम पर लौटना होगा। बिना शर्त काम पर लौटने की बात तो सोची भी नहीं जा सकती। जीत हासिल करना जनता की सहानुभूति, समर्थन और मदद के बिना संभव नहीं है। हम जनता से अपील करते हैं कि वे दुखी मजदूरों की मदद के लिए आगे आएं। मजदूरों को राज्य द्वारा समर्थित पूंजीपतियों के विरुद्ध लड़ाई में उनकी मदद दें। वे अपना चंदा श्रीयुत रामानंद चट्टोपाध्याय 271 राउनलैंड रोड भवानीपुर के पते पर भेज सकते हैं।

महाराष्ट्र प्रांतीय कांफ्रेंस, पूना में, अध्यक्षीय भाषण, 3 मई 1928

मित्रो मैं अपने हृदय से आप सबको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे महाराष्ट्र प्रांतीय कांफ्रेंस के छठे अधिवेशन की अध्यक्षता के लिए निमंत्रित करने का मान दिया। आपको शायद मालूम भी होगा कि पहले तो मैंने इस निमंत्रण को स्वीकार ही नहीं किया था परंतु बंगाल और महाराष्ट्र के पुराने संबंधों की याद दिलाकर मेरे कुछ मित्रों ने मेरे दिल के तारों को छू दिया। फिर तो यह निमंत्रण अधिक आकर्षक लगा और अन्य सभी विचार एक तरफ हो गए।

इससे पहले कि मैं आपके सामने वर्तमान राजनीति के बारे में अपने विचार रखूं, मैं कुछ मूलभूत समस्याओं को उठाने और उनके हल ढूंढने का प्रयत्न करूंगा। विदेशियों द्वारा कभी कभी यह कहा जाता है कि भारत में नई जागृति पूरी तरह से विदेशी आदर्शों और ताकतों से प्रेरित बढ़ती जा रही है। यह बिल्कुल भी सच नहीं है। मैं एक क्षण के

लिए भी इस तथ्य से इंकार नहीं करता कि पश्चिमी प्रभाव ने हमें बौद्धिक और नैतिक स्तर पर झकझोरा है। लेकिन उस प्रभाव ने हमारे लोगों में स्वचेतना जागृत की है और इसके परिणामस्वरूप उठा आदोलन जो हम आज देख रहे हैं वास्तविक स्वदेशी आदोलन है। भारत अधानुकरण के दौर से गुजर चुका है। अब उसने अपनी आत्मा को पहचान लिया है और अब वह अपने राष्ट्रीय आदोलन को राष्ट्रीय आदर्शों के अनुरूप ढालने में व्यस्त है।

मैं मर फलाइडर्स पेट्री से सहमत हू कि सभ्यताए भी व्यक्तियों की भाति बनती हैं और नष्ट होती हैं। हर सभ्यता की एक निश्चित जीवन अवधि होती है। मैं उनसे इस बात पर भी सहमत हू कि विशेष परिस्थितियों में यह सभव है कि एक सभ्यता विशेष का पुनर्जन्म हो जब कि उसने अपना एक जीवन समाप्त कर लिया हो। जब यह पुनर्जन्म होने वाला होता है तो इसका मुख्य प्रेरक बाहर से न आकर अदर से ही आता है। इस प्रकार भारतीय सभ्यता ने बार-बार जन्म लिया है और यही कारण है कि भारत अपनी पुरातनता के बावजूद अभी भी नवीन और युवा लगता है।

हम पर प्राय आरोप लगाया जाता है कि चूंकि प्रजातत्र एक पाश्चात्य सस्था है भारत प्रजातत्रीय या अर्ध प्रजातत्रीय पद्धति को अपनाकर पाश्चात्य होता जा रहा है। कुछ यूरोपीय लेखक विशेषकर लार्ड रोनाल्डशे जैसे-इतना तक कहते हैं कि प्राच्य प्रकृति में प्रजातत्रीय पद्धति अनुकूल नहीं होती और इसलिए भारत को इस दिशा में अपने राजनैतिक उत्थान की कोशिश नहीं करनी चाहिए। अज्ञानता और धृष्टता आगे नहीं जा सकी। प्रजातत्र पद्धति कहीं से भी पाश्चात्य नही है यह एक मानवीय पद्धति है। जहा जहा मनुष्य ने राजनैतिक सस्थाओं को विकसित करने का प्रयत्न किया उसने इस प्रजातांत्रिक सस्था पर जोर दिया है। भारत का प्राचीन इतिहास गणतांत्रिक सस्थाओ के उदाहरणो से समृद्ध है। श्री के पी जायसवाल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिंदू पोलिसी' मे इसकी विशद् चर्चा की है और प्राचीन भारत के 81 गणराज्यों की सूची उसमें दी है।

भारतीय भाषाए भी उन्नतशील राजनैतिक सस्थाओं की शब्दिक अवधारणाओं से समृद्ध हैं। गणतांत्रिक सस्थाए भारत के कुछ हिस्सो में अभी भी विद्यमान हैं। उदाहरण के लिए असम के खासियों में अभी भी पूरे कबीले के वोट से अपने शासक को चुनने की प्रथा है और यह प्रथा युगों से चली आ रही है। गणतत्र का सिद्धात भारतीय गावों और नगरों के प्रशासन में भी लागू किया गया था। पिछले दिनो मैं जब उत्तरी बगाल के राजशाही स्थान पर वीरेंद्र रिसर्च सोसायटी सग्रहालय को देखने गया तब मुझे एक बहुत सुदर तांबे की प्लेट दिखाई गई, जिस पर यह खुदा था कि प्राचीन काल मे नागरिक प्रशासन नगर श्रेष्ठि सहित (आज का मेयर) पाच व्यक्तियों के हाथ मे था। जहा तक गाव के स्वशासन की बात थी भारतीयो को ग्राम पचायतों के बारे मे याद दिलाने की आवश्यकता नहीं। ये ग्राम पचायतें ही गणतांत्रिक सस्थाए थीं जो प्राचीन काल से हमारे यहा प्रचलित थी। न केवल गणतांत्रिक वरन् अन्य सामाजिक-राजनैतिक सिद्धात भी भारत के लिए पुरातन काल से अपरिचित नहीं थे।

उदाहरण के लिए साम्यवाद पश्चिमी सस्था नही है। आसाम के खासियो मे ही जिनका जिक्र मैंने अभी किया है निजी सपत्ति जैसी कोई सस्था आज भी नही है। यहा

की तरह गैर कानूनी कर प्रणाली के विरोध में टैक्सों के भुगतान न करने का आंदोलन चलाया, इस प्रकार हम कभी भी जनसाधारण के आर्थिक हितों की बात को गौण तरीके से उठा सके हैं, और जब तक यह नहीं होता है जैसा कि मानव स्वभाव है हम कैसे जनसाधारण से स्वतंत्रता आंदोलन में जुड़ने की आशा कर सकते हैं।

एक और कारण है कि मैं क्यों यह जरूरी समझता हूं कि कांग्रेस को जनसाधारण के हितों के प्रति अधिक सचेत रहना चाहिए। असहयोग आंदोलन के दौरान विस्तृत और गहन रूप से किए गए प्रचार के कारण भारत में जनचेतना जागृत हुई है और इस जन आंदोलन में किस रूप में अपने आप को प्रकट करें। यदि कांग्रेस जन साधारण की उपेक्षा करती है तब अनिवार्यतः जनता का एक भाग, और यदि मैं यह कहूं कि एक गैर राष्ट्रीय आंदोलन खड़ा हो जाएगा, और इससे पहले कि हम अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करें हमारे लोगों में ही गृहयुद्ध शुरू हो जाएगा। यह हमारे लिए परले सिरे की मूर्खता होगी यदि हम गुलामी की बेड़ियों में जकड़े हुए भी आपस में लड़ना शुरू कर देंगे। जिससे हमारे शत्रुओं को लाभ मिल सकेगा। मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि कुछ भारतीय श्रमिक नेताओं द्वारा कांग्रेस को नीचा दिखाने तथा इसकी निंदा करने की प्रवृत्ति चल रही है। यह प्रवृत्ति रुकनी चाहिए तथा संगठित श्रमसंघों और कांग्रेस को मिल कर जनसाधारण के आर्थिक हितों की रक्षा तथा भारत की राजनैतिक जागृति के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए काम करना चाहिए।

मित्रो, मुझे क्षमा करना यदि मैं आपसे एक क्षण के लिए अपना ध्यान वर्तमान वास्तविकताओं से हटाने के लिए तथा आगे भविष्य को देखने के लिए कहूं। यह इच्छित भी है कि हमें अपना दिल टटोलकर देखना चाहिए कि हम किसके पीछे भाग रहे हैं जिससे कि हम और हमारी भावी पीढ़ियां उन आदर्शों के प्रकाश में खड़े हो सकें।

यदि मैं अपने दिल की बात कहूं तो मैं भारत के लिए एक स्वतंत्र संघीय गणतंत्र के पक्ष में हूं। मेरे सामने यही एक अंतिम लक्ष्य है। भारत को अपना भाग्य स्वयं बनाना है। और यह केवल औपनिवेशिक स्वशासन अथवा डोमिनियन राज्य से संतुष्ट नहीं हो सकता। हमें क्यों ब्रिटिश साम्राज्य के अंदर ही रहना चाहिए? भारत मानवीय तथा भौतिक संसाधनों में समृद्ध है। यह अब उस बाल अवस्था से ऊपर उठ चुका है जो विदेशी इस पर थोपते रहे हैं। यह न केवल अपनी रक्षा करने में स्वयं सक्षम है वरन् स्वतंत्र इकाई के रूप में कार्य करने में सुयोग्य है। भारत कोई कनाडा, या आस्ट्रेलिया या दक्षिणी अफ्रीका नहीं है। भारतीयों का वंश बहुत प्राचीन है–एक अलग स्वतंत्र प्रजाति। भारत में और ग्रेट ब्रिटेन में कोई साम्यता नहीं है जिससे कि यह विचार हो सके कि ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत डोमिनियन होम रूल भारत के लिए अभीष्ट स्थिति होगी। इसके विपरीत भारत को साम्राज्य के अंतर्गत रहने से नुकसान ही है। काफी समय तक ब्रिटिश राज्य के अंतर्गत रहने के कारण भारतीयों के लिए ब्रिटिश के साथ संबंध रखते समय इस हीन भावना से निकालना मुश्किल हो सकता है। साथ-साथ जब तक हम ब्रिटिश राज्य का हिस्सा बने रहेंगे तब तक ब्रिटिश शोषण का विरोध कर पाना भी कठिन होगा।

यह सामान्य तर्क कि भारत ब्रिटेन की सहायता के बिना अपनी रक्षा नहीं कर सकता। नितांत बचकाना है ब्रिटिश सेना की बजाय, यह भारतीय सेना ही है जो भारत की रक्षा

कर रही है। यदि भारत इतना शक्तिशाली है कि वह अपनी सीमाओं में फे-निष्वन, चीन, मेसापोटामिया, परशिया, मिस्र और फ्लेंडर्स, इंग्लैंड की लड़ाइयां लड़ सकता है तब निश्चित रूप से विदेशी आक्रमण से अपनी रक्षा कर सकता है। इसके अतिरिक्त एक बार भारत स्वतंत्र हो जाए। विश्व में बना शक्ति संतुलन उसकी रक्षा करेगा जैसा कि चीन की रक्षा की गई। और यदि लीग आफ नेशन्स जैसे कुछ शक्तिशाली संगठन बन जाएं तब आक्रमण और हमले अतीत की कहानी बन जाएंगे।

स्वतंत्रता प्राप्ति की कोशिश में हमें इसकी सभी पेचीदगियों को समझना है। आप अपनी आत्मा के आधे हिस्से को स्वतंत्र और आधे को बंधन में नहीं रख सकते। आप एक कमरे को प्रकाशमान करना चाहो और उसके एक हिस्से को अंधकार में रखना चाहो, यह नहीं हो सकता। आप चाहें कि राजनैतिक स्वतंत्रता आ जाए और सामाजिक न आए यह असंभव है। राजनैतिक संगठनों का जन्म लोगों के सामाजिक जीवन से होता है और उसका स्वरूप सामाजिक आचार-विचारों और आदर्शों से ही होता है। यदि हम वास्तव में भारत को एक महान राष्ट्र बनाना चाहते हैं, तब हमें गणतंत्रात्मक समाज पर ही राजनैतिक गणतंत्र का निर्माण करना होगा। जन्म, नस्ल, तथा जाति के आधार पर दिए गए विशेष अधिकारों को समाप्त कर सभी को समान अवसर का प्रावधान करना होगा। महिलाओं की स्थिति को ऊंचा उठाया जाना चाहिए और महिलाओं को प्रशिक्षित करना होगा ताकि वे जनहित के मामलों में सक्रिय हिस्सेदारी निभा सकें।

जहां मैं सांप्रदायिकता के घावों को भरने के लिए आवश्यक इक्का दुक्का कार्यों की निंदा नहीं करता, मैं चाहूंगा कि सांप्रदायिक समस्या के निराकरण की कोई दीर्घकालीन योजना बने। विभिन्न धार्मिक समूहों के लिए यह आवश्यक है कि वे एक-दूसरे की परंपराओं, आदर्शों और ऐतिहासिकता को पहचानें, जिससे कि सांस्कृतिक सौहार्द और घनिष्ठता, सांप्रदायिक सद्भाव और शांति का वातावरण बन सकें। मेरा दृढ़ विचार है कि विभिन्न समुदायों में राजनैतिक एकता का मूल आधार सांस्कृतिक सौहार्द और आदान-प्रदान में है। वर्तमान परिस्थितियों में भारत में रहने वाले विभिन्न समुदाय बहुत अधिक अलग-थलग से हैं।

सांस्कृतिक सौहार्द बनाने के लिए धर्मनिरपेक्ष और वैज्ञानिक शिक्षण का होना आवश्यक है। सांस्कृतिक सौहार्द के रास्ते में कट्टरवाद सबसे बड़ा कांटा है और इस कट्टरवाद को समाप्त करने के लिए धर्मनिरपेक्षवाद और वैज्ञानिक शिक्षण से अच्छा रास्ता कोई और नहीं है। इस तरह की शिक्षा एक दूसरे तरीके से भी उपयोगी है कि यह हमारी आर्थिक चेतना को जगाने में मदद करती है। आर्थिक चेतना के जगाने से कट्टरवाद का खात्मा होता है। एक हिंदू किसान और एक मुस्लिम किसान के बीच अधिक साम्यता है बजाय एक मुस्लिम किसान और मुस्लिम जमींदार के बीच। जन साधारण को इस बारे में शिक्षित करना है कि उनका आर्थिक हित कहां है और जब एक बार वे ये समझ पाऐंगे तब वे सांप्रदायिक ताकतों के हाथों का खिलौना नहीं बन सकेंगे। सांस्कृतिक, शैक्षणिक तथा आर्थिक दृष्टि से काम करते हुए हम धीरे-धीरे कट्टरवाद की जड़ खोद सकते हैं और इस प्रकार इस देश में स्वस्थ राष्ट्रवाद के विकास को संभव कर सकते हैं।

इस समय की सबसे अधिक आशापूर्ण स्थिति है देश की युवाओं में जागृति उत्पन्न होना। जहा तक मैं जानता हू ये आदोलन देश के एक कोने से उठकर दूसरे कोने तक फैला है और इसकी ओर न केवल नवयुवक आकर्षित हुए हैं, वरन् नवयुवतिया भी इसमें भाग ले रही हैं। आज के नवयुवक अपनी अतरात्मा की आवाज पर उठने को तथा अपने भाग्य का निर्माण स्वय करने को बेचैन हैं। यह आदोलन भी राष्ट्रीय आत्मा की स्वाभाविक आत्म अभिव्यक्ति है और इसी आदोलन पर राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि इस नवजागृत भावना को दबाने की कोशिश करने की बजाय उसे अपना समर्थन और निर्देशन दें।

मित्रो मेरा आपसे अनुरोध है कि युवाओं को आगे लाने में तथा युवा आदोलन के सगठन में मदद करें। आत्मविश्वासी युवा न केवल कार्य करेगा वरन् वह स्वप्नदृष्टा भी होगा। वह केवल ध्वसकारी ही नहीं होगा वरन् वह निर्माणक भी होगा। जहा आप असफल होंगे वहा वह सफल होगा। वह आपके लिए एक नए भारत का निर्माण करेगा, एक ऐसे स्वतत्र भारत का निर्माण, जो अतीत की असफलताओं, परीक्षाओं और अनुभवों से निकलकर आएगा और आप मेरा विश्वास करें यदि भारत को हमेशा के लिए साम्प्रदायिकता और कट्टरवाद से छुटकारा दिलाना है, तब हमें युवकों का आह्वान करना होगा।

हमारे आदोलन का एक दूसरा रूप और है जो इस देश में कुछ कुछ अभी तक अपेक्षित हैं वह है महिलाओं का आदोलन। इस राष्ट्र की आधी जनता के लिए दूसरी आधी जनता की सक्रिय सहानुभूति और समर्थन के बिना स्वतत्रता प्राप्त करना असभव है। सभी देशों में यहा तक कि इग्लैंड में लेबर पार्टी में, महिला सगठनों ने अमूल्य सेवाए दी हैं। देश के विभिन्न भागों में महिलाओं के अनेक विभिन्न गैर राजनैतिक सगठन हैं। लेकिन मेरा यह भी विचार है कि देश में एक व्यापक राजनैतिक महिला सगठन की आवश्यकता है। इस सगठन का प्राथमिक उद्देश्य अपने समूह में राजनैतिक प्रचार-प्रसार करना तथा भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के काम में मदद होना चाहिए। इस सगठन का सचालन भी महिलाओं द्वारा होना चाहिए।

हमारे अग्रेज स्वामियों और स्वामिभक्त सलाहकारों को रात-दिन हमें स्वराज के लिए अयोग्य घोषित करने की आदत है। कुछ कहते हैं कि हमें स्वतत्र होने से पूर्व पूरी तरह *शिक्षित होना चाहिए। दूसरों* को कहना है कि *राजनैतिक सुधारों* से पहले *सामाजिक सुधार* अवश्यक है। अन्य दूसरे कहते हैं कि बिना औद्योगिक विकास के भारत स्वराज करने के लिए सक्षम नहीं है। इनमें से कोई भी बात सच नहीं है। वास्तव में यह कहना अधिक सच होगा कि राजनैतिक स्वतत्रता के बिना हम न तो अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा ले सकते हैं, न सामाजिक सुधार कर सकते हैं और न ही औद्योगिक विकास। यदि आप अपने लोगों के लिए शिक्षा की माग करते हो जैसे कि श्री गोखले ने काफी समय पहले की थी तब सरकार की ओर से पैसा न होने का तर्क दिया जाता है। यदि आप अपने देशवासियों की प्रगति के लिए कोई *सामाजिक कानून लाते हैं तब आपको मिस* मेयो के भाई-बधु सागर के इस तरफ आपके सामाजिक कट्टरवादियों की तरफ से बदूके ताने खड़े दिखाई देंगे। जब आप स्वय भारत के आर्थिक और औद्योगिक उत्थान की बात करते हैं तब आपको देखकर आश्चर्य होता है कि आपका इंपीरियल बैंक, आपका

रेलवे तथा स्टोर्स विभाग आपकी मदद करने को तैयार नहीं होते। आप अपनी नगरपालिकाओं और विधान सभाओं में मद्यपान के विरोध में प्रस्ताव पास कराते हैं दूसरी तरफ आपकी सरकार ही आपके विरुद्ध उदासीनता अथवा दुश्मनी का रुख अपनाए हुए है। मुझे अपने मन में जरा भी सदेह नहीं है, कि स्वराज में ही हमारी सब बुराइयों का निराकरण है। स्वराज के लिए योग्य होने की हमारी एकमात्र कसौटी है—हमारी स्वतंत्र होने की दृढ इच्छा।

अब हमारे सामने सबसे बडी समस्या है कि किस प्रकार यथासभव सबसे कम समय में हम इस राष्ट्रीय दृढ इच्छा शक्ति को जगा सकते हैं? हमें अपने कार्यक्रम और नीतियों को इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर बनाना होगा। 1921 से काग्रेस की नीति विनाश और रुकावट, विरोध तथा एकत्रीकरण की दोहरी नीति रही है। हम समझते हैं कि नौकरशाही ने सगठनों और सस्थाओं का जाल फैलाकर तथा उनको चलाने के लिए अधिकारियों का एक तत्र बनाकर इस देश में अपनी स्थिति मजबूत कर ली है। नौकरशाही सत्ता के स्थान पर हैं और सत्ता नौकरशाही द्वारा जनता पर अपनी पकड मजबूत रखती है। हमें सत्ता के इन दुर्गों को ध्वस्त करना है और इस काम के लिए समानातर सस्थाओं की स्थापना हमें करनी होगी। ये समानातर सस्थाए हमारे काग्रेस के कार्यालय हैं। जैसे हमारी शक्ति और प्रभाव काग्रेस कमेटियों के सगठन से बढती जाएगी वैसे ही हम सत्ता की नौकरशाही को काबू करने में सफल होंगे। हम व्यक्तिगत अनुभवों से जानते हैं कि जिन जिलों में काग्रेस कमेटी अधिक सगठित हैं वहा-वहा स्थानीय सस्थाओं को नियंत्रित करने का काम बिना किसी कठिनाई के करना सभव हो सका है। इसलिए काग्रेस के कार्यालय वे दुर्ग हैं जहा हमें स्वय को स्थापित करना है और जहा से हमें प्रतिदिन स्वय को नौकरशाही के तत्र को समाप्त करने के लिए तैयार करना है। काग्रेस कमेटिया ही हमारी सेना हैं और कोई भी योजना वह चाहे जितनी भी बुद्धि और चातुर्य से तैयार की गई हो, सफल नहीं हो सकती जब तक कि हमारे पास एक मजबूत, सक्षम और अनुशासित सेना न हो।

मित्रो, आपको याद होगा कि जब 1922 की 'गया काग्रेस' के बाद हमारे अधिकाश देशवासियों में सब कुछ छोडकर पूरी तरह से स्वय को रचनात्मक कार्य में लगा देने की प्रवृत्ति आ गई थी। देशबधु दास ने स्वराज पार्टी के घोषणापत्र में लिखा कि नौकरशाही के विरोध की भावना को जाग्रत रखना अत्यत आवश्यक था। उनका दृढ विश्वास था कि विरोध का वातावरण तैयार किए बिना रचनात्मक कार्यक्रम को आगे बढाना अथवा अन्य दिशा में सफलता प्राप्त करना सभव नहीं था। लेकिन हम प्राय: इस मूलभूत सिद्धात को भूल जाते हैं। "असहयोग व्यर्थ है।" "विरोध असफल रहा है।" "बाधाए खडी करने का लाभ नहीं है।" ये कुछ नारे थे जिन्होंने अनभिज्ञ जनता को गुमराह किया। हमारे चरित्र का सबसे अधिक दुखदायी पहलू है कि हम आगे नहीं देखते। हम असफलताओं से जल्दी ही घबरा जाते हैं। हमारे अदर जॉन बुल जैसी दृढ शक्ति का अभाव है और इसीलिए हम लबी लड़ाई नहीं लड सकते।

मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि वह दिन कब और किस प्रकार आएगा जब नौकरशाही अतत: हमारी शर्तों पर हमारी बात मानने पर विवश होगी। मुझे इस बारे में कोई गलतफहमी नहीं है क्योंकि मुझे आने वाली घटनाओं का पूर्वाभास है। यह आदोलन अपनी पराकाष्ठा

पर आम हडताल या ब्रिटिश माल के बहिष्कार के साथ-साथ देशव्यापी हडताल के साथ पहुचेगा। इस हडताल में राष्ट्रीय कांग्रेस तथा मजदूरों का सहयोग होगा और इसके साथ ही कुछ न कुछ असहयोग आदोलन भी चलेगा क्योंकि हडताल के दिनों में नौकरशाही खाली हाथ नहीं बैठी रहेगी। यह भी सभव है कि किसी-न-किसी रूप में कर अदायगी न हो, लेकिन यह आवश्यक नहीं है। जब सकट गहरा जाता है, एक आम ब्रिटिश नागरिक अपने घर बैठे सोचेगा कि भारत की राजनैतिक क्षुधा का सीधा अर्थ उसके अपने लिए आर्थिक क्षुधा है और भारत में नौकरशाही देखेगी कि देशव्यापी असहयोग आदोलन के चलते प्रशासन चलाना असभव है। 1921 की भांति जेल भरो आदोलन चलेगा और नौकरशाही में सामान्यत: मनोबल गिरेगा और इस प्रकार वे अपने मातहतो और अन्य कर्मचारियों की वफादारी और सेवाभाव को खो देंगे। प्रशासन लुज-पुज हो जाएगा और सभवत· विदेशी व्यापार और वाणिज्य भी। नौकरशाही के सामने यह स्थिति अत्यत अराजकता की होगी लेकिन जनसाधारण की दृष्टि में देश सगठित, अनुशासित और दृढ़प्रतिज्ञ हो जाएगा। ऐसे हालात में नौकरशाही जन प्रतिनिधियों की माग के सामने झुकने को विवश होगी, क्योंकि वे स्वय को अनावश्यक चिंता से बचाकर भारत के साथ व्यापारिक सबधों को फिर से बनाना चाहेंगे।

हमारा इस समय मुख्य कार्य साइमन कमीशन के बहिष्कार को पूर्ण और प्रभावशाली बनाना है। हम कांग्रेसियों ने गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट 1919 की घातक प्रस्तावना को कभी स्वीकार नहीं किया है। यह एक्ट हमारे ऊपर थोपा गया है, लेकिन हमने कभी इसे हृदय से स्वीकार नहीं किया है। वास्तव में हमने अपनी यथाशक्ति से इसके साथ असहयोग किया है। हम व्यक्तियों के पवित्र और अलघनीय अधिकारों तथा आत्मनिर्णय के सिद्धांतों के हामी हैं। हम मानते हैं कि भारत को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अपना संविधान बनाने का अधिकार है और ब्रिटेन द्वारा उसे पूर्ण रूप से स्वीकार करना चाहिए। यह प्रक्रिया न केवल उन देशों के बारे में मानी गई है, जिन देशों ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है वरन् ब्रिटिश साम्राज्य के अतर्गत आने वाले आयरिश फ्री स्टेट सहित स्वशासित प्रदेशों के बारे में भी मानी गई है।

वास्तव में इस बहिष्कार का दूसरा रूप सकारात्मक है अर्थात राष्ट्रीय संविधान का निर्माण। ऑल पार्टी कांफ्रेंस ने इस विषय को अपने हाथ में ले लिया है और भारत के साथ स्नेह रखने वाले सभी व्यक्ति इस कांफ्रेंस की पूर्ण सफलता की कामना करते हैं। भारत के सेक्रेटरी आफ स्टेट ने अपने घमड के आवेश में भारत को एक सर्वमान्य संविधान देने की चुनौती दी है। यदि हमारे अदर जरा भी आत्मगौरव या आत्मसम्मान है तो हमें इस चुनौती को स्वीकार कर और संविधान बनाकर उचित उत्तर देना चाहिए।

मैं आपको किसी भावी संविधान का विस्तृत विवरण देकर थकाना नहीं चाहता। मैं यह काम अपने संविधान निर्माताओं पर छोडता हू और यहा केवल तीन महत्त्वपूर्ण मुद्दों तक अपने को सीमित करना चाहूगा ये तीन मुद्दे हैं–

1 संविधान द्वारा राष्ट्रीय सार्वभौमिकता अर्थात् जनता की सार्वभौमिकता को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। हम चाहते हैं जनता के लिए जनता द्वारा तथा जनता की सरकार।

2. संविधान की प्रस्तावना में ''अधिकारों की घोषणा'' होनी चाहिए जिसमे नागरिकता

के मौलिक अधिकारों की गारंटी होगी। "अधिकारों की घोषणा" के बिना संविधान अर्थहीन होता है। स्वतंत्र भारत मे दमनकारी कानूनों, अध्यादेशों और नियमो का कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

3 इसमें संयुक्त निर्वाचन पद्धति होनी चाहिए। अस्थायी तौर पर यदि आवश्यक हो तो कुछ स्थानों का आरक्षण हो सकता है। लेकिन हमें हर तरीके मे संयुक्त निर्वाचन पद्धति पर जोर देना चाहिए। राष्ट्रीयता और पृथक निर्वाचन पद्धति परस्पर विरोधाभासी है। पृथक चुनाव पद्धति सिद्धांतत: गलत हैं और किसी गलत सिद्धांत पर राष्ट्र निर्माण करने की कोशिश करना निरर्थक है। हमें पृथक चुनाव पद्धति का कटु अनुभव है। और जितनी जल्दी हम इससे छुटकारा पा सकें उतना ही हमारे लिए और हमारे देश के लिए यह अच्छा रहेगा।

अपनी इस राष्ट्रीय मांग पर जोर डालने के लिए हमें वे सभी कदम उठाने चाहिए जो हमारी शक्ति में हैं। क्योंकि ब्रिटिशवासियों की मीठी बातों में आकर उनसे केवल अनुरोध करना मूर्खता होगी। यद्यपि हम कमजोर और शस्त्रहीन हैं लेकिन ईश्वर ने अपनी कृपा से एक ऐसा हथियार हमें दिया है कि इसका उपयोग हम अधिक प्रभावशाली ढंग से कर सकते हैं। यह हथियार है आर्थिक बहिष्कार का, अर्थात ब्रिटिश माल का बहिष्कार। इसका उपयोग अधिक अच्छे ढंग से आयरलैंड और चीन में किया गया है। इसका उपयोग आंदोलन के दौरान किया गया जिससे काफी अधिक लाभ भी हुआ। ब्रिटिश माल का बहिष्कार, स्वदेशी की पुनर्स्थापना तथा राजनैतिक मुक्ति के लिए आवश्यक है।

यहां यह भी आश्यक है कि जब राजनैतिक युद्ध चलता हो, हममें से कुछ को ग्रामीण पुनर्संगठन का काम अपने हाथ में ले लेना चाहिए। हमारे जैसे विशाल देश में प्रतिभा का बाहुल्य है तथा स्वभाव-चरित्रिक विभिन्नता के लिए स्थान है।

हमारे लिए यह एक कष्टदायी बात है कि हमारी जनता विशेषकर श्रमिक वर्ग एक बहुत बड़े आर्थिक संकट से गुजर रहा है। अलग-अलग रेलवे में विशेषकर रेलवे वर्कशापों में छटनी का काम जोरों पर चल रहा है। मेरी जानकारी में है कि करोड़ों रुपये की रेलवे सामग्री हमारे रेलवे में उपयोग के लिए ग्रेट ब्रिटेन से आयात होती है जबकि इनका सरलता से भारत में ही निर्माण किया जा सकता है। यदि वर्कशापों की संख्या में वृद्धि की जाए, यदि इनके उत्पादन का प्रयास भारत में ही किया जाए, तब वर्तमान श्रमिकों की छटनी की तो बात ही क्या, प्रशासन और अधिक लोगों को नौकरी दे सकने में समर्थ होगा। लेकिन फिर वहां ब्रिटिशवासियों तथा उनके उद्योगों के हितों की रक्षा गरीब भारत की कीमत पर करनी होगी।

यह सभी भारतीयों का तथा विशेषकर कांग्रेसियों का प्रमुख कर्त्तव्य है कि श्रमिकों की कठिनाई के समय उनकी सहायता के लिए आगे आएं। यथासंभव हमें उनकी सहायता करने की चेष्टा करनी चाहिए।

मित्रो हम अपने देश के इतिहास में, एक महत्त्वपूर्ण मोड़ पर पहुंच गए हैं और हमें अपनी शक्तियों को संगठित करना चाहिए तथा सत्ता का डटकर विरोध करना चाहिए। आइए हम कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हों और एक स्वर में मिलकर कहें कि हमारा सिद्धांत है जैसा कि टेनीसन ने यूलीसिस के माध्यम से कहा था, "चेष्टा करना, खोजना

और प्राप्त करना हमारा कर्तव्य है।"

सिटी कालेज के मामले में वक्तव्य

18 मई, 1928

मैं यह देखकर प्रसन्न हूं कि सिटी कालेज के अधिकारियों और छात्रों के बीच एक संतोषजनक समझौता करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। लेकिन आज के समाचार पत्रों में जो सुझाव प्रकाशित हुए हैं वे मुझे ठीक नहीं लगते। मूर्तिपूजक हिंदुओं अथवा ब्रह्मसमाजी अब हिंदू महासभा के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। इसलिए यह ब्रह्म-हिंदुओं के लिए आवश्यक हो गया है कि वे मूर्तिपूजक हिंदुओं के प्रति सहिष्णुता और सम्मान का भाव रखें। चूंकि ब्रह्मसमाज के रूझान और मानसिकता में गत दस वर्षों में जबर्दस्त बदलाव आया है। अतः मेरे विचार से हम इसी तरह के परिवर्तन की आशा उनके मूर्तिपूजक सहधर्मियों के प्रति व्यवहार में कर सकते हैं।

मैं सिटी कालेज के अधिकारियों और छात्रों बीच के किसी विवाद में पड़ना नहीं चाहता। इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि कानूनन छात्रों का पक्ष ठीक है। मेरे इस वक्तव्य की पुष्टि सिटी कालेज तथा राममोहन राय होस्टल के ट्रस्टनामे से की जा सकती है। लेकिन मैं स्वयं को और कष्ट नहीं दूंगा। समस्या के कानूनी पहलू को देखते हुए मैं सहिष्णुता और सम्मान रखने का पक्षधर हूं। अभी तक अधिकारी सहनशीलता दिखाते रहे हैं। यदि अधिकारी अधिक चतुराई, बदले की कम भावना और अधिक सहनशीलता दिखाते तो कोई समस्या ही नहीं होती। फिर भी अभी भी वर्तमान स्थिति को काबू में लाया जा सकता है। मैंने अपने ब्रह्म सहधर्मियों के सामने छोटी-मोटी बातें रख दी हैं और मुझे उत्तर की प्रतीक्षा है।

यंग इंडिया के मिशन पर ओपेरा हाउस में दिया गया भाषण

22 मई, 1928

मिशन ऑफ यूथ का कार्य अपने लिए तथा मानवता के लिए नए संसार की रचना करना है। युवाओं द्वारा किए गए प्रत्येक आंदोलन को मैं युवा आंदोलन नहीं मानता वरन् जो आंतरिक जागृति और भविष्य के लिए एक नई दृष्टि और विश्वास से प्रेरित आंदोलन हो वही सच्चा युवा आंदोलन होता है। युवा का उद्देश्य पहले तो "अपने अंदर एक राज्य" का स्वप्न देखना और इसके बाद उस स्वप्न को सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में साकार करने के लिए कोशिश करना है। मैं युवाओं के कार्यों में विश्वास करता हूं, क्योंकि यह युवाओं के सानिध्य में ही है कि हमारा सर्वोत्कृष्ट रूप अभिव्यक्ति पाता है लेकिन भारतीय युवा पूरी तरह से स्वचेतन नहीं है। इसने आंदोलन के पूरे अर्थों को समझा नहीं है। पूरे विश्व में भारतीय मिशन के बारे में अभी तक भ्रांति है। मुझे अपने

नवयुवक साथियों से सुनने को मिलता है कि हमारे नेता उचित नेतृत्व देने में सफल नहीं हो सके हैं? यह नवयुवकों का कर्त्तव्य है कि स्थिति का जायजा लेने के लिए चारों तरफ देखें और तब अपने हाथ में पुनर्निर्माण का कार्य लें और इस प्रकार नेतृत्व संभालें। आप चारों तरफ देखें कि आधुनिक इटली किस प्रकार बना। निश्चित रूप से यह मैजिनी और उनके सहयोगियों का सपना था। कौन सी शक्तियां हैं जो आज जर्मनी, पर्शिया, चीन और अन्य देशों के भाग्य को बना रही हैं? ये शक्तियां वहां के युवाओं के स्वप्न हैं। भारतीयों की एक कमी यह है, मैं फिर से कह रहा हूं, कि वे पूरी तरह से आत्म जाग्रत नहीं है।

आज मिशन के सम्मुख दो लक्ष्य हैं : (1) अपनी राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का समाधान ढूंढने में योगदान देना। (2) विश्व सभ्यता के निर्माण और विश्व की समस्याओं के समाधान में योगदान देना। इस कार्य को पूरा करने के लिए भारतीय युवा को भारत के ऐतिहासिक अतीत के प्रति सचेत रहना चाहिए तथा उसके भव्य भविष्य के प्रति आशावान होना चाहिए। उनमें इन स्वप्नों को साकार करने तथा इन आदर्शों को सामूहिक जीवन में अभिव्यक्ति देने की ज्वाला उठनी चाहिए। आज के प्रमुख आदर्श जैसा कि मैं मानता हूं राजनैतिक क्षेत्रों में स्वशासित देशों के संघ तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में संस्कृतियों के संघ हैं और विश्व की समस्या आज संस्कृतियों के समष्टिकरण तथा मनुष्य के संघों के निर्माण की है। भारत इस समस्या के समाधान में अपना योगदान तभी दे सकता है जब उसने अपनी राष्ट्रीय समस्याओं को हल कर लिया हो।

इसकी राष्ट्रीय समस्याओं के सफल समाधान के लिए भारतीय युवा को भारतीय समाज की अंतर्निहित एकता तथा सभ्यता की निरंतरता से पूरी तरह से अवगत रहना जरूरी है। जैसा कि मैं समझता हूं भारतीय सभ्यता एक वेगवती नदी के समान है, जो समय-अंतरालों में विभिन्न सांस्कृतिक-धाराओं के मिलने के समय के किनारों से बंधी बहती चली आ रही है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, बंगाल से गुजरात तक, यह एक ही सभ्यता है इसमें बाहरी तौर पर विभिन्नताएं हो सकती हैं। इतिहास ने हमें अलग-अलग रूप दिखाए हैं। लेकिन हमें इतिहास की बहुत सी बातों को भूलना होगा, जो हमें विदेशी इतिहासकारों ने पढ़ाई हैं। हमें अपने अतीत को देखना होगा और अपनी सभ्यता और दर्शन, धर्म, समाजशास्त्र और काल में इसकी उपलब्धियों के गौरव को महसूस करने के लिए ऐतिहासिक चेतना को विकसित करना होगा। इसमें हिंदू और मुस्लिम जैसा कुछ नहीं है, यह संस्कृतियों के मिलन का परिणाम है। ताजमहल की सुंदरता को चांदनी में देखो और उस कल्पनाशील मस्तिष्क को महसूस करो जिसने इस सौंदर्य को वास्तविक रूप दिया। हमारे एक बंगाली उपन्यासकार ने इसका वर्णन "पत्थरों में जड़े आंसू" कह कर किया है। और यदि मुगलों ने इस ताज के अलावा इस देश में कुछ भी नहीं छोड़ा होता तब भी मैं उनका कृतज्ञ होता। ब्रिटिश सरकार अपनी सत्ता की समाप्ति पर अपने पीछे क्या छोड़कर जाएगी? कुछ नहीं सिवाय बदसूरत दीवारों तथा भयंकर कमरों वाली जेलों के।

भारत का मुख्य लक्ष्य है यहां उपस्थित विभिन्न सभ्यताओं, संस्कृतियों और विचारधाराओं में समन्वय स्थापित करना। यूरोप ने भी इस समस्या को सुलझाने का प्रयत्न

किया था। परंतु किस तरह? इंग्लैंड तथा अन्य यूरोपीय देशों का अफ्रीका और एशिया के अन्य देशों में रिकार्ड क्या है? और वे आदिवासी कहां हैं जो यूरोप की सभ्यता के प्रभाव में आए थे? अमेरिका अपनी नीग्रो समस्या का क्या हल ढूंढ रहा है। भारत ने उस रास्ते को छोड़ दिया था और अपने तरीके से इसे हल करने कोशिश की थी। विभिन्न प्रजातिय समूहों के एकीकरण का प्रयास वर्णाश्रम धर्म के माध्यम से किया गया। लेकिन आज परिस्थितियां बदल गई हैं और हमें अधिक वैज्ञानिक संश्लेषण की आवश्यकता है। "इसलिए इस मशाल को लेकर आगे बढ़ो और पूरे देश को क्रांति, राष्ट्रीयता तथा देश भक्ति की ज्वाला से प्रज्ज्वलित कर दो। इस धरती पर कोई भी शक्ति, ग्रेट ब्रिटेन की शक्ति की तो बात ही क्या इस पवित्र ज्वाला को बुझा नहीं सकेगी।"

बंदियों के बारे में वक्तव्य

8 जून 1928

मैंने आज दोपहर बाद अलीपुर सेंट्रल जेल में श्रीयुत् विपिन बिहारी गांगुली और सुरेंद्र मोहन घोष से साक्षात्कार किया था। दोनों ही अनिश्चित मानसिक अवस्था में रह रहे हैं क्योंकि उन्हें नहीं मालूम कि उनके साथ क्या होगा? विपिन बाबू की संपत्ति नदिया और 24 परगना जिलों में बिखरी पड़ी है। बातचीत चल रही है और वे सरकार की नौकरी से मुक्ति पाना चाहते हैं जिससे कि अपनी संपत्ति की देखभाल कर सकें। जो उनकी अनुपस्थिति में इधर उधर हो सकती है। उनके भाई ने अपनी आकस्मिक मृत्यु से पहले उनके नाम जो धन-दौलत छोड़ी तथा जो पूंजी उन्होंने बांकुरा जिले की चीनी मिल में निवेश की थी उस सबके इधर-उधर होने का भय है, यदि उसकी ठीक व्यवस्था नहीं की गई। विपिन बाबू को अपनी संपत्ति की रक्षा करने के लिए कुछ मामलों में कानूनी कार्रवाई भी करनी पड़ेगी। इन सब कारणों से यह आवश्यक है कि विपिन बाबू छुट्टी लेकर यथाशीघ्र घर जाएं। मैं इसका कोई कारण नहीं समझता कि सरकार उनके इस निवेदन को क्यों नहीं मानती, यदि वह उनको अभी नहीं छोड़ सकती।

विपिन बाबू अभी तक अजीर्ण और अनिद्रा के रोग से पीड़ित हैं और पिछली बार की अपेक्षा इस बार कुछ अधिक कमजोर नजर आ रहे थे।

सुरेंद्र बाबू भी काफी क्षीण थे। उनका वजन अब 97 पौंड है। वे अभी भी गले की बीमारी से परेशान हैं और सुबह-शाम उन्हें हल्का बुखार हो जाता है। उन्होंने मुझे बताया कि उनकी यह हालत तब से है जब वे यरवदा जेल में थे।

मैंने उनसे कहा कि वे इस बात को जेल सुपरिंटेंडेंट से कहें। अपनी इस शारीरिक अवस्था के बावजूद मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि सुरेंद्र बाबू प्रसन्नचित हैं और मुझे प्रफुल्लित दिखाई दिए।

पंडित मोतीलाल नेहरू के नाम पत्र

बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी
टेलीग्राम: बी. पी. सी. सी.
फोन-2952 बड़ा बाजार

116 बहू बाजार स्ट्रीट
कलकत्ता 12 जुलाई 1928

प्रिय पंडित जी

मुझे कल रात आपका तार मिला। पहली बार इलाहाबाद जाने के बाद मैंने सभी जिलों को एक सरकुलर भेजा था जिसमें सभी जिलों से जिला बोर्डों की वर्तमान व्यवस्था के बारे में पूछा था। मुझे खेद है कि काफी जिलों से अभी तक कोई सूचना नहीं मिली है। इसलिए जो सूचना मेरे पास एक सरकारी दस्तावेज से उपलब्ध है—अर्थात् 1925 26 में बंगाल में जिला बोर्डों की कार्यप्रणाली पर एक रिपोर्ट वह मैं भेज रहा हूं। यह सूचना कम से कम दो वर्ष पुरानी है और दो तीन वर्षों में इस प्रदेश में साम्प्रदायिक तनाव के कारण जिला बोर्डों के चुनाव साम्प्रदायिक आधार पर ही हुए हैं। यह साम्प्रदायिक तनाव कहीं आंकड़ों में उपलब्ध नहीं है...... मात्र 1925-26 के आधार पर है जो भेज रहा हूं। इसका असर हाल ही के पूर्वी बंगाल में जिला बोर्ड के चुनाव में स्पष्ट नजर आता है। लगभग एक वर्ष पूर्व हुए मैमनसिंह जिले के चुनाव में 22 सदस्यों में एक भी हिंदू निर्वाचित नहीं हुआ था, बावजूद संयुक्त निर्वाचन सूची के। ऐसा ही परिणाम नोआखाली, तिपरिया, बरीसाल और अन्य जिलों में भी हुआ। जैस्सार में कुछ महीने पहले हुए चुनाव में मुस्लिमों को भारी जीत हुई और अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के पद भी जो अभी तक हिंदुओं के पास थे, पहली बार मुस्लिमों के पास चले गए हैं। इस कारण मौलवी नौशेर अली विधायक और अध्यक्ष तथा मौलवी अब्दुर रऊफ, विधायक जो पहले पृथक निर्वाचन के पक्षधर थे अब बदल गए हैं—ऐसा मुझे बताया गया है। मुझे यह भी बताया गया है कि इसने सर अब्दुर रहीम को भी प्रभावित किया है जो अभी तक पृथक निर्वाचन के पक्षधर थे। मैं आज नदिया के नए विधायक से मिला था। उन्होंने मुझे बताया कि शीघ्र ही होने वाले जिला बोर्ड के आगामी चुनाव में उन्होंने 75% स्थान मुसलमानों के पक्ष में जाने की उम्मीद है। मैं हाल ही के चुनाव के बारे में सूचना इकट्ठी कर रहा हूं और जो भी सूचना मिलती है शीघ्र ही भेजूंगा।

सादर।

मैं आपका
सुभाषचंद्र बोस

पुनश्च—श्रीयुत सरलदत्त, बरीसाल के विधायक ने मुझे बताया कि 6 महीने पहले हुए जिला बोर्ड के चुनाव में चार हिंदू और 16 मुस्लिम जीते थे।

सुभाष

तार

सुभाषचंद्र बोस

द्वारा–बी पी सी सी कलकत्ता

खेद है ( ) आप अस्वस्थ हैं ( ) दस तक प्रतीक्षा करना असभव है ( ) असारी तथा अन्य सदस्य सिवाय शोआब के अनुमोदन प्राप्त ( ) शोअब अनुपस्थित ( ) तीसरा अध्याय से असहमति ( ) केंद्रीय विधानसभा में मुस्लिमों के लिए एक तिहाई आरक्षण पर आग्रह ( ) शोआब की असहमति के कारण सभी को सगठित होना आवश्यक

(2)

मेरी राय है ( ) बहुमत के साथ हस्ताक्षर करने की आज्ञा का तार दे दें जब तक कि कोई महत्त्वपूर्ण सिद्धात न हो ( ) औपचारिक असहमति का रिकार्ड तैयार कर लें ( ) उस स्थिति में तुरत किरणशकर को ड्राफ्ट के साथ भेजे ( ) तुरत जिलों का विवरण देते हुए बगाल का नक्शा भेज दें ( ) टाटा ने मुझे जमशेदपुर बुलाया है।

(3)

स्थिति का जायजा स्वय लें ( ) तार दें यदि श्रमिक तैयार हो। मैं निर्णय नहीं दूगा वरन् राय मात्र दूगा यदि पार्टिया सुनने के उचित मूड में हों

मोतीलाल नेहरू
आनद भवन
6 8 28

जमशेदपुर मे श्रमिकों की स्थिति पर वक्तव्य, 28 अक्तूबर, 1928

मेरे बबई कलकत्ता तथा अन्य स्थानों के मित्रों ने मुझसे जमशेदपुर की वर्तमान श्रमिकों की स्थिति पर अपने विचार प्रकट करने के लिए कहा। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि स्थिति धीरे धीरे सुधर रही है। श्रमिकों में अधिकाश अब बात समझते हैं और अपनी भरसक कोशिशों के बावजूद श्री होमी कमजोर पड़ते जा रहे हैं लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि श्रमिकों की कोई शिकायतें नहीं है। मई की हड़ताल से पूर्व उनकी काफी शिकायतें वाजिब थीं, उनमें से कुछ अब दूर कर दी गई हैं लेकिन अभी भी काफी शिकायतें ज्यों की त्यों हैं। श्रमिकों द्वारा कपनी और प्रबधकों को इन शिकायतों का हल ढूढने के लिए पूरे अवसर दिए जाएगे। लेकिन यदि दुर्भाग्यवश कपनी और प्रबधक समयानुकूल व्यवहार नहीं करते तो फिर से समस्याए उठेंगी। उस स्थिति में या तो मैं कपनी से सीधे लड़ाई लड़ूगा या फिर श्रम सघों से अपना सबध विच्छेद कर लूगा।

प्रबधकों के सामने अब मूलभूत समस्याए हैं। पहले बोनस तथा वेतन वृद्धि का उचित तथा समान वितरण, और दूसरे पानी-बिजली के प्रबध के साथ निवास स्थान का प्रावधान

तीसरे अधिकारियों का श्रमिकों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार, चौथे एक तरफा छटनी और दंड देने पर रोकथाम; पांचवें, रिटायरमेंट के समय पुराने कर्मचारियों के लिए ग्रेच्युटी, छठे छुट्टी और सेवा नियमों में संशोधन तथा अंत में दैनिक मजदूरी के कर्मचारियों की शिकायतों का समाधान।

मैं यहां पर छोटी-छोटी शिकायतों की चर्चा नहीं कर रहा हूं। इन सबसे ऊपर सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न भारतीयकरण का है। इनमें से कुछ समस्याओं का समाधान तो प्रबंधकों पर निर्भर करता है जबकि अन्य का कंपनी के अधिकारियों पर। मुझे यह कष्ट के साथ कहना पड़ रहा है कि हड़ताल से पहले अधिकारियों ने वह सब नहीं किया जो कुछ भी वे श्रमिकों की स्थिति सुधारने के लिए कर सकते थे। प्रबंधक श्रमिकों के संपर्क में नहीं थे। जिन अधिकारियों के जिम्मे श्रमिकों का काम सौंपा गया वे अपने कर्त्तव्य पालन में असफल रहे और उन्होंने प्रबंधकों को गलत सलाह दी। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि कंपनी के कुछ अधिकारियों ने अपने अधीन अधिकारियों सहित अपने मूर्खतापूर्ण और गैर सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार के कारण अप्रत्यक्ष रूप से चलती हुई हड़ताल को आगे चलने में सहायता दी।

यदि कंपनी जमशेदपुर में शांति चाहती है तब आने वाले कुछ महीनों के लिए निदेशकों और प्रबंधकों दोनों को श्रमिकों की समस्याओं के प्रति सचेत और तैयार रहना होगा। यदि उपरोक्त कठिनाइयों का निराकरण साथ-साथ उदारमना होकर किया जाए, तब केवल वह शांति आ सकेगी जिसकी इच्छा बोर्ड के चेयरमैन करते हैं।

दुर्भाग्यवश कुछ स्थानों पर यह धारणा बनी हुई है कि जमशेदपुर के श्रमिकों पास काफी पैसा है और अत्यधिक सुविधा सम्पन्न हैं, यह धारणा हमेशा के लिए समाप्त करनी है। श्रमिकों की शिकायतें ठीक और वैधानिक हैं और वे दूर की जानी चाहिए। पूंजीपति इस बात को पसंद करें या नहीं, श्रम आंदोलन ने गत कुछ वर्षों में काफी प्रगति की है और आज इसे छोटी बात कहकर टाला नहीं जा सकता। हम अपनी तरफ से इस आंदोलन को स्वस्थ दिशा में चलाने का भरसक प्रयास करते हैं। लेकिन हम सफल होंगे या फिर से उच्छृंखल और गैरतार्किक तत्व इस आंदोलन पर हावी होंगे, यह कंपनी और प्रबंधकों पर निर्भर करता है। मैं इस उद्योग को राष्ट्रीय उद्योग मानता हूं और इसीलिए मैंने अपनी विनम्र सेवाएं बिना झिझक इस उद्योग को देने का निश्चय किया है। लेकिन मैं आशा करता हूं कि यह कंपनी भी, जिसे भारतीयों ने इतना अधिक संरक्षण दिया है, वास्तव में राष्ट्रीय भावना से काम करे।

इंडिपेंडेंस लीग पर समाचार पत्रों को दिया गया वक्तव्य

(1 नवंबर, 1928)

मेरे जमशेदपुर से कलकत्ता लौटने पर मेरा ध्यान 36/1 हैरीसन रोड पर हुई एक मीटिंग की रिपोर्ट की ओर दिलाया गया है। इस मीटिंग में दिल्ली में होने वाली इंडिपेंडेंस फार इंडिया लीग की मीटिंग के प्रतिनिधियों को चुना गया है। मुझे घोर आश्चर्य है,

क्योंकि मैंने इस मीटिंग के लिए डा० के एल गांगुली का नाम देखा है। एक इंडिपेंडेंस फार इंडिया लीग बंगाल के लिए पहले ही स्थापित की गई है और डा० गांगुली इसके साथ शुरू से ही जुड़े हैं। वे पहली मीटिंग के संचालक थे और लीग की कार्यकारिणी समिति के सदस्य हैं। उन्होंने न केवल सामान्य सभा में उपस्थिति दी वरन् कार्यकारिणी समिति की बैठक में भी गए जिसमें घोषणापत्र और कार्यक्रम को पारित किया गया और उन्होंने विचार विमर्श में सक्रिय भाग भी लिया। बंगाल लीग के संगठन के बाद से प्रांतीय संगठन का काम रुक गया है। इस सब परिस्थितियों में दिल्ली में हो रही लीग मीटिंग के लिए प्रतिनिधि चुनने के लिए 36/1 हैरीसन रोड पर हुई मीटिंग पूरी तरह से अनियमित और असंवैधानिक थी।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी प्रस्ताव पर विचार

7 नवंबर, 1928

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की मीटिंग काफी सफल थी। कुछ भयभीत सदस्यों को संविधान के आधार के प्रश्न पर बंट जाने की आशंका थी। मैंने फारवर्ड के एक प्रतिनिधि को कलकत्ता जाने से पहले बताया था कि एक तरफ तो अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी नेहरू रिपोर्ट को समाप्त नहीं कर सकती और दूसरी तरफ पूर्ण स्वतंत्रता के लक्ष्य को छोड़ नहीं सकती। मैंने आगे यह भी कहा था कि इन दोनों स्थितियों में कहीं समझौता करना होगा और मेरी दृष्टि में ऐसा करना न केवल संभव है वरन् अत्यधिक वांछनीय भी है। मुझे प्रसन्नता है कि मेरी यह आशा पूरी हुई। यह भी एक सुखद बात है कि वर्किंग कमेटी ने इस समझौते को सर्वसम्मति से मानने का निर्णय किया और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने इसे मानने की संस्तुति भी की। मीटिंग में स्वीकृत फार्मूला स्वतंत्रता तथा डोमिनियन स्थिति दोनों के समर्थकों को समान रूप से मान्य होना चाहिए।

"अखबारों के समाचार काफी भ्रामक हैं और मैं नहीं जानता कि श्री सत्यमूर्ति का कथन कितनी ठीक तरह से प्रस्तुत किया गया है। मैं इतना अवश्य कह सकता हूं कि न तो पंडित जवाहरलाल नेहरू ने और न ही मैंने इसे पूरी तरह से स्वीकार किया। हमने इसे विशेष रूप से स्पष्ट किया कि हम सर्वदलीय कांफ्रेंस के अनेक सदस्यों से संविधान के आधार पर असहमत हैं लेकिन हमने लखनऊ में स्वतंत्रता के संविधान में संशोधान का कोई प्रस्ताव किन्हीं कारणों से नहीं रखा था। इन कारणों को हमने बाद में सबके सामने स्पष्ट भी कर दिया। उन्हीं कारणों से हम इस प्रश्न पर सदन में मतभेद नहीं चाहते थे। ऊपरी तौर पर यह कहना कि हमने रिपोर्ट दिल से मान ली ठीक नहीं है। मैं अभी भी पूरी दृढ़ता से हमेशा की तरह विश्वास करता हूं कि हमने इस प्रश्न पर सर्वदलीय कांफ्रेंस में मतभेद न करवाकर देश के सर्वाधिक हित में काम किया।

"मैं इससे परिचित हूं और यह आलोचना स्पष्टतया बताती है कि वक्ता ने रिपोर्ट को अच्छी तरह से पढ़ा नहीं। कांग्रेस पर सर्वदलीय कांफ्रेंस बुलाने की जिम्मेदारी थी और इसने ऐसा मद्रास कांग्रेस के प्रस्ताव के कारण किया। इसलिए सर्वदलीय संविधान समिति में अपनी नियुक्ति होने के बाद काम करना मेरा कर्तव्य था।

लाला लाजपतराय की मृत्यु पर वक्तव्य

18 नवबर, 1928

जब दिल इतने दुख से भरा हो, तब कुछ भी कहना सभव नहीं है लेकिन मैं देश के प्रति उनकी अतिम सेवाओं का वर्णन हार्दिक आनद और गौरव से करूगा। जब साइमन कमीशन लाहौर आया था लालाजी, जनता के अग्रणी होकर जुलूस के आगे-आगे आए और प्रसन्नतापूर्वक उस नतृत्व की कीमत चुकाई। आज कौन कह सकता है, कि एक पुलिस वाले की लाठी के स्पर्श का उनकी अचानक मृत्यु से कोई सबध है।

हाल ही में, मुझे उनसे मिलने के दो अवसर मिले, एक लखनऊ में और दूसरा दिल्ली में। लखनऊ में वे सर्वदलीय कान्फ्रेंस की सफलता के लिए मुख्यत उत्तरदायी थे। मुझे इस बात में सदेह है कि उनके बगैर पजाब, सिंध तथा अन्य विवादास्पद मामलों में समझौता सभव हो सकता था। नेहरू रिपोर्ट को लोकप्रिय करने के लिए उन्होंने जबर्दस्त प्रचार कर लखनऊ में अपने काम को तेजी से किया। दिल्ली में उन्हें अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के सदस्यों ने बहुत सम्मान दिया और उनके भाषण ने जिसमें उन्होंने शांति-व्यवस्था के रक्षकों द्वारा कायरतापूर्ण हमले के बारे में क्रोध और भावावेश अभिव्यक्त किया प्रभावशाली रहा।

ईश्वर की इच्छा ऐसी बनी कि उन्होंने जाने से पहले अपनी पूरी सपत्ति राष्ट्र को दान कर दी। मुझे इसी तरह ही देशबधु के दान की याद आती है। इसी तरह से महान व्यक्ति जीते हैं और मृत्यु को प्राप्त करते हैं। लालाजी के पास अपनी शक्ति थी प्रतिभा थी और वे अपनी प्रसिद्धि तथा गौरव के शिखर पर मृत्यु को प्रापत हुए। वे अपने देशवासियों को रोता छोड़ गये हैं। मृत्यु को देखें तो उनकी मृत्यु सुखद थी। लकिन उनके गुलाम देशवासियों को कौन देखेगा?

बौड़िया जूट मिल की हड़ताल पर वक्तव्य

27 नवंबर 1928

मैं रविवार 25 नवबर को हडताल की स्थिति के बारे में पूरी जानकारी लेने हतु बौडिया गया था। मुझे वहा जाने पर जो बात सबसे पहले मालूम हुई वह यह थी कि मिल के अधिकारी आस-पास के गावों के वास्तविक रूप में जमींदार थे। वे मिल अधिकारी और जमींदारों के दोहरे रूप में हडतालियों पर दबाव डाल रहे थे। शुरू में मिल के आस-पास कहीं भी कोई सार्वजनिक सभा नहीं हो सकी लेकिन बडी मुश्किल और काफी त्याग तपस्या के बाद, गाव वाले मीटिंग करने के लिए कर्बला मैदान ले सके थे।

मैं मिल अधिकारियों के मजदूरों के प्रति व्यवहार और उनकी सेवा स्थितियों के बारे में मिली शिकायतों से घिरा था। मैं शीघ्र ही उनकी शिकायतों के विस्तृत विवरण को प्रकाशित करूगा। इस समय मैं इतना ही कह सकता हू कि यदि शिकायतें आशिक रूप से भी ठीक है तब सेवा अवस्थाए भयकर तथा हृदय विदारक हैं। इस तथ्य को बल

लाभ कमा रही हैं।

मिल अधिकारियों का जमादारों के रूप में किए गए व्यवहार की भी काफी शिकायतें हैं। मुझे बताया गया कि नहरों के साथ साथ वाहनों को आने जाने नहीं दिया जाता। ये बहुत ही गंभीर शिकायतें हैं और इनकी गहन जांच पड़ताल होनी चाहिए।

जूट मिलों में आदमी चार महीने से भी अधिक समय से हड़ताल पर हैं। वे सब अपने निश्चय पर अडिग, दृढ़ और संगठित हैं। मुझे हड़ताली कर्मचारियों के एक बड़े समूह को संबोधित करने का अवसर मिला और मैंने देखा कि उनका मनोबल काफी ऊंचा है। लंबी चली आ रही लड़ाई में मैं उनकी हिम्मत और पकड़ की प्रशंसा करता हूं। उन्हें वास्तविक रूप में कोई वित्तीय सहायता बाहर से नहीं मिली लेकिन फिर भी दृढ़ता से वे लड़ रहे हैं।

इस संबंध में अधिकारियों द्वारा हमारी मीटिंग में अव्यवस्था फैलाने की कोशिश की मैं कड़ी निंदा करता हूं। जब मीटिंग चल रही थी तब इसमें बाहर से अव्यवस्था फैलाने की पूरी कोशिश की गई थी। मीटिंग में अफवाहें आनी शुरू हो गयी थीं कि कंपनी के कुछ कर्मचारियों ने गांव वालों पर हमले करने शुरू कर दिए थे जब मीटिंग के कारण गांव के बड़े-बुजुर्ग लोग गांव से बाहर थे। जैसे यह खबर मीटिंग में पहुंची, वहां थोड़ी देर के लिए जोश सा उठा था लेकिन इस वक्ताओं ने उसी समय ठंडा कर दिया। आज ही सुबह सुबह बौड़िया से एक संदेशवाहक मेरे पास आया था कि वफादार कर्मचारी गरीब और निरस्त्र ग्रामीणों पर हमले की तैयारी कर रहे थे। यदि यह रिपोर्ट ठीक है तो इससे जनता जो निष्कर्ष निकालती है वे स्पष्ट हैं। रविवार की रात्रि में संक्रैल थाने में इन उपद्रवों की लिखित रूप में एक रिपोर्ट भेजी गई थी। बौड़िया थाने का इंचार्ज भी इस मीटिंग में था और उसने सभी सूचना वहां एकत्र की थी। समय पर सूचना मिलने पर भी यदि संक्रैल और बौड़िया थानों के इंचार्ज कोई कार्यवाही नहीं करते तब गलती उन्हीं की होगी।

अपनी अंतिम राय देने से पहले, मुझे पूरी सूचना की प्रतीक्षा करनी ही चाहिए। लेकिन मैं यह भी स्पष्ट करना चाहूंगा कि बौड़िया थाने के आस पास के ग्रामीणों को विशेष सुरक्षा मिलनी ही चाहिए, क्योंकि उनका शोषण एक ऐसे वर्ग द्वारा किया जा रहा है जो मिल अधिकारी भी हैं और जमींदार भी। जो कुछ भी मैंने सुना है, यदि उसका एक अंशमात्र भी सही है तब मुझे कहना पड़ेगा कि कलकत्ता से 15 मील के आस पास की दूरी में रहने वाले गरीब ग्रामीण एक दूसरे 'राज' के अधीन रह रहे हैं।

मैं लोगों का ध्यान बौड़िया की स्थिति की तरफ आकर्षित करना चाहूंगा। यह कल्पना करना भी कठिन है कि कलकत्ता के इतने नजदीक ऐसी घटनाएं घट जाती हैं जिन पर हर आदमी को शर्म महसूस होती है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि और अधिक प्रचार प्रसार से हम बौड़िया के हड़ताली ग्रामीणों के प्रति जनता का सक्रिय सहयोग और सहानुभूति प्राप्त कर सकेंगे।

फ्री प्रेस पर निषेधाज्ञा पर वक्तव्य

28 नवम्बर, 1928

सर जान साइमन के फ्री प्रेस आफ इंडिया के प्रति किये गये व्यवहार पर मुझे बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं। एक तरह से मुझे प्रसन्नता है कि सर जान ने इससे भारत उग्रवादी सिद्धांतों का खोखलापन उजागर कर दिया है। भारतीय प्रेस के सामने भारतीय जनता की तरह एक भारी काम है अथवा यह अपने वर्तमान बंधनों से मुक्त हो सकता है। फ्री प्रेस ऑफ इंडिया एक संस्था है जिसके लिए मेरे हृदय में एक विशेष स्थान है और जिसके हितों के प्रति मैं वास्तव में जागरूक हूं। मुझे इसमें सन्देह नहीं है कि भारतीय प्रेस के अन्य अनुभागों की तरह यह सभी हमलों के बाद भी जीवित रहेगा तथा और अधिक मान और शान के साथ आगे बढ़ेगा। हम इंडियन जर्नलिस्ट एसोसिएशन कलकत्ता के सचिव द्वारा उठाये गये इस कदम के लिए कृतज्ञ हैं कि उन्होंने उन सभी को कान्फ्रेंस में बुलाया जो भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता के समर्थक हैं। ईश्वर सफलता दे यही मेरी कामना है।

श्रीयुत रामानन्द चटर्जी सम्पादक माडर्न रिव्यू, श्रीयुत कृष्ण कुमार मित्रा सम्पादक संजीवनी मौलवी मुजीबर रहमान सम्पादक मुसलमान और श्री जे० चौधरी सम्पादक कलकत्ता वीकली नोट्स इन सभी ने पत्रकारों की एक कान्फ्रेंस बुलाने के विचार का समर्थन किया है जिसमें (1) फ्री प्रेस के बंद किये जाने से उत्पन्न स्थिति और उस पर आधारित पूरा केस (2) दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में एक अखिल भारतीय पत्रकार कान्फ्रेंस बुलाने की संभावना पर विचार किया जाएगा।

महात्माजी के नाम पत्र

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

43 वां सत्र

कलकत्ता 1928

सन्दर्भ संख्या 50 कलकत्ता

1 वुडबर्न पार्क

3 दिसम्बर 1928

प्रिय महात्माजी

मैं आपके पास एक नवयुवक का पत्र भेज रहा हूं जो आपके कलकत्ता प्रवास के दौरान आपकी सेवा करना चाहता है। मुझे मालूम नहीं आपको याद है कि नहीं इसने पहले भी कई बार आपकी सेवा की है। मुझे आपके निर्देशों की प्रतीक्षा है कि मैं इसे क्या जवाब दूं।

मैं कृतज्ञ हूं यदि आप कृपा कर मुझे बता सकें कि आपको कितने स्वयंसेवकों की आवश्यकता पड़ेगी और उनकी योग्यता या पात्रता क्या होनी चाहिए। यदि आप यह भी

और जटिलताओं से परिचित भी हैं या नहीं। हम अपनी तरफ से उन सबसे पूरी तरह से असहमत हैं जिन्होंने पूरी घटना को साम्प्रदायिक रंग देने का प्रयास किया है। हम जानते हैं कि ब्रिटिश राज के प्रति वफादार लोगों द्वारा इस घटना का पूरा लाभ उठाने तथा साम्प्रदायिक भावनाओं को भड़काने की कोशिश की जा रही है। हम भारत के वर्तमान वातावरण में इस घटना को साम्प्रदायिक रंग देने के प्रयासों की भर्त्सना करते हैं। इससे सभी सहमत होंगे। हम पूरी घटना को न केवल साम्प्रदायिक मानते हैं वरन् घटिया तौर-तरीकों का अभद्र प्रदर्शन मानते हैं। फिर भी हम इतना कहना चाहेंगे कि जो इन प्रदर्शनों में भाग लेते हैं उन्हें यह सोचना चाहिए कि वे साम्प्रदायिक उद्देश्यों के लिए इस घटना का दुरुपयोग करने में मदद देकर भारतीय राष्ट्रीयता के दुश्मनों की मदद कर रहे हैं। हमें संदेह नहीं है कि अपने लंबे अनुभव के आधार पर मौलाना पूरी घटना की उपेक्षा करेंगे।

अखिल भारतीय युवा कांग्रेस के तीसरे अधिवेशन में दिया गया भाषण,

कलकत्ता, 25 दिसंबर, 1928

अखिल भारतीय युवा कांग्रेस के तीसरे अधिवेशन को स्वागत समिति की ओर से मैं आपका अपने इस शहर में हार्दिक स्वागत करता हूं। इस वर्ष कांग्रेस का तीसरा अधिवेशन हो रहा है जो युवा आंदोलन की बढ़ती शक्ति का स्पष्ट संकेत है।

संभवतः इस बात की शंका व्यक्त की जा रही है कि अखिल भारतीय युवा कांग्रेस की गतिविधियों पर इस वर्ष भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा सर्वदलीय सम्मेलन की गतिविधियां हावी हो जाएंगी। लेकिन मेरे विचार से युवा कांग्रेस जैसे समूह की वास्तविक महत्ता को कोई भी कम नहीं कर सकता। अपने जीवन में राजनैतिक समस्याओं की महत्ता को किसी भी दृष्टि से कम किये बिना, मैं यह मानता हूं कि युवाओं की समस्याएं भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। उनकी महत्ता अपनी जगह है और हम जो इस युवा गणतंत्र के सदस्य हैं, इनको अत्यधिक मान सम्मान देते हैं मुझे इसमें कतई भी संदेह नहीं कि इस कांग्रेस के अधिवेशन की कार्यवाही इसके साथ जुड़ी उसी जिम्मेदारी की गंभीरता की भावना से की जाएगी, जो हमारे कंधों पर है। मुझे इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि यह कांग्रेस इस देश के युवाओं को वर्तमान् जीवन की कुछ अत्यधिक महत्वपूर्ण समस्याओं से जूझने के लिए एक निश्चित नेतृत्व प्रदान करेगी। मैं इसलिए इसे अपना सम्मान समझता हूं कि स्वागत समिति ने मुझे इस महान अवसर पर आपका स्वागत करने का अवसर प्रदान किया है।

यदि हम अपनी सीमाओं से आगे देखें और विश्व में घट रही घटनाओं पर एक विहंगम दृष्टिपात करें तो हमें प्रत्येक देश में विशेष स्थिति नजर आएगी और वह है युवाओं में पुनर्जागरण। उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पश्चिम तक जहां जहां भी हम देखते हैं युवा आन्दोलन में एक वास्तविकता नजर आती है। हमारे लिए यह आवश्यक है कि

हमें स्पष्ट हो कि युवा आंदोलन की विशेषताएं क्या हैं इसके मुख्य प्रेरणास्रोत क्या हैं और दूसरा और इसका अंतिम उद्देश्य क्या है?

युवा पुरुषों और महिलाओं के किसी भी समूह को युवा संघ का नाम नहीं दिया जा सकता। सामाजिक सेवा संघ अथवा अकाल राहत संघ आवश्यक रूप से एक युवा संघ नहीं है। एक युवा संघ की विशेषता है कि उसमें वर्तमान व्यवस्था के प्रति असंतोष की भावना हो तथा एक बेहतर व्यवस्था की इच्छा और उस व्यवस्था को लाने की भी हो। युवा आंदोलन देखने में क्रांतिकारी हैं न कि सुधार के। वर्तमान व्यवस्था के प्रति बेचैनी अधीरता असंतोष की भावना किसी भी युवा आंदोलन को शुरू करने से पहले सदस्यों में होना आवश्यक है। व्यक्तिगत रूप से मैं ऐसे आंदोलन को बीसवीं सदी की घटना या अचानक हुई घटना नहीं मानता। सुकरात और बुद्ध के समय से ही मनुष्य एक अच्छे विश्व की कल्पना में जागता आया है। और उसी कल्पना के वशीभूत उसने समाज के पुनर्निर्माण की कोशिश की है। आधुनिक युग के युवा आंदोलन भी उसी प्रकार की कल्पनाओं और प्रयासों के अनुसार है। चाहे यह रूस का बोल्शेविकवाद हो या इटली का फासीवाद अथवा टर्की का युवा तुर्क आंदोलन चाहे यह चीन का आंदोलन हो या पर्शिया का या फिर जर्मनी का सभी तरफ आपको वही प्रेरणा वही दृष्टि और वही उद्देश्य देखने को मिलेंगे। जहां पुरानी पीढ़ी के नेता असफल हो गए हैं वहां युवाओं में स्वचेतना आ गई है और उन्होंने अपने ऊपर समाज के पुनर्निर्माण की जिम्मेदारी तथा इसे बेहतर और सुन्दर बनाने का उत्तरदायित्व लिया है।

मित्रो आओ अब हम अपने आसपास की चर्चा करें। यह न केवल जर्मनी रूस इटली और चीन के युवा हैं जो अब जागृत हैं वरन् इस देश में भी जागृति की लहर आई है। मेरा पक्का विश्वास है कि यह जागृति अनूठी है कोई ऊपरी या सतही जागरण नहीं है। भारत के युवा अब अपनी जिम्मेदारियों को अपने बड़े बुजुर्गों को सौंपकर अकर्मण्य से बैठे नहीं हैं। अथवा किसी गूंगे जानवर की तरह मात्र अनुसरण नहीं कर रहे हैं। उन्होंने महसूस कर लिया है कि वे ही एक नये भारत स्वतंत्र महान और शक्तिशाली भारत का निर्माण करेंगे। उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों को स्वीकार किया है। उन्होंने इसके परिणामों के लिए भी स्वयं को तैयार कर लिया है और अब वे भावी महान कार्य को पूरा करने के लिए स्वयं को प्रशिक्षित करने में व्यस्त हैं। इन नाजुक परिस्थितियों में भारत के हितैषियों का कर्तव्य है कि वे इस आंदोलन के बारे में निडर होकर अपनी राय दें। इसका विश्लेषण पूरी तरह से होना चाहिए कि कौन कौन सी कमियां हैं जिनको सामने लाना है तथा पूरे आंदोलन को कुशलता पूर्वक तथा लाभप्रद तरीके से चलाना है।

मैं जब भी अपने चारों तरफ देखता हूं, मेरे मन में दो विचारधाराएं आती हैं जिनके बारे में खुलकर और निडर होकर बोलना मेरा कर्तव्य है। मैं उन दो विचारधाराओं की बात कर रहा हूं जिनके केन्द्र साबरमती और पांडिचेरी हैं। मैं इन विचारधाराओं में अंतर्निहित दर्शन की बात नहीं कर रहा हूं। यह समय अधिक भौतिक दार्शनिक चिन्तन का नहीं है मैं आज आप से व्यावहारिक रूप में बात करूंगा—एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो किसी भी विचारधारा की वास्तविक महत्ता पर अपना निर्णय किसी भौतिक दार्शनिक दृष्टिकोण से न लेकर उसके वास्तविक प्रभावों और परिणामों के आधार पर लेगा।

साबरमती केंद्र की विचारधारा द्वारा किए गए प्रचार का वास्तविक लक्ष्य यह धारणा और वातावरण निर्मित करना है कि आधुनिकवाद खराब है विशाल स्तर पर उत्पादन करना बुराई है, आवश्यकताएं नहीं बढ़नी चाहिए, रहन-सहन का स्तर नहीं बढ़ना चाहिए और हमें यथाशक्ति और यथाशीघ्र बैलगाड़ी युग में वापस जाना चाहिए। आत्मा इतनी महत्वपूर्ण है कि भौतिक संस्कृति और सेना प्रशिक्षण को छोड़ा जा सकता है।

पांडिचेरी केंद्र के विचारकों द्वारा किए गए प्रचार-प्रसार का वास्तविक लक्ष्य-इस तरह की धारणा और वातावरण बनाना है कि शांतिपूर्ण-चिंतन से अच्छा और ऊंचा कुछ नहीं है। योग का अर्थ प्राणायाम और ध्यान है। यहां कर्म की तुलना में इस प्रकार का योग एक प्रकार से उच्चस्तरीय और तुलनात्मक रूप से अच्छा है। इस तरह के प्रचार-प्रसार से लोग भूल गए कि वर्तमान परिस्थितियों में आध्यात्मिक प्रगति केवल निस्वार्थ और निष्काम कर्म से ही संभव है। प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ तरीका उससे लड़ना है। जब हम चारों तरफ से खतरों और मुश्किलों से घिरे हो उस समय चिंतन मनन में आश्रय लेना दुर्बलता का लक्षण है।

यह निराशावाद ही है, जो सैद्धांतिक नहीं वरन् वास्तविक है जो इन दोनों विचारधाराओं ने प्रतिपादित किया है और जिसके विरुद्ध मेरा विद्रोह है। हमारी इस पावन भूमि में *आश्रम कोई नयी संस्था नहीं है और साधु, सन्यासी और योगी आदि कोई नई घटना नहीं है। इनका हमारे समाज में एक सम्मानीय स्थान रहा है और रहेगा। लेकिन यदि हमें एक नया भारत, स्वतंत्र खुशहाल और महान भारत बनाना है तब हमें इनके नेतृत्व की आवश्यकता नहीं है।*

मित्रो, आप मुझे क्षमा करेंगे। यदि मैंने स्पष्ट बोलने के जोश में कहीं आपकी भावनाओं को ठेस पहुंचायी हो। जैसा कि मैंने अभी कहा, मैं दोनों विचारधाराओं में अंतर्निहित मौलिक सिद्धांत को नहीं मानता वरन् एक व्यवहारिक दृष्टिकोण के वास्तविक परिणामों को समझता हू। भारत में आज हमें सक्रियवाद के सिद्धांत चाहिए। हमें दृढ आशावाद से प्रेरणा लेनी चाहिए। हमें वर्तमान में रहना है और आधुनिक परिस्थितियों के अनुकूल बनना है।

हम विश्व के एक कोने में अलग-थलग पड़कर अकेले नहीं जी सकते। जब भारत स्वतंत्र हो जाएगा तब उसे आज के दुश्मनों से आज के तरीकों से ही लड़ना होगा दोनों ही क्षेत्रों में आर्थिक और राजनैतिक। बैलगाड़ी के दिन अब लद गये और हमेशा के लिए चले गए। *जब तक नि.शस्त्रीकरण की नीति पूरी तरह से विश्व में स्वीकार नहीं हो जाती, स्वतंत्र देशों को किसी भी तरह की दुर्घटना के लिए तैयार रहना चाहिए।*

मैं उनमें से नहीं हू जो आधुनिकवाद के जोश में अपने अतीत के ऐश्वर्य को भूल जाएं। हमें अपने इतिहास पर गर्व है। भारत को अपनी संस्कृति है जो उसे अपने तरीकों से विकसित करनी चाहिए। दर्शन, साहित्य, कला और विज्ञान के क्षेत्र में हमारे पास सदा कुछ-न-कुछ नया है, जो हम दुनिया को दे सकते हैं जिसके लिए दुनिया हमारी ओर देखती है। संक्षेप में यदि कहें हमें समष्टि की ओर आना है। हमारे कुछ सर्वश्रेष्ठ विचारक और कार्यकर्ता पहले से ही इस काम में लगे हैं हमें एक तरफ फिर "वेदों की ओर मुड़ो" के नारे को रोकना है और दूसरी तरफ यूरोप की फैशन और परिवर्तन की अर्थहीन नकल पर प्रतिबंध लगाना होगा। अपनी सीमाओं पर बंधकर चलते आदोलन

का रोकना मुश्किल है। लेकिन मेरा विश्वास है कि यदि आन्दोलन के नेता ठीक रास्ते पर हों तो समय पर सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मित्रो, एक बात और कहना चाहूंगा। यह बात न केवल हमारे राजनैतिक आन्दोलनों के इतिहास में अभूतपूर्व है वरन् भारतीय युवा आन्दोलन के इतिहास में भी स्मरणीय है। मुझे आशा है और मैं प्रार्थना करता हूं कि यह अधिवेशन इस देश के युवाओं के समक्ष एक साहसपूर्ण और निश्चित दिशा रखेगा। हम अपने अध्यक्ष के रूप में बंबई के श्री नरीमन जैसे व्यक्ति का स्वागत करने के लिए सौभाग्यशाली हैं जिनका परिचय इस देश के युवाओं को देने की आवश्यकता नहीं। पश्चिमी भारत के युवाओं में श्री नरीमन अधिक परिचित, स्नेह के पात्र तथा सम्माननीय हो सकते हैं लेकिन यह भी एक सत्य है कि वे देश के अन्य भागों के युवाओं में भी उसी प्रकार परिचित, स्नेह के पात्र तथा सम्माननीय हैं। हमने गत कुछ वर्षों में उनके जीवन और क्रियाकलापों को नजदीक से देखा है। उनको हम अपने बीच पाकर सौभाग्यशाली हैं। उनके सुयोग्य निर्देशन और नेतृत्व में हमारा यह अधिवेशन सर्वाधिक सफल माना जाएगा।

काग्रेस कलकत्ता अधिवेशन मे दिया गया भाषण

दिसंबर 1928

मुझे खेद है कि महात्मा गांधी द्वारा दिए गए एक प्रस्ताव पर जिसे यदि अधिकांश न भी कहें तो हमारे कुछ बड़े नेताओं का समर्थन है मुझे संशोधन का प्रस्ताव देना पड़ रहा है। यह तथ्य कि मैं आज एक संशोधन प्रस्ताव दे रहा हूं, जो इस बात का प्रतीक है कि कांग्रेस की पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी की विचारधारा में एक मूल अन्तर है।

मुझसे कुछ मित्रों ने पूछा है कि मैं नेहरू रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करने के बाद स्वतंत्रता के लिए बोलने के लिए क्यों खड़ा हो गया हूं। मैं केवल रिपोर्ट में दिए गए एक वक्तव्य की ओर ही ध्यान दिलाना चाहूंगा कि रिपोर्ट में संविधान संबंधित सिद्धांतों को स्वतंत्रता के लिए बनाए गए संविधान में पूरे के पूरे लागू किए जा सकते हैं। मैं नहीं सोचता कि इस संशोधन का प्रस्ताव करने के मेरे कार्य को किसी भी प्रकार असंगत कहा जा सकता है।

मैं व्यक्तिगत स्पष्टीकरण के तौर पर एक बात और कहना चाहूंगा। आप जानते हैं कि निजी बातचीत में भी तथा अन्यत्र भी मैंने कहा कि मैं बड़े बुजुर्ग नेताओं के बीच में नहीं आना चाहता। इसका कारण था कि उस समय यदि हमारा संशोधन स्वीकृत हो जाता तो सदन में मत विभाजन के परिणामों की जिम्मेदारी मैं अपने ऊपर नहीं लेना चाहता था। आज मैं उस जिम्मेदारी को लेने को तैयार हूं। मैं उस समय तक इस संबंध में तैयार हूं जब तक कि यह संशोधन स्वीकृत नहीं हो जाता।

कुछ ऐसी घटनाएं हैं जिनके कारण मैंने अपने पहले के विचारों में परिवर्तन किया है। आप जानते हैं कि बंगाल के अधिकांश प्रतिनिधि यहां एकत्र हुए हैं और उन्होंने

इस संशोधन को प्रस्तावित करने का निश्चय किया है और वे सदन का मत स्वीकार करने को तैयार हैं। चाहे इसका कोई भी परिणाम हो। मैं आपको आश्वस्त कर सकता हू कि यदि मैं आज नहीं भी होता तो भी उनकी तरफ से कोई और सदस्य इस संशोधन को सदन में लाता।

एक और तथ्य यह है कि इंडिपेंडेंस फार इंडिया लीग ने बहुमत से इस संशोधन का समर्थन करने तथा सदन का मत स्वीकार करने का निर्णय लिया है।

हम में से जो इस संशोधन को समर्थन देना अपना कर्तव्य मानते हैं हृदय से यह महसूस करते हैं कि इस समय भारत को स्पष्ट और बिना किसी लाग लपेट के डोमिनियन स्टेट्स अथवा स्वतत्रता जैसे विषय पर अपनी बात कह देनी चाहिए। मैंने अपने नेताओं से कहा है कि लाला लाजपतराय की मृत्यु, लखनऊ और कानपुर की घटनाएं तथा महामहिम वायसराय के भाषण के बाद हम काग्रेस से एक ऐसा साहसपूर्ण रुख अपनाने को आशा करते हैं जो आत्म-सम्मान के अनुकूल हो। इसकी बजाय हमने देखा कि मद्रास प्रस्ताव को कुछ पैमानों में कम हो रहा है।

हम महसूस करते हैं और हम कहते हैं कि हम एक दिन के लिए भी स्वतत्रता के ध्वज को नीचा करने को तैयार नहीं हैं। हम सदन में चाहे जीतें या हार, इससे हमें ज्यादा सरोकार नहीं, क्योंकि भारत को स्वतत्र करने की जिम्मेदारी उन्होंने ले ली है। हम अपने नेताओं को चाहते हैं, उन्हें प्यार करते हैं, उनका सम्मान करते हैं, लेकिन साथ-साथ हम यह भी चाहते हैं कि वे समय के साथ-साथ चलें। मैंने उनसे यह भी कहा, मैं और पंडित जवाहरलाल नेहरू अतिवादियों के बीच उदारवादी समझे जाते हैं और यदि वरिष्ठ नेता इन उदारवादियों के साथ भी समझौता नहीं करना चाहते तब पुरानों और नयों के बीच की खाई कभी भी भरी नहीं जा सकेगी। देश के नवयुवकों म एक नई जागृति आई है। वे अब अधानुकरण करना नहीं चाहते। उन्होंने महसूस किया है कि वे भविष्य के उत्तराधिकारी हैं और भारत को स्वतत्र करने की जिम्मेदारी उन्हीं पर है, और इस नई चेतना के साथ वे स्वय को आने वाले कठिन कार्य के लिए तैयार कर रहे हैं।

एक और तर्क है जो मुझे सर्वाधिक आकर्षित करता है, और वह है अतर्राष्ट्रीय स्थिति। आपको याद रखना चाहिए कि मद्रास प्रस्ताव के बाद अतर्राष्ट्रीय राजनीति मे भारत की एक नई भूमिका है। मुझे डर है कि यदि यह प्रस्ताव पास हो गया तब हम यदि पूरी तरह से नहीं तो आंशिक रूप से, मद्रास प्रस्ताव के बाद प्राप्त गरिमा को खो देंगे। आप जानते होंगे कि इसके बाद हमें विश्व के दूर-दूर के देशों से सदेश मिले हैं। अब प्रश्न है – क्या हम मद्रास में लिए गए निर्णयों से मुकर जाएंगे? या फिर हम आगे बढ़ेंगे? क्या हम सरकार के रूख पर अच्छी प्रतिक्रिया करेंगे? और सरकार का रुख क्या रहा है? हमने लालाजी की दुखद मृत्यु को देखा है। कानपुर और लखनऊ की घटनाओं को झेला है। इन सबके बाद क्या हमें प्रतिरोध अथवा साहसपूर्ण रुख नहीं अपनाना चाहिए?

मैं आपसे एक सीधा प्रश्न पूछना चाहूगा। मुख्य प्रस्ताव में आपने ब्रिटिश सरकार को एक वर्ष का समय दिया है। क्या आप अपनी छाती पर हाथ रखकर विश्वास के

साथ कह सकते हैं कि आपको बारह महीने की अवधि में डोमिनियन स्टेटस मिल जाएगा? पंडित मोतीलाल नेहरू ने स्पष्ट रूप से अपने भाषण में कहा था कि उन्हें इसमें विश्वास नहीं है। तब हम इन बारह महीनों के लिए भी अपने ध्वज को झुका कर क्यों रखें। हम क्यों नहीं कह सकते कि ब्रिटिश सरकार में अंतिम विश्वास भी हमने खो दिया है और अब हम साहसिक कदम उठाने जा रहे हैं।

आप पूछ सकते हैं कि स्वतंत्रता के इस प्रस्ताव से हमें क्या मिलेगा। मेरा कथन है कि हम एक नई मानसिकता विकसित कर सकेंगे। आखिर हमारे राजनैतिक पतन का मूल कारण क्या है? यह मानसिकता का प्रश्न है और यदि आप इस गुलामी की मानसिकता से निकलना चाहते हैं तो आपको अपने देशवासियों को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित करना होगा। मैं इससे भी आगे कहता हूं कि मान लीजिए हम इस पर बात की कार्यवाही नहीं करते हैं तब देशवासियों के सामने स्वतंत्रता के लक्ष्य के बारे में ईमानदारी से बताने मात्र से हम एक नई पीढ़ी को तैयार कर सकते हैं।

लेकिन मैं आपको बता दूं कि हम निष्क्रिय बैठने वाले नहीं हैं। मैंने पहले ही कहा है कि युवा पीढ़ी को अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए और वे इस काम के लिए तैयार हैं। हम अपना कार्यक्रम स्वयं तैयार करेंगे और उसके अनुसार यथासंभव कार्य करेंगे जिससे कि हमारे प्रस्ताव को रद्दी की टोकरी में फेंके जाने का कोई खतरा न रहे।

समाप्त करने से पहले मैं एक बात और कहना चाहूंगा। घटनाएं संकेत दे रही हैं कि एक और विश्व युद्ध अवश्यम्भावी है। मैं इसके कई कारण देता हूं। पहला कारण है कि युद्ध लाने वाली परिस्थितियां विश्व के विभिन्न भागों में मौजूद हैं। वर्साय संधि द्वारा लाए गए समझौते ने सभी लोगों की राष्ट्रवादी इच्छाओं को संतुष्ट नहीं किया है। इसने इटली, बाल्कन, रूस, आस्ट्रिया, हंगरी आदि देशों के लोगों को संतुष्ट नहीं किया है और यही एशियाई देशों की स्थिति है। विश्व में सोवियत रूस के विरुद्ध पूंजीवादी देशों का संगठन है। इसके अतिरिक्त शस्त्रों की होड़ अलग लगी हुई है। ये सब घटक विश्व युद्ध के सूचक हैं। मैं आपको बताता हूं कि निरस्त्रीकरण की बात करना सबसे बड़ा ढकोसला है। वास्तविकता यह है कि जितने भी स्वतंत्र देश हैं वे एक दूसरे से युद्ध की तैयारी में हैं। यदि भारत को सजग रहना है तो एक नई मानसिकता बनानी होगी। एक ऐसी मानसिकता जो पूर्ण स्वतंत्रता की बात करे। यह तभी संभव है जब हम अपने लक्ष्यों को स्पष्ट और सुनिश्चित शब्दों में कहें।

मैं नहीं समझता कि हमें एक क्षण भी व्यर्थ करना चाहिए। जहां तक बंगाल का संबंध है आप जानते ही हैं कि इस देश में राष्ट्रीय आंदोलन की शुरुआत से ही हमने स्वतंत्रता को पूर्ण रूप से माना है। हमने कभी डोमिनियन स्टेटस के रूप में इसे नहीं समझा। हमारे देश के इतने लोगों के बलिदान के बाद, हमारे कवियों द्वारा इतने राष्ट्रगान के बाद, हमने स्वतंत्रता को पूर्ण रूप में ही समझा है। डोमिनियन स्टेटस की बात हमारे लोगों के गले नहीं उतरती। विशेषकर उस युवा पीढ़ी के जो अब बड़ी हो रही है और हमें यह भी याद रखना है कि यह आज की युवा पीढ़ी ही है जिसके हाथ में देश का भविष्य है।

अंत में मैं एक आखिरी अपील करना चाहता हूं कि मैं नहीं मानता कि यदि हम

संशोधन स्वीकार कर लें तो इसमें किसी भी तरह से हमारे नेताओं के प्रति लेशमात्र भी अपमान की बात होगी। नेताओं के प्रति सम्मान और स्नेह, श्रद्धा और प्रशंसा एक अलग विषय है लेकिन सिद्धांतों के प्रति सम्मान एक अलग विषय है। मेरे प्रस्ताव को कृपया स्वीकार करें और नई पीढ़ी को एक नई चेतना के साथ प्रेरित करें।

भारत की राष्ट्र भाषा

बंगाल का हिंदी के प्रति विरोध नहीं

श्री सुभाष बोस द्वारा गलतफहमी का निराकरण

*स्वागत समिति राष्ट्र भाषा सम्मेलन के अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री सुभाष बोस ने निम्न भाषण दिया - 28 दिसम्बर 1928

अत्यधिक हार्दिक प्रसन्नता के साथ हम आप सबका स्वागत इस महान शहर कलकत्ता में कर रहे हैं। जो इस शहर को जानते हैं उन्हें यह बताने की आवश्यकता नहीं कि यहां लगभग 5 लाख हिंदुस्तानी रहते हैं। पूरे भारत में ऐसा कोई शहर नहीं है जहां इतने अधिक हिंदी भाषी व्यक्ति रहते हों। मैं हिंदी भाषा का कोई विद्वान नहीं वास्तव में खेद के साथ मैं यह स्वीकार करता हूं कि मैं सही हिंदुस्तानी में अपने विचार अभिव्यक्त नहीं कर सकता हूं। आप मुझसे आशा करें कि मैं आपको आधुनिक हिंदी भाषा के इतिहास के बारे में कुछ बताऊं। मुझे मेरे मित्रों ने बताया है कि कलकत्ता ने आधुनिक हिंदी पत्रकारिता को जन्म दिया। इसी शहर में लल्लूलाल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक प्रेमसागर और सदल मिश्र ने चन्द्रावली लिखी और साथ ही यह भी बताया कि ये दोनों आज हिंदी गद्य के अग्रगामी माने जाते हैं। कलकत्ता में पहले हिंदी प्रेस की स्थापना हुई थी और यहीं पर हिंदी का एक समाचार पत्र 'बिहार बंधु' का प्रकाशन आरंभ हुआ था। इसलिए हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में कलकत्ता का कोई तुच्छ स्थान नहीं है। मैं इतना और कह दूं कि कलकत्ता विश्वविद्यालय प्रथम था जिसने हिंदी में एम.ए. की पढ़ाई आरंभ की। आज भी हिंदी पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में कलकत्ता एक अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इसलिए कलकत्ता हिंदी भाषी लोगों के लिए घर जैसा ही घर है। मुझे आशा है कि वे उनके स्वागत में रह गई कमियों के कारण हुई असुविधाओं पर ध्यान नहीं देंगे।

सबसे पहले मैं अपने अधिकांश हिंदी भाषी मित्रों के मन से एक गलतफहमी निकालना चाहता हूं। इनमें काफी लोग ऐसे हैं जो यह सोचते हैं कि हम बंगाली हिंदी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार करने के विरुद्ध हैं अथवा हम इस बात का उपहास करते हैं। केवल अशिक्षित लोग ही नहीं हैं वरन् शिक्षित और सुसम्पन्न लोग भी ऐसा सोचते हैं। उन्होंने हमें पूरी तरह से गलत समझा है और इस गलतफहमी को दूर करना मेरा कर्तव्य है।

बंगालियों ने हिंदी के लिए क्या किया

मुझे आशा है आप मेरे ऊपर किसी निम्न दंभ या प्रतिद्वंद्विता का दोष नहीं लगाएंगे। जब मैं यह कहता हूं कि हम बंगालियों ने हिंदी भाषी क्षेत्र के निवासियों को छोड़कर अन्य किसी प्रांत के निवासियों की तुलना में हिंदी साहित्य की अधिक सेवा की है। मैं यहां पर हिंदी

---

* यह भाषण हिन्दी में दिया गया था।

प्रचार की बात तो कर ही नहीं रहा हूं। मैं हिंदी प्रचार-प्रसार में स्वामी दयानंद तथा उनके आर्य समाज द्वारा किए गए कार्य को अधिक मान्यता देता हूं। मैं महात्मा गांधी द्वारा किए गए तथा किए जा रहे हिंदी प्रचार कार्य को भी जानता हूं। मैं आपके सामने इसके केवल साहित्यिक पहलू को ही रखूंगा। क्या हिंदी भाषी लोग भूदेव मुखर्जी के बिहार में हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि को लोकप्रिय बनाने में किए गए प्रयासों को भूल सकेंगे? क्या मुझे नवीनचंद्र राय द्वारा पंजाब में हिन्दी के लिए किए गए पावन कार्यों को याद कराना पड़ेगा? मुझे बताया गया है कि गत शताब्दी के आठवें दशक के शुरू में इन दो बंगालियों ने बिहार और पंजाब प्रांतों में अभूतपूर्व कार्य किया है—वह भी ऐसे समय जब इन दोनों प्रांतों के हिंदी भाषी लोग या तो विरोध कर रहे थे या फिर इस आंदोलन के प्रति उदासीन थे। इसलिए यह ठीक ही है कि ये दो बंगाली उत्तर भारत में हिंदी आंदोलन के अग्रणी माने जाते हैं। और मैं इंडिया प्रेस के मालिक श्री चिंतामणी घोष द्वारा हिंदी साहित्य के लिए किए गए असीम कार्य का तो क्या जिक्र करूं? मैं नहीं जानता कि किसी हिंदी भाषी प्रकाशक ने आधुनिक हिंदी साहित्य की सेवा के लिए इतना किया होगा, जितना इस अकेले बंगाली व्यक्ति ने। आप स्वर्गीय न्यायमूर्ति शारद चरण मित्र द्वारा किए गए प्रशंसनीय प्रयासों को जानते ही हैं जिन्होंने एक यश प्रतिहार परिषद् नामक संस्था की स्थापना की थी तथा देवनागरी लिपि को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से देवनागरी में एक पत्रिका भी निकाली थी। 'हितवार्ता' के मालिक बंगाली थे और 'हिंदी बंगवासी' भी हमारे ही प्रांत के एक व्यक्ति द्वारा निकाला जा रहा है।

वर्तमान समय में

आजकल भी हम हिंदी भाषा के लिए थोड़ा बहुत कर ही रहे हैं। श्री अमिय चक्रवर्ती के कार्यों को भूल जाना कोरी अकृतज्ञता होगी, जो हिंदी पत्रकारिता में गत पांच वर्षों से कठिन परिश्रम कर रहे हैं। श्री नागेन्द्रनाथ बसु ने विश्वकोश का हिंदी में अनुवाद कर तथा श्री रामानन्द चट्टोपाध्याय ने विशाल भारत को छापकर हिंदी भाषा की अमूल्य सेवा की है। मैं उन अनेक पुस्तकों की तो चर्चा ही नहीं करूंगा जो बंगाली से हिंदी में अनूदित की गई हैं और जिन्होंने हिंदी भाषी व्यक्तियों के ज्ञान में भी काफी वृद्धि की है। मैंने यह सब बातें आपके सामने किसी घमंड अथवा मिथ्या अभिमान में नहीं कहीं हैं वरन् मैं यह विनम्रतापूर्वक पूछना चाहूंगा कि क्या इतनी बातें जानने के बाद भी कोई समझदार व्यक्ति हम बंगालियों को हिंदी विरोधी कह सकता है। हम अपनी मातृभाषा यानि बंगला को प्यार करते हैं और यह कोई पाप नहीं है।

एक निराधार डर

हममें कुछ ऐसे हो सकते हैं जिन्हें डर है कि हिन्दी का प्रचार-प्रसार हमारी मातृभाषा बंगाली को समाप्त करने के अंतिम उद्देश्य से किया जा रहा है। यह डर निराधार है। जहां तक मैं जानता हूं हिन्दी प्रचार का एक ही उद्देश्य है कि अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी को लाया जाए। हम अपनी भाषा बंगाली को छोड़ नहीं सकते, जो हमें अपनी जननी से अधिक प्यारी है। विभिन्न प्रांतों के लोगों के साथ विचारों के आदान-प्रदान के लिए हमें अंतर्राज्य भाषा के रूप में हिंदी सीखनी चाहिए। इतना ही नहीं, मैं विश्वास करता हूं, स्वतंत्र और स्वशासित भारत के युवाओं को एक या दो यूरोपीय भाषा—फ्रेंच जर्मन आदि सीखनी पड़ेगी, जिससे कि वे स्वयं को अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं से पूर्णतया परिचित हो सकें। मैं इस प्रश्न को नहीं उठाऊंगा कि हम अपनी राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी

या अंग्रेजी को अपनाए। मैं यहां महात्माजी से सहमत हूं कि हमें दोनों लिपियां सीखनी चाहिए–देवनागरी और उर्दू। जैसे-जैसे समय गुजरता जायगा दोनों में से जो भी उचित होगी वह राष्ट्रीय भाषा की लिपि के रूप में अपनी स्थिति मजबूत कर लेगी। साधारण हिंदी और साधारण उर्दू में कोई अंतर नहीं है। हमें इस मुद्दे पर झगड़ना नहीं चाहिए। वैसे और बहुत सी विवादस्पद समस्याएं हैं जिनका समाधान होना है हमें उनकी संख्या बढ़नी नहीं चाहिए।

महात्माजी से एक निवेदन

हिंदी प्रचार के कार्य में मदद करने के लिए, मैं आसाम, महात्माजी से तथा अन्य हिंदी भाषी लोगों से निवेदन करूंगा कि हमें बंगाल और आसाम में वे सब सुविधाएं प्रदान करें जो आपने मद्रास प्रांत में उपलब्ध करायी हैं। आप बंगाल के युवाओं और कार्यकर्ताओं के लिए हिंदी प्रशिक्षण का कोई स्थायी प्रबंध कर सकते हैं। अकेले कलकत्ता में अनेक हिंदी सीखने के इच्छुक नवयुवक हैं लेकिन अध्यापक नहीं हैं। बंगाल कोई धनवान प्रांत नहीं है और यहां के छात्र हिंदी सीखने के लिए कुछ खर्च करने की स्थिति में नहीं हैं। यदि कलकत्ता के समृद्ध हिंदी भाषी व्यक्ति बंगाल के युवाओं को हिंदी सिखाने की सोचें तो उनके लिए यह कोई कठिन कार्य नहीं है। आप बंगाली छात्रों को छात्रवृत्ति देकर उन्हें हिंदी प्रचारक बना सकते हैं। आप हमें चार-पांच महीनों में बोल की भाषा हिंदी सिखा सकते हैं और उसका कोई प्रमाणपत्र दे सकते हैं। आपको अपनी छात्रसूची में मुझ जैसे व्यस्त व्यक्तियों को भी सम्मिलित करना होगा। हम जो श्रम आंदोलन में भाग लेते हैं उन्हें हिंदुस्तानी सीखने की आवश्यकता महसूस करते हैं। हिंदुस्तानी के मामूली ज्ञान के बिना हम उत्तर भारत के श्रमिकों के दिलों में पैठ नहीं सकते। यदि आप हिन्दी सिखाने का कुछ प्रबंध कर सकते हैं तो मैं आश्वस्त कर सकता हूं कि हम आपके अयोग्य छात्र सिद्ध नहीं होंगे।

बंगाल के युवाओं से अपील

अंत में मैं बंगाल के युवाओं से हिंदी सीखने की अपील करता हूं। जो इसके लिए कुछ खर्च कर सकते हैं वे अवश्य करें। अंततः इस प्रांत के लोगों पर हिंदी प्रचार का सुखद बोझ होगा लेकिन वर्तमान में यह आवश्यक है कि हिंदी भाषी प्रांत हमारी मदद के लिए आगे आएं। मेरे लिए यह महत्वपूर्ण नहीं है कि कितने आदमी हिंदी सीखते हैं। मैं इस आन्दोलन में अंतर्निहित भावना की प्रशंसा करता हूं। इसकी वृद्धि के लिए पैनी दूरदृष्टि और पूर्व नियोजन की आवश्यकता है जो काफी समय गुजरने के बाद सुखद परिणाम देगी। प्रांतीयतावाद तथा अंतर्प्रांतीय द्वेषभाव को मिटाने में और कुछ इतना मददगार नहीं हो सकता जितना कि राष्ट्रीय भाषा का यह आंदोलन।

हमें अपनी प्रादेशिक भाषा का विकास भी यथासंभव करना चाहिए। इसमें कोई हस्तक्षेप भी करना नहीं चाहता। वास्तव में हम किसी तरफ से कोई हस्तक्षेप सहन भी नहीं कर सकते, जहां तक हमारी अपनी मातृभाषा का प्रश्न है, लेकिन यह हिंदी या हिंदुस्तानी ही है जिसे राष्ट्रीय भाषा का दर्जा देना होगा। नेहरू रिपोर्ट में भी यही सिफारिश की गई है। यदि हम बंगाल में हिंदी प्रचार के कार्य में अपना तन और मन लगा दें तो हम निःसंदेह सफल होंगे और वह दिन दूर नहीं जब हिंदी स्वाधीन भारत की राष्ट्रीय भाषा होगी।

ब्रिटिश माल का बहिष्कार

(नेताजी की लेखनी से पहली अंग्रेजी पुस्तक 'बायकाट ऑफ ब्रिटिश गुड्स' 1929 के प्रारभ में छपी। लेखक की मूल भूमिका तथा पूरा लेख सभी तालिकाओ और चार्ट के साथ आगे दिया जा रहा है—सपादक)

लेखक की मूल भूमिका

यह पुस्तक विभिन्न स्रोतों से संकलित की गई है। अधिकाश अधिकारिक आकडो से तथा कुछ अन्य अधिकृत प्रकाशनों से। मैंने एक पूरी सदर्भ ग्रथावली देने का प्रयास किया है जो मुझे आशा है पुस्तक में दिए गए प्रत्येक वक्तव्य के समर्थन के लिए पर्याप्त होगी। इसमें दिए गए निष्कर्ष लोकप्रिय धारणाओं से भिन्न हैं। उदाहरणर्थ—ब्रिटिश सूती माल के बहिष्कार की व्यवहारिकता पूरी तरह से सरकारी आकडों से निकाली गई है जो नि.सदेह इस पुस्तक में एक नये ढग से प्रस्तुत की गई है लेकिन अन्य सभी आकडे उसी प्रकार हैं जिस प्रकार वे सरकारी फाइलों में हैं।

न केवल अनेक स्रोत इसी ढग से बनाये गए हैं वरन् इसका सकलन भी विभिन्न समयों पर अन्य व्यस्तपूर्ण कार्यों के दौरान किया गया है। बगाल में 'सूती उद्योग का इतिहास' पर पहला भाग दिसबर 1927 में सकलित किया गया था। 'ब्रिटिश माल का बहिष्कार' विषय का दूसरा भाग फरवरी 1928 मे बगाल में बहिष्कार आदोलन के शुरू होने से पहले तैयार हो गया था। अत के दो भाग केवल कुछ सप्ताह पहले ही लिखे गए हैं। ये विभिन्न भाग जब-जब तैयार होते गए तब-तब छपते रहे। इसलिए पूरी पुस्तक को फिर से देखना सभव नही हो सकता है। यद्यपि मैं यह सब करना चाहता था। मैं अपने पाठकों का ध्यान इन सब कमियों की ओर दिलाना चाहता हू।

अत में मैं डा हरीश चद्र सिन्हा को इस पुस्तक के सकलन में मदद के लिए तथा श्री गोपाल लाल सान्याल को इसके मुद्रण के लिए अपना हार्दिक धन्यवाद देना चाहूगा।

सुभाष चद्र बोस

कलकत्ता 19 फरवरी, 1929

ग्रंथ सूची

1. काटन स्पीनिंग एण्ड वीविंग इन इंडियन मिल्स (मासिक)
2. सी बर्न ट्रेड आफ ब्रिटिश इंडिया (वार्षिक) की वार्षिक रिपोर्ट
3. एकाउन्टस रिलेटिंग टू दी ट्रेड बाई लैंड ऑफ ब्रिटिश इंडिया विद फारेन कन्ट्रीज (वार्षिक)
4. नोट्स ऑफ इंडियन पीस गुड्स ट्रेड लेखक ए.सी. कापरा (बुलेटिन आफ इंडियन इन्डस्ट्रीज एंड लेबर न 16, 1921)
5. नोट्स आन दी इंडियन टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज – लेखक आर.डी बेल (डिपार्टमेंट ऑफ इंडस्ट्रीज बंबई – बुलेटिन न. 6, (1926)
6. रिपोर्ट आन दी कंडीशंस एंड प्रास्पेक्ट्स आफ ब्रिटिश ट्रेड इन इंडिया - लेखक एच.एम.सीनियर ट्रेड कमीशनर इन इंडिया (एच.एम.एस. स्टेशनरी आफिस, लंदन, वार्षिक)
7. इकानामिस्ट - सप्लीमेंट - 12 फरवरी 1927
8. स्टटिस्ट - सप्लीमेंट - 12 फरवरी 1927
9. स्टटिस्ट - सप्लीमेंट - 13 फरवरी 1927 तथा उसी क्रम में पिछले अंक।
10. इंडियन टैरिफ बोर्ड (काटन टैक्सटाइल इंडस्ट्री इन्क्वायरी बंबई - 1922)
11. खद्दर वर्क इन इंडिया (आल इंडिया काग्रेस खद्दर डिपार्टमेंट, बंबई - 1922)
12. इकानामिक्स आफ खादी (विहार चर्खा संघ, मुजफ्फरपुर 1927)
13. रिव्यू आफ ट्रेड आफ इंडिया (वार्षिक)
14. कैपिटल, मार्च 9, 1928 (लेख - इंडियन पर्चेज ऑफ ब्रिटिश काटन गुड्स)
15. रिपोर्ट आफ दी इंडिया टैरिफ बोर्ड (काटन टैक्सटाइल इंडस्ट्री इन्क्वायरी (भारत सरकार 1927)
16. माडर्न रिव्यू, अप्रैल 1925 (लेख - ढाका मसलिन इंडस्ट्री)
17. खादी गाइड (ए अ‍ई एस. ए. अहमदाबाद 1927)
18. काटन (खादी मैनुअल वाल्यू० दो, पार्ट 4, खादी प्रतिष्ठान 1925)
19. हैंड स्पिनिंग एंड हैंड वीविंग (ए.आई.एस.ए.) अहमदाबाद 1926

भाग - एक
सूती वस्त्र उद्योग का इतिहास

अध्याय - दो
ब्रिटिश कराधान
1700 तथा 1720 के अधिनियम*

इंग्लैण्ड में 1688 की क्रान्ति के बाद छपे हुए रगीन ईस्ट इंडियन सूती कपड़े के लिए चाहत सभी समुदायों में फैल गयी। उसी समय बंगाल से सिल्क उत्पादों का आयात बढ़ा जब कासिम बाजार तथा मालदा में इंग्लिश फैक्टरियां स्थापित हुई। सूती और सिल्क कपड़ों का यह लाभकारी व्यापार सातवा शताब्दी के अंतिम पचास वर्षों में तेजी से बढ़ता गया।** इससे स्वाभाविक रूप से ब्रिटिश सिल्क और ऊनी उत्पादकों में ईर्ष्या होने लगी। अत सन् 1700 में ब्रिटिश संसद ने एक अधिनियम पारित किया कि 29 सितंबर 1701 के बाद बंगाल में उत्पादित सभी प्रकार की सिल्क और सिल्क बूटियों से बने कपडे पर्शिया चीन और ईस्टइंडीज के उत्पाद सभी छप हुए रंगीन सूती रेशमी अथवा कढाई और कशीदाकारी के कपडे जो भी इस राज्य (ब्रिटिश) में आयात किए जाएगे ये ग्रेट ब्रिटेन में पहनने अथवा अन्य किसी काम में नहीं लिए जाएंगे। इस तारीख के बाद कोई भी आयातित कपडा इकट्ठा कर वापस भेज दिया जायगा। इन्हीं दिनों कुछ मलमल की किस्मों पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। अन्य किस्मों तथा सफेद सूती कपडों पर मूल्य पर आधारित 15 प्रतिशत कर का प्रावधान किया गया। सन् 1700 के इस अधिनियम का परिणाम था भारत से सफेद सूती कपडे के आयात में वृद्धि जिसपर बाद में इंग्लैंड में भी अत्यधिक छपाई होने लगी। इसके अनुसार सन् 1720 में एक और अधिनियम पारित किया गया जिससे छप हुए सूती कपड़े चाहे वह इग्लैंड में छपा हो या कहीं और के पहनने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

इनके आर्थिक परिणाम

इन दोनो अधिनियमो के आर्थिक परिणामों को कुछ यूरोपियन लेखकों ने कम करके आका है। यह कहा गया कि इग्लैंड का बाजार सापेक्षत छोटा था और सूती माल की कुछ विशेष किस्मो पर ही इसका असर पडा था। लेकिन इनका उपयोग इतना कम था तो इसके लिए विशेष कानून बनाने की क्या आवश्यकता थी। इसके अतिरिक्त इसके विपरीत कुछ विशेष कारण हैं। ठडे देश में सूती जैसे मोटे कपडे की बिक्री मलमल जैसे महीन कपडे की अपेक्षा स्वाभाविक रूप से अधिक होगी। इसके अतिरिक्त ठण्डे देश में ब्लीचिंग जैसे मुश्किल कार्य के कारण (क्लोरिन की खोज सन् 1774 तक नहीं हुई थी।) सफेद माल की अपेक्षा छपा हुआ माल अधिक पसद किया जाएगा। यह एक सच्चाई है कि सन् 1700 तथा 1720 के कानूनों से भारतीय सूती वस्त्र उद्योग में कोई कमी नहीं आई। लेकिन इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि ब्रिटेन में सूती वस्त्र उद्योग ने मशीनों के अपनाने के लिए तुरंत प्रोत्साहन भारतीय आयात पर लगाये गये प्रतिबंध

------

* बंगाल के सूती उद्योग की उत्तरोत्तर गिरावट पर ये पैराग्राफ मोटे तौर पर डा जे सी सिन्हा की पुस्तक इकोनॉमिक एनलस आफ बंगाल (मैकमिलन एंड कम्पनी 1927) पर आधारित है।

** 1686 1689 के वर्षों के सिवाय जब बंगाल के अंग्रेज मुगल सरकार के साथ युद्ध रत् थे।

मिला।* बाद में इस परिवर्तन से भारतीय सूती वस्त्र उद्योग को काफी बड़ा धक्का लगा। ब्रिटेन की जनता सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक भारतीय सूती वस्त्र के प्रयोग की अभ्यस्त हो गयी थी और जब इनके आयात पर प्रतिबंध लगा तो अंग्रेजी सूती वस्त्र उत्पादकों ने अपनी घरेलू मांग को पूरा करने के लिए उत्पादन को बढ़ाना लाभकर समझा। इस प्रकार इन कानूनों ने, यद्यपि ये मूलतः इंग्लैंड के ऊनी और सिल्क उत्पादकों के संरक्षण के लिए थे, वास्तव में बाद के वर्षों में ब्रिटेन की सूती वस्त्र उद्योग की वृद्धि और संरक्षण के काम आये। यद्यपि ये कानून सन् 1825 तक लागू रहे फिर भी सूती कपड़ों की कुछ विशेष किस्मों को पहनने पर लगा प्रतिबंध 1774 में समाप्त हो गया था।

------

*टॉमस - दी इंडस्ट्रियल एण्ड कमर्शियल डिस्ट्रिब्यूशन इन दि बिटेन ड्यूरिंग दी नाइन्टींथ सेन्चुरी, पृष्ठ 43-45

अध्याय - तीन

कंपनी के दिनों में और उसके बाद

1753 में ढाका का कपड़ा व्यापार

इन अधिनियमों के बावजूद प्लासी के युद्ध के पहले बंगाल के सूती कपड़े का विस्तृत व्यापार था। टेलर के अनुसार, बंगाल में कपड़ा व्यापार के मुख्य केंद्र ढाका का सन् 1753 में, कुल अनुमानित मूल्य 2,850,000 अर्काट रुपये था। इसका विवरण इस प्रकार है:

- दिल्ली के सम्राट के लिए — अर्काट रुपये 100,000
- मुर्शिदाबाद के नवाब के लिए — अर्काट रुपये 300,000
- जगत सेठ (राज्य के बैंकर) — अर्काट रुपये 150,000
- तुरानी व्यापारी (ऊपरी प्रांतों में विक्रय के लिए) — अर्काट रुपये 100,000
- पठान व्यापारी (ऊपरी प्रांतों में विक्रय के लिए) — अर्काट रुपये 150,000
- आर्मेनियन व्यापारी (बसरा, मोचा, और जेद्दा के बंदरगाहों के लिए) — अर्काट रुपये 500,000
- मुगल व्यापारियों के लिए (स्थानीय बाजार के लिए तथा बसरा, मोचा जेद्दा बंदरगाह के लिए) — अर्काट रुपये 400,000

– हिंदू व्यापारी (स्थानीय बिक्री के लिए)	अर्काट	रुपये	200,000
– अंग्रेजी कपनी (यूरोप के लिए)	अर्काट	रुपये	350,000
– अंग्रेज व्यापारी (विदेशी बाजार के लिए)	अर्काट	रुपये	200 000
– फ्रेंच कपनी (यूरोप के लिए)	अर्काट	रुपये	250,000
– फ्रेंच व्यापारी (विदेशी बाजार के लिए)	अर्काट	रुपये	50,000
– डच कपनी (यूरोप के लिए)	अर्काट	रुपये	100 00
	अर्काट	रुपये	2,850,000

बुनकरो पर अत्याचार

सन 1753 से पहले कपनी डाडनी या अनुबध प्रणाली के अतर्गत भारतीय व्यापारियों के माध्यम से माल खरीदा करती थीं। 1753 में, एक नई पद्धति एजेंसी पद्धति का उद्घाटन किया गया, जिसमें कपनी के यूरोपीय अधिकारियों जैसे रेजीडेंट, सीनियर और जूनियर मर्चेंट तथा उनके अधीन भारतीय नौकरों अथवा गुमाश्तों ने कपनी के अपने कोष से बुनकरों को *अग्रिम धन दिया। निर्यात के लिए थान के कपडे की अच्छी खासी आपूर्ति* बनाये रखने के लिए, कपनी के गुमाश्तों ने बुनकरों पर एकाधिकार नियत्रण बना कर रखा और बुनकरों को किसी और के लिए काम करने की मनाही थी जबतक कि वे कपनी को पर्याप्त मात्रा में कपड़ा नहीं दे देते थे। नियत्रण का बहाना बनाकर रखा था कि बुनकरों पर कपनी की धनराशि "बकाया" है। फ्रांसिस ने लिखा है ईस्ट इंडिया *कपनी बढी हुई आमदनी का लाभ उठाए, इसके लिए यह आवश्यक था कि उनका निवेश* (इसका अर्थ है कि निर्यात के लिए भारतीय उत्पादनों की खरीददारी) बढाया जाए। यहा निर्माताओं को अनेक कर्मचारियों और एजेंटों का समर्थन प्राप्त था। इस एकाधिकार से निर्माताओं पर काफी अत्याचार हुए। कार्नवालिस ने भी कहा "नियत्रण का प्रभाव केवल *अपने कपनी के व्यापार तक सीमित नहीं था। उनके नौकरों, अन्य यूरोपीय तथा स्थानीय* एजेंटों को ये अधिकार थे। हिंदुस्तान के ऊपरी हिस्से के व्यापारी वास्तव में निकाल दिए गए थे जो समुद्री निर्यात से जुडे थे, उन्हें निरुत्साहित किया गया था और निर्माताओ पर न केवल प्रतिबध लगाया गया था वरन् प्राय पूरे देश में फैले स्थानीय एजेंटों के अनेक वर्गों द्वारा भी दबाया गया। ये एजेंट अपने नियोक्ताओं तथा जिनके साथ उनका सबध होता था, उनके खर्चों पर पल रहे थे (कार्नवालिस का कोर्ट आफ डायरेक्टर के नाम पत्र -दिनाक 1 नवबर, 1788 भारत सरकार द्वारा प्राप्त इंडिया आफिस में राजकोष दस्तावेजों से ली गई प्रतियों के अश–वाल्यूम-46)

बोल्ट द्वारा दिया विवरण

बोल्ट ने लिखा है, कि कपनी का गुमाश्ता बुनकर से "एक निश्चित मात्रा में एक निश्चित समय और कीमत मे, माल देने के लिए *एक बाड भरवाता है* और कुछ पैसा अग्रिम तौर पर दे देता है गरीब बुनकर की स्वीकृति सामान्यत आवश्यक नही समझी जाती क्योंकि ये गुमाश्ते जब कपनी के निवेश पर नियुक्त किए जाते हैं वे बुनकरो

से प्रायः अपनी इच्छानुसार दस्तखत करा लेते हैं। यदि बुनकर ने कहीं इंकार किया तो यह सुना गया है कि उन्हें किसी और के लिए काम करने की आज्ञा नहीं है। उन्हें गुलामों की तरह एक के पास से दूसरे के पास भेज दिया जाता है। उन्हें गुमाश्ते के प्रत्येक उत्तराधिकारी की प्रताड़ना और यंत्रणा का शिकार बनाना पड़ता है। कपड़े तैयार हो जाने पर को एक स्थान में जमा किया जाता है और उन पर बुनकर का नाम लिखा दिया जाता है जब तक कि गुमाश्ते को खरीद करने अर्थात हर थान के दाम निर्धारित करने और लिखने का समय मिले। इस गुमाश्ते के ऊपर एक अधिकारी रखा जाता है जिसे कंपनी का जांचनदार या मूल्यांकनकर्ता कहा जाता है। यंत्रणा की यह प्रक्रिया कल्पना से परे की बात है लेकिन इन सबकी परिणति गरीब बुनकर की हानि पहुंचाने में ही होती है क्योंकि जो मूल्य कंपनी के जांचनदार निर्धारित करते हैं वह सभी स्थानों पर कम से कम 15 प्रतिशत और कुछ मामलों में 40 प्रतिशत तक खुले बाजार में बिकने वाले सामान के मूल्य से कम है। इसलिए बुनकर अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त करने की इच्छा से बार बार अपने माल को निजी तौर पर अन्य लोगों को बेचने का प्रयास करता है। इससे अंग्रेजी कंपनी के गुमाश्ते को अपने नौकर से बुनकर की निगरानी करवाने का अवसर मिलता है और प्रायः जब थान बनने को होता है तो वे कपड़े को करघे से काटकर बाहर भी निकालने का प्रयास करते हैं।'

अन्य समकालीन विवरण

यह सत्य है कि बोल्ट का ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ विरोध था क्योंकि उसे केवल छह वर्ष की सेवा के बाद ही 1766 में त्यागपत्र देने को विवश कर दिया गया था और 1764 में इंग्लैंड भेज दिया गया था। उसकी पुस्तक 'कंसीडरेशन आन इंडियन अफेयर्स' उसके कंपनी के विरुद्ध किए गए आंदोलन का ही एक हिस्सा था। लेकिन उपरोक्त विवरण अतिरंजित नहीं लगता क्योंकि उसका विवरण तत्कालीन सरकारी अभिलेखों से मिलता जुलता है। उदाहरण के लिए अपने 11 नवंबर 1768 के पत्र में कोर्ट आफ डायरेक्टर कहते हैं "बुनकर कंपनी के साथ काम करने के इच्छुक नहीं हैं क्योंकि हम उन्हें उचित कीमत नहीं देते। ढाका के लोग कहते हैं कि विदेशी लोग उनसे 20 से 30 प्रतिशत अधिक देते हैं लेकिन इस मुद्दे पर जो वास्तविकता सामने आती है वह है खराब माल और फर्निस्टि (?) का बिक्री जो सार्वजनिक नीलामी में 10 से 100 प्रतिशत अग्रिम राशि पर बेची गई जो वास्तव में बुनकरों पर किए गए अन्याय का स्पष्ट प्रमाण है। 12 अप्रैल 1773 की कार्यवाही में निम्न अधिकृत विवरण मिलता है—अध्यक्ष ने शांतिपुर के बुनकरों द्वारा की गई शिकायतों की जांच करते समय जो सामान कार्य देखे और जिनके ऊपर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं था उनसे बुनकरों की वर्तमान दयनीय दशा स्पष्ट होती थी। क्योंकि ऐसा लगता है कि कंपनी द्वारा बुनकरों को दी गई कपड़ों की कीमत ज्यादा नहीं होती तथा कई बार तो उनके कच्चे माल की लागत और सूत की कीमत से भी कम होती थी। श्रम भी वह जो बिना किसी भुगतान के कराया गया। साथ साथ उसको शारीरिक दंड का भय दिखाकर प्रतिबंध लगा रखे थे और उन्हें निजी व्यापारियों अथवा अन्य इसी प्रकार के कार्य पर काम रोक नहीं था जिससे उनके पास गुजारे का कोई साधन न हो वरन् कंपनी द्वारा दी गई अग्रिम राशि की शेष बची राशि के बोझ से दबे रहें या फिर हरकारा नौकर काम करें या फिर

चोरी छिपे कुछ कपडा इधर-उधर बेचे। "वेरेलस्ट ने इस विवरण का समर्थन किया है और कहा है कि गुमाश्तों या कपनी के एजेंटों को आवश्यक रूप स एस अधिकार दे रखे थे जिनका दुरूपयोग वे अपने वेतन को बढाने में अक्सर करते थे।"*

सूती वस्त्र उद्योग का पतन

कभी-कभी यह कहा जाता है कि बुनकरों पर अत्याचार ब्रिटिश युग से पहले से चला आ रहा है अत· ईस्ट इंडिया कपनी को सूती वस्त्र उद्योग के पतन के लिए जिम्मेदार नहीं माना जा सकता। इस दलील में यह नहीं देखा जाता कि यदि मुगल युग में कोई अत्याचार था भी तो वह उन्हीं पर था। जो दरबार के लिए काम करते थे यह इतना व्यापक और नियोजित रूप में नहीं था जितना ब्रिटिश राज्य में था। कुछ भी है, वास्तविकता यह है कि यह दमन कार्य "उद्योग के लिए इतना घातक सिद्ध हुआ" कि अनेक बुनकरों ने यह धधा छोड दिया। वेरेलस्ट ने कोर्ट आफ डायरेक्टर को लिखे अपने 17 मार्च 1767 के पत्र में बुनकरों की असाधारण कमी का जिक्र किया है। जिनमें से अधिकांश ने "अपना काम छोडकर गुजारे के लिए ऐसा काम ढूढा जिसमें कम अनिश्चितता हो।" अपने 28 मार्च 1768 को कोर्ट आफ डायरेक्टर को लिखे पत्र में वेरेलस्ट ने फिर कहा "अनेक लाग अकाल के शिकार हो गए हैं और सुरक्षा की तलाश में य लोग फिर से मजदूर बनने को बाध्य हो गए हैं। लेकिन निर्माताओं ने औरग (माल के डिपो) की सख्या में कोई वृद्धि नहीं की। उनके पास पर्याप्त व्यक्ति नहीं थे जितना कि 20 वर्ष पहले थे और फिर भी आपकी और अन्य राष्ट्रों की माग देश की सामर्थ्य से कही अधिक थी। कपडे का हर टुकडा खरीदा जाता था।" इस बढती हुई माग से बगाल सरकार को लिखे 30 जून 1769 के अपने पत्र में कोर्ट आफ डायरेक्टर ने ठीक ही कहा "आपकी प्रत्येक बैठक की कार्यवाहियों, प्रतिबधों, सीमाओं तथा रुकावटों द्वारा व्यापार का प्रत्येक क्षत्र प्रभावित होता देखकर हमें चिता हो रही है। जिस देश में निर्माता काफी हों, वहा यह नीति सबसे खराब है। बेचने और खरीदने की स्वतत्रता से निर्माता को प्रोत्साहन मिलता है और इससे सख्या में भी वृद्धि होती है। जब इनके सर पर सत्ता का हाथ होता है और इन्हें बताया जाता है कि इनके माल को बेचने के लिए केवल एक बाजार उपलब्ध है वे फिर लबे समय तक अपने श्रम को उस व्यापार में नहीं लगाएगे और इसकी मात्र हर वर्ष कम होती जाएगी।" एक लेखक ने लिखा है कि कपनी द्वारा पूर्व क्रय अधिकार पद्धति और अग्रिम प्रणाली से जुडे दुर्गुणो ने इसकी गिरावट में कुछ नहीं किया क्योंकि 1765 के बाद थान के माल में कपनी के निवेश में तेजी से वृद्धि हुई।

लेकिन अत्यधिक श्रम से किए गए निर्यात में वृद्धि निश्चित रूप से औद्योगिक प्रगति का सकेत नहीं है। टेलर ने लिखा है कि ढाका के कपडे का व्यापार 1787 में अपने शिखर पर था। आगे उसका कहना है, "यह ढाका के कपडा उद्योग का सर्वश्रेष्ठ युग लगता है।" लेकिन वे अपने इस वक्तव्य में साथ साथ यह भी जोडते हैं कि कम से कम यह वह समय था, जब निर्यात की मात्रा सर्वाधिक थी। इसका आवश्यक रूप

---

* वेरेलस्ट–ए व्यू आफ दी राइज प्रोग्रेस एड प्रेजेंट स्टेट आफ दी इगलिश गवर्नमेंट इन बगाल (लदन-1722-पृष्ठ 85)

वर्ष	सफेद सूती कपड़ा			मलमल और नानकिन			प्रिंट और छपाई वाला	अन्य सामान
	पौंड	शि	पै	पौंड	शि	पै	प्रतिबंधित	पौ शि पै
1809	71	13	4	37	6	8	"	27-6 8
1812	73	0	0	37	6	8	"	–
1813	85	2	1	44	6	8	"	32-9-2
1814	67	10	1	37	10	0	"	32-10-0
1825-32	10 प्रतिशत मूल्य पर आधारित शुल्क तथा 3½ प्रतिशत का अतिरिक्त शुल्क यदि कपड़ा प्रिंटेड है।							20-0-00
1846	कर समाप्त							

1813-14 से 1832-33 तक के व्यापारिक आंकड़ें

इन वर्षों का स्पष्ट प्रभाव 1813 के बाद के निम्नांकित आंकड़ों में देखा जा सकता है जब भारत के साथ व्यापार का ईस्ट इंडिया कम्पनी का एकाधिकार समाप्त हो गया।

वर्ष	भारत से निर्यात किए गए सूती कपड़ों का कुल मूल्य	भारत में आयातित सूती वस्त्रों का कुल मूल्य	भारत में आयातित सूत/धागे के लच्छों का मूल्य
1813-14	52,91,458	92,070	
1814-15	84,90,700	45,000	
1815-16	1,31,51,427	2,68,300	
1816-17	1,65,94,380	3,17,602	
1817-18	1,32,72,154	11,22,372	
1818-19	1,15,27,385	26,58,940	
1819-20	90,30,763	25,59,642	
1820-21	85,40,763	25,59,642	
1821-22	76,64,820	46,78,650	
1822-23	80,09,432	65,82,351	
1823-24	58,70,523	37,20,540	
1824-25	60,17,559	52,96,816	
1825-26	58,34,635	41,24,159	1,23,146
1826-27	39,48,442	43,46,054	75,276
1827-28	28,76,313	25,52,793	8,82,743
1828-29	22,23,163	79,96,383	19,11,205
1829-30	1,32,423	52,16,226	35,22,640
1830-31	8,57,280	60,12,729	15,55,321
1831-32	8,49,887	45,64,047	31,12,135
1832-33	8,22,891	42,64,707	42,85,517

इस प्रकार यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि 1845 तक भारत से किया गया सूती कपड़े का निर्यात इतना महत्वहीन हो गया था कि आंकड़ों में शुल्क का उल्लेख किया जा सका।

अध्याय - चार
अन्यायपूर्ण आयात शुल्क

कपास उत्पादकों पर भारतीय उत्पादन शुल्क

जैसा ब्रिटिश आयात शुल्क था वैसा ही भारतीय उत्पादन शुल्क था। 1874 मे मैनचेस्टर चैंबर आफ कामर्स ने सेक्रेटरी आफ स्टेट को दो ज्ञापन कपास की लच्छिया तथा थान कपड पर भारतीय आयात कर* की समाप्ति की आवश्यकता के सबध म भजे। इसमे मुख्य कारण भारतीय उत्पादकों को अनुचित लाभ होना बताया गया। इग्लैंड मे आम चुनाव होने वाले थे और इनके लिए लकाशायर के वोट प्राप्त करना आवश्यक था। इसलिए, लार्ड नार्थ बुक ने अग्रेज व्यापारियों और अधिकारियों का एक टैरिफ कमीशन नियुक्त कर दिया। जिसने 1875 में एक नया टैरिफ अधिनियम पारित किया जिसके अनुसार सूती धागा तथा थान कपडों पर आयात शुल्क को पुरानी दरों तर्थात 3½ और 5 प्रतिशत पर ही रखा गया लेकिन उनका टैरिफ मूल्याकन काफी कम कर दिया गया। न कवल इतना ही, अमेरिकी और मिस्र के लबे रेशे के कपास पर 5% का आयात शुलक लगाया गया क्याकि यही कपास लकाशायर के माल के साथ बाजार में आ सकता था। फिर भी लार्ड सलिसबरी चुनाव आयात शुल्कों को पूरी तरह से समाप्त करने क पक्के वायद करक ही जीते थे। लार्ड नार्थ बुक न लार्ड सेलिसबरी की इस विषय म बात मानने की अपक्षा त्यागपत्र दना बेहतर समझा। लेकिन इसके बाद में आए लार्ड लिटन न वायसराय कौंसिल मे इस विरोध को नही माना और अपनी वीटो पावर का उपयाग करत हुए 1879 म आयात शुल्क को समाप्त कर दिया। 1894 में रुपये की गिरती स्थिति के कारण साढे तीन करोड रुपये के घाटे को पूरा करने के लिए समाप्त किए गए आयात शुल्क को फिर स लगाना पडा लेकिन सूती माल पर किसी प्रकार शुल्क नही लगाया। लकिन इस प्रकार घाटा पूरा नहीं किया जा सकता।

इसलिए सक्रेटरी आफ स्टेट ने भारत के सूती वस्त्र पर आयात कर फिर स लगाने का तथा साथ-साथ उनको सरक्षणात्मक स्वरूप से वंचित करने का निर्देश दिया। भारत सरकार ने दखा कि यह या तो भारत में निर्मित कपडे के मुकाबले के कपडे को आयात कर से छूट दकर हो सकता है अथवा भारतीय कपडे पर बराबर का उत्पादन शुल्क लगाकर सभव है। सर जैम्स वेस्टलैंड ने आयातित सूती कपडे के थान पर 5% तथा 24' से ऊपर के दर्जे सूती धागो पर साढे तीन प्रतिशत कर लगाने की अनुशंसा की चाहे वे धागे देश में ही उत्पादित हों, अथवा विदेश से मगाए गए हो। सेक्रेटरी आफ स्टेट ने इसको नही माना और उनके दिसबर 1894 के निर्देश पर सभी प्रकार के धागा पर कर बढाकर 5% कर दिया तथा विभाजन रेखा 24' स्तर से घटाकर 20' स्तर कर दी। फिर भी लकाशायर के उत्पादकों की हितों की रक्षा नहीं हो सकी। उनके कहने पर 1896 म एक और अधिनियम पारित कर दिया गया जिसके अनुसार आयातित सूती

---

* *यह केवल राजस्व अर्जित करने के उद्देश्य से लगाए थे तथा उनका भारतीय उद्योग के विकास से कुछ लेना देना नही था। यह तथ्य 'फारवर्ड' में 2 दिसबर 1925 को छपे एक लेख से लिया है।*

कपड़े के धागों पर आयात शुल्क घटाकर साढ़े तीन प्रतिशत तथा धागों पर शुल्क समाप्त कर दिया गया। साथ ही सूती कपड़ों पर उत्पादन शुल्क भी साढ़े तीन प्रतिशत निर्धारित कर दिया गया और 30 वर्ष बाद अर्थात् 1 दिसम्बर, 1825 तक इसकी समाप्ति तक यह इसी स्तर तक रहा।

अध्याय - पांच
इतिहास के सबक

व्यवसाय तथा भावनाएं

भारत में सूती वस्त्र उद्योग के इतिहास से निष्कर्ष निकालना बहुत मुश्किल है क्योंकि उपलब्ध विवरण निश्चित रूप से काफी कुछ अधूरा और संक्षिप्त है, लेकिन फिर भी कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। भूतकाल में हमारे उद्योग पर अनुचित, दबावपूर्ण और अलाभकारी तरीके अपनाए गए। इसलिए भविष्य में भी हमारे लिए यह आशा करना व्यर्थ था कि अपने उद्योग के पुनः निर्माण के लिए शुद्ध आर्थिक तरीके पर्याप्त होंगे। और इस प्रकार व्यवसाय में राजनैतिक सत्ता का वह हाथ जिसने हमारे उद्योग को पहले नुकसान पहुंचाया वह अभी भी है और उसे गैर-आर्थिक तरीकों से समाप्त करना है। इसलिए यह एक तर्कसंगत बात है कि व्यवसायी तथा उद्योगपति अपने ही हित में आजकल चल रहे बहिष्कार आंदोलन में राजनीतिज्ञों तथा राष्ट्रवादियों के साथ मिलकर चलें।

बहिष्कार–स्वदेशी बनाम संरक्षण

इस विषय को और अधिक खुलासे की आवश्यकता है, क्योंकि यदि बहिष्कार सफल होता है तो इससे एक प्रकार का खालीपन आएगा, जो स्वदेशी उत्पादन द्वारा पूरा किया जाना चाहिए। स्वदेशी आंदोलन एक रचनात्मक प्रयास है जो संरक्षण की तुलना में बेहतर है, चाहे किसी भी राष्ट्र के पास किसी भी तरह की संरक्षणात्मक शुल्क लगाने के संपूर्ण आर्थिक अधिकार हो। इसकी विशेषता यह है कि यह पूर्णतया ऐच्छिक है। किसी भी व्यक्ति को–उसी वस्तु को अधिक दामों पर अथवा उन्हीं दामों पर खरीदने के लिए विवश नहीं किया जा सकता जब तक कि वह ऐसा अपने देश के हित में न कर रहा हो। ऐसे चेतनापूर्ण कार्य पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बांध सकेंगे। अपेक्षाकृत इससे कि देश में टैरिफ की ऊंची दरें हों। इस नैतिक पहलू के अतिरिक्त इसका एक समान महत्त्वपूर्ण आर्थिक पहलू भी है जैसा कि पियरसन तथा अन्य अनेक प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने कहा है, "कि यह अनावश्यक नहीं लगता कि संरक्षणात्मक पद्धति द्वारा लगाए गए कष्टकारी प्रभावों की तरफ ध्यान दिया जाए। एक उद्योग जिसे विदेशी प्रतिस्पर्धा के विरुद्ध संरक्षण दिया गया है। वह कभी समयानुसार नहीं बदलता।" संरक्षणवादी का तर्क है कि मनोविज्ञान के अनुसार जोश केवल एकाएक आता है और इसलिए वह मांग, जो बहिष्कार से जुड़े स्वदेशी-आंदोलन से उठती है, अनिश्चित तथा अनियमित होती है। कोई भी संगठित उद्योग केवल *भावनाओं के आधार पर शुरू नहीं किया जा सकता। अधिक से अधिक* छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों का विकास तेजी से हो सकता है, जैसाकि बंगाल में विभाजन आंदोलन के दौरान अनेक बार देखा गया। इस तर्क में काफी बल है। इसलिए यह देखने के लिए कि क्या बहिष्कार वास्तव में व्यावहारिक है। भारत के साथ ब्रिटिश व्यापार की वर्तमान स्थिति को विस्तार से देखना आवश्यक है यह जानने के लिए कि क्या बहिष्कार की नीति उचित है या नहीं। यद्यपि स्वदेशी कितना भी आवश्यक हो यदि हम वास्तव में इतनी निराशाजनक स्थिति में हैं कि ब्रिटिश माल के बिना काम चलना असंभव है तब स्वदेशी या बहिष्कार की या भारत में औद्योगिक पुनर्रचना की बात करना व्यर्थ है। आगे के अनुभागों में, विभिन्न देशों में भारत के विदेशी व्यापार का

विश्लेषण किया है। विशेष रूप से, भारत में ब्रिटिश आयात की व्याख्या विस्तार से की गई है जिससे कि इस प्रश्न का उत्तर दिया जा सके कि क्या ब्रिटिश माल का बहिष्कार इस समय में एक व्यावहारिक कार्य होगा।

भाग - दो

ब्रिटिश सूती माल का बहिष्कार

भारत के विदेशी व्यापार का विश्लेषण

तुलनात्मक विवरण

1926-27 के दौरान विभिन्न देशों के साथ भारतीय विदेशी व्यापार का विवरण निम्न प्रकार है–

भारतीय कपड़े का व्यापार, वर्ष 1926-27
मूल्य रुपयों में

देश	भारत से निर्यात	भारत में आयात	व्यापार का शेष (निर्यात-आयात)
इंग्लैंड	67	111	(-) 44
अन्य ब्रिटिश उपनिवेश	52	16	(+) 36
यूरोप	66	47	(+) 19
अमेरिका	34	18	(+) 16
जापान	41	16	(+) 25
अन्य देश	49	23	(+) 26
सभी देशों का जोड़	309	231	(+) 78

(-) का अर्थ विपरीत और (+) का अर्थ अनुकूल है।

यह अकेला इंग्लैंड के मामले में ही है कि हमारा व्यापार-संतुलन विपरीत है। अर्थात् हम वहां निर्यात की अपेक्षा वहां से आयात अधिक करते हैं।

निम्नांकित तालिका में 1924-25, 1925-26 तथा 1926-27 वर्षों के लिए मुख्य देशों के साथ भारतीय व्यापार का प्रतिशत में दिखाया गया है।

	कुल आयात का प्रतिशत			कुल निर्यात का प्रतिशत		
	1924-25	1925-26	1926-27	1924-25	1925-26	1926-27
ग्रेट ब्रिटेन	54.1	51.4	47.8	25.5	21.0	21.5
जर्मनी	6.3	5.9	7.3	7.1	7.0	6.6
जापान	6.9	8.0	7.1	14.3	15.0	13.2
संयुक्त राष्ट्र अमेरिका	5.7	6.7	7.9	8.8	10.4	11.1
बेल्जियम	2.7	2.7	2.9	3.9	3.2	2.9
फ्रांस	1.0	1.4	1.5	5.3	5.5	4.5
इटली	1.6	1.9	2.7	5.9	5.0	3.4

इंग्लैंड का वर्चस्व

निम्न तालिका स्पष्ट रूप से दिखाती है कि भारत के विदेशी व्यापार में इंग्लैंड का कितना अधिक वर्चस्व है। यह न केवल भारत के साथ कुल व्यापार में ऊंचा है वरन्

इंग्लैंड तथा उसके मुख्य प्रतिस्पर्धी वाले देशों से भारत के विभिन्न आयात-निर्यात में योगदान को प्रतिशत में दिखाया गया है।

(क) भारत में आयात

1926-27 में आयातित वस्तुएं	इंग्लैंड से आयातित वस्तुओं का मूल्य के अनुसार प्रतिशत	अन्य देशों से आयात का प्रतिशत	
		जापान	नीदरलैंड
सूती वस्त्र निर्माता	75 3	17.2	2 0
		अमेरिका	जर्मनी
मशीन	78 2	10 2	6 9
		बेल्जियम	जर्मनी
लौह और इस्पात	62 0	18 7	7 4
		अमेरिका	जर्मनी
उपकरण	62.5	14 8	13 1
		बेल्जियम	आस्ट्रेलिया
रेलवे सयत्र	61 6	11 8	7 3
		जर्मनी	अमेरिका
लौह उपकरण	36 4	31 2	14 0
		अमेरिका	कनाडा
मोटरकार/मोटर साइकिल के पार्ट्स	26 1	35 3	25 3
		जर्मनी	नार्वे
कागज	35 5	16.1	10.1
		फ्रास	जर्मनी
शराब	57 4	18 7	11 1

(ख) भारत से निर्यात

1926-27 में निर्यात की गई वस्तुए	मूल्य के अनुसार इंग्लैंड को निर्यात की गई वस्तुओं का प्रतिशत	अन्य देशों को निर्यात की गई वस्तुओं का प्रतिशत	
		कनाडा	अमेरिका
चाय	85 0	2 9	2 1
		जर्मनी	फ्रास
जूट (कच्चा)	22 9	27 6	13 0
		अमेरिका	अर्जेंटीना
जूट (तैयार)	5 4	35 0	12 1

भारत मे ब्रिटिश निर्यात

ऊपर बताया गया है कि 1926-27 में भारत ने इग्लैंड स लगभग 111 करोड रुपय के मूल्य की वस्तुओं का आयात किया। इसमें मुख्यत नीचे दर्शाई गई वस्तुए हैं जो मूल्य में 1 करोड रुपये से अधिक की हैं। इन्हें इसकी महत्ता क अनुसार क्रम दिया गया है–

महत्ता क अनुसार क्रम स.	वस्तुए		इस दौरान आयातित वस्तुओं का मूल्य (करोड रुपयों में)		
			1926-27	1925 26	1924-25
*1	सफेद सूती थान	......	116.57	16.08	19 24
*2.	ग्र सूती थान	....	15 24	17 08	14 06
*3	रगदार सूती थान	......	12.58	11 91	16 45
4	मशीन और उपकरण	......	10 66	11 87	12.40
5	लौह और इस्पात	......	9 93	11 61	11 25
*6	सूती लच्छिया और धागा	......	3 08	3 13	4 54
7	उपकरण इत्यादि	.....	2.51	2.22	1 99
8.	तबाकू	......	2.12	1 76	1 40
9	खाने का समान	......	2.03	1 72	1 54
10	रेलवे सयत्र आदि	......	2.01	4 25	5 41
*11	ऊनी कपडा और धागा	.....	1 95	2.11	2.08
12.	लोहे का समान	......	1 84	1 98	2.00
13	बर्तन	....	1 53	1 77	1 94
14	रसायन	......	1 42	1 24	1 30
15	साबुन	......	1 37	1 36	1 25
*17	सूती कपडे तथा कृत्रिम रेशम का थान	......	1 17	0.58	0 83
18.	कागज तथा गत्ता	......	1 09	1 17	1 30
19	पेंट तथा पेंटर का सामान	......	1 05	1 00	0 96

---

* *इस प्रकार 1926-27 के वर्ष में सूत उत्पादन कुल 110.54 करोड रुपये में से 47.47 करोड रुपये तक का है। यदि हम उपरोक्त में से केवल वस्तु सख्या 1 2 3 तथा 6 को हा लें और वस्तु सख्या 17 को छोड दें क्योंकि आंशिक रूप से इसमें सूत उत्पादन हो है।*

अध्याय - 2

भारत में थान कपड़े की खपत का विश्लेषण

इस बात पर विचार करने के लिए कि ब्रिटिश कपड़े का भारत में बहिष्कार करना व्यावहारिक है या नहीं, इसलिए इंग्लैंड से भारत को आयातित वस्तुओं में इस सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वस्तु के बारे में विस्तार से अध्ययन करना आवश्यक है क्योंकि इंग्लैंड भारत का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है। इसके लिए सबसे पहले थान कपड़े की कुल खपत का आकलन करना आवश्यक है। यह आकलन निम्न दो वस्तुओं को जोड़ने से हो सकता है-

(1) आयातित थानों की कुल खपत- जो कुल आयात में से पुन: निर्यात की गई, समुद्री और हवाई दोनों मार्गों से, मात्रा को घटाकर निकाली जा सकती है (सलग्न तालिका के कालम 2,3,4, तथा 5 को देखें)

(2) भारत में बने थानों की कुल खपत- जो (क) मिलों, तथा (ख) करघों (कालम 19, 20, 21 और 22) के कुल उत्पादन से निर्यात की मात्रा को घटाकर निकाली जा सकती है।

हथकरघा उत्पादनों का आकलन

आयातित थानों के आकड़े सरकारी प्रकाशनों में उपलब्ध हैं। इसी प्रकार भारतीय मिल उत्पादनों के आकड़े भी, यद्यपि यह तय करना कठिन है कि कितना आयातित धागे से बना है और कितना देसी धागे से। लेकिन कठिनाई पैदा होती है हथकरघा वस्तुओं मे, जिसके आकड़े उपलब्ध नहीं हैं। भारत में माथेर एड प्लेट लिमिटेड के मैनेजर श्री ए.सी.काश्री, सी.बी.ई. ने 1921 में अनुमान लगाने की कोशिश की थी। इसके बाद बबई में उद्योग निदेशक श्री आर.डी.बैल, सी.आई.सी.एस. ने प्रयत्न किया। वही तरीका यहा भी अपनाया जा रहा है यद्यपि यह विश्वसनीय नहीं है। आयातित और देसी दोनों तरह के देश में उपलब्ध धागे की कुल मात्रा से पुन निर्यात किए गए विदेशी धागे की मात्रा और निर्यात किए देसी धागे मात्रा को घटना होगा तभी खपत मालूम होगी जो (1) मिलों में (2) हथकरघों में तथा (3) घरेलू काम में होती है। भारत में बने थान कपड़े के आकड़े मथली स्टेटिस्टिक्स आफ कॉटन स्पिनिंग एड वीविंग* में दिए गए हैं। इससे, धागे की समान मात्रा को प्रायोगिक फार्मूले से निकाला गया है-

112 पौंड कपड़ा = 110 पौंड धागा-जो इंडियन इडस्ट्रियल कमीशन द्वारा अपनाया गया है। घरेलू काम के लिए किए गए धागे की खपत के आकड़े उपलब्ध नही है। लेकिन सरकारी तौर पर यह कुल का 10% आका गया है। एक और घटक है जिसका हिसाब लगाना आसान नहीं है। उपरोक्त स्वदेशी धागे को आंशिक रूप से मिलों में और शेष को चरखों पर बनाया जाता है। मिलों के आकड़े जहा उपलब्ध हैं वहा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा अन्य सस्थाओं के प्रकाशन से चरखों पर बने धागे के आकड़े का

---

* *भार और लंबाई इस फार्मूले से जुड़े हैं–*
1 पौंड कपड़ा - 4.27 गज

कोई विश्वसनीय अनुमान नहीं लगाया जा सकता।* लेकिन इससे कोई अधिक प्रभाव नहीं पड़ेगा। यदि* घरेलू खपत के नुकसान को हाथ से बने धागे के लाभ के बराबर मान लिया जाए। इस प्रकार हथकरघों में प्रयोग किए गए धागे की मात्रा को देश में उपलब्ध मिल धागे की कुल मात्रा तथा भारतीय मिलों में प्रयोग किए गए धागे की मात्रा के अंतर के बराबर मान लिया जाए। (कालम 14, 15 तथा 16)। इस प्रकार हथकरघा कपड़ा की लंबाई इस फार्मूले से निकाली जाती है, 1 पौंड कपड़ा = 4 गज (कालम 17)**

---

* *1927 के लिए खादी प्रतिष्ठान बंगाल के श्री सतीश चन्द्र दासगुप्त ने निम्न अनुमान दिए हैं। –उत्पादित हाथ से कता धागा = 1 लाख पौंड; हाथ कता तथा हाथ से बुना कपड़ा बेचा गया = 4.5 लाख गज, भारत का कुल मिल उत्पादन का 1/7 है।*

** *इन आंकड़ों का श्री रिचर्ड ग्रेग ने अपने लेख इकोनोमिक्स आफ खादी (पृ. 20-21) में विरोध किया है। उनका कहना है "यह एक कम आकलन है वास्तव में हम जानते हैं कि आल इंडिया स्पिनर्स एसोसिएशन की गतिविधियों के अतिरिक्त भी काफी कताई चल रही है। यह पूरा माल उन बुनकरों द्वारा ले लिया जाता है। जो गुप्त या सीमित क्षेत्रों में इसका प्रयोग करते हैं।" इस तर्क में काफी बल है, लेकिन टैरिफ बोर्ड, (काटन टैक्सटाइल इंडस्ट्री इन्क्वायरी) की रिपोर्ट में यही तरीका अपनाया गया है। हमारी दृष्टि से कम आकलन की गलती करना अधिक अच्छा है अपेक्षाकृत ऊंचे आकलन का।*

विदेशी थान कपड़ा-आयात में वृद्धि और गिरावट

इस पूरी श्रमसाध्य गणना में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य सामने आते हैं। कालम 5 से मालूम होता है कि 1896-97 से (जिस वर्ष से आकड़े मिलते हैं) बढ़ती गई मात्रा में कपड़े के थान आयातित होते रहे। पहला धक्का 1905-6 के बाद अर्थात् बहिष्कार आंदोलन के दौरान लगा, जिसके बाद बंगाल का विभाजन हुआ। सबसे कम की स्थिति कुछ समय के पश्चात् (आर्थिक तंगी के कारण) अर्थात् 1908-6 के दौरान आई। जिसके बाद मार्ले मिंटो सुधारों के कारण बदली बेहतर राजनैतिक स्थिति के कारण थान कपड़े के आयात में कुछ वृद्धि हुई। 1913-14 के वर्ष में अर्थात युद्ध से पूर्व स्थिति बहुत अच्छी हो गई। जिन तीस वर्षों के आकड़ें उपलब्ध हैं, उस पूरे समय में सबसे कम मात्रा 1919 20 की है जिसके बाद इसमें एकदम वृद्धि हुई। जो आंशिक रूप से पूर्व वर्षों की अप्रत्याशित मंदी के विरोध में आवश्यक प्रतिक्रिया थी और आंशिक रूप से रुपये की विनिमय दरों में कृत्रिम वृद्धि के कारण थी जिससे भारतीयों की क्रय शक्ति में अचानक तेजी आयी। विनिमय की यह सरकारी जोड़ तोड़ देश में व्याप्त आर्थिक स्थितियों से कहा तक मेल खाती थी। यह अगले वर्ष यानी 1921-22 के आकड़ों से स्पष्ट होगी। ये आकड़े 1919-20 के ही दोहराए गए थे। इसके बाद बढ़ी हुई आयात के एक वर्ष क बाद का वर्ष घटी आयात का वर्ष था जो कि ग्राफ से स्पष्ट है। इसके अनुसार 1927 28 के वर्ष में हमने 1926-27 के मुकाबले कम आयात किया जबकि 1926-27 के आकड़े 1896-1897 से काफी कम थे। और यह बावजूद इसके कि गत तीस वर्षों में खपत 29630 लाख गज से बढ़कर 50860 लाख गज तक पहुच गई थी। (कालम-23)

हथकरघा-संभावनाओं से पूर्ण एक उद्योग

इसके विपरीत, हथकरघा उद्योग ने जो सामान्यत एक नष्टप्राय उद्योग माना जाता है गत वर्षों में जबर्दस्त विस्तार दिखाया है। इसका उत्पादन 1896 97 के 7840 लाख गज से बढ़कर 1926-27 में 13150 लाख गज हो गया। यह वृद्धि समान न होकर उतार चढ़ाव वाली रही है। (कालम 17 भी देखें) आर्थिक कारणों से थान कपड़े का व्यापार के लिए 1900-01 का वर्ष अत्यन खराब था क्योंकि इस वर्ष मे कुल खपत 1896-97 से भी कम रही। मिल उत्पादन में कोई स्पष्ट गिरावट नजर नहीं आई। नए करघों और तकलों की स्थापना के कारण वार्षिक

काले धब्बे विदेशी थान के आयात को दर्शाते हैं।

काली रेखाएं हथकरघा उत्पादन दर्शाती हैं।

भारतीय मिलों के उत्पादन को दर्शाते हैं।

1896-97

विदेशी थान कपड़ा	19970 लाख गज	
हथकरघा थान कपड़ा	7840 लाख गज	1188
मिल थान कपड़ा	3540 लाख गज	31
कुल	31350 लाख गज	

निर्यात और पुनः निर्यात	(-) 1270 लाख गज	
कुल खपत	295[illegible]0 लाख गज	

1903-06

विदेशी थान कपड़ा	24630 लाख गज	
हथकरघा थान कपड़ा	10840 लाख गज	1784
मिल थान कपड़ा	7000 लाख गज	
कुल	42470 लाख गज	
निर्यात और पुनः निर्यात	2570 लाख गज	
कुल खपत	39900 लाख गज	

1920-21

विदेशी थान कपड़ा	15100 लाख गज	
हथकरघा थान कपड़ा	11480 लाख गज	
मिल थान कपड़ा	15810 लाख गज	2729
कुल	42390 लाख गज	
निर्यात और पुनः निर्यात	(-) 2750 लाख गज	
कुल खपत	39640	

1926-27

विदेशी थान कपड़ा	17880 लाख गज	
हथकरघा थान कपड़ा	13150 लाख गज	382
मिल थान कपड़ा	22590 लाख गज	70
कुल	53620 लाख गज	
निर्यात और पुनः निर्यात	(-) 2760 लाख गज	
कुल खपत	50860 लाख गज	

विस्तार होता रहा जिससे प्रत्येक की उत्पादन में होती कमी पर पर्दा पड़ा रहा। लेकिन यह बात थान कपड़े के व्यापार की अन्य दो वर्षों के मामले में कहीं नहीं थी। इस प्रकार आयातित किए गए थान कपड़े और हथकरघा उत्पादनों, दोनों में ही गिरावट थी। हथकरघा उत्पादन घटकर 6920 लाख गज तक आ गया जो युद्ध के दिनों में भी नहीं था। 1900-01 के बाद से लगातार रूप से विस्तार होता गया जो 1905-06 में काफी अच्छा था। यह सब बंगाल में स्वदेशी माल के पक्ष में काफी प्रचार-प्रसार के बाद हुआ। यह उत्साह बाद के वर्षों में 1909-10 के मार्ले-मिंटो सुधार तक बना रहा। जब तक उपरोक्त कारणों से हथकरघा माल का स्थान आयातित और मिल उत्पादनों ने नहीं लिया।

वास्तव में, इसी वर्ष के दौरान इतिहास में पहली बार हथकरघा उत्पादन मिल उत्पादन से मात्रा में काफी कम था। इसके बाद बढ़ती खपत के कारण धीमें-धीमें पूर्ति होती गई जब तक युद्ध शुरू नहीं हो गया, जो काफी समय तक चलता रहा। युद्ध ने स्थानीय मिलों को काफी सहारा दिया, जिन्होंने बढ़ी हुई मात्रा में धागे का उत्पादन शुरू किया। यह वृद्धि आयतित धागे में आई कमी को पूरा करने के लिए पर्याप्त थी। इसलिऐ युद्ध के बावजूद हथकरघे कपड़े का अधिकाधिक उत्पादन करते रहे, जो 1914-15 में सर्वाधिक अर्थात मिल उत्पादन से कहीं अधिक था। अगले वर्ष स्थिति विपरीत हो गई, जब मिलों ने अपने ही धागों की खपत बढ़ी हुई मात्रा में करनी शुरू की दी क्योंकि थान कपड़े का उत्पादन धागा उत्पादन की अपेक्षा अधिक लाभप्रद था। लेकिन जैसे-जैसे मिलों ने अपने करघों का इस्तेमाल उनकी पूरी क्षमता के अनुसार करना शुरू किया, उन्हें अपना बचा हुआ धागा बाजार में देना पड़ा, क्योंकि नई मशीनों को आयात करना असंभव था। परिणामस्वरूप 1918-19 में हथकरघा उत्पादन में अचानक वृद्धि हुई और इस वर्ष उत्पादन आयतित थान कपड़े से भी अधिक हुआ। अगले वर्ष इसकी जबर्दस्त प्रतिक्रिया हुई। अर्थात 30 वर्षों के दौरान इस वर्ष का उत्पाद सबसे कम 5640 लाख गज हुआ। 1900-01 के समान थे अर्थात–

(1) थान कपड़े की घटती खपत
(2) विदेशी धागे का घटता आयात
(3) धागे का घटता स्थानीय उत्पादन

1921-22 में, असहयोग आंदोलन के बाद, हथकरघा उत्पादन की मात्रा फिर दूसरी बार, आयातित कपड़े से अधिक हो गई और इसके बाद इसकी स्थिति कमोबेश आयातित थान कपड़े के समान लेकिन हमेशा निचले स्थान पर ही बनी रही।

मिल उत्पादन

मिल उत्पादन की स्थिति गत 30 वर्षों में समान विस्तार की रही है। 1896-97 में इसका स्थान तीनों तरह के व्यापार-आयात, मिल उत्पादन तथा हथकरघा उत्पादन में सबसे नीचा था। लेकिन 1926-27 में इसका स्थान सर्वोच्च था जैसा कि ऊपर बताया गया है यह उत्पादन सबसे पहले 1909-10 में हथकरघा उत्पादन से अधिक हुआ। तब से ही 1914-15 के कुछ समय को छोड़कर, यह उत्पादन हमेशा हथकरघा से अधिक ही रहा है। 1917-18 में यह सबसे पहले आयातित थान कपड़े से अधिक हुआ। एक ऐसी स्थिति जो तब से ऐसी ही बनी रही। यह सच है कि भारतीय मिल उद्योग कठिन दौर से गुजर रहा है। लेकिन प्रतियोगी देशों में विशेषकर ग्रेट ब्रिटेन में स्थिति काफी खराब है। अभी भी मिल उत्पादन में भी विदेशी धागों का इस्तेमाल नहीं किया जा रहा है।

1923-24	403,440	181,747	19,666	3,261	514	609 628
1924-25	469,810	223,812	19,368	5,823	577	719 390
1925-26	444,749	213,788	19,737	5,834	1,415	685,523
1926-27	515,682	248,311	27,657	11,531	3,936	807,116

इस प्रकार पाच वर्षों में 40 से ऊपरी दर्जे के धागे का उत्पादन 20 लाख पौंड से बढकर 115 लाख पौंड तक बढा जबकि 20 के दर्जे के धागे का उत्पादन 4705 लाख पौंड में बढकर 5155 लाख पौंड तक ही हुआ। ऊंचे स्तर के धागे के अधिक उत्पादन की प्रवृत्ति इस बात से जमती है यदि तकलियों के सबध में रूई की खपत को देखें। एक ओर रूई की खपत वर्ष-प्रतिवर्ष अधिक से अधिक होती जा रही है। तकलियों की सख्या में वृद्धि और अधिक गति से हो रही है। इसका अर्थ है कि रूई की खपत प्रति तकली की दर से कम होती जा रही है अर्थात महीन धागे का उत्पादन हो रहा है। इस प्रक्रिया को और अधिक गति दी जा सकती थी, यदि अच्छे स्तर के धागे की भारतीय लच्छी को एक आना प्रति पौंड की मदद करने की टरिफ बार्ड की सिफारिशों को भारत सरकार ने मान लिया होता। सरकार ने इस प्रस्ताव को नामजूर कर दिया और आवश्यकता पडने पर, चालू 5 प्रतिशत शुल्क के स्थान पर आयातित धागे पर एक आना प्रति पौंड की दर से कर लगाने को सहमत हो गई।

विदेशी धागे का विश्लेषण

भारत में आयातित विदेशी लच्छियों और धागों का विवरण नीचे दिया गया है

(हजार पौंड में)

वर्ष	ग्रे (बिना ब्लीच हुए)	सफेद (ब्लीचिंग के बाद)	रगीन	मर्सीराइज्ड
1992-23	48,983	1,894	7,027	1 320
1923-24	31,256	2,650	9,645	2 019
1924-25	41,277	3,427	8 483	2 664
1925-26	37,958	3,751	7,017	2,845
1926-27	35,765	4,062	5,373	4 169

पहली किस्म में, जिसका दूसरी किस्मों पर वर्चस्व है, जापान इग्लैंड का सबसे बडा प्रतियोगी है, विशेषकर 31 से 40 के दर्जे के धागे में। दूसरी किस्म पूरी की पूरी इग्लैंड से आती है और तीसरी किस्म मुख्यत॰ महाद्वीप से। चौथी और अंतिम किस्म मुख्यत॰ जापान से प्राप्त हो जाती है। सूत की लच्छियों और धागे का आयात व्यापार में इग्लैंड और जापान का प्रतिशत भाग निम्न तालिका में दिखाया गया है -

वर्ष	इग्लैंड	जापान
1913-14	86	2
1914-15	87	2
1915-16	91	2

वर्ष	इंग्लैंड	जापान
1916-17	83	14
1917-18	77	22
1918-19	25	72
1919-20	81	13
1920-21	49	42
1921-22	70	26
1922-23	52	45
1923-24	49	46
1924-25	37	57
1925-26	31	65
1926-27	41	54

1926 27 के वर्ष में इंग्लैंड के भाग में अचानक आई वृद्धि और इसी क्रम में जापान में आई गिरावट दिखाती है कि जापान इंग्लैंड के मुकाबले में अपनी स्थिति मजबूत नहीं कर सका। उपर्युक्त तुलनात्मक अध्ययन मोटे तौर पर ग्रे (बिना ब्लीचिंग के) आयातित माल के विवरण को दिखाता है—क्योंकि जैसा कि ऊपर बताया गया है ग्रे सर्वाधिक महत्वपूर्ण है—वर्ष 1926-27 में कुल 490 लाख पौंड में से 360 लाख पौंड।

अध्याय-5

विदेशी थान कपड़े का विवरण

क) गुणवत्ता के अनुसार

गत पाच वर्षो की विदेशी थान कपड़ों की तीन किस्मो को नीचे की तालिका मे खाया गया है-

लाख गजो में

र्ष	ग्रे	सफेद	रंगीन
922-23	9310	2020	2440
923-24	7040	4150	3470
924-25	8460	5490	4070
925-26	7090	4650	3660
926-27	7480	5710	4470

ोतो के अनुसार विवरण

मुख्य देशों में थान के कपड़े में हुए कुल आयातित कपड़े का विवरण नीचे की तालिका में मात्राओं के प्रतिशत भागों के अनुसार दिया गया है-

	इग्लैंड	जापान	अमेरिका	नीदरलैंड	अन्य देश
913-14	97 1	0 3	0 3	0 8	1 5
1920-21	85 6	11 3	0 9	0 9	1 3
1921-22	87 6	8 3	2 1	1 1	0 9
1922-23	91 2	6 8	0 5	0 8	0 7
1923-24	88 8	8 2	0 5	0 7	1 8
1924-25	88 5	8 5	0 5	0 6	1 9
1925-26	82 3	13 9	1 0	1 1	1 7
1926-27	82 0	13 6	0 9	1 1	2 4

अन्य दो प्रतियोगियों अर्थात् इग्लैंड और जापान के व्यापार का आगे का विवरण नीचे दिया गया है। इसमें यह दिखाया गया है कि कौन-सा ब्रिटिश माल जापानी माल द्वारा विस्थापित किया जा रहा है।

वर्ष	देश	ग्रे	सफेद	रंगीन
1913-14	इग्लैंड	98 8	98 5	92 6
	जापान	0 5	-	0 2
1923-24	इग्लैंड	85 2	97 0	87 4
	जापान	13 7	0 6	6 7

वप	दश	ग्र	सफद	रगान
1924-25	इग्लैंड	86 0	97 1	83 1
	जापान	13 0	0 8	10 0
1925-26	इग्लैंड	79 2	96 0	73 1
	जापान	20 1	1 0	19 0
1926 27	इग्लैंड	78 7	96 4	79 1
	जापान	20 7	0 5	19 2

इस प्रकार सफेद सूती माल के सिवाय अन्य माल में जापान धीर धीर इग्लैंड क वर्चस्व को कम कर रहा है।

(ख) स्थानो के अनुसार (भारत मे)

भारत मे आयातित थान कपडे उठाने में प्रत्यक वर्ष बगाल का सबस बडा हाथ हाता है। बबई दूसरे नबर पर है लकिन इसका हिस्सा गत तीन वर्ष में लगातार कम हाता जा रहा है। इसके विपरीत बर्मा क्रमिक वृद्धि दिखा जा रहा है

तुलनात्मक आकड़े नीचे दिए गए है

(लख गज में)

बदरगाह	1921-22	1922-23	1923 24	1924 25	1925-26
कलकत्ता	652	933	753	905	767
कराची	129	218	220	324	250
बबई	65	69	57	49	32
रगून	56	86	72	103	118
मद्रास	41	65	70	78	52

आयातित धागे का विवरण

बदरगाहो के अनुसार

जहा तक विदशो लच्छियों और धागे का सबध है, अन्य प्रातों की अपक्षा बगाल सबस बडा भाग ले जाता है। मद्रास में जहा हथकरघा उद्याग काफ़ी सक्रिय हैं बगाल का लगभग आधा भाग ले जाता है। नीचे की तालिका में बदरगाहों क अनुसार आयात का विवरण दिया गया है

(मिलियन पौंड म)

बदरगाह	1921-22	1922-23	1923-24	1924-25	1925-26
कलकत्ता	14 2	15 5	12 0	16 3	13 6
कराची	1 0	0 7	1 0	1 2	0 8
बबई	0 4	1 4	1 5	1 0	1 0
रगून	2.3	1 8	1 6	2.3	2.9
मद्रास	8 0	7 1	6 1	8.0	7 3

अध्याय-6

ब्रिटेन के लिए रूई उत्पादकों की महत्ता

यह एक साधारण तथ्य है कि रूई उत्पादक ब्रिटेन के रेशा धागा निर्यातक हैं। लकिन ब्रिटन कितना अपने सूती कपडा व्यापार की समृद्धि पर निर्भर है आकडा के अभाव में इसका ठीक अनुमान लगाना कठिन है। निम्न तालिका में गत कुछ वर्षों का उत्पादित मुख्य वस्तुओं क निर्यात के मूल्य दिए गए हैं जिससे कि उनकी सापक्ष महत्ता मालूम हो सके-

निर्यात का मूल्य-लाख पौंड म

सख्या	ग्रेट ब्रिटेन मे निर्यात होने वाली वस्तुए	1926	1925	1924	1923	1922
1	सूती धागा और उससे निर्मित वस्तुए	154	199	199	177	187
2.	लौह और इस्पात निर्मित वस्तुए	55	68	75	76	61
3	मशीनें	45	49	45	45	52
4	ऊनी कपडे	51	59	68	63	58
5	वाहन (रेल इजन, जलयान तथा वायुयान)	31	33	27	28	50
6	सूत, ऊन तथा सिल्क को छोडकर सूत से निर्मित कपडे	27	28	28	24	22
7	सिलमिलाए कपडे	27	29	30	26	23
8	रसायन	22	24	25	26	20
	अन्य वस्तुए मुख्यत· या पूरी तरह से निर्मित तथा प्रत्येक वस्तु 900 लाख पौंड से अधिक के मूल्य की नहीं	126	128	198	302	246
	कुल	539	617	795	767	719

ब्रिटिश सूती माल के लिए भारतीय बाजार की महत्ता

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि रूई उत्पादक ब्रिटेन के रेशा निर्यातक है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण बाजार भारतीय है। यह कितना महत्त्वपूर्ण है यह निम्न तालिका से स्पष्ट होगा।

ग्रेट ब्रिटेन से निर्यात कपड़े के थान

(हजार गज में)

देशों के नाम	1926	1925	1924	1923	1913
ब्रिटिश इंडिया	1,565,242	1,421,392	1,614,941	1,411,699	3,057,351
मिस्र	123,873	237,005	195,665	207,202	256,623
चीन (हांगकांग सहित)	177,456	173,391	292,577	234,710	716,533
डच ईस्ट इंडीज	121,745	191,970	136,185	136,290	394,928
आस्ट्रेलिया	181,122	169,951	158,601	171,237	157,915
अर्जेंटीना गणतंत्र	112,576	158,337	147,901	173,209	193,118
ब्रिटिश वेस्ट अफ्रीका	106,681	152,315	84,481	105,959	144,617

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मिस्र अथवा चीन की तरह न ब्रिटिश थान कपड़े का बहिष्कार भारत के अधिक बहिष्कार की तुलना में अधिक घातक है।

अध्याय-7

ब्रिटेन की वर्तमान स्थिति

अब प्रश्न उठता है कि क्या ब्रिटिश माल के बहिष्कार का यह उचित समय है। राजनीति की बात छोड दें, इसमें विशुद्ध रूप से आर्थिक कारण हैं। 1922 से 1926 तक ब्रिटेन के निर्यात विभाग के प्रमुख के आकडों से यह स्पष्ट है कि गत कुछ वर्षों में अधिकाश वस्तुओं के मूल्यों में उत्तरोत्तर गिरावट आई है। वर्तमान असतोषजनक स्थिति का वर्णन, मर्कले बैंक के उपाध्यक्ष सर हर्बर्ट हैंबलिग ने 19 जनवरी, 1928 को हुई बैंक की वार्षिक बैठक में कहा, "कोयला, लोहा तथा इस्पात और रूई की स्थिति अच्छी नहीं है, मैं कभी-कभी आश्चर्य करता हूँ कि क्या पुरानी फर्मों में से कुछ ने कुशल सगठन तथा आधुनिक मशीनरी आदि के मामले में स्वय को अद्यतन रखा है अथवा क्या उन्होंने अपनी 50 वर्ष पुरानी प्रतिष्ठा को गवा दिया है। मैं यह सोचने पर विवश हू कि उन्होंने बदली हुई परिस्थितियों और इस सच्चाई पर ध्यान नहीं दिया कि कुछ वर्षों से अन्य देश आधुनिक मशीनरी तथा अत्यत आधुनिक तरीकों से उन्हीं उद्योगों में तरक्की करते जा रहे हैं जिनमें कुछ वर्षों पूर्व हम काफी आगे थे, जब हमारी किसी से प्रतिस्पर्धा नहीं थी " इसलिए जब तक ब्रिटेन द्वारा कोई जबर्दस्त विरोधी कदम नही उठाया जाता, प्रतियोगी देश ब्रिटिश माल को बाहर करते रहेंगे।

ब्रिटिश सूती वस्त्र उद्योग की वर्तमान स्थिति

मैनचेस्टर के यूनियन बैंक को, जिसने इस क्षेत्र के सूती वस्त्र मिलो को मुख्यत वित्तीय सहायता दी थी, 1927 के लिए अपने लाभाश की दर को दो प्रतिशत तक घटाना पडा।

लगभग दो सौ से भी अधिक फर्म 150 लाख पौंड स्टर्लिंग तक के बैंक ओवर ड्राफ्टों के बोझ से दबे हैं। वर्ष 1927 की हाल ही में प्रकाशित 310 कपनियों के परिणामों की वर्गीकृत सूची से यह लगता है कि केवल 101 कपनिया लाभाश का भुगतान कर सकी थी और शेयर धारकों को दी गई औसत प्रतिशत मात्र 1.8 थी। इस वर्ष में कताई उद्योग में लगभग 45 लाख पौंड से अधिक की नई पूजी निवेश करनी पडी, और 50कपनियों को इस प्रकार की व्यवस्था के लिए विवश होना पडा जिसके अतर्गत आने वाले कुछ समय के लिए शेयर धारकों को कुछ नही मिलेगा। उत्पादकों के एक सगठन के मजदूरी में कटौती और काम करने के घटों में वृद्धि के कथित निर्णय से यह स्पष्ट होता है कि उद्योग अवश्य ही भारी मदी के दौर से गुजर रहा है। इस कारण से एक प्रस्ताव बनाया गया है जबकि इसी प्रकार के बनाए गए प्रस्ताव ने 1925 में कोयला खान उद्योग के लिए सामान्य हडताल की स्थिति पैदा कर दी थी। सकट की गभीरता को, अनेक मिलों को मिलाकर एक बडे मिल में, अथवा मिलों की शृखला में बनाने के प्रस्ताव से समझ लेनी चाहिए। इस प्रस्ताव का उद्देश्य जापान के कताई मिल समूह के समान सामूहिक आधार पर किए गए उत्पादन का मानकीकरण करना था।

भाग-तीन

बहिष्कार का प्रभाव

अध्याय - 1

बहिष्कार की घोषणा और उसके बाद

बहिष्कार और व्यापार आयुक्त

जब स उपरोक्त चर्चा हुई बहिष्कार की व्यवहारिकता अथवा इसका व्यापार पर प्रभाव – वाद-विवाद समाप्तप्राय है क्योंकि फरवरी 1928 क दौरान, बगाल प्रांतीय काग्रेस कमेटी ने बगाल में ब्रिटिश माल क बहिष्कार की घोषणा की। इस घटना को ब्रिटिश सरकार के वरिष्ठ व्यापार आयुक्त ने 1927-28 में अपनी रिपोर्ट में इस प्रकार क्रमबद्ध किया है- "बगाल में स्वराज्य पार्टी ने साइमन कमीशन की नियुक्ति के विरोध में अपनी गतिविधियों को बढाने हतु ब्रिटिश माल क बहिष्कार जैसे प्रयास किए । इन प्रयासों का *ब्रिटिश माल क बहिष्कार की घोषणा पर यद्यपि कुछ प्रभाव नहीं हुआ ।"* व्यापार आयुक्त ने *इस असुविधाजनक तथ्य की उपेक्षा कर दी है कि यह समीक्षा केवल बारह महीने (1 अप्रैल, 1927 स 31 मार्च 1928 तक)* के लिए थी *जिसमें से मात्र डेढ महीने* का समय ऐसा था जिस दौरान बहिष्कार अभियान चल रहा था । लेकिन दो बात फिर भी रिपोर्ट में मानी गई हैं । इसक पृष्ठ 19 पर लिखा है- "निस्सदह, भारतीयों की युवा पीढी में विशेषकर बगाल में, प्रजातीय भावना आवश्यक रूप से, ब्रिटिश माल की बिक्री पर कुछ प्रभाव अवश्य ही डालगी ।" "अगले पृष्ठ पर खेदपूर्वक में यह स्वीकार किया गया है कि सभवतः यह भावना विदेशी प्रतियोगियों को, विशेषकर युद्ध क बाद जर्मनी को, बाजार में सबध मजबूत करने में सहायक सिद्ध हुई है।" बाद के इस वक्तव्य में जोडा गया है, "जो भी व्यापार हासिल किया जा सका वह अधिकांशतः कम निविदाओं क कारण *अथवा खरीददारों को ठास लाभ देकर प्राप्त किया गया है।"* लेकिन *आयुक्त ने यह नहीं बताया कि अपनी बहुप्रचारित और गुणवत्ता क होते हुए भी ब्रिटिश उद्योग* प्रतियोगी देशों क मुकाबले म कम कीमतें क्यो नही दे सके। यह तथ्य अनदेखा नही किया जा सकता कि प्रतिस्पर्धा कवल एक या दो उद्योगों तक ही सीमित नही है जिसका कारण उन उद्योगों की अपनी विशेषताओं के कारण हो सकती हैं । प्रतिस्पर्धा कितनी अधिक है- यह व्यापार आयुक्त के शब्दों में अच्छी तरह से देखा जा सकता है-"विदेशी प्रतियोगिता अब सभी किस्म के व्यापार में आ गई है उन उद्योगों में भी जिनमें ब्रिटिश का एक मात्र अधिकार था । इस वर्ष का उल्लेखनीय पहलू रहा है-मशीनरी मोटरकारों रबड टायरों, बिजली उपकरणों में सवर्द्धित अमेरिकी प्रतिस्पर्धा, जर्मनी से रगो केमिकल *लौह मशीनरी, कृत्रिम रेशम तथा गर्म कपडों के थानों का अत्यधिक निर्यात जापान से ग्र, सफद और रगीन कपडों के थान के आयात मूल्य के लगभग 2 करोड रुपये की अग्रिम राशी की प्राप्ति,* इटली के कृत्रिम रेशमी धागे और थान कपडे रगीन बुने और रगीन सूती कपडों की थोक खरीदारी तथा लौह एव इस्पात और रेलवे सामग्री में बगाल की तीव्र प्रतिस्पर्धा का जारी रहना" (पृष्ठ 23)

उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि भारत के साथ ब्रिटिश व्यापार की सभावनाए विशेष रूप से उज्जवल नही है। व्यापार आयुक्त के निष्कर्ष कुछ भी हो । युद्ध पूर्व की स्थिति स वर्तमान स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन निम्न तालिका में दिए गए हैं। 1924 25 1925-26 तथा 1926-27 की स्थिति के आकडे पहले अनुभाग में दिए जा चुके हैं-

(कुल आयात का प्रतिशत)

देशों का हिस्सा		1913-14	1927-29
इंग्लैंड		64 1	47 7
अमरिका	-	2.6	8.2
जापान	-	2.6	7 2
जर्मनी	-	6 9	6.1
बेल्जियम	-	2.3	3 0
इटली	-	1 2	2.7
द्वीप उपनिवेश	-	1 8	2.3
नीदरलैंड	-	0 8	1 9
चीन	-	0 9	1 8
पर्शिया, अरब	-	1 5	1 8
एशियाईटर्की			
फ्रांस	-	1 5	1 7

अध्याय 2

ब्रिटिश आयात का विवरण

ताजे आंकडे

ब्रिटिश सरकार के वरिष्ठ व्यापार आयुक्त के कथन की वास्तविकता पर से पर्दा खोलने की दृष्टि से इससे पूर्व 1927 28 वर्ष की समाप्ति पर ब्रिटेन के सबंध में उसके प्रतियोगियों की स्थिति के बारे में काफी कुछ लिखा जा चुका है। अब हमें अपना ध्यान गत कुछ महीनों के दौरान ब्रिटिश व्यापार के बहिष्कार के असर के निष्पक्ष अध्ययन पर केंद्रित करना चाहिए। निम्न तालिका में नौ महीनों के (1 अप्रैल 1928 से 1 दिसबर 1928 तक) भारत में मुख्य ब्रिटिश निर्यात को दिखाया गया है। तुलना की दृष्टि से 1927 28 वर्ष के आकडें भी दिए गए हैं तथा 1926 27 के आकडें (जो पूर्व अनुभाग में दे दिए गए थे) थोडा सा अलग रूप में दिए गए हैं जो समुद्री व्यापार के मासिक विवरण में उपलब्ध आकडों के अनुसार हैं

इग्लैंड से आयातित माल का मूल्य

(करोड रुपयों में)

वस्तुए	वित्तीय वर्ष के दौरान		1 अप्रैल से 31 दिसबर के दौरान		
	1926 27	1927 28	1926	1927	1928
1 सूती थान कपडा (सफद ग्रे और रगीन)	44 39	42 33	35 51	31 44	29 58
2. मशीनरी और मिल के कार्य	10 66	12 53	7 83	9 30	10 74
3 कलईयुक्त लोह की चादरें	6 45	7 24	4 89	5 57	4 29
4 सूत की लच्छिया और धागे	3 08	3 09	2.50	2 45	2 59
5 रेलवे यत्र आदि	2 00	3 71	1.59	2.87	
6 घरेलू सामान	2 03	2.34	1 70	1 77	1 74
7 सिगरेट	1 93	2 38	1 42	1 86	1 47
8 बिजली उपकरण आदि	1 70	1 85	1 18	1 34	1 46
9 हार्डवेयर	1 84	2 06	1 33	1 51	1 41
10 गर्म कपडे के थान	1 43	1 62	1 20	1 32	1 06
11 साबुन	1 37	1 47	1 03	1 06	1 04
12 स्पिरिट	1 36	1 36	0 97	0 96	0 7

13. सूती थान कपड़ा और कृत्रिम रेशम	1.17	0.99	0.81	0.62	0.70
14. मटकार	0.80	1.03	0.55	0.71	0.69
15. पट और रंग	0.79	0.84	0.56	0.62	0.56
16. अन्य वस्तुएं	29.54	34.37	21.81	25.27	25.77
इंग्लैंड का जोड़	110.54	119.21	82.88	88.67	84.07
सभी देशों का कुल जोड़	231.22	249.85	170.78	186.14	184.37
कुल आयात में ब्रिटिश आयात का प्रतिशत	47.8	47.7	48.5	47.6	45.6

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि अधिकांश ब्रिटिश आयात में नौ महीनों के दौरान 1 अप्रैल से 31 दिसंबर 1928 तक पूर्व के दो वर्षों की उसी समयावधि की तुलना में काफी कमी आई है। सभी देशों से कुल आयात में कुछ कमी हुई है 186.14 करोड़ रुपये से घटकर 184.37 करोड़ रुपये तक अर्थात् एक प्रतिशत कमी।

(१) सूती कपड़े के थान

ब्रिटिश सूती कपड़े के थान में गिरावट 31.44 रुपये से घटकर 29.68 रुपये तक अर्थात् 5 प्रतिशत तक हुई है। दुर्भाग्यवश बंगाल में आयात के आंकड़े जहां बहिष्कार अभियान अधिक सशक्त था अलग से उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन निम्न तालिका से प्रदर्शित भारत के विभिन्न प्रांतों में सभी देशों से किए गए थान कपड़े के आयात के आंकड़ों से यह स्पष्ट होगा कि बंगाल में आयात में कमी काफी अधिक 5 करोड़ रुपये तक है। इसका काफी बड़ा हिस्सा अनिवार्य रूप से ब्रिटिश थान कपड़े में कमी के कारण होना चाहिए क्योंकि कुल आयात में बड़ा भाग इसी का होता है

नौ महीनों 1 अप्रैल से 31 दिसंबर तक-में आयातित थान कपड़े का कुल मूल्य = करोड़ रुपयों में

प्रांत का हिस्सा		1926	1927	1928
बंगाल	......	19.42	19.77	14.80
बंबई	......	8.92	10.09	11.50
सिंध	......	7.03	6.34	7.95
मद्रास	......	2.24	1.70	2.10
बर्मा	......	3.64	3.40	2.84
		41.25	41.30	39.19

(2) मशीनरी और मिल का समान

इसमें वृद्धि हुई है क्योंकि बहिष्कार के परिणामस्वरूप ब्रिटिश माल की कमी की पूर्ति के लिए नई मशीनरी की आवश्यकता पड़ती है। लेकिन जैसा कि निम्न तालिका से स्पष्ट होगा अमेरिका में यह वृद्धि इंग्लैंड की तुलना में अधिक है

नौ महीनों में-1 अप्रैल से 31 दिसंबर तक आयातित मशीनरी और मिल समान का कुल मूल्य (करोड़ रुपयों में)

देश का आयात	1926	1927	1928
इंग्लैंड	7 83	9 30	10 74
अमेरिका	0 97	1 19	1 53
जर्मनी	0 65	0 70	0 82
अन्य देश	0 44	0 56	0 67
कुल	9 89	11 75	13 76

विभिन्न प्रांतों में किए गए वितरण को इस प्रकार दिखाया जा सकता है-

नौ महीनों में-1 अप्रैल से 31 दिसंबर तक आयातित मशीनरी और मिल समान का कुल मूल्य (करोड़ रुपयों में)

प्रांत का हिस्सा	1926	1927	1928
बंगाल	3 36	4 34	6 01
बंबई	3 19	3 15	3 68
सिंध	1 05	0 92	1 10
मद्रास	1 13	1 35	1 68
बर्मा	1 16	1 99	1 29
कुल	9 89	11 75	13 76

(3) कलई चढ़ी लोहे की चादरें

इसमें एक करोड़ रुपये से अधिक की कमी आई है। इसका आंशिक कारण बंगाल का सामान्यत मुख्य उपभोक्ता होना है जहां बहिष्कार अधिक सक्रिय था। यह निम्न दो तालिकाओं से स्पष्ट होगा-

नौ महीनों में-1 अप्रैल से 31 दिसंबर तक आयातित मशीनरी और मिल चादरों का कुल मूल्य (करोड़ रुपयों में)

देश का आयात	1926	1927	1928
इंग्लैंड	4 89	5 57	4 29
बेल्जियम	0 14	0 32	0 43
अमेरिका	0 30	0 09	0 05
अन्य देश	0 44	0 12	0 09
कुल	5 37	6 10	4 86

नौ महीनों में-1 अप्रैल से 31 दिसंबर तक आयातित मशीनरी और मिल चादरों का कुल मूल्य (करोड़ रुपयों में)

प्रांतों का हिस्सा		1926	1927	1928
बंगाल	–	2.73	4 16	4 63
बंबई	......	1 88	1 88	1 19
बर्मा	......	0 50	0 64	0 51
सिंध	......	0 13	0 14	0 11
मद्रास	......	0.16	0 17	0 18
कुल		5 40	6.99	6 62

(4) सूती लच्छियां और धागा

इसमें ब्रिटिश भाग में थोड़ी वृद्धि 2.45 करोड़ रुपये से 2.59 करोड़ रुपये तक हुई है जो आंशिक रूप से बंबई मिलों में लंबी चली हड़ताल के कारण थी।

कुल आयात के विभिन्न प्रांतों में वितरण को निम्न तालिका में दर्शाया गया है

नौ महीनों में-1 अप्रैल से 31 दिसंबर तक आयातित सूत की लच्छियों और धागे का कुल मूल्य (करोड़ रुपयों में)

प्रांतों का हिस्सा		1926	1927	1928
बंगाल	......	0.93	1 31	1 16
बंबई	......	2.87	3 20	2.10
सिंध	......	0.07	0 06	0 04
मद्रास	......	1 17	0.91	1 03
बर्मा	......	0.19	0.16	0.12
कुल		5 23	5 64	4 45

(5) रेलवे संयंत्र आदि

समीक्षित अवधि में इस मद में कोई आयात नहीं था लेकिन पूर्व की समयावधि में उत्पादक देशों तथा आयात के प्रांतों में व्यापार वितरण को अलग अलग रूप में नीचे दिखाया गया है। इसमें इंग्लैंड का प्रमुख और बड़ा हिस्सा इस कारण से है कि रेलवे जन नियंत्रण में नहीं है।*

---

* व्यापार कमिश्नर ने बड़ी प्रसन्नता से इंगित किया था कि 1927 28 में कुल आयात व्यापार के ब्रिटिश भाग में केवल 1 प्रतिशत की कमी आई है जबकि पूर्व के तीन वर्षों में यह गिरावट 10 प्रतिशत तक था। उसने फिर भी एक तथ्य अनदेखा कर दिया कि रेलवे संयंत्र आदि का आयात 1926 28 के 2 करोड़ रुपये की तुलना में 1927 28 में 3 71 करोड़ रुपये तक हो गया था।

नौ महीनों में-1 अप्रैल से 31 दिसबर तक आयातित रेलवे सयत्रो का कुल मूल्य (करोड़ रुपयों मे)

देशों से	1926	1927	1928
इग्लैंड	1 59	2.87	
बेल्जियम	0 20	0 39	-
जर्मनी	0 24	0 12	
आस्ट्रेलिया	0 24	0 10	
अमेरिका	0 13	0 09	
अन्य देश	0 12	0 05	
कुल	2.52	3 62	-

नौ महीनों में-1 अप्रैल से 31 दिसबर तक आयातित रेलवे सयत्र आदि का कुल मूल्य (करोड़ रुपयों में)

प्रांतों का हिस्सा	1924 25	1925-26	1926 27
बगाल	3 01	2 20	1 21
बबई	1 83	1 43	0 89
मद्रास	0 67	0 79	0 73
बर्मा	0 20	0 20	0 30
सिंध	0 37	0 33	0 14
कुल	6 08	5 00	3 17

(6) घरेलू उपयोग का सामान

इस मद में थोडी कमी आई है क्योंकि उपभोक्ता अधिकाशत गैर भारतीय हैं जिनके लिए बहिष्कार का कोई अर्थ नहीं है। तालिका नीचे दी गई है। यहा उल्लेखनीय यह है कि इस सबध में ब्रिटिश के मुख्य प्रतियोगी नीदरलैंड ने थोडी वृद्धि की है जबकि ब्रिटेन में कमी आई है-

नौ महीनों में-1 अप्रैल से 31 दिसबर तक आयातित घरेलू सामान का कुल मूल्य-(करोड़ रुपयों में)

देशों से	1926	1927	1928
इग्लैंड	1 70	1 77	1 74
नीदरलैंड	1 18	1 53	1 58
महाद्वीपीय उपनिवेश (लाबून सहित)	0 41	0 34	0 26
अमेरिका	0 33	0 34	0 31
चीन (हागकाग सहित)	0 11	0 17	0 13

आस्ट्रेलिया	—	0.11	0.07	0.07
अन्य देश	—	0.39	0.53	0.60
कुल	—	4.23	4.75	4.69

नौ महीनों में-1 अप्रैल से 31 दिसंबर तक
आयातित घरेलू सामान का कुल मूल्य (करोड़ रुपयों में)

प्रांत का हिस्सा		1924-25	1925-26	1926-27
बर्मा	—	1.01	1.28	1.53
बंगाल	—	1.06	1.17	1.52
बंबई	—	1.09	1.33	1.45
सिंध	—	0.40	0.49	0.56
मद्रास	—	0.36	0.37	0.44
कुल	—	3.92	4.64	5.51

(7) सिगरेट

सिगरेटों की पूर्ति सम्पूर्ण इंग्लैंड से आती है लेकिन चूंकि कुल आयात का एक तिहाई के लगभग बंगाल में आ जाता है, वहां बहिष्कार आन्दोलन के कारण इसमें काफी कमी आई है। इस पर भी हमें बिल्कुल नहीं होना चाहिए। वरन् इसका आयात पूर्णतः समाप्त करने की दृष्टि से एक सतत प्रयत्न किया जाना चाहिए। स्थिति निम्न तालिकाओं में दर्शाई गई है

नौ महीनों में-एक अप्रैल से 31 दिसंबर तक आयातित सिगरेटों का
कुल मूल्य-(करोड़ रुपयों में)

देश से		1926	1927	1928
अमरिका	—	1.42	1.86	1.47
अन्य देश	—	0.01	0.01	0.01
कुल		1.43	1.87	1.48

नौ महीनों में-एक अप्रैल से 31 दिसंबर तक आयातित सिगरेटों का
कुल मूल्य-(करोड़ रुपयों में)

प्रांत का हिस्सा		1924-25	1925-26	1926-27
बंगाल	—	0.76	0.75	0.88
बंबई	—	0.31	0.47	0.77
बर्मा	—	0.28	0.35	0.41
मद्रास	—	0.39	0.27	0.32
सिंध	—	0.35	0.30	0.19
कुल		1.99	2.14	2.57

(8) बिजली के उपकरण आदि

इसमें थोड़ी वृद्धि है-आंशिक रूप से इसके वही कारण हैं जो मशीनरी और मिल सामान के बारे में हैं- लेकिन ब्रिटिश की प्रतिशत वृद्धि कुल प्रतिशत वृद्धि से कम है जैसा कि तालिका से स्पष्ट है-

नौ महीनों में-एक अप्रैल से 31 दिसंबर तक आयातित बिजली के उपकरणों का कुल मूल्य-(करोड़ रुपयों में)

देशों से	1926	1927	1928
इंग्लैंड	1 18	1 34	1 46
अमेरिका	0 27	0 25	0 26
जर्मनी	0 17	0 19	0 21
नीदरलैंड	0 06	0 08	0 10
इटली	0 05	0 05	0 08
जापान	0 02	0 02	0 04
अन्य देश	0 05	0 07	0 09
कुल ..	1 80	2.00	2 24

विभिन्न प्रांतों के हिस्से का विवरण तालिका में किया गया है-

नौ महीनों में-एक अप्रैल से 31 दिसंबर तक आयातित सिगरेटों का कुल मूल्य-(करोड़ रुपयों में)

प्रांतों का हिस्सा	1924-25	1925-26	1926-27
बंगाल	0 98	1 0	1 16
बंबई	0 60	0 71	0 79
बर्मा	0 19	0 23	0 31
सिंध	0 10	0 14	0 14
मद्रास	0 10	0 17	0 13
कुल	1 97	2.25	2 53

(9) हार्डवेयर

कुल आयात में वृद्धि के बावजूद ब्रिटिश भाग में इसमें कुछ कमी हुई है-

नौ महीनों में-एक अप्रैल से 31 दिसंबर तक आयातित हार्डवेयर का कुल मूल्य-(करोड़ रुपयों में)

देशों से	1926	1927	1928
इंग्लैंड	1 33	1 51	1 41
जर्मनी	1 17	1 18	1 30
अमेरिका	0 55	0 47	0 47
जापान	0 19	0 19	0 22

आस्ट्रेलिया	0 09	0 09	0 13
स्वीडन	0 11	0 11	0 11
अन्य देश	0 26	0 28	0 34
कुल	2.70	3 83	3 98

नौ महीनों में 2 अप्रैल से 31 दिसबर तक आयातित हार्डवेयर का कुल मूल्य-(करोड़ रुपयों में)

प्रांतों का हिस्सा	1924-25	1925-26	1926-27
बगाल	1 68	1 84	1 73
बबई	1 69	1 61	1 56
बर्मा	0 69	0 81	0 76
मद्रास	0 53	0 54	0 60
सिंघ	0 39	0 41	0 41
कुल	4 98	5 21	5 06

(10) गर्म कपड़ों के थान

इस मामले में, विभिन्न दशों स कुल सप्लाई क वितरण की तालिका उसी समयावधि की उपलब्ध है जिसके लिए विभिन्न प्रांतों का आयात हुआ है। लकिन दुर्भाग्यवश दशों स आयात क आकड थान कपड क हैं जबकि प्रतों में वितरण क आकड सभी प्रकार क उत्पादों क बारे में हैं-दानों की तालिका निम्न प्रकार है-

नौ महीनों में-एक अप्रैल से 31 दिसबर तक आयातित गर्म कपड़ों का कुल मूल्य-(करोड़ रुपयों में)

दशों स	1926	1927	1928
इग्लैंड	1 20	1 31	1 06
फ्रास	0 34	0 55	0 56
जर्मनी	0 27	0 32	0 36
इटली	0 34	0 36	0 30
अन्य दश	0 30	0 30	0.29
कुल	2.45	2.84	2.57

नौ महीनों में-एक अप्रैल से 31 दिसबर तक आयातित गर्म कपड़ों का कुल मूल्य-(करोड़ रुपयों में)

प्रांतों का हिस्सा	1926	1927	1928
बगाल	0 69	0 85	0 87
बबई	1 38	1 53	1 68
सिंध	0 85	0 15	1 09
मद्रास	0 05	0 05	0 06

बर्मा	0 72	0 76	0 34
कुल	3 69	4 28	4 13

(11) साबुन

जैसा कि सिगरेट के साथ था वैसा ही साबुन के साथ है। पूरी सप्लाई इग्लैंड से आती है। बगाल सिगरेट की अपेक्षा साबुन कम मात्रा में आयात करता है। इग्लैंड से होने वाले आयात में थोडी कमी हुई है जबकि प्रतियोगी देशों से आयात में वृद्धि हुई है। इस बारे में देसी घरेलू साबुन को लोकप्रिय करने में अत्यधिक प्रयास किया जाना आवश्यक है क्योंकि घरेलू साबुन भी आयातित साबुन के टक्कर का ही है। कपडे के साबुन का उपभोग कुल आयात के दो तिहाई से अधिक होता है।

नौ महीनों मे-एक अप्रैल से 31 दिसबर तक आयातित साबुन का मूल्य-(करोड़ रुपयों में)

देशों से	1926	1927	1928
इग्लैंड	1 03	1 06	1 04
अन्य देश	0 11	0 09	0 14
कुल	1 14	1 15	1 18

नौ महीनो मे-एक अप्रैल से 31 दिसबर तक आयातित साबुन का मूल्य-(करोड़ रुपयो में)

प्रांतों का विवरण	1924 25	1925 26	1926-27
बबई	0 53	0 57	0 57
बर्मा	0 32	0 35	0 34
बगाल	0 21	0 26	0 27
मद्रास	0 13	0 17	0 20
सिध	0 13	0 12	0 15
कुल	1 32	1 47	1 53

(12) स्पिरिट

इसमे थोडी वृद्धि है क्योंकि उसका उपभोग मुख्यत गैर भारतीयों द्वारा किया जाता है। जिनके बहिष्कार आदोलन से जुडने की आशा नहीं जा सकती। तालिकाए इस प्रकार है–

नौ महीनों मे 1 अप्रैल से 31 दिसबर तक आयातित स्पिरिट का मूल्य (करोड़ रुपयों में)

देशों से	1926	1927	1928
इग्लैंड	0 97	0 96	0 97
फ्रास	0 39	0 39	0 36
अमेरिका	0 10	0 11	0 12

जापा	0 08	0 09	0 07
जर्मनी	0 06	0 06	0 05
अन्य दश	0 05	0 05	0 04
कुल	1 65	1 61	1 61

नौ महीनों में 1 अप्रैल से 31 दिसबर तक आयातित स्पिरिट का मूल्य

(करोड़ रुपयों में)

प्रातो का हिस्सा	1924-25	1925-26	1926-27
1 बबई	0 70	0 67	0 72
2 बगाल	0 63	0 67	0 68
3 सिंध	0 34	0 39	0 38
4 बर्मा	0 27	0 29	0 32
5 मद्रास	0 16	0 18	0 19
कुल	2.10	2.20	2.29

(13) सूती कपड़े के थान और कृत्रिम रेशम

नि सदह इसमें वृद्धि हुई है परतु वृद्धि दर इसक तीव्र प्रतियागी इटली की तुलना में काफी कम है। इटली नीचे दिए गए दशों की सूची में प्रथम स्थान पर है। विभिन्न प्रातों क वितरण की तालिका भी दी गई है।

नौ महीनों में 1 अप्रैल स 31 दिसंबर तक आयातित सूती कपड़े के थान और कृत्रिम रेशम

(करोड़ रुपयों में)

दश स	1926	1927	1928
इटली	0 58	0 56	0 74
इग्लैंड	0 81	0 62	0 70
स्विटजरलैंड	0 38	0 52	0 36
जर्मनी	0 20	0 38	0 23
आस्ट्रिया	0 05	0 16	0 14
बेल्जियम	0 07	0 05	0 06
अन्य देश	0 07	0.15	0 27
कुल	2.16	2.44	2.50

नौ महीनों में 1 अप्रैल से 31 दिसंबर तक आयातित
सूती कपड़े के थान और कृत्रिम रेशम

(करोड़ रुपयों में)

प्रांतों का हिस्सा	1924-25	1925-26	1926 27
बंबई	1 01	0 86	1 97
बंगाल	0 53	0.29	0 69
बर्मा	0 12	0 14	0 23
सिंध	0 10	0 06	0 19
मद्रास	--	0 2	0 1
कुल	1 76	1 37	3 09

(14) मोटर कारें

इस मद में इंग्लैंड से आयात में कमी आई है जबकि अन्य प्रतियोगी देशों जैसे अमेरिका और कनाडा से आयात में वृद्धि हुई है।

नौ महीनों मे 1 अप्रैल से 31 दिसंबर तक
आयातित मोटर कारों का मूल्य

(करोड़ रुपयों में)

देशों से	1926	1927	1928
1 अमेरिका	0 67	1 02	1 36
2 कनाडा	0 56	0 47	0 80
3 इंग्लैंड	0 54	0 71	0 69
4 अन्य देश	0 34	0 40	0 23
कुल	2.11	2 60	3 08

नौ महीनो में 1 अप्रैल से 31 दिसबर तक
आयातित मोटर कारो का मूल्य

(करोड़ रुपयों में)

प्रांतों का हिस्सा	1926	1927	1928
1 बंगाल	0 64	0 82	0 86
2 बंबई	0 67	0 77	0.97
3 सिंध	0 28	0 33	0 39
4 मद्रास	0 29	0 45	0 58
5 बर्मा	0 23	0 23	0 28
कुल	2 11	2 60	3 08

(15) पेंट और रंग

इसमें भी कमी देखी गई है—निम्नांकित इस प्रकार है—

नौ महीनों में 1 अप्रैल से 31 दिसंबर तक
आयातित पेंट व रंग का मूल्य

(करोड़ रुपयों में)

देशों से	*1926*	*1927*	*1928*
इंग्लैंड	0.55	0.62	0 56
अमरीका	0 04	0.04	0.05
जर्मनी	0 05	0 05	0.05
जापान	0 03	0 02	0 02
अन्य देश	0.10	0.14	0.10
कुल	0 79	0.88	0.80

नौ महीनों में 1 अप्रैल से 31 दिसंबर तक
आयातित पेंट व रंग का मूल्य

(करोड़ रुपयों में)

प्रांतों का हिस्सा	*1924-25*	*1925 26*	*1926-27*
बंगाल	*0 39*	*0 38*	*0 45*
बंबई	0 35	0.36	0.37
बर्मा	0 14	0.13	0 12
मद्रास	0.05	0.07	0.09
सिंध	0.08	0.08	0.08
कुल	*1.02*	*1 02*	*1 11*

अध्याय - 3
निष्कर्ष

ब्रिटिश व्यापार की सरकारी भविष्यवाणी

भारत के साथ ब्रिटिश व्यापार के उपरोक्त विश्लेषण से जो बहिष्कार से प्रभावित था-सभी राष्ट्रवादी भारतीयों को, यदि अनावश्यक उत्साह नहीं, तो कुछ संतोष अवश्य मिलना चाहिए। सरकारी इतिहासकारों के अनुसार, समीक्षा की समयावधि के प्रारंभ में *सभी घटनाएं, कुल व्यापार में ब्रिटिश हिस्से के विस्तार की ओर संकेत करती है।* उदाहरणार्थ, ब्रिटिश सरकार के वरिष्ठ व्यापार आयुक्त ने संभावनाओं की चर्चा निम्न प्रकार की है-

> "*आज भारत पहले की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ आर्थिक आधार पर है।* उसकी साख, बाहर और अपने देश में, कभी इतनी अच्छी नहीं रही विनिमय दर शिलिंग 6 पैसे पर ठहर गई है, जो तुलनात्मक रूप से देखें तो आयात व्यापार के लिए अनुकूल है। किसान अब अधिक समृद्ध हैं और उसके पास संभवतः पहले की अपेक्षा अधिक भंडार है। आयतित सामान के भंडार विशेषकर सूती कपड़े के बहुत कम हैं और उनकी थोक खरीददारी काफी दिनों से होनी है। जहां तक सूती कपड़े का संबंध है जो भारत में ब्रिटिश आयात का लगभग 40% है पूरे तौर पर इसका भविष्य अनुकूल है। *स्थानीय जिलों और नगरों में भंडार काफी कम है । इस बात की पूरी संभावनाएं* है कि लोहे और इस्पात के आयात में भारत में बढ़े हुए उत्पादन के बावजूद वृद्धि होती *रहेगी । मशीनरी और संयंत्र के आयात व्यापार की संभावनाएं सुखद हैं।* रेलवे निर्माण, बंदरगाह विकास, सिंचाई और जल विद्युत उद्यमों तथा पुल निर्माण की विशाल योजनाओं से ब्रिटिश इंजीनियरिंग उद्योग को लाभ होना आवश्यक है पूरे देश में छोटे उद्योगों कृषि कार्यों तथा बिजली के काम में जो उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है इसका परिणाम निश्चित रूप से बायलरों, प्राइम मूवरों तथा विद्युत संयंत्रों की मांग में वृद्धि करेगी
>
> इससे उपकरणों, *संयंत्रों तथा भंडारों की विविध वस्तुओं की मांग में वृद्धि* को प्रेरणा देगा। ये सब कुल मिलाकर एक बड़ी राशि होती है जो ब्रिटिश व्यापार के लिए अत्यधिक महत्व रखती है।"

वास्तविक स्थिति

इससे पहले अध्याय में उद्धृत आंकड़ों से यह स्पष्ट होगा कि ऐसे उज्जवल भविष्य के बावजूद, भारत के साथ ब्रिटिश व्यापार को गत कुछ महीनों में काफी आघात पहुंचा है। इंग्लैंड के दो मुख्य उद्योगों की वर्तमान स्थिति का जायजा निम्न तालिका से स्पष्ट होगा। यह तालिका 26 जनवरी 1929 के इकोनोमिक्स के सांख्यिकीय सप्लीमेंट से संकलित की गई है।

इंग्लैंड से निर्यात

(सभी आकड़ों में 000,000 जाड़ें)

		सूती कपड़े के थान (वर्ग गज)	लोहा और इस्पात (टन)
मासिक औसत	1913	589	0 41
सितंबर औसत	1927	343	0.35
सितंबर औसत	1928	298	0 30
अक्तूबर औसत	1928	334	0.38
नवंबर औसत	1928	331	0.40
दिसंबर औसत	1928	290	0.36

बैंक अध्यक्ष द्वारा विवरण

ब्रिटेन की वर्तमान आर्थिक स्थिति के बारे में भी बड़े बैंकों के अध्यक्षों ने अपनी हाल ही की वार्षिक बैठकों में कुछ टिप्पणी की है। उदाहरणार्थ, बर्कले बैंक के अध्यक्ष श्री एफ.सी.गुडएनफ ने, 17 जनवरी, 1927 को हुई वार्षिक बैठक में यह कहा– ". ...भारी उद्योगों में मंदी इतनी गंभीर थी कि इससे यह भावना पैदा हो गई कि हमारा औद्योगिक संगठन वैसा नहीं है जैसा कि होना चाहिए ...।

"... हाल ही में एक नई संस्था के संगठन की योजना पर विचार किया गया जिससे कि फार ईस्ट के साथ व्यापार में लगी अधिकांश मिलों पर प्रभुत्व जमाया जा सके। योजना का लक्ष्य इन मिलों को अपना कच्चा माल सस्ता खरीदने योग्य बनाकर समाप्त होते व्यापार को फिर से प्राप्त करना है तथा अत्यधिक आधुनिक और किफायती तरीकों से मिल-जुलकर काम करते हुए विभिन्न मिलों के माध्यम से अपने उत्पादों को संगठित करना है तथा इसी उद्देश्य से बनाई गई अत्यधिक अनुकूल विपणन संस्थाओं से अपने सूती माल को बेचना है।"

मिडलैंड बैंक के अध्यक्ष, राइट आनरेबुल मि.आर.मैकेन्ना ने भी निम्न शब्दों में इसी बात को दोहराया है:-

"... .हमारे सबसे बड़े कर्जदार सूती वस्त्र उद्योग में लगे उद्योगों के समूह है। इसकी लगभग पूरी धनराशि सूती और ऊनी वस्त्र में लगे उद्योगों को मोटे तौर पर समान रूप से बांट दी जाती है तथा रेशम और अन्य वस्त्र उद्योगों को कुछ हिस्सा ही दिया जाता है। जैसा कि आप जानते हैं कि सूती और ऊनी वस्त्र व्यापार मंदी और कठिनाई के लंबे दौर से गुजर रहे हैं। सूती वस्त्र उद्योग ने विशेष रूप से अपने निर्यात व्यापार में काफी नुकसान उठाया है...।"

बहिष्कार में दो कठिनाइयां

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सुव्यवस्थित अभियान के द्वारा ब्रिटिश उद्योगों को चोट

पहुचाने के लिए आजकल से और अच्छा समय नही हो सकता। सरकार के वरिष्ठ व्यापार आयुक्त बहिष्कार की दो कठिनाइयो को ही मानते हैं। पहली कठिनाई वह बतलाते हैं कि व्यापारिक समुदायों पर राजनैतिक तत्वो का कोई प्रभाव नहीं होता।" वे सिर्फ उस वक्तव्य को ही दोहराते हैं जो यद्यपि सुखद और सुविधाजनक है लेकिन तथ्यो से परे है। वे भूल जाते हैं कि वर्तमान घटनाए किस प्रकार राजनेताओं और व्यापारियों मे एकता पैदा कर रही है। चाहे यह देशी उद्योग के सरक्षण के लिए दावा हो, या घृणास्पद रूई उत्पादन शुल्क की समाप्ति की बात हो, या फिर गैर *प्रतिनिधित्व की रिजर्व बैंक योजना* की अस्वीकृति हो हर मामले मे व्यापारियो ने राजनेताओ के साथ मिलकर काम करने में ही अपना लाभ देखा है।

दूसरी कठिनाई का जिक्र व्यापार आयुक्त ने निम्न शब्दो मे किया है–

"आयातित माल के वितरण मे भारतीयों के इतने अधिक अपने निजी हित हैं कि वे किसी भी एसे आदोलन से अपने को बचाने में सक्षम हैं जो उनकी रोजी-रोटी को प्रभावित करता हो।"

बहिष्कार प्रचार के तरीके

यदि भारत म ब्रिटिश व्यापार का पूरा तत्र महीन धागे पर टिका है, तब तो इससे ब्रिटिश व्यापार प्रभावित होगा। यह व्यापार आयुक्त परोक्ष रूप से स्वीकार करता है। इसलिए प्रश्न प्रचार के तरीके का उठता है। इन बिदुओं पर किसी तरह की कट्टरता दिखना मूर्खता है लेकिन निम्न सुझाव दिए जा सकते हैं-

(1) ब्रिटिश माल के आयातकर्ताओं का कथित रूप मे निजी हित है और वे आयात करना नही छोडेंगे (क) जब तक कि उनको गैर-ब्रिटिश माल मे वैसा ही *आकर्षक व्यापार का आश्वासन न दिया जाए, और (ख) जब तक कि वे* इस बारे मे विश्वास नही करते कि उनके होने के बावजूद उनका आयातित माल बिकेगा नही। इसलिए राष्ट्र भक्ति पर आधारित किसी भी प्रकार भी अपील पर्याप्त नही होगी।

(2) यह निष्कर्ष है कि नीचे से ऊपर की ओर काम करना आवश्यक है अर्थात् ब्रिटिश के विरुद्ध एक विस्तृत और क्रमबद्ध प्रचार कार्य और वह भी उपभोक्ताओं मे।

(3) लोगो की निरक्षरता को ध्यान मे रखते हुए प्रचार कार्य अधिकाश जनसभाओ के माध्यम से तथा *एक सीमा तक अखबारों और पैफलेटो के जरिए से होना आवश्यक है।* उत्साह के समय वक्ताओ के लिए राजनीति की चर्चा न करना कठिन होता है। यदि ऐसा भी हो गया लोगों को इसलिए पकडा जा सकता है कि वे सफल प्रचारक हैं।*(देखें पृ 280) इसलिए वक्ताओ का चयन न केवल आर्थिक तथ्यो पर उनकी जबर्दस्त पकड पर आधारित होना चाहिए वरन् उनकी आत्मबलिदान की भावना के कारण भी होना चाहिए।

(4) दुकानों पर धरना देना प्रचार का एक असरदार तरीका है लेकिन *प्राय* इसका परिणाम *पुलिस से झगडा होता है। विशेष* रूप से आदि व्यावसायिक उत्साह

प्रेरक एजेंट नियुक्त कर दिए जाए। उत्साह इस सीमा तक बढ़ जाना चाहिए कि कटर से कटर दमन नीति भी बहिष्कार आंदोलन को दबा न सके।

(5) जहां तक ब्रिटिश माल के बदले में भारतीय माल के प्रयोग का संबंध है ऐसे माल को उपभोक्ताओं तथा फुटकर विक्रेताओं को उपलब्ध कराया जाना चाहिए। तथा उसी समय निर्माताओं को संभावित बिक्री मात्रा से अवगत कराना चाहिए। उन्हें आवश्यक तकनीकी ज्ञान उपलब्ध कराने में उनकी मदद की जानी चाहिए।

(6) जहां भारतीय माल उपलब्ध नहीं है वहां ब्रिटिश माल के स्थान पर गैर ब्रिटिश विदेशी माल उपलब्ध कराने के लिए वही तरीके अपनाए जाने चाहिए। मुख्य प्रतियोगी देशों से आंदोलन में मदद मांगी जानी चाहिए, जो उनके ही हित में होगी। वे न केवल अपने उत्पादों को भारतीय बाजार की मांग के अनुकूल कर सकते हैं वरन् बहुप्रचलित डिपार्टमेंटल स्टोरों के सहयोग से बिक्री केंद्र भी खोल सकते हैं।

इस पूरे कार्य की गंभीरता और गुरुता से भारतीय राष्ट्रवादियों का उत्साह कम नहीं होना चाहिए, वरन् उनमें अधिक उत्साह और आशा का संचार होना जरूरी है। यदि कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं भी होती है फिर भी कुछ न कुछ सकारात्मक प्राप्ति तो होती है जैसे ब्रिटिश आयात में कमी होती है और राष्ट्र के आर्थिक बंधन से मुक्ति का वातावरण बनता है। यदि भारत में अभी नए उद्योग नहीं लगते हैं, आने वाले समय में गैर ब्रिटिश माल को भी बाहर निकालना सरल होगा जब भारत के आर्थिक कल्याण और हित के लिए यह आवश्यक समझा जाएगा।

यदि राजनैतिक स्वतंत्रता की कीमत, शाश्वत चौकसी है तो यह भी कम मान्य नहीं है कि देश की आर्थिक स्वतंत्रता की कीमत निरंतर संघर्ष है।

हमारा यह डर बेबुनियाद नहीं है। यह बंगाल सरकार की एक्ज़ीक्यूटिव कौंसिल के सदस्य महामहिम सर ह्यूग स्टीफेंसन का 7 जनवरी 1924 के निम्न भाषण पर आधारित है।

"बंगाल सरकार ने बंगाल रेगुलेशन III 1818 के अंतर्गत 1908 में बाबू कृष्णकुमार मित्रा को उनके हिंसापूर्ण बहिष्कार भाषणों तथा कार्यकर्ताओं के संगठन में उनकी गतिविधियों के कारण पकड़ने के लिए कहा ...... इसी प्रकार पूर्वी बंगाल सरकार ने बाबू अश्विनी कुमार के विरुद्ध उनके जबरदस्त आंदोलन के कारण .... तथा उनके ब्रजमोहन इंस्टीट्यूट के नियंत्रण के कारण इस कानून का प्रयोग करने के लिए पूछा क्योंकि इस संस्था से स्वदेशी आंदोलनकर्ताओं का निरंतर आना जाना था...... —"

संलग्नक

(बर्मा जेल से प्राप्त नेताजी की जेल डायरियों में उनके द्वारा पढी गई पुस्तको का विस्तृत विश्लेषण हमें मिला है जो स्वय उनके अपने हाथ से लिखी गई हैं और हमने इस पुस्तक में प्रकाशित की है। इनमे एक पुस्तक सुरेद मोहन भट्टाचार्य द्वारा सपादित "पुरोहित दर्पण" पर बगला में टिप्पणी भी लिखी है। इस टिप्पणी का अनुवाद नहीं हो सकता। इसे हम इसलिए मूल रूप में इस पुस्तक के सलग्नक के रूप में छाप रहे हैं। हमें विश्वास है कि इच्छुक पाठक, चाहे उनकी मातृभाषा कोई भी हो, इसकी तह तक पहुच सकेंगे–सम्पादक)

মন্ত্র গ্রহীতার আদ্যাক্ষর ও যে মন্ত্র গ্রহণ করিবে তাহার আদ্যাক্ষর এই দুই অক্ষর যদি একভত বা একদৈবত হয় তবে সেই মন্ত্র স্বকূল অন্যথা অকূল বলিয়া জানিবে। যদি মন্ত্র গ্রহীতার নামের আদিবর্ণ ও মন্ত্রের আদিবর্ণ বর্ণ একরকোঠস্থ না হয় তবে উক্ত বর্ণদ্বয়ের পরস্পর মিত্রতা থাকিলেও সে মন্ত্র গ্রহণ করা যাইতে পারে। শত্রুতা হইলে কখনই সে মন্ত্র গ্রহণ করিতে নাই। বারুণ বা জল বর্ণ ভৌম বর্ণের এবং মারুত বর্ণ আগ্নেয় বর্ণের মিত্র মারুতবর্ণ পার্থিব বর্ণের আগ্নেয় বর্ণ বারুণ বর্ণের ও পার্থিব বর্ণের শত্রু বলিয়া কথিত হইয়াছে। উদাহরণ

তারানাথ মন্ত্র গ্রহীতা, সে কালী এই মন্ত্র গ্রহণ করিতে পারে কিনা? তারানাথের আদ্যাক্ষর "ত" আর মন্ত্রের আদ্যাক্ষর "ক"—উভয় বর্ণ এক কোঠার মধ্যে অবস্থিত সুতরাং তারানাথ কালীমন্ত্র গ্রহণ করিতে পারে। তারানাথ রামমন্ত্র গ্রহণ করিতে পারে কি না? তাহাও পারে—যদিও "র" ও "ত" এক কোষ্ঠাশ্রিত নহে। কিন্তু বারুবর্ণ "ত" আগ্নেয় বর্ণের "র"—উভয়ের মিত্রতা আছে।

(২) রাশিচক্র

বৃষ: উ ঊ ঋ / মিথুন: ৠ ঌ ৡ	মেষ: অ আ ই ঈ	মীন: য ব ল ব / কুম্ভ: প ফ ব ভ ম
কর্কট: এ ঐ		মকর: ত থ দ ধ ন
সিংহ: ও ঔ / কন্যা: অং অঃ শ ষ স হ ল ক্ষ	তুলা: ক খ গ ঘ ঙ	ধনু: ট ঠ ড ঢ ণ / বৃশ্চিক: চ ছ জ ঝ ঞ

(৪) নক্ষত্র চক্র

অশ্বিনী	ভরণী	কৃত্তিকা	রোহিণী	মৃগশিরা	আর্দ্রা	পুনর্ব্বসু	পুষ্যা	অশ্লেষা
অ, আ	ই	ঈ, উ, ঊ	ঋ, ৠ, ঌ, ৡ	এ	ঐ	ও, ঔ	ক	খ, গ
দেবঃ	মানুষঃ	রাক্ষসঃ	মানুষঃ	দেবঃ	মানুষঃ	দেবঃ	দেবঃ	রাক্ষসঃ
মঘা	পূর্ব্বফাল্গুনী	উত্তরফাল্গুনী	হস্তা	চিত্রা	স্বাতী	বিশাখা	অনুরাধা	জ্যেষ্ঠা
ঘ, ঙ	চ	ছ, জ	ঝ, ঞ	ট, ঠ	ড	ঢ, ণ	ত, থ, দ	ধ
রাক্ষসঃ	মানুষঃ	মানুষঃ	দেবঃ	রাক্ষসঃ	দেবঃ	রাক্ষসঃ	দেবঃ	রাক্ষসঃ
মূলা	পূর্ব্বাষাঢা	উত্তরাষাঢা	শ্রবণা	ধনিষ্ঠা	শতভিষা	পূর্ব্বভাদ্র	উত্তরভাদ্র	রেবতী
ন, প, ফ	ব	ভ	ম	য, র	ল	ব, শ	ষ, স, হ	ল, ক্ষ, অং, অঃ
রাক্ষসঃ	মানুষঃ	মানুষঃ	দেবঃ	রাক্ষসঃ	রাক্ষসঃ	মানুষঃ	মানুষঃ	দেবঃ

স্বজাতিতে পরম প্রীতি, ভিন্ন জাতিতে মধ্যম প্রীতি, রাক্ষস ও মনুষ্যে বিনাশ এবং রাক্ষস ও দেবগণে শত্রুতা হয়। মন্ত্রগ্রহীতার জন্মনক্ষত্র এবং মন্ত্রের আদি অক্ষর যে গৃহে পড়িবে, সেই গৃহগত নক্ষত্র লইয়া গণনা করিবে। যদি মন্ত্র ও মন্ত্রগ্রহীতার এক গণ হয়, তবে সেই মন্ত্র গ্রহণে শুভ হইয়া থাকে এবং যাহার মনুষ্য গণ সে দেবগণ মন্ত্র গ্রহণ করিতে পারে। মনুষ্যগণ ও রাক্ষসগণে এবং রাক্ষসগণ ও দেবগণে শত্রুতা হয় কাজেই তাদৃশ মন্ত্র গ্রহণ করিবে না।

জন্ম, সম্পৎ, বিপৎ, ক্ষেম, প্রত্যরি, সাধক, বধ, মিত্র, ও পরমমিত্র এই নয়টি নক্ষত্রের নাম নির্দিষ্ট করিয়াছেন। মন্ত্র গ্রহীতার জন্মনক্ষত্র হইতে আরম্ভ করিয়া মন্ত্র নক্ষত্র পর্যন্ত অর্থাৎ যে নক্ষত্রে মন্ত্রের আদ্যাক্ষর আছে সেই নক্ষত্র পর্যন্ত সম্পদাদি ক্রমে পুনঃ ২ গণনা করিবে। যদি জন্মনক্ষত্র হইতে মন্ত্রনক্ষত্র পর্যন্ত পঞ্চম কিংবা সপ্তম হয়, তবে সেই মন্ত্র পরিত্যাগ করিবে। এইজন্যই শাস্ত্রে উক্ত হইয়াছে যে ষষ্ঠ অষ্টম, নবম কিংবা চতুর্থ মন্ত্র শুভ, অন্য মন্ত্র অশুভ। মন্ত্রগ্রহীতার জন্ম নক্ষত্র হইতে গণনা করিতে হইবে কিন্তু যদি জন্ম নক্ষত্র স্মরণ না থাকে তবে মন্ত্র গ্রহীতার নামের আদ্যাক্ষর সম্বন্ধে নক্ষত্র গ্রহণ করিয়া গণনা করিবে।

(৪) অ ক থ হ চক্র

অ, ক, থ, হ (১)	উ, ঙ, প (৫)	আ, খ, দ (২)	ঊ, চ, ফ (৬)
ও, ড, ব (১৩)	ঌ, ঝ, ম (৯)	ঔ, ঢ, শ (১৪)	ৡ, ঞ, য (১০)
ঈ, ঘ, ন (৪)	ৠ, জ, ভ (৮)	ই, গ, ধ (৩)	ঋ, ছ, ব (৭)
অঃ, ত, স (১৬)	ঐ, ঠ, ল (১২)	অং, ণ, ষ (১৫)	এ, ট, র (১১)

অনন্তর মন্ত্রগ্রহীতার নামের আদ্যাক্ষর হইতে আরম্ভ করিয়া মন্ত্রের আদি অক্ষর পর্যন্ত সিদ্ধ সাধ্য, সুসিদ্ধ ও অরি এইরূপ গণনা করিবে। এক কোষ্ঠেতে নাম ও মন্ত্রের আদিবর্ণ হইলে তাহাতে ঐরূপ বর্ণ গণনা করিবে। উক্ত চক্রে বর্ণ বিন্যাস বর্ণবিন্যাস ও গণনা দক্ষিণাবর্তে করিবে। একণে কোন্ মন্ত্র গ্রহণে কিরূপ ফল হয়, তাহা এই সিদ্ধমন্ত্র গ্রহণ করিলে মন্ত্র স্বয়ং সিদ্ধ হয়। সাধ্য মন্ত্র গ্রহণে জপ হোমাদি দ্বারা মন্ত্র সিদ্ধ হয়। সুসিদ্ধ মন্ত্র গ্রহণে তৎক্ষণাৎ মন্ত্রসিদ্ধ হয় এবং অরিমন্ত্র গ্রহণে সমূলে বংশ বিনাশ হয়। কদাচ অরিমন্ত্র গ্রহণ করিতে নাই। ভ্রম বা প্রমাদ বশতঃ অরিমন্ত্র গ্রহণ করিলে তাহা পরিত্যাগ করিয়া অপর মন্ত্র গ্রহণ করিবে।

(৫) অ ক ড ম চক্র

অ ক
ঙ ম

গণনা প্রণালী এইরূপ—সাধকের নামের আদ্যাক্ষর হইতে মন্ত্রের আদ্যাক্ষর পর্যন্ত দক্ষিণাবর্তে সিদ্ধ, সাধ্য সুসিদ্ধ ও অরি এইরূপে পুনঃ ২ গণনা করিবে। কিন্তু যদি মেষ হইতে মীন পর্যন্ত অর্থাৎ বামাবর্তে মন্ত্র সমুদয় লিখিত হয়, তবে গণনাও বামাবর্তে করিতে হইবে। এই চক্রে পুনঃ পুনঃ সিদ্ধ সাধ্যাদি গণনা কোন কোন কোষ্ঠা সাধ্য ইত্যাদি স্পষ্ট করিয়া লেখা হইয়াছে—যথা, নবম, প্রথম ও পঞ্চম গৃহ সিদ্ধ, দশম ও দ্বিতীয় গৃহ সাধ্য, তৃতীয় সপ্তম ও একাদশ গৃহ-সুসিদ্ধ এবং চতুর্থ, অষ্টম ও দ্বাদশ গৃহ রিপু জানিবে। এই চক্রের গণনায়, মন্ত্র সিদ্ধ, সাধ্য অথবা সুসিদ্ধ হইলে শুভ ফল হয়। অরি মন্ত্রগ্রহণে অশুভ হইয়া থাকে —অতএব কদাচ অরিমন্ত্র গ্রহণ করিবে না।

(৩) ঋণী ধনী চক্র

৬	৬	৬	০	৩	৪	৪	০	০	০	৩
অ, আ	ই, ঈ	উ, ঊ	ঋ, ৠ	ঌ, ৡ	এ	ঐ	ও	ঔ	অং	অঃ
ক	খ	গ	ঘ	ঙ	চ	ছ	জ	ঝ	ঞ	ট
ঠ	ড	ঢ	ণ	ত	থ	দ	ধ	ন	প	ফ
ব	ভ	ম	য	র	ল	ব	শ	ষ	স	হ
২	২	৫	০	০	২	১	০	৪	৪	১